श्री धर्म प्रवर्त्तन सारग्रंथ.

तथा

क्षायक भावतत्व विलास, श्रद्धाप्रकरण, नवपदजीनी पूजा अध्यात्म चोवीशी, चैत्यवंदनो, स्तुतियो, स्तवनो सज्झायो, अने गुरुभक्तिना रास सहित.

कर्त्ता विजापुरनिवासी,

शा. सुरचंदभाइ स्वरूपचंद.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

शा. रतनचंद लाधाजी

तथा

शा. झवेरभाइ भगवानदास

प्रगणे पेटलाद—मु० काविठा.

अमदावाद.

श्री "लक्ष्मि" प्रिन्टिंग प्रेसमां

शा. मणीलाल उगरचंदे छाप्यु.

संवत १९६६ वीर संवत २४३६ सने १९१०

किमत रु ०—६—०.

प्रस्तावना.

सर्व धर्मनो विचार करतां सर्वोत्तम जैन धर्म सत्य छे एम निश्चय थयो छे जैन धर्ममां श्वेतांबर दिगंबर ए बे शाखाउं छे असलथी श्वेतांबर आम्नायनां सूत्रो चाल्यां आवे छे माटे श्वेतांबर शास्त्रोनी प्रामाणिकता सिद्ध छे दिगंबरो पण पहेलां सूत्रो मानता हता पाछळथी तेउं मानता नथी एम जणाय छे श्वेतांबर मार्गमां व्यवहार अने निश्चय ए बे नयो कह्या छे. दरेक नयनु स्वरूप अत्यत सूक्ष्म छे माटे शास्त्रकारोनी आज्ञा प्रमाणे बे नयने जाणवा खप करवो श्वेतांबर मार्गमां हरिभद्रसूरि–यशोविजय उपाध्याय विगेरे महान् पुरुषो थइ गया छे.

जैन धर्मनी प्रवृत्ति केवी रीते करवी ते संबंधी तेउंए पुस्तकोमां सारुं अजवाळुं कर्युं छे. पूर्वाचार्योए धर्मनी प्रवृत्तिनी शुद्धता थवा माटे नयो पूर्वक धर्म तत्वनु वर्णन कर्युं छे माटे अत्रे पण तेउंनी वाणी अनुसार अशुद्ध मार्गने बतावी शुद्ध धर्म बताववा प्रयत्न कर्यो छे. प्रथम धर्म प्रवर्तनसार ग्रंथ दाखल कर्यो छे. तेमां व्यवहार नयना भेद बतावीने धर्मनी व्याख्या करी छे तेमां मोटा भागे श्री देवचंद्रजी अने श्रीमान् यशोविजय उपाध्यायजीना भाषा ग्रंथोनी साक्षी आपी विवेचन कर्युंछे, वळी अमारी मान्यता पूर्वाचार्योनी परपरा सहित छे एम सिद्ध कर्युंछे पूर्वाचार्योनां वचन अनुसरीने चालवु अने तेमनां वचनने भगवान्नां वचन सरखां मानवां जोइए एवी मान्यता नी सिद्धिमां अमारो मत सर्वने अभिमत थाउं । साधुना व्यवहारमां सामर्थ्य रह्यु छे आवश्यक धर्म व्यवहार ते होवाथी

तेने अमोए कल्पव्यवहार नाम आप्युं छे तेमां अन्य अमारो उद्देश नथी शास्त्रोमां " जितकल्प–बृहत्कल्प विगेरे नामथी प्रसिद्ध छे. अने तेमां साधुना आचारनुं विवेचन छे साधुनो आचार पापनो क्षय करे छे आश्रवनो नाश करे छे संवरनी पुष्टि करे छे माटे तेमां अद्भुत सामर्थ्य रह्युं छे. तेथी कल्पव्यवहार एवुं अमोए "गुणधेय ' नाम आप्युं छे आ ग्रंथमां ज्ञानार्णव—समयसार वगेरे ग्रथोनी साक्षीओ आपवामां आवेली छे तेथी एम न समजवुं के अमो तेओना अनुयायी छीए ज्ञानार्णव वगेरेमां श्वेतांबर सिद्धांतोना आधारे जे वाक्यो मळतां आवे छे तेटलांज अमो मानीए छीए बाकी श्वेतांबर सिद्धांतोथी जे विरुद्ध प्ररूपणा छे एवी दिगंवर ग्रथोनी वातने अमो मानता नथी कारण के उत्सूत्र वात मानवी नहीं. आ ग्रथमां साधुना आचारोनी उत्कृष्टता बतावी छे तेनुं कारण के जे वस्तु बताववी ते उत्कृष्ट बताववी जो एम न बताववामां आवे तो आचारोनुं ढीलाशपणुं थइ जाय आ आशय विना साधुओना आचार विगेरेनी टीका करवानो अंश मात्र पण बीजो आशय नथी साधुवर्गने अमो अमारा पुज्य गुरु तरीके जोइए छीए तेमनामां शुद्ध द्रव्य व्यवहारनो विशेषतः प्रकाश थाओ एटलुंज इच्छिए छीए आ ग्रथनां समाप्ति पत्रमां सिद्धनुं स्वरुप देखाड्युं छे ते वाचवाथी वाचकोने अतिशय लाभ थशे.

पश्चात् पत्र १२६ थी क्षायिकभाव तत्वविलास पद्य ग्रंथ लखवामां आव्यो छे तेमज पत्र १६३ थी श्रद्धाप्रकरणनी ढाळो लखवामां आवी छे, ते श्रद्धा प्राप्त थवानो हेतु छे.

पत्र १०७ थी नवपदजीनी पूजा शरु थाय छे ते पण वाचकोने आनंद आपशे. पत्र २०४ थी अध्यात्म चोवीशी छपाववामां आवी छे ते पण अत्यंत उपयोगी ग्रंथ छे पत्र २२० थी चैत्यवंदन अधिकार छे. पत्र २३६ थी स्तवन अधिकार छे पत्र २६० थी सज्जाय अधिकार छे पत्र २९१ थी गुरुभक्तिनो रास शरु थाय छे.

आ प्रमाणे गद्यमां अने पद्यमां ग्रंथो सिद्धान्तानु सार बतावबामां आव्या छे तेमां वीतराग आज्ञा विरुद्ध जे कंइ लखायु होय तेनो मिच्छामिदुक्कडं दउं छुं जे मुनिवरो वा श्रावक विद्वानो ग्रंथ सबंधे भूलनो सुधारो शास्त्र साक्षी पूर्वक बतावशे तो तेमनो उपकार मानवामां आवशे

अध्यात्म शैली अने द्रव्यानुयोगनी शेली पूर्वक आ ग्रथ लखायो होवाथी ततृतत् सबंधी शैलीना अभ्यासिओने आ ग्रंथ उपयोगी थइ पडशे एवी आशा राखवामां आवे छे

आ ग्रंथ छपाववा माटे धन व्यय सहायमां तेमज आ ग्रंथ तपासवामां जेओए मदद करी छे तेमनो उपकार मानुं छुं

जैन श्वेतांवर मूर्तिपूजक सिद्धांत शैलीनी मान्यता (श्रद्धा) आ लेखकने छे तेथी प्रसगे कोइ अन्य धर्मना सिद्धातो उपर आक्षेप थयेलो क्वचित् देखाय तो अन्य धर्मीओए न्याय दृष्टिथी सत्य तत्त्वनो तोल करी सत्यतत्त्व ग्रहण करवुं एज.

लेखक श्रावक-सूरचंदभाइ सरुपचंद.

मु. विजापुर (विद्यापुर)

गुजरात.

आ ज्ञान शीलळविलास भाग २ जो नामनुं आ पुस्तक छपावता पेहेला खरच माटे अगाउथी पैसा आपनार भाईओ गुणना जाण गुणना रागी धर्मस्नेही गृहस्थोना नाम नीचे प्रमाणे छे

३००) भाई मूळचंदभाई सरूपचंदना वीलना ट्रस्टमाथी ट्रस्टी-ओए आप्या.

२००) कावीठाना झवेरभाई भगवानदास तथा शा रतनचंद लाधाजी जण बेना

उपरनी मददथी आ पुस्तकनी १००० नकल छपावी छे आ बीजा भागनी चोपडी तथा प्रथमनी छपाएल भाग १ नी चोपडी नीचेना ठेकाणेथी मळी शकशे

१ बिजापुर–शा सुरचंदभाई स्वरूपचंद

२ अमदावाद–शा हीराचंदभाई ककलभाई ठे. फतासानी पोळ जैन कन्याशाळा

३ कावीठा प्रगणे पेटलाद–शा रतनचंदभाई लाधाजी तथा झवेरभाई भगवानदास

४ पालेज–शा माहाभाई पीताम्बरदास तथा शा अमरचंद कचराभाई प्रगणे भरुच बंदर

५ सुरत–शा ताराचंद हीमचंद छे गोपीपुरा मध्ये

६ पादरा–वकील मोहनलाल हीमचंद वडोदरा ताबे पादरा

आ प्रथमा दृष्टिदोपथी अथवा लखित दोपथी अथवा छापनारनी चुकथी न समजी शकायतो शुद्धिपत्रक प्रमाणे सुधारी तपासीने वाचशो

ज्ञाननी आशातना न थाय अने घणा माणसो लाभ लइ शके ए हेतुथी आ पुस्तकनी कींमत मात्र ०–६–० छ आना राखी छे अने ए रीते जे रकम वसल पडे ते ज्ञान खातामा वपराशे. साधु साध्वीने तेमज जैन पुस्तकालयोने विनामूल्ये आपवामा आवशे

अनुक्रमणिका.

प्रथम धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथनी अनुक्रमणिका

बीजा क्षायक भाव तत्वविलास ग्रंथनी अनुक्रमणिका.





॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथ.

॥ दुहा ॥

वंदु गुरु चरणे सदा, गुरुमुख अमिय झरंत ॥
धर्मलाभ दीए देशना, ज्युं जलधर वरसंत ॥ १ ॥
ते झीले चित पात्रमे, श्रोता मन थिर अंग ॥
ज्ञानामृत रस आतमा, पीवे निर्मल रंग ॥ २ ॥
धर्म वर्त्तना सार ए, जिहां निश्चय व्यवहार ॥
गुरुकृपाथी पामीए, स्याद्वाद निरधार ॥ ३ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे आ ग्रंथनु नाम धर्म प्रवर्त्तन सारछे, तेना बे, भेदछे मिथ्यात्व सहित धर्मप्रवर्त्तन तथा सम्यक्त्वसहित धर्मप्रवर्त्तन, अहीं कोइ कहेशे के धर्मप्रवर्त्तनमा मिथ्यात्वनो भेद शा माटे करवो पडयो? तेनो उत्तर मिथ्यात्व छता पण देशविरतिपणु तथा सर्वविरतिपणु जीव व्यवहारथी ग्रहेछे, वळी क्रियानो पात्र, ज्ञाननो खपी, ध्याना-

वलवी होयछे, ते योगदृष्टि सज्झायोथी जोइ लेजो. प्रथमनी चार सज्झायो मिथ्यात्वसहित प्रवर्त्तनमा छे, अने पाचमी थीरादृष्टिथी ते आठमी परा दृष्टि सुधी चार सज्झायो समकित धर्मप्रवर्त्तनमाछे, वळी मुक्तिना मार्गमा छे ते माटे अमारे भेद वेंहेचवो पड्यो पेहेली दृष्टिनी सज्झाये कह्युछे के,

दृष्टि थिरादिक चारमां, मुगति प्रयाण न भाजेर॥
रयणि सयन जेम श्रम हरे, सुरनर सुख तेम
छाजेरे॥ वी० ॥५॥

अर्थ —दृष्टि के० समकितनी आठ दृष्टि कही छे, तेमा प्रथमनी चार दृष्टि, तेना नाम मित्रा, तारा, वळा, अने दिसा ए चार दृष्टि समकितरूप नथी, परतु व्यवहारे कारण छे ते कारणने विषे कार्यपणानो उपचार करीने समकितमा गणीछे हवे पाछळनी चार दृष्टिना नाम, स्थिरा, कान्ता, प्रभा, अने परा ए चार दृष्टि समकित रूप छे वळी, दृष्टा बोध एटले जाणपणु ते पण वस्तुगते वस्तुपणु महदेछे श्रद्धा ज्ञान पूर्वक स्थिरछे, ए चार चार मळीने आठ दृष्टि कही, तेमा स्थिरादिक चारमा केहेतां स्थिरा पाचमी अने आदि शब्दे छठ्ठी, सातमी, अने आठमी, ए पाछळनी चार दृष्टिए वर्त्ततो एवो जे प्राणी, ते एक वखते बे क्रियानो कर्त्ताछे एक उदयिक भावनी अने बीजी क्षयोपशम भावनी, तेमा प्रथम उदयिक भावनी एटले

उदयिक भाव ते पूर्वकृत कर्मबंधनो उदय, ते कहेछे गति चार, कषाय चार, वेद त्रण, लेश्या छ, मिथ्यात्व, अज्ञान असिद्धत्व अने अविरति ए उदयिक भावना एकवीस भेद कह्या ते समुदाये परिपूर्ण पेहेले गुणठाणे लाधे अने उपरनां गुणठाणाए ओछा ओछा लाधे. उदयिक भाव अ-योगी चौदमा गुणठाणा पर्यंत सर्वे गुणठाणे लाधे अने जे जे प्रकृतिनो उदय थाय तेमां चेतन व्यापकपणुं करे, सं-कल्प विकल्प करे तो समये समये सात आठ कर्म छठा सातमा गुणठाणा सुधी बांधे. उपरांत सात बांधे दशमा गुणठाणे छ कर्म बांधे वळी जीवनी शक्ति मरोडी नांखे कह्युछे के "शक्ति मरोडे जीवनी, उदय महा बळवान" हवे ए उदयिक भावनी क्रियामां भांगा कहे छे भविने अनादि सांत भांगो लागे, अने अभविने अनादि अनत भांगो लागे ए उदयिक भावनी क्रिया कही हवे क्षयो-पशमभावनी क्रिया कहेछे, ते पांचमी थिरा दृष्टि पाम्या त्याथी अंतर्दष्टिए प्राप्त छे अने थिरादृष्टिनी प्राप्ति ग्रं-थिभेद कर्यो त्यांथी थइ हवे ते क्रिया क्षयोपशम भावनी क्षय उपशम पूर्वक चोथा गुणठाणाथी प्राप्त थइ तेना भेद कहे छे सामान्य उपयोग ते दर्शन गुणनो, अने विशेषोपयोग ते ज्ञान गुणनो, वळी क्षयोपशम भावनु समकित, तथा देशविरति अने सर्व विरति चारित्र, वळी क्षयोपशम भावनी दानादि पांच लब्धि ए क्षयोपशम भावना भेद छे, तेमांथी लब्धि गुणने किंचित् गवेखे छे

वळी धर्म प्रवर्त्तनना बीजा बे भेद छे, व्यवहार धर्म प्रवर्त्तन अने निश्चय धर्म प्रवर्त्तन तेमां प्रथम व्यवहार धर्म प्रवर्त्तननी ओळखाण करावे छे एटले व्यवहारनयना भेदनी व्हेंचण करीशु तेमा केटलाएक भेद मिथ्यात्व पक्षी छे अने केटलाएक भेद समकित पक्षी छे ते सर्वेनी ओळखाण थशे कह्यु छे नय चक्रसार ग्रंथे

संग्रह गृहीत वस्तु भेदांतरेण विभजन व्यवहरण प्रवर्त्तन वा व्यवहार सद्विविध शुद्धो शुद्धश्च शुद्धोद्विविध वस्तुगत व्यवहार धर्मास्तिकायादि द्रव्याणां स्वस्वचलन सहकारादि जीवस्य लोकालोकादि ज्ञानादिरूप स्वसपूर्ण परमात्मभावसाधनरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुण श्रेण्या रोहादि साधन शुद्ध व्यवहार अशुद्धोपि द्विविध सद्भूता सद्भूत भेदात् सद्भूत व्यवहारो ज्ञानादिगुण परस्पर भिन्न असद्भूत व्यवहार कषायात्मादि मनुष्योह देवोह सोपिद्विविध सश्लेपिता शुद्धव्यवहार' शरीर मम अहशरीरी असश्लेपिता सद्भूत व्यवहार पुत्र कलत्रादि तोंच उपचरिता नुपचरित व्यवहार भेदात् द्विविधो तथाच विशेषावश्यके व्यवहरण व्यवहार ए सतेण व्यवहार एव सामान्न व्यवहार परोव्वजउ विसेसउ तेणव्यवहार व्यवहरण व्यवहार व्यवहरतिसङतिणव्यवहार विशेषतो व्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्य तेनेतिव्यवहार लोकव्यवहार परोवा विशेषतो यस्मात्तेन व्यवहार न व्यवहारा स्वस्वधर्म प्रवर्त्ति तेनेकृते सामान्यमिति स्वगुण प्रवृत्ति रूप व्यवहार

स्यैव वस्तुत्व तमंतरेण तदभावात् सद्विविध. विभजन १ प्रवृत्ति २ भेदात् प्रवृत्ति व्यवहार स्त्रिविध. वस्तु प्रवृत्तिः १ साधन प्रवृत्ति २ लौकिक प्रवृत्तिश्च ३ साधन प्रवृत्ति स्त्रेधा लोकोत्तर १ लौकिका २ कुप्रा वचनिक ३ भेदात् इति व्यवहारनयश्च विशेषावश्यके ॥

अर्थ —संग्रह ग्रहित वस्तु के० संग्रहनये ग्रहित जे वस्तु भेदांतरेण के० तेने भेद भेदांतरे, विभजन के० व्हेचवु तेने व्यवहार कहीए एटले संग्रहनये छे ते सामान्य विशेष सर्वेने सामान्यपणे ग्रहेछे एटले पिंडपणे ग्रहे पण व्यक्तव्यपणे न ग्रहे जेम द्रव्य एवं सामान्य नाम कह्युं, तेमां सर्वे द्रव्यनु ग्रहण थयुं, ते सग्रह नय. तेने भेदांतरे व्हेचे ते व्यवहार नय एटले द्रव्यना बे भेद जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य अजीवना बे भेद, रूपी अने अरूपी रूपी ते पुद्गल तेना बे भेद. परमाणु अने खध खंधना बे भेद जीव सहित अने जीव रहित तेमां जीव सहितना बे भेद, सूक्ष्म अने बादर इहां वर्गणानो विचार छे त्यां बादरवर्गणाना चार भेद उदारीक (१), वैक्रिय (२), आहारक (३), अने तेजस (४), हवे सूक्ष्म वर्गणाना चार भेद कहे छे भाषा (१), श्वासोश्वास (२), मन (३), अने कार्मण (४), ते कार्मणना आठ भेद, ज्ञानावरणीय (१), दर्शनावरणीय (२), वेदनीय (३), मोहनीय (४) आयुष (५), नाम (६), गोत्र (७), अने अंतराय (८), ए आठने कर्मवर्गणा कहीए तेना उत्तरभेद एकसोने अट्ठावन छे, ते

कर्मग्रंथथी जोइ लेजो हवे पर्यायना वे ज्ञेद एक कर्मज्ञावी अने बीजो स्वज्ञावी

हवे जीवना पाचसे त्रेसठ ज्ञेद कहे छे तेना मूळ चार ज्ञेद मनुष्यगति (१), तिर्यचगति (२), नरकगति (३), अने देवगति (४), ए चारना प्रत्येक ज्ञेदनो विचार जेमा प्रथम मनुष्यना ज्ञेद वर्णवे छे तेना त्रण ज्ञेद कर्मज्ञूमि (१), अकर्मज्ञूमि (२), अने अतरद्वीप (३), तेमा कर्मज्ञूमिना पदर ज्ञेद छे, पांच ज्ञरत (५), पांच ऐरवत (५), अने पाच महाविदेह (५) ए रीते पदर ज्ञेद थाय वळी अकर्मज्ञूमिना त्रीस ज्ञेद छे पाच हेमवत (५), पाच ऐरण्यवत, (५), पाच रम्यक (५), पाच देवकुरु (५), पाच हरिवर्ष (५), पाच उत्तरकुरु (५), ए रीते त्रीस ज्ञेद अकर्मज्ञूमिना कह्या हवे अतरद्वीपना छप्पन ज्ञेद कहे छे आ, जबुद्वीपने विषे लघु हिमवत अने शिखरि ए वे पर्वत आवेला छे तेमांथी वे पर्व अने वे पश्चिमे एम लवण समुद्रमा अतराले एक एक पर्वतनी चार चार दाढाओ नीकळेली छे, ते वे पर्वतनी मळीने आठ दाढाओ थइ ते दरेक दाढा उपर सात सात क्षेत्र छे ए रीते आठ दाढाओना मळीने छप्पन्न अतरद्वीप छे ए सघळा ज्ञेगा करता एकसोने एक मनुष्य क्षेत्र थया तेना वे ज्ञेद एक समूर्छिम अने बीजा गर्ज्ञज तेमा गर्ज्ञजना वे ज्ञेद एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता अने समुर्छिमतो पर्याप्ति पूरी करे नही, अपर्याप्ता अवस्थायेज मरे मारे तेनो एकज ज्ञेद एटले एक

सो ने एक गर्भज पर्याप्ता, एकसोने एक गर्भज अपर्याप्ता अने एकसोने एक समूर्छीम अपर्याप्ता ए रीते मनुष्य गतिना त्रणसेने त्रण ज्ञेद थया हवे तिर्यंच गतिना ज्ञेद कहे ठे तेना पांच ज्ञेद (१) एकेंद्रि, (२) वेइंद्रि, (३) तेइंद्रि, (४) चौरिंद्रि, (५) पचेंद्रि तेमां एकेंद्रिना पांच ज्ञेद (१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेउकाय, (४) वाउकाय, अने (५) वनस्पति काय. तेमां प्रथमना चार ज्ञेदठे, तेना प्रत्येके वे वे ज्ञेद, एक सूक्ष्म अने वीजो वादर ए वेना गणतां आठ ज्ञेद थया. हवे वनस्पतिकायना वे ज्ञेद, प्रत्येक अने साधारण, तेमां साधारणना वे ज्ञेद. सूक्ष्म साधारण अने वादर साधारण, सूक्ष्म साधारण ते सूक्ष्म निगोद अने वादर साधारण ते कदमूळादि वादर निगोद. ए वे साधारण वनस्पतिकायना ज्ञेद अने एक प्रत्येक वनस्पतिकायनो ज्ञेद मळी त्रण ज्ञेद वनस्पतिकायना थया. ते ज्ञेगा करतां अगिआर ज्ञेद थया तेना प्रत्येके वे वे ज्ञेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एटले एकेंद्रिना वावीस ज्ञेद थया. हवे वेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरिंद्र ए त्रणने विकलेंद्रि कहीए तेना प्रत्येके वे वे ज्ञेद. एक पर्याप्ता अने वीजो अपर्याप्ता, एम ठ ज्ञेद विकलेंद्रिना थया ते मेळवतां अठावीस ज्ञेद थया.

हवे तिर्यंच पचेंद्रिना ज्ञेद कहे ठे. तेना वे ज्ञेद सन्नि तथा असन्नि सन्नि ते गर्भज तेने मन सज्ञा ठे. असन्नि ते मन संज्ञा रहित ठे. वळी ते माटी पाणीना सयोगे

उपजे ठे, ते वेना प्रत्येके पांच पांच न्नेद कहे ठे. थळचर, जळचर, खेचर, उरपरि अने जुजपरि ए पाच दु दश न्नेद थया, तेना प्रत्येके वे वे न्नेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां तिर्यच पचेंद्रिना वीश न्नेद थया तेमां चौरिंद्रि सुधीना अष्टावीश न्नेद मेळवीए त्यारे तिर्यंचनी जातिना अमता-लीस न्नेद थाय ते कह्या

हवे नारकीना सात न्नेद कहे ठे [१] घमा, [२] वंशा, [३] सेला, [४] अजण, [५] रिष्ठा, [६] मघा, [७] माघवती ए सात न्नेदना प्रत्येके वबे न्नेद एक पर्याप्ता अने वीजा अपर्याप्ता एम चौद न्नेद नारकीना थया

हवे देवगतिना न्नेद कहे ठे. जुवनपति, व्यंतर, ज्यो-तिषि अने वेमानिक, तेमा जुवनपतिना पचीस न्नेद ठे, दश निकायना दश अने परमाधामी पंदर मळी पचीश न्नेद थया हवे व्यंतर निकायना न्नेद कहे ठे तेमां व्यंतर तथा वाण व्यंतरना सोळ न्नेद अने तिर्यग् जृंनकना दश न्नेद मळीने ठवीस न्नेद थया हवे ज्योतिषीना न्नेद कहे ठे तेना मूळ वे न्नेद एक स्थिर अने वीजा अथिर ए वेना प्रत्येके पाच पाच न्नेदठे, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, अने तारा, ए पांच दु दश ज्योतिषीना थया हवे वेमानिकना न्नेद कहे ठे तेमा किल्विषियाना त्रण न्नेद लोकांतिकना नव न्नेद, अने वार देवलोकना वार न्नेद, ए चोवीस न्नेद क ल्पवासी देवना कह्या हवे अकल्पवासी देवना न्नेद कहे ठे नवग्रैवेयकना नव न्नेद अने अनुत्तर विमानना पाच

भेद मळी चौद भेद थया तेमां कल्पवासी देवना चोवीस भेद मेळवतां अडत्रीस भेद वैमानिकना थया ए चार निकायना भेगा करीए त्यारे देवगतिना नवाणुं भेद थाय तेना प्रत्येके बे बे भेद एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता गणतां देवगतिना एकसोने अट्ठाणु भेद थाय, ते कह्या. ए चारे गतिना मळीने संसारी जीवना पांचसेने त्रेसठ ५६३ भेद वर्णवी देखाड्या

हवे अजीवना पांचसेने साठ भेद कहे छे तेना मूळ पांच भेद छे. (१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) काळ (५) अने पूद्गलास्तिकाय. तेमां धर्मास्तिकायना आठ भेद (१) खंध, (२) देश, (३) प्रदेश, (४) द्रव्यथी, (५) क्षेत्रथी, (६) काळथी, (७) भावथी, अने (८) गुणथी ए आठ भेद धर्मास्तिकायना कह्या. तेज रीते अधर्मास्तिकायना आठ भेद अने आकाशास्तिकायना आठ भेद ए त्रण द्रव्यना मळीने चोवीस भेद थाय हवे काळना छ भेद कहे छे वर्त्तमान समय (१), द्रव्यथी (२), क्षेत्रथी (३), काळथी (४), भावथी (५), अने गुणथी (६), ए काळ द्रव्यना छ भेद कह्या ते सर्व भेगा करीए त्यारे अरूपी अजीवना त्रीस भेद, चार द्रव्यना मळीने थाय ते कह्या

हवे पुद्गलास्तिकायना भेद कहे छे वर्णना (५) भेद (१) रातो, (२) धोळो, (३) लीलो, (४) पीळो, अने (५) श्याम हवे रसना पांच भेद (१) करुवो, (२) कषायलो

(३) खाटो (४) तीखो, अने (५) मधुरो हवे गधना वे ज्ञेद (१) सुरज्ञि, (२) अने दुरज्ञि हवे फरसना आठ ज्ञेद कहे ठे (१) शीत, (२) उष्ण, (३) रुक्ष, (४) स्निग्ध, (५) ज्ञारे, (६) हळवो, (७) सुकोमळ, अने (८) वरसट हवे सस्थानना पाच ज्ञेद कहे ठे. (१) लाबु, (२) गोळ, (३) त्रिकोण (४) चोखुण, (५) वळीयाकारे ए सस्थानना ज्ञेद कह्या. ए रीते वर्ण, रस, गध, स्पर्श अने संस्थानना सर्व मळी पचीस ज्ञेद थया. हवे ज्ञेद गणवानी समज देखाडे ठे एटले राता वर्णनी जे वस्तु ठे तेमा रस पाच, गध वे, फरस आठ, अने सस्थान पाच एम वीस ज्ञेद एक वर्णमां लाधे, तेमज पाच वर्णमा गणीए एटले वर्णना सो ज्ञेद थाय हवे रसना ज्ञेद कहे ठे तेमा कटुक रसनी जे वस्तु ठे तेमां वर्ण पाच, गध वे, फरस आठ, अने सस्थान पाच ए वीस ज्ञेद एक रसमा लाधे, तेम पाचे रसमा गणीए त्यारे रसना सो ज्ञेद थाय हवे सस्थानना ज्ञेद कहे ठे एटले जे लावा सस्थाननी वस्तु ठे तेमा वर्ण पाच, गध वे, रस पाच अने फरस आठ ए वीस ज्ञेद एक सस्थानमा लाधे तेम सर्व सस्थानमां गणीए एटले पाच सस्थानना मळीने सो ज्ञेद थाय हवे गधना ज्ञेद कहे ठे एटले जे सुरज्ञि गधनी वस्तु ठे तेमा वर्ण पाच, रस पाच, फरस आठ, अने सस्थान पाच एम त्रेवीस ज्ञेद एक गधमा लाधे, तेमज वे गधना गणीए त्यारे त्रेवीस दु ठेताळीस ज्ञेद थाय हवे फरसना ज्ञेद कहे ठे एटले शीत फरसनी जे वस्तु ठे तेमा वर्ण पाच, रस

पांच, गध वे, अने संस्थान पांच, वळी उपर शीत स्पर्शनी विवक्षा करी छे, तेनो प्रतिपक्षी उष्ण स्पर्श न होय वाकीना छ स्पर्श लाधे ते सर्वे ज्ञेगा करतां त्रेवीस ज्ञेद एक स्पर्शमां थाय तेमज आठे स्पर्शना गणीए त्यारे एकसोने चोराशी ज्ञेद आठ फरसना मळीने थाय

उपर वताव्या प्रमाणे पांच वर्णना सो, पांच रसना सो, पांच संस्थानना सो, वे गंधना छेतालीस अने आठ फरसना एकसो चोरासी मळी कुल पाचसें त्रीस ज्ञेद पुद्गलास्तिकायना थाय ते कह्या तेमां अजीव अरूपी चार ड्रव्यना त्रीस ज्ञेद ज्ञेगा करीए त्यारे अजीवना पांचसेंने साठ ज्ञेद थाय ते कह्या

हवे जीवना ज्ञेदनी व्हेंचण कहे छे. जीवना वे ज्ञेद सिद्ध (१), अने संसारी (२) सिद्ध ते कर्म आवरण दोष रहित. केवलज्ञान, केवलदर्शनादि गुण प्रगटरूप अखंड, अमर, अव्यावाधानद मय, लोकने अते विराजमान स्वरूप ज्ञोगी ते सिद्ध जीव कहीए ते सिद्धता सर्व जीवनो मूळ धर्म छे पण जेणे पोतानु वीर्य फोरव्यु ते सिद्ध ज्ञगवान थया, नही फोरव्यु ते ससारमां प्रवर्त्ते छे हवे सिद्धना ज्ञेद कहे छे प्रथम समयना, अपर समयना वळी अनतर सिद्ध, परपरसिद्ध, आदिसिद्ध, अनादिसिद्ध, अनेकसिद्ध, लघु अवगाहना सिद्ध, गुरु अवगाहना सिद्ध अने मध्यस्थ अवगाहना सिद्ध, इत्यादि सिद्ध ज्ञगवानना ज्ञेद जाणवा

हवे ससारी जीवना भेद गुणठाणानी अपेक्षाये कहे छे तेना वे भेद अयोगी अने सयोगी अयोगी ते सेलेशि भावे थया वळी, मनादि त्रणे योगनो रोध थयो ते चौदमा गुणठाणाना, वाकीना सयोगी, तेना वे भेद सयोगी केवळी अने सयोगी छद्मस्थ सयोगी केवळी ते तेरमा गुणठाणाना, तेमणे चार घाति कर्मनो क्षय कर्यो छे, वळी अनत चतुष्टय प्रगट करी छे, तेमने अरिहत भगवत कहीए वाकीना सयोगी छद्मस्थ तेना वे भेद अमोही अने समोही अमोही ते मोहनीय कर्मनो क्षय कर्यो छे जेमणे वळी, क्षायक भावनु यथाख्यात चारित्र पाम्या छे वीतराग भावे थया ते अमोही वारसा गुणठाणाना, वाकीना समोही तेना वे भेद उपशात मोही अने उदीत मोही उपशांत मोही ते मोहनीय कर्मनी सर्व प्रकृतियो उपशामावी छे जेणे वळी उपशम भावनु यथाख्यात चारित्र पाम्या छे ते उपशात मोही अगिआरमा गुणठाणाना वाकीना उदीत मोही तेना वे भेद सूक्ष्म मोही अने वादर मोही सूक्ष्म मोही ते लोभाणु उदयमा छे जेने, वळी सूक्ष्म सपराय चोथा चारित्र वत ते दशमा गुणठाणाना, वाकीना वादर मोही तेना वे भेद अवेदी अने सवेदी अवेदी ते वेद विकार क्षय पाम्यो छे जेनो ते नवमा गुणठाणाना वाकीना सवेदी तेना वे भेद श्रेणीवत अने श्रेणी रहित श्रेणीवत ते आठमा गुणठाणाना शुक्ल ध्यान ध्याना,वाकीना श्रेणीरहित, तेना वे भेद अप्रमत अने प्रमत्त अप्रमत्त ते आत्मोपयो-

गी सातमा गुणठाणाना. वाकीना प्रमत्त, तेना वे भेद विरति अने अविरति, तेमां विरतिना वे भेद सर्व विरति अने देश विरति ते सर्व थकी संसार त्याग कर्यो छे जेणे ते छट्ठा गुणठाणे साधु, अने देशविरति ते पांचमा गुणठाणे श्रावक, वाकीना अविरति तेना वे भेद समकिति अने मिथ्यात्वी, समकिति ते चोथा गुणठाणाना वाकीना मिथ्यात्वी, तेना वे भेद ग्रथिभेदी अने ग्रंथि अभेदि ग्रंथि भेदी ते समकित पामी पाछा पड्या, मिथ्यात्वे गया तेमणे ग्रंथि भेद करेलो छे हवे फरीथी करवो न पडे, चडते भावे समकित गुणठाणे आवे ते ग्रथि भेदी, वाकीना अभेदी तेना वे भेद. भव्य अने अभव्य भव्य ते काळ लब्धि पामी यथाप्रवृत्ति आदि त्रण करण करी कर्म स्थिति घटाडी अपूर्व करणे अपूर्व वीर्य फोरवी ग्रथि भेद करी समकित पामे वळी वीर्यनी, ज्ञाननी, उपयोगनी ध्याननी अधिकता पामे तो कर्मनो नाश करी कर्म रहित थइ सिद्धि वरे योग्यतावाळो छे माटे वळी केटलाएक भव्य तो कारण सामग्रीना अभावे समकित पामे नहीं पण भव्य जीवमां योग्यता धर्मनी छती छे ते माटे भव्य कहीए ते जीवो अभव्यथी अनत गणा अधिक छे अने जे अभव्य जीव छे तेनी सत्ता तो भव्य जीव सरखी छे गुण, पर्याय लक्षण सर्वे वरावर छ पण मिथ्यात्व गुणठाणाथी त्रण काळमा समकित गुणठाणे ए आववानो नथी अने मिथ्यात्व तजवानो नथी तेनु कारण के भव्य स्वभाव एनामां नथी ते

कारण सामग्री पामे तो पण पलटाय नही वळी श्रुत अ-
भ्यास करे अने पंच महाव्रत आदरे छे, पण आत्म धर्मनी
यथार्थ श्रद्धाना अन्नावे समकित पामे नही अने मिथ्यात्व
गोमे नहीं माटे अन्नव्य जीवो छे ते सिद्धि पद पामवाने
अयोग्य छे ते अन्नव्य जीवोनी संख्या चोथे अनंते छे ए
न्नेद व्हेच्या तेने व्हेचण रूप व्यवहार नय कहीए

हवे बीजो न्नेद "प्रवर्त्तन वा व्यवहार" के० प्रवर्त्तन व्य-
वहार सद्विविध के० तेना बे न्नेद शुद्धाशुद्धश्च के० शुद्ध
व्यवहार अने अशुद्ध व्यवहार ए बे न्नेद कह्या तेमा
ग्रंथकारे प्रथम शुद्ध व्यवहारना न्नेद कह्या छे, पछी अशु-
द्ध व्यवहारना न्नेद कह्या छे पण इहांतो अमे पहेला अ-
शुद्ध व्यवहारना न्नेदनी विवक्षा करी पछी शुद्ध व्यवहा-
रना न्नेद कहीशु अशुद्ध व्यवहार ते अशुद्ध प्रवर्त्तन ते
कहे छे अशुद्धोपि द्विविध के० तेना बे न्नेद सद्नूता
सद्नूतन्नेदात् के० सद्नूत व्यवहार अने असद्नूत व्य-
वहार तेमा सद्नूत व्यवहार ते, "ज्ञानादि गुण परस्पर
न्निन्न" के० ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य अने उपयोग
आदि अनंता गुण आत्मामा अन्नेद न्नावे रह्या छे ते गुणने
आत्माथी निपेक्ष पणे न्निन्न गवेखे तेने अशुद्ध सद्नूत
व्यवहार कह्यो, हवे बीजो न्नेद असद्नूत व्यवहार ते,
"कषायात्मादि मनुष्योहंदेवोहं" के० हु क्रोधी हु मानी
हु कपटी, हु लोन्नी, अने हुं विषयी इत्यादि वळी हु
मनुष्य हु देवता इत्यादि कहेवु, मानवु एटले जे गतिमा

गयो ते गतिरूप पोते थयो वळी ते गति हेतुपणे परिणमतां ग्रह्या ते गति विपाकी जे कर्म ते उदयरूप परभाव छे, वळी पचीसे कषायनारूपे पोते थाय छे ते पण उदयिक भाव छे तेने परभाव कहीए ते परभावने अने जीवने यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञान शुन्य एक करी माने छे तेने अशुद्ध असद्भूत व्यवहार कहीए "सो पिद्विविध" के० तेना पण बे भेद तेमां पेहेलो भेद ते "सश्लेपित" एटले शरीरं मम अह शरीरी के० शरीर ते जीव अने जीव ते शरीर एम शरीरनो अने जीवनो एकपणो माने ते सश्लेपित व्यवहार कहीए दृष्टांत.—जेम नाकना मेलमा माखी लपटाय छे वधाय छे, ते माखी नाकना मेलथी प्राये जूदी न थाय ते दृष्टांते ए व्यवहारी जीव कायाथी जूदो छुं एम न समजे ए पेहेलो भेद कह्यो हवे बीजो भेद असश्लेपित ते पूत्र कलत्रादि के० पुत्र पुत्री, वळी कलत्र ते स्त्री अने आदि शब्दथी धनदोलत घरबार, मेहेलात, राजऋद्धि, स्वजन, कुटुब ए सर्वेने मारु केहेवु पोतानु मानवु तेने असंश्लेपित व्यवहार कहीए एटले शरीरने पोतानु कह्यु ते आयुष्यना अत सुधी छोड्युं छुटे नही माटे सश्लेपित कह्यु अने पुत्र कलत्र आदि धनदोलत सर्वेने पोतानुं कह्युं, पण पोताथी जूदु छे अळगु छे माटे असश्लेपित कह्यु हवे एनु रहस्य बतावे छे जे ए अशुद्ध व्यवहारना भेद भेदातर कर्या तेमा सद्भूत व्यवहारे "ज्ञानादि गुण परस्पर भिन्न" कृत्रिम रीते जमताए गवर्वीने कह्यु ते जीवथी भिन्न ज्ञा-

नादिक गुण निरपेक्षिपणे कह्या, अने स्वन्नाविक गुणनी अ-
पेक्षा न राखी, माटे ए न्नेद अन्नेद पक्षनो विरोधी ठे
अपेक्षिक नथी, ते कारणे मिथ्यात्वमा न्नळे ठे वळी अस-
द्भूत व्यवहारे " कपायात्मादि मनुष्योह देवोह " कह्यु
ते कपायोन आत्मा कह्यो वळी चार गति विपाकी कर्म,
गतिहेतुपणे परिणमता ग्रह्या तेने आत्मा कह्यो, तेणे जमने
जीव मान्यो, ते मिथ्यात्व ठे वळी सश्लेपित व्यवहारे,
"शरीर मम अह शरीर ' कह्यु जे गरीर तेज हु पोते जीव
वु वळी अह के० हु जीववु तेज गरीर एटले, आत्मबुद्धि
कायामा ग्रहण करी, ते मिथ्यात्व थयु, वळी असश्लेषित
व्यवहारे पुत्रकलत्रादिने मारु कह्यु तेणे पुत्र स्त्री धन आदि
वस्तु पोतानो मानी, ते वचन सापेक्ष न होय तो मिथ्या-
त्वमा न्नळे ते समजवाने कारणे श्रद्धा शुद्ध करवाना हे-
तुए नीचे गास्त्रोनी साक्षी लखीए ठीए जसविजयजीकृत
समाधि गतके –

दुहा.

बाहिर अतर परम ए, आतम परिणति तीन ॥
देहादिक आतम न्नरम, बाहिरातम बहु दीन ॥ ७ ॥
नरदेहादिक देखिके, आतम ज्ञाने हीन ॥
इंद्रियबल बहिरातमा, अहकार मन लीन ॥ ए ॥
अरि पुत्रादिक कल्पना, देहातम अन्निमान ॥
निजपर तनु सबध मति, ताको होत्त निदान ॥ ११ ॥
देहादिक आतम भ्रमी, कल्पे निज परन्नाव ॥

आतमज्ञानी जग लहे, केवळ शुद्ध स्वभाव ॥ १२ ॥
स्वपर विकल्पे वासना, होत अविद्या रूप ॥
तातें वहुरि विकल्पमय, भरम जाल अंध कूप ॥ १३ ॥
पुत्रादिककी कल्पना, देहातम भ्रम भूल ॥
ताकू जड़ सपति कहे, हहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥
या भ्रम मति अव छांडि दो, देखो अंतर दृष्टि ॥
मोह दृष्टि जो छोडीये, प्रगटे निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥
रूपादिक को देखिवो, कहन कहावन कूट ॥
इन्द्रिय जोगादिक वले, ए सव लूटा लूट ॥ १६ ॥
रूपेके भ्रम सीपमे, ज्यू जड करे प्रयास ॥
देहातम भ्रमते भयो, त्यू तुज कूट अभ्यास ॥ १७ ॥

हवे नेमीदास कृत अध्यात्म सार ग्रंथे –

दुहो ॥

पुद्‌गलसें रातो रहे, जाणे एह निधान ॥
तस लाभे लोभ्यो रहे, वहिरातम अभिधान ॥ ५ ॥

हवे आनदघनजीकृत चोवीशीमां सुमतीनाथजीना स्तवन मध्ये –

आतम बुद्धे कायादिक ग्रह्यो ॥ वहिरातम अघरूप सुज्ञानी॥
कायादिकनो साखी धर रह्यो, अतर आतम रुप ॥
सुज्ञानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

इत्यादि अनेक शास्त्रनी साक्षीए, उपर कहेला अशुद्ध व्यवहारना चारे भेद मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमा भळे छे तेना ग्राहकने वहिरात्मा कहीए ते पुरुष धर्म करवा

चाह, चारित्र लेइ क्रिया करे, व्यवहार नये निर्दोप देखाय पण समकित पामे नहीं, अने तेनी मुक्ति पण थाय नहीं कह्यु छे के –

विरया सावज्जाओ ॥ कषाय हीणा महव्वय धरांवि ॥
सम्मदिठ्ठि विहुणा ॥ कयावि मुरख न पावति ॥ १ ॥

ए गाथानो भाव विचारता उत्कृष्टा थइने फरे पण अशुद्ध व्यवहारी छे ज्यां सुधी कायाने जीव मानी रह्यो छे, जीव कायानी जदाइ जाणी नथी, त्या सुधी अशुद्ध व्यवहार टले नहीं एम सांभळी कोइ पूछे के ते शी रीते टले ? तेनो उत्तर–प्रथम सद्गुरुनी शोध करे तेने शुभोदय,कारण सद्गुरु मले, पण ते गुरु केवा छे ? तो कह्यु छे–समयसार नाटक ग्रंथे –

सवैया एकतीसा

ज्ञानके उजागर सहज सुखसागर,
सुगुण रतनागर वैरागरस भर्यो हे ॥
सरणकी रीत हरे मरणको भैन करे,
करनसो पीठ दे चरण अनुसर्यो हे ॥
धरमको मंडन भरमको विहंडन,
ज्यु परम नरम व्हे के ॥
करमसो लर्यो हे एसो मुनिराज भुय लोकमे,
विराजमान नीरखी बनारसी नमस्कार कर्यो हे ५॥

अर्थ –ज्ञान के उजागर के० आत्मज्ञान ज्योति निर्मळ थइ छे जेने वळी अनुत्तर भुवनमा सूर्योदय सरखो

प्रकाश थयो ठे जेने, तेनुं नाम ज्ञान उजागर कहीए. "सहज सुखसागर" के० स्वस्वरूपमां चेतन रमे त्या कोइ जातनी वाधा पीका वेदवा रूपे थती नथी वाधापीका परस्वन्नाव वृत्तिमां व्यापक पणे होय, अने अव्यापक पणे वर्त्ते त्या अव्यावाध सुख सागर स्वस्वन्नाव वृत्तिये प्रगटे. "सुगुण रत्नाकर" के० आत्माना अनता गुण ठे, ते गुणोनी खाण ते ए मुनिराज ठे वैरागरस न्नर्यो है के० त्यागरूप रस तो एक ज्ञानमांज रह्यो ठे, ते रसे, न्नरपुर ठे अंत करण जेनु एवा "सरणकी रीत हरे के० पार्श्वनाथजीने कमठे जळ वृष्टि आदि मोटा उपसर्ग कर्या, ते सरखा कदाच वैरन्नावे उपसर्ग कोइ तिर्यंच अथवा देवता करे तो पण न्नगवतीजीनु वचन–असज्झाइया देवा॥ इत्यादि संन्नारी चार निकायना देवताने स्मरे पण नहीं. अने उपद्रव टाळ एम कहे पण नहीं. जे मुनिराज ठे, ते तो वाह्यमां देवगुरुनु शरण करे ठे अने अतरमां पोतीका आत्मानु शरण करे ठे, ते सिवाय अन्य शरण करवानी जे रीत तेनो तो परिहार कर्यो ठे "मरणको न्ने न करे" के० जे अज्ञानी मिथ्यात्वी ठे ते कायाने जीव मानी तेनी साथे पोतापणु राखे ठे वळी पुत्र कलत्र धन्यादि वस्तु साथे स्नेह वधन दृढ ठे जेने ते पुरुषो मरणथी मरे पण साधु मुनिराजे तो ए सर्वे वस्तुने रोग जाणी पर मानी ठेमी ठे वळी कायाथी विरक्त चित्त ठे अने जाणे ठे के आत्मा ज्ञानादिक

गुणे करी भावप्राणधारी छे तेनो नाश त्रण कालमा थाय नहीं शाश्वतपणा माटे एम मरणादि भय छेदीने निर्भय थया छे " करनसो पीठ दे " के० पाच इन्द्रि अने छट्ठी नोइन्द्रि जे मन ए छनु नाम करण छे तेना विषय विकार-ने पूठ देइ विमुख थया छे एटले जे आत्मदर्शि थया, ते-मने विमुख कहेवा " चरण अनुसर्योहै " के० चारित्र ते चपळता रहित, स्थिरताना परिणाम अने आत्मस्वरूपमां एकत्वपणे रमण, तन्मयता स्वरूप विश्राति तत्वानुभव त-द्रूप चारित्र ग्रह्यो छे जेणे " धरमको मरूण " के० ए मु-निराज छे ते धर्म स्थम्भ छे, एमना आलंबन आधारे चतु-र्विध सघ धर्म प्रवृत्ति करे छे वळी उपदेश साभळी घणाने नि सकित थाय छे वळी गुरू महाराजा केवा छे ? के षट-दर्शन शास्त्रना जाण छे न्यायतर्कमा कुशळ छे अध्यात्ममा प्रवीणछे, सत्य भाषावे जेनी, पोते तरेछे, अने बीजाने तारेछे देहधारीछे पण अतर्वृत्ति जोगे देहातित भावने पाम्याछे ज्ञा-नध्यान जोगे आत्मा पुष्ट कर्यो छे जेणे, बाह्य अतर सर्व व-स्तुना जाण छे, पन्डितोनी पन्क्तिना अग्रेसर सर्वने पूजवा वादवा योग्य, भव्य जीवने ए मोक्षनो सार्थवाह छे वळी अतर्वृत्ति योगे अनुभव भुवनमा आत्मधर्मनी रचना मचा-णी छे जेने, तेमने धर्मको मन्न जाणवो " भरमको विह-रूण ज्यु के० भ्रमिकता जे विकलता अथवा शका कान्क्षा नेनो नाश कर्यो छे, जेम अधकारनो नाश कर्त्ता सूर्योदय तेम ए ज्ञानी जाणवा " परम नरम व्हे के करमसो

लर्यो है " के० वाह्यमा कायादि योगे पुद्गल प्रवृत्ति करवामां थाक्या माटे नरम कह्या, पण अनत वीर्यना धणी छे कर्म परिणाम राजा साथे युद्ध करीने पोताना आत्माना असख्याता प्रदेशरूप खेत्रथी मिथ्यात्वादि केटलीक कर्म प्रकृतिओने जेणे हणी छे, तेमनु नाम साधु मुनिराज छे " एसो मुनिराज ' के० उपर कह्या इत्यादि गुणे गुणी, ससार समुद्र तरवाने नाव समान " त्रूय लोकमे " के० अढी द्वीपमां विराजमान के० सदा विद्यमान होय छे " नीरखी वनारसी ' के० तेमने जोइ नीरखी एटले अतर्दृष्टि करी साधु गुण गवेख्या ते साधु नीरख्या ते गुणमय चेतनमूर्त्तिने वनारसीदास समयसार नाटक ग्रंथना कर्त्ता एवा जे श्रावक तेमणे " नमस्कार कर्यो है " के० हृदय कमळ उल्लासथी घणो प्रमोद छतां गुण रागे पचांग प्रणाम ग्रथ रचना मङ्गणमा मगळाचरणरूपे कर्यो छे इत्यादि गुणे साधु मुनिराजनी ओळखाण करवी, भ्रममां भूला पङवु नहीं रत्न साटे काच वोहोरवो नही आत्महेतु तो एजछे, तेमनां पासां सेवीए तो दु खनी परपराए चउगति ससारभ्रमण ते थकी छुटीए ए ज्ञानी गुरुराय आपणने उपदेश करे ते समयसार नाटक ग्रंथना मोक्ष द्वारे कह्यो छे –

सवैया एकतीसा.

भेद ज्ञान आरासो दुफारा करे ज्ञानी जीव,
आतम करम धारा भिन्न भिन्न चरचै ॥

अनुभौ अभ्यास लहे परम धरम गहे
करम भरमको खजानो खोलि खरचे ॥
योही मोख मुख ध्याव केवल निकट आवे
पूरन प्रकाश पावे पूरन के परचे ॥
भयो निरदोर याहि करनो न कछु और
एसो विश्वनाथ ताहि बनारसी अरचे ॥ १९७ ॥

अर्थ.--भेदज्ञान आरासो के० भेदज्ञानरूप कसोटीए करीने एटले लीक करीने ज्ञानी जीव " दुफारा करे " के० यथा दृष्टाते--जेम चोकसी लोको सोनानी परीक्षा कसोटीना पथ्थर उपर लीक करीने करेछे के एक तोलामां एक वाल वा बे वाल त्रांबुछे अथवा रुपुछे बाकीनु शुद्ध कंचन छे एम बे भाग जूदा चितवे ए दृष्टाते सम्यकज्ञानी आत्मा परीक्षा करेछे के पोतानी कायामा अतर्व्यापकपणे रहेलो पोतीको आत्मा ते द्रव्यथी त्रिकाल वृत्तिये अखरू अविनाशी छे वळी क्षेत्रथी असख्यात प्रदेशी छे काळथी अनादि अनत छे अने भावथी ज्ञान दर्शनादि अनत गुणमय उपयोगी छे साक्षात् सिद्ध परमात्मा ते पोतेज छे कर्म सयोगे कायामा वश्योछे कायामा परिणम्योछे पण कायाथी जूदो छे शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श ए पुद्गलना पर्यायछे तेने इंद्रियद्वारे सगाभीपणाना रूपणे करीने पोते अनुभवेछे, ए सर्वे पुद्गलनो अचेतन स्वभावछे अने अतर्व्यापकपणे अनुभववावाळो ते चेतनछे एम जीवनी अने पुद्गलनी भिन्नता एटले जू

दाङ ज्ञानरुप कसोटीये थाय, तेने नेदज्ञान कहीए "आतम करमधारा निन्न निन्न चरचे ' के० हवे आत्म-धाराने आत्मा थकी प्रगट थयेली अनुनव ज्ञानधारा तेने उपादेय जाणी ग्रही स्व स्वरूपे परिणमावे अने कर्मधारा के० कर्म थकी प्रगट थयेली ने काया वचन अने मन तेने हेय जाणीने तजे " अनुनो अन्यास लहे ' के० हवे त्यां शुद्धात्म स्वरूपनो अनुनव अन्यास परसग रहित पणा माटे उपयोगनी विशुद्धिये वृद्धिपणु पामे, " परम धरम गहै " कहेतां इहां क्षपक श्रेणी मांके अने शुक्लध्यानना पेहेला पायाना ध्याता थाय त्यां परम नाम उत्कृष्ट धर्म ग्रहे " करम नरमको खजानो खोली खरचे " के० इहा नमिकतारुप मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना परमाणुं दळनो अनतो खजानो आत्म प्रदेशे रहेलो तेने खोली एटले उदयमां लावीने खरचे एटले शुद्ध परिणतिना लग्न कार्यमा दशमा गुणठाणा अंते खरचे एटले विखेरी नाखे निर्जरे त्यां मोहनी कर्मनी सत्ता आत्म प्रदेशथी छुटे. वळी रागद्वेप अशुद्ध परिणतिनो पण छेद थाय, त्या यथाख्यात चारित्र क्षीण मोह गुणठाणे पामे इहां शुद्ध परिणतिनुं पाणीग्रहण पण थाय, ओही के० इहां मोक्ष के० मोक्षने एटले कर्मथी मूकाववाने " मुख ध्यावे ' के० मुख्य वृत्तिये शुक्ल ध्याननो बीजो पायो ध्यावे, त्यां ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय अने अतराय ए त्रण कर्मनो सत्ताथी उछेद थाय, त्यां " केवळ निकट आवे ' के० केवळज्ञान

साधन प्रवृत्ति कहीए इहां परभावनो त्याग कह्यो तेने समजवो एटले पोताथी अन्य जे बीजा द्रव्यनो स्वभाव तेज परभाव त्याग कह्यो एटले जीवने परभावनो अनादि सबंध परपराए चाल्यो आवे छे, ते छुटयो एटले ज्ञानावरणादि आठ मूळ कर्म प्रकृति अने उत्तर एकसो अठावन प्रकृति मिश्रित अनादि सबधे चेतन हतो ते कर्म खजानो खाली कर्यो एवी शुद्धता कला प्रगटी तेनु नाम साधन शुद्ध प्रवृत्ति कहीए

हवे उपर कह्यो जे वस्तुप्रवृत्तिनो पेहेलो भेद ते आवरणना अभावे वस्तु स्वभावनु प्रवर्त्तन अनता काळ सुधी प्रवर्त्ते ते वस्तु स्वभाव साध्यमा लाववा रूप साधन तेनेज लोकोत्तर साधन कहीए

हवे बीजो भेद लोकिक साधन ते स्याद्वाद दृष्टि रहित अने मिथ्याभिनिवेष सहित तेने लौकिक साधन कहीए हवे त्रीजो भेद कुपरावचनीक एटले सूत्र सिद्धात अनुसार विना जे साधन करवु करावबु उपदेश करवो ते सर्वने कुपरावचनीक साधन प्रवृत्ति कहीए, ए साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद कह्या हवे लौकिक प्रवृत्ति ते लोकना स्वस्वदेश अनुकुळ चाले प्रवर्त्ते वळी आ जीविकानो अर्थी, आवता भवे पुन्यनो अर्थी, जशकीर्त्तिनो अर्थी पूजावा मनावानो अर्थी पोतीको मत स्थापन करवो, चलाववो तेनो अर्थी इत्यादि सर्वने लौकिक प्रवृत्ति व्यवहार कहीए, एम व्यवहार नयना भेद जाणवा ओळखाण करवी तथा द्वादशसार नयचक्रमा

व्यवहार नयना चार भेद कह्या छे तथा शात नयचक्र सारमां व्यवहार नयना सो भेद कह्या छे ते शास्त्र रहस्यना जाण जीवने ए ग्रथोथी सद्गुरु गीतार्थ बहुश्रुत भावने पामेला तेमनी पासे विनय पूर्वक जाणवा ए भेद विशेषावश्यकने अनुसारे कह्या

हवे द्रव्यगुण पर्यायना रासना अनुसारे कहे छे. सातमी ढाळे–चक्र उपन्यु साररे ॥ ए देशी ॥

सद्भूत व्यवहार ॥ भेद प्रथमतीहां ॥
धर्मधर्मिना भेदथी ए ॥ १ ॥
शुद्ध अशुद्ध द्विभेद शुद्धअशूद्धना
तेह अरथना भेदथी ए ॥ २ ॥

अर्थ -हवे नय समीपे उपनय कहेछे तेमां सद्भूत व्यवहार ते उपनयनो प्रथम भेद छे, ते धर्म अने धर्मीना भेद देखाडवाथी होय ॥१॥ तेना बे भेद एक शुद्ध सद्भूत व्यवहार ते शुद्ध द्रव्य परद्रव्य सयोगादि अपेक्षा रहित पणा माटे कहीए ते निज स्वभावे निर्मळानंदी उपयोगी ज्ञानी इत्यादि प्रवृत्ति भेदे भेदविवक्षा करे तेथी थाय अने बीजो भेद अशुद्ध सद्भूत व्यवहार ते अशुद्ध द्रव्य पर संगी पणा माटे अथवा आवरण योगे कहीए ते उपाधि संयोगे निज धर्म प्रवृत्ति भेदे भेद विवक्षा करे तेथी थाय

॥ ढाळ ॥

जेम जग केवल ज्ञान ॥ आतमद्रव्यनुं ॥

मइनाणादिक तेहनुं ए ॥ ३ ॥
गुण पर्याय स्वन्नाव ॥ कारकतन्मनो ॥
अरथ न्नेद छे एहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ –जेम जगतमा आत्मद्रव्यनु केवळज्ञान सूष्टिए प्रयोग करीए ते शुद्ध सद्नूत व्यवहार थयो, वळी मति ज्ञानादि आत्माना गुण एम बोलीए ते अशुद्ध सद्नूत व्यवहार थयो ॥३॥ गुण गुणीनो पर्याय पर्यायवतनो स्वन्नाव स्वन्नाववतनो कारक, अने तन्मय के० कारकी तेनो जे एक द्रव्यानु गत न्नेद बोलावीए ते सर्प उपनयनो अर्थ जाणवो घटस्यरूपं घटस्यरक्तता, घटस्यस्वन्नाव, मृदाघटो निष्पादित इत्यादि न्नेदे अर्थ प्रयोग जाणवो ॥ ४ ॥

असद्नूत व्यवहार ॥ परपरिणति न्नले ॥
द्रव्यादिक उपचारथीए ॥ ५ ॥
द्रव्यें द्रव्य उपचार ॥ पुद्गल जीवने ॥
जिम कहियें जिन आगम ए ॥ ६ ॥
काली लेस्या न्नाव ॥ श्याम गुणे न्नलो ॥
गुण उपचार गुणे कह्योए ॥ ७ ॥
पर्याय पर्याय ॥ उपचारें वली ॥
हय गय खध यथा कह्याए ॥ ८ ॥
द्रव्ये गुण उपचार ॥ वली पर्यायनो ॥
गोर देह हु बोलतांए ॥ ९ ॥

गुणे द्रव्य उपचार ॥ पर्याय द्रव्यनुं ॥
गौर देह जिम आतमाए ॥ १० ॥
गुण पजाव उपचार ॥ गुणनो पजावे ॥
जिम मति तनु तनु मति गुणोए ॥ ११ ॥

अर्थः-परद्रव्यनी परिणति न्नळे थके द्रव्यादिकने नवविध उपचारथी कहीए ते असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ५ ॥ हवे द्रव्ये द्रव्यनो उपचार ते जीन आगममां खीरनीरने दृष्टांते जीवने अनादि सबंधे पुद्गल मिश्रित कह्यो छे. माटे जीवने पुद्गल कहीए ए जीव द्रव्यें पुद्गल द्रव्यनो उपचार थयो ए पेहेलो न्नेद ॥ ६ ॥ हवे गुणे गुणोपचार ते अरूपी उपयोगी अलेशी आत्माने कृष्णादि छ लेश्यावंत कहीए छीए ते आतम गुणमां पुद्गल गुण जे लेश्या परिणाम तेनो आरोप थयो ए बीजो न्नेद ॥७॥ हवे पर्याये पर्यायनो उपचार ते अमूर्त्त, अरूपी आत्माने घोमा हाथी आदि जे पुद्गल स्कध तेने जीव पर्याय कहीए छीए ते पर्याय पुद्गल रूपछे तेने जीव पर्याय कहेवा ए उपचार समजवो ए त्रीजो न्नेद ॥ ८ ॥ हवे द्रव्यें गुणोपचार ते अरूपी आत्मा छे ते छतां हुं गौरवर्णे हुं एम बोलीए ते हुं शब्दे आत्मा अने गौर ते पुद्गलनो गुण जे धोळो वर्ण तेनो उपचार जीव द्रव्यमा कर्यो, ए चोथो न्नेद थयो. हवे द्रव्ये पर्यायोपचार ते देहातित जीवने शरीरी कहेवो एटले शरीर छे ते पुद्गल द्रव्य पर्याय छे

तेनो उपचार जीव द्रव्यमा थयो ए पांचमो भेद ॥ ए ॥ हवे गुणे द्रव्योपचार ते देह गौर देखायछे ते आत्मा एम गौरपणो उद्देशीने आत्मविधान करीए एटले ए गौरतारूप पुद्गलनो गुण तेमां आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए छठो भेद हवे पर्याये द्रव्योपचार ते जेम देहने आत्मा कहीए एटले देह छे ते पुद्गल पर्याय छे तेमा आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए सातमो भेद ॥ १० ॥ हवे गुणे पर्यायोपचार ते जेम मतिज्ञान गुण छे ते इंद्रिनो इंद्रि सयोग छे माटे शरीरज कहीए इहा मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीर रूप पुद्गलपर्यायनो उपचार कर्यो ए आठमो भेद. हवे पर्याये गुणोपचार ते जे शरीर छे तेज मतिज्ञान गुण छे तो इहा शरीररूप पुद्गलपर्यायने विषे मतिज्ञान आत्मगुणनो उपचार थयो ए नवमो भेद एम उपचारे असद्भूत व्यवहार नव भेदे कह्यो ॥ ११ ॥

असद्भूत व्यवहार ॥ एम उपचारथी ॥
एह त्रिविध हवे साभलोए ॥ १२ ॥
असद्भूत निजजाति ॥ जिम परमाणुउं ॥
बहु प्रदेशी भाषियेंए ॥ १३ ॥
तेह विजाति जाणो ॥ जिम मूरत मति ॥
मूरत द्रव्ये उपनीए ॥ १४ ॥
असद्भूत दोउ भात ॥ जीव अजीवने ॥
विषय ज्ञान जिम भाषियेए ॥ १५ ॥

उपचरितासद्भूत करियें उपचारो ॥
भेद एक उपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थः–असद्भूत व्यवहार उपर नव भेदे कह्यो ते प्रमाणे उपचारे समजवो हवे एना त्रण भेद कहे छे ते हे भव्य प्राणि तमे सांभळो ॥ १२ ॥ स्वजाति असद्भूत व्यवहारे जेम पुद्गल परमाणु छे, ते बहु प्रदेशी थवानी जाति छे माटे ते एक परमाणुने पण बहु प्रदेशी उपचारे कहीए ए पेहेलो भेद ॥ १३ ॥ हवे विजाति असद्भूत व्यवहारे जेम मतिज्ञानने मूर्त्तिवंत कहीए एटले ज्ञान छे ते आत्मगुण छे तेने विषे मूर्त्तिवंत जे पुद्गलनो गुण तेनो आरोप थयो ए बीजो भेद ॥ १४ ॥ स्वजाति विजाति असद्भूत व्यवहार, जेम जीवाजीव विषय ज्ञान कहीए. इहां जीव छे ते ज्ञाननी स्वजाति छे अने अजीव छे ते ज्ञाननी विजाति छे ए बेहुनो विषय विषयी भाव नामे उपचरित संबंध छे ए त्रीजो भेद ॥ १५ ॥ एम उपचरित असद्भूत व्यवहारे जीवद्रव्य, जीवगुण, जीवपर्याय, पुद्गलद्रव्य, पुद्गलगुण, पूद्गलपर्याय एम ए बे वस्तुना छ भेद कह्या, ते जीवमां पुद्गलनो अथवा पुद्गलमां जीवनो जेम घटे तेम एकनो उपचार करीए ए रहस्य समजवो.१६

तेह स्वजाति जाणोरे ॥ हुं पुत्रादिक ॥
पुत्रादिक छे माहराए ॥ १७ ॥
विजातिथी ते जाणोरे ॥ वस्त्रादिक मुज ॥

गढदेशादिक जनयथीए ॥ १८ ॥
उपनय जाण्या एम ॥ अध्यात्मनय ॥
कही परीक्षा जग लहोए ॥ १९ ॥

अर्थ–स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणो ओळखो, सवधी कल्पन जे हु पुत्रादिक इहा हु मारा एवु जे पुत्रादिकने विषे कहेवु एटले पुत्रादिकनें शरीर आत्म पर्याय रूपे स्वजाति छे पण कल्पित छे अन्य छे तेने उपचारे पोताना कहीए ते पेहेलो भेद ॥ १७ ॥ हवे विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार ते वस्त्र आभरणादि मारां कहेवा एटले वस्त्र आभरणादि वस्तु जीवने परछे वळी विजाति छे स्वजात नथी, तेने उपचारे पोताना कहीए ए बीजो भेद वळी स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार ते गढ, नग्र, देश, राज्य मारु छे के० गढ, देश, गाम, नग्र, प्रमुखने विषे जीव छे ते स्वजाति छे अने देशादिक राज्यऋद्धि प्रमुख छे, ते विजाति छे ए बेहु वस्तु पोताथी अन्य छे तेनो पोतापणे उपचार ए त्रीजो भेद ॥ १८ ॥ ए रीते उपनये त्रण त्रण कह्या तेमा पुत्रादिक, वस्त्र, गढ, देशादिक वस्तु उपचारे पोतानी कही पण वस्तुगते पर छे पोतानो तो एक शुद्ध चेतन साक्षात् परमात्मा सरखो चिदानंद ज्योतिरूप अरूपी, अमूर्त्ति, अचळ, अखंड, अव्याबाधानंदमयी चिन्ह मूर्त्ति रूप छे तेनी ओळखाण जाणपणु अध्यात्म नयरूपे

परीक्षा करीए तो शुद्ध निश्चयनय, मूळ स्वरूपे प्रगटे तद्रूप जश पामीए ॥ १ए ॥ ढाल सातमी संपूर्ण

हवे आठमी ढाल कहे छे

॥ जाय तुज विण घडीरे छ मास ॥ ए देशी ॥

दोय मूल नय जाषीयारे ॥ निश्चयने व्यवहार ॥
निश्चय द्विविध कह्युंरे ॥ शुद्ध अशुद्ध प्रकाररे ॥ १ ॥
प्राणी परखो आगम जाव ॥ ए आंकणी.

अर्थः—इहां अध्यात्म नय जाषाए तो आगम केहेतां सूत्र सिद्धांतनी मांहेली कोरे मूळ बे नय प्ररूप्यां छे निश्चय नय अने व्यवहार नय, तेमां निश्चय नयना बे जेद कह्याछे शुद्ध निश्चयनय अने अशुद्ध निश्चयनय. हवे तेनो अर्थ साजळो हे जव्य प्राणी! आत्महित अर्थे सूत्र साक्षीए, गुरू वचने, श्रवणयोगे, स्थिर मने हेयज्ञेय उपादेय बुद्धिए शुद्ध द्रव्यास्तिक नय उपयोग लगावी पर्यायास्तिक नय शुद्ध साधन रूप व्यवहार जेळी अशुद्ध निश्चय नय पलटावीने शुद्ध निश्चय नय रूपे थइए त्यां स्वस्वजावे सहज अकृत्रिम अनुजव प्रगटे ते अनुजव ज्ञानने अनता चक्षु छे ते चक्षु ज्योतिए अरूपी आत्मानो मूळ स्वजाव जोइ परखो ए आगम जाव कह्यो ॥ १ ॥

जीव केवलादिक यथारे ॥ शुद्ध विषय निरुपाधि
मइनाणादिक आतमारे ॥ अशुद्ध तेह सोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ–केवळनाण केवळदर्शन आदि अनंता गुण पर्याय रूप यथायोग्य शुद्ध विषयवत उपाधि संयोगादि दूषण रहितपणे तेने शुद्ध निश्चयनय कहिए अने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन.पर्यवज्ञान ए चार ज्ञान अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मली सात भेदे ज्ञानवत आत्मा ते सर्वे सोपाधिक छे परसयोग सगीने सावरण भावछे तेने अशुद्ध निश्चय नय कहीए ए निश्चयनयना बे भेद कह्या. ॥२॥

दोइ भेद व्यवहारनाजी ॥ सद्भूता सद्भूत ॥
एक विषय सद्भूतछेजी ॥ पर विषया सद्-
भूतरे ॥ प्रा० ॥ ३॥

अर्थ–हवे व्यवहारनयना बे भेद कहे छे सद्भूत अने असद्भूत तेमा एक निज द्रव्याश्रितवर्त्ति भेदज्ञानी परवस्तु विभाग व्हेंचण रूप ते सद्भूत व्यवहार नामे पेहेलो भेद कह्यो हवे बीजो भेद ते परवस्तुनो विषयी एटले मन वचन अने काया ए त्रणे जोगे प्रवर्त्ते पांच इंद्रि त्रण बळ श्वासोश्वास अने आउख ए दश द्रव्य प्राणने जीव समजे पांच इंद्रिना त्रेविस विषय सेवे तेमां रागद्वेष भले तेने असद्भूत व्यवहार कहीए ए बे भेद व्यवहार नयना कह्या ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पेहेलो दोय प्रकार ॥
सोपाधिक गुण गुणी भेदेरे ॥ जे अनिमित्त
उपचाररे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

अर्थ.–हवे सद्भूत व्यवहारना बे भेद कहे छे एक उपचरित सद्भूत अने बीजो अनुपचरित सद्भूत तेमां प्रथम भेद ते सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडे जेम जीवस्य मतिज्ञानं ए उपाधि तेहीज इहां उपचरित सद्भूतनो प्रथम भेद ते कह्यो.

निरुपाधिक गुण गुणी भेदेरे॥ अनुपचरित सद्भूत॥
केवळज्ञानादिक गुणारे ॥ आतमना अद्भूतरे ॥
प्रा० ॥ ५ ॥

अर्थ.–हवे बीजो भेद निरूपाधिक गुण गुणी भेदे जाणवो यथा जीवस्य केवल ज्ञान, केवळ दर्शन एटले आत्मानो वस्तु गते अनंतो धर्मछे, ते धर्मने अद्भूत कह्यो ते अलख, अगोचर, अगम, अनुपम, अव्याबाह, अविनाशी, अमल, विमल, ज्योतिवत इत्यादि जे अनंतु अद्भूत स्वरूपछे तेमां कशोए उपचार उपाधि नथी तेने अनुपचरित सद्भूतनो बीजो भेद कह्यो ॥ ५ ॥

असद्भूत व्यवहारनाजी ॥ एमज भेदछे दोय ॥
प्रथम असंश्लेषित योगेंजी ॥ देवदत्त धन जोयरे॥
प्रा० ॥ ६ ॥

अर्थ.–हवे असद्भूत व्यवहारना उपर कह्या तेज रीते बे भेद कहेछे. एक उपचरित असद्भूत अने बीजो अनुपचरित असद्भूत. तेमा प्रथम भेद ते असंश्लेषित योगे कल्पित संबधे होय. जेम देवदत्तनु धन, इहां धन

ते देवदत्तने सवध स्वस्वामित्व भावरूप कल्पित छे, ते माटे उपचार थयो वळी देवदत्त अने धन ते बेहु एक द्रव्य जाति नथी ते माटे असद्भूत एम भावना करवी. ते उपचरित असद्भूतनो पेहलो भेद ते कह्यो ॥ ६ ॥

संश्लेषित योगें बीजारे ॥ जेम आतमनु देह ॥
नय उपनय नयचक्रमा रे ॥ कह्या मूल नय एहरे ॥
प्रा० ॥ ७ ॥

अर्थ –हवे बीजो भेद अनुपचरित असद्भूत व्यवहार ते सश्लेषित योगे कर्म सवधे जाणवो जेम आत्मानु शरीर एटले आत्मानो अने शरीरनो सवध कोइ धन सवधनी पेरे कल्पित नथी वीपरित भावनाए निवर्त्ते नहीं जाव जीव सवधीछे ते माटे ए अनुपचरित अने भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो ए रीते नय तथा उपनय ए बेहु नयचक्रमां मूल नय सहित कह्याछे. ॥ ७ ॥

ए व्यवहारनय द्रव्य गुण पर्यायना रासना अनुसारे कह्यो हवे आगमसारमा व्यवहार नयना छ भेद कह्या छे ते कहे छे तेमां पेहेलो भेद शुद्ध व्यवहार, ते उपयोगी पणे जाणीए वळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्चय नय एकत्व रूपछे पण उपदेश योगे भव्य जीवने समजावना जूदा जूदा भेद कह्या वळी आत्माने शुद्ध करवो आगला गुणठाणानो छोडवो अने उपरना गुणठाणानो ग्रहवो तेने शुद्ध व्यवहार कहीए

हवे बीजो अशुद्ध व्यवहार ते जीवमा मिथ्यात्व अ-

ज्ञान रागद्वेष मोहादि लाग्या छे तेथी अशुद्धपणुं छे, तेनेज अशुद्ध व्यवहार कहीए.

हवे त्रीजो भेद शुभ व्यवहार ते पुन्यनुं कारण नवां शुभ कर्म लेवानो हेतु पुन्यना अर्थीने मोक्ष मार्गथी विमुख तप व्रत, नियम कष्ट आदें द्रव्य क्रियानो कर्त्ता विष, गरल, अन्यो अन्य ए त्रण अनुष्टाननी मुख्यता इहां प्राये होय. इत्या दिकने शुभ व्यवहार कहीए कह्युं छे के.—

नथ्थि मग्गो मुख्खो, वव्वहारो पुन्न कारणो वुत्तो ॥
पढमो संवर रुवो, आसवहे उतओ बीउं ॥ ७ ॥

अर्थ.–निश्चय नयनो मार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुं कारण छे एटले मोक्ष छे. अने व्यवहार क्रिया नय ते पुन्यनु कारण कह्यो पेहेलो निश्चय नय संवर छे अने निश्चय सवर निश्चय नय ते एक ज छे जूदा नथी बीजो व्यवहार नय ते आश्रव नवां कर्म लेवानो हेतु छे. एटले शुभ पुन्य कर्मनो आश्रव थाय छे अने अशुभ व्यवहारे अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे ॥ ७ ॥

हवे चोथो अशुभ व्यवहार ते यतना रहित थकां पर प्राण हणवा ते प्राणातिपात ॥ १ ॥ असत्य वचनीक ते मृषावाद ॥ २ ॥ माग्या विना पर वस्तु लेवी ते अदत्ता दान ॥ ३ ॥ स्त्री पुरुष संयोग वेद विषयनु सेववुं ते मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह रक्षण करवु तेमां मूर्च्छित थवुं ते परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध करवो ॥६॥ मान मद मोटाइ करवी ॥७॥ कपट केळववुं ते माया ॥ ८ ॥ लोभमां लाग्या रहेवुं ॥९॥

अनुकुळनो स्नेह ते राग ॥१०॥ प्रतिकुळनो खेद ईर्ष्या ते द्वेष ॥ ११ ॥ लढवु वढवुं युद्ध करवु ते कलह ॥ १२ ॥ कोईने ठतु अठतु कलकनु देवु ते अन्याख्यान ॥१३॥ एकने वीजानी चामी करवी ते पैशुन्य ॥ १४ ॥ शाता वेदनीयमां रीझ राजीपो, अशाता वेदनीयमां कुराजीपो ते रति अरति ॥ १५ ॥ पारकी निंदा करवी ते परपरिवाद ॥ १६ ॥ कपट साथे जूतु वोलवु ते माया मृषावाद ॥ १७ ॥ अजाणपणे वीपरित श्रद्धा ते मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ एम अढारे पापस्थानकने सेववां वळी ङगालादिक पांच कर्म, दतादिक पाच वाणिज्य, यत्रादिक पाच सामान्य ए पंदर कर्मादान ते पण पापना दातार वे, कह्यु वे वंदित्ता सूत्रेः—

इंगालि वणसामी, जाडी फोमी सुवज्जए कम्मं
वाणिज्जं चेवय दंत, लख्खरस केस विस विसयं ॥
एवं खु जत पिल्लण, कम्मं निल्लंगणं च दवदाण ॥
सरदह तलाय सोस, असइ पोसंच वजिज्जा ॥२३॥

ए पदर कर्मादान वे गाथाथी जाणवा, वळी रात्रि जोजन करवु, अजदय अनत कायनु जदण करवु, तथा अन्यदर्शनीनो सस्तव–परिचय, प्रशसा करवी वळी वासी, वोळो, द्विदळ, अणगळ पाणी, इत्यादिकनु जदण आदि करवु ते सर्वने अशुज व्यवहार कह्यो

हवे पाचमो उपचरित व्यवहार ते जेटलो संयोगिक जावने वस्तु आत्माथी जूदी वे पण जीवें-मिथ्यात्व अज्ञा-

नपणे आपणी करी जाणी छे ते परवस्तुनो पोतापणे उपचार तेज उपचरित व्यवहार कह्यो हवे छठ्ठो अनुपचरित व्यवहार ते शरीरादि पांच इंद्रि मन वचन ते परवस्तु यद्यपि जीवथी जूदी छे तोपण परिणामिक भावे लोळीपणुं एकठा मळी रह्यु छे एम अपेक्षा सहित तेने आपणी करी जाणे, तेने अनुपचरित व्यवहार कह्यो ए व्यवहार नयना छ भेद आगमसारना अनुसारे कह्या इत्यादि व्यवहारनयनी उंळखाण जाणपणुं करवु प्रवर्त्तवुं, तेथी धर्म पामीए तेनो परमार्थ भेद ज्ञान जोग छे, तेनी हवे विविक्षा करे छे

व्हेंचणरूप व्यवहारे जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य, जीव गुण, पुद्गलगुण, जीवपर्याय, पुद्गलपर्याय, एम भेद व्हेंची जूदा जूदा करे तेथी वस्तु उंळखाय, स्वपर समजाय त्यारे धर्म पोताना स्वरूपमां समजे पछी तेमां प्रवर्त्ते ते प्रवर्त्तन व्यवहार तेथी मिथ्यात्व टळे तेनी साथे अशुद्ध व्यवहारने छोडे तीहां शुद्ध व्यवहार आवे वळी विशुद्ध ज्ञान आवे ते वस्तुनी शुद्ध परिणति देखाडे ते वस्तुगत शुद्ध व्यवहार पछी वस्तु धर्म शुद्ध करवापणे साधन पामे. ते साधन शुद्ध व्यवहार तेमां पूर्वकृत कर्मनी उदयिकता आवे ते उपचरित व्यवहार तेमां व्यापकपणुं न करे अने रूपातित ध्याननो ध्याता थाय ते अनुपचरित व्यवहार एम व्यवहारनी शैलिये रूपातित, योगातित जे सिद्ध ते रूपें पोते थाय, ते व्यवहार समकित धर्म प्रवर्तनमां अने लौकिक साधन तथा कुपरावचनीक साधन तथा लोकिक प्र-

तृतिए मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमा ठे वळी अशुद्ध व्यवहारना भेद सद्भूत, असद्भूत, सश्लेषित असश्लेषित पूर्वे कह्या ते पण मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमां ठे ए भेद नय चक्रसारना अनुसारे कह्या तेनो ए परमार्थ समजवो हवे द्रव्यगुण पर्यायना रासना अनुसारे भेद कह्या तेने ठसाववाने माटे पुनरपि भावार्थ कहे ठे.

एक निज चेतन धर्म प्रवर्तन परद्रव्य संयोगादि अपेक्षा रहितपणे ते सद्भूत व्यवहार केवळज्ञानी आत्मा ते शुद्ध सद्भूत मतिज्ञानादि आत्मा ते अशुद्ध सद्भूत, गुणपर्याय स्वभाव तन्मयी एक द्रव्यानुगत भेद बोलीए ते सद्भूतनो भेद अर्थ ठे, परद्रव्यनी परिणति निज द्रव्यमां भळे तिहां असद्भूत व्यवहार जाणीए ते असद्भूत व्यवहारनो नव प्रकारे उपचार जीव पुद्गल योगे थाय. द्रव्ये द्रव्योपचार, ॥१॥ गुणेगुणोपचार, ॥ २ ॥ पर्यायेपर्यायोपचार ॥ ३ ॥ द्रव्येगुणोपचार ॥ ४ ॥ द्रव्ये पर्यायोपचार ॥ ५ ॥ गुणेद्रव्योपचार ॥ ६ ॥ पर्यायेद्रव्योपचार ॥ ७ ॥ गुणेपर्यायोपचार ॥ ८ ॥ पर्यायेगुणोपचार ॥ ९ ॥ एम जीवनो पुद्गलमा अने पुद्गलनो जीवमा जेम घटे तेम एकनो उपचार करीए तेथी समजवामा आवे के उपचारे पोतानी वस्तु मानीए ठीए पण पोतानी नथी परवस्तु परपणे ठे अने निजवस्तु निजपणे ठे एम उपचरित व्यवहारनु ज्ञान थता स्वपर भिन्नता थाय चेतन अचेतन मिश्रित ठे ते जूदो देखाय जडसत्ता, चेतनसत्ता जूदी जूदी समजाय

त्यां, मिथ्यात्वनो नाश थाय. अने समकितनी प्राप्ति थाय अनुक्रमे मुक्ति पण थाय वळी विभाग पर्याय जे विभाव पर्याय समळता योगे जीवादि द्रव्यमां छे ते उपचारे मानीए पण वस्तुए नहीं वळी मति आदि ज्ञान आत्मानां कहेवां ते उपचारे कहीए वस्तुगते केवळज्ञानी छे वळी ज्ञाननो स्वपर विषय ते पण उपचार छे वस्तुगते निजविषयी स्वअनुभवी छे दृष्टांत:--जेम अरीसामां प्रतिबिंब अन्यनो पडे छे पण कांइ अरीसो अन्यमां पेसतो नथी अरीसामां अन्य प्रतिबिंबित थयु ते उपचार सरखुं छे वस्तुयें नथी तेने उपचार कहीए वळी पुत्रादि वस्तु छे ते उपचारे पोतानी मानीए वस्त्रादि वस्तु ते उपचारे पोतानी मानीए गढ, देश, राज्यऋद्धि ते उपचारे पोतानां कहीए सर्वे सयोगिक भावे मळ्युं छे ते वियोगे नाश थशे इत्यादि वस्तु घणी छे तेनो जेटलो सबध ते उपचार एम आत्माने ओळखीये त्यारे समजवामां आवे माटे हे भव्यजीवो! तमे आत्माने ओळखो तो तमारुं चेतनपणु तमारे खप लागे. अचेतनमां चेतनपणानी बुद्धि छे, ते टळी जाय तद्रूप जश पामो.

वळी आगमनी मांहे मूळ निश्चय अने व्यवहार बे नय प्ररूप्या छे तेमां निश्चय नयना बे प्रकार कह्या छे, जीवमां केवळज्ञानादि अनता गुण पर्यायनी अभेदता ते शुद्ध निश्चयनय वळी मतिज्ञानादिकने आत्मा कहेवो ते अशुद्ध निश्चय नय ए बे भेद निश्चयना कह्या हवे व्यवहार नयना

वे न्नेद कहे ठे. एक सदूनूत अने वीजो असदूनूत तेमां पर सग रहित उपयोगे तो निजद्रव्यगत विषयी नाव ते सदूनूत, परद्रव्य सयोगे पर विषयता ते असदूनूत व्यवहार, तेमा सदूनूतना वे न्नेद एक उपचरित अने वीजो अनुपचरित तेमा पहेलो न्नेद ते " जीवस्यमतिज्ञानं " एटले उपाधि योग जीवगुण कहीए ते उपचरित सदूनूतनो पेहेलो न्नेद हवे वीजो न्नेद ते "जीवस्य केवलज्ञानं " केवळ दर्शन एटले जेमा उपाधि नथी ते गुण आत्मानो ठे एम कहेवु ते अनुपचरित सदूनूत ए वे न्नेद सदूनूतना कह्या तेज रीते असदूनूतना वे न्नेद कहे ठे

एक उपचरित असदूनूत, वीजो अनुपचरित असदूनूत तेमां पेहेलो न्नेद ते असंश्लेषित योगे कल्पित सवधे होय एटले धनादि वस्तु पोतानी कहेवी ते उपचरित अने न्निन्न विषय माटे असदूनूत हवे वीजो न्नेद ते सश्लेषित योगे कहीए जेम आत्मानु शरीर ते कोइ आयुष्य वता वोरूयु ठुटे नहीं माटे अनुपचरित, अने न्निन्न विषय माटे असदूनूत ए वीजो न्नेद कह्यो एम दृष्टि पसारीने जुए तो जीवस्वरुप हाथमा आवे पण रूपी नथी ते देखाशीए ज्या ज्ञाननी मुख्यता ठे त्यां व्यवहारनी गुणता ठेज एटले उपाधिना टाळनार विशुद्धिनो कर्त्ता ज्ञान योग ठे माटे जे ज्ञानी पुरुषो ठे, तेतो एक ज्ञानमाज निश्चय अने व्यवहार वेउ नय समजे ठे एटले न्नेद ज्ञान ठे ते शुद्ध व्यवहार ठे अने अन्नेद ज्ञान ठे ते शुद्ध निश्च-

थठे.अने ज्ञान रहित व्यवहार कहीए ते मिथ्यात्वधर्म प्रवर्त्तनमां छे ए व्यवहार नय कह्यो तेमां भेदज्ञान योग छतां समकित धर्म प्रवर्त्तन कहीए अने अभेद ज्ञान योगे निश्चय धर्म प्रवर्त्तन कहीए तेनी मुक्ति कहीए अभेद ज्ञानछे ते कार्य रूप छे अने भेद ज्ञान छे ते कारणरूप छे. भेदज्ञानना अभावे जे साधन करवु तेने अकारण कहीए.

हवे कल्प व्यवहार अने ज्ञान व्यवहार ए बे भेद कहेछे. ए बे व्यवहार ग्राही तेज साधु एटले कल्प छे ते व्यवहारनयनो अपेक्षी छे अने ज्ञान छे ते निश्चयनयनो अपेक्षी छे ए बे भेद ते साधुना आचार कहीए तेमां कल्प छे ते बाह्य आचारी छे अने ज्ञान छे ते अतर आचारी छे तेमां कारण योगे कल्पने डुखवे तो साधुपणु जाय नहीं अने ज्ञानने डुखवे ते वखते साधुपणु रहे नहीं नाश पामे. वळी कल्प छे ते याग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे अने ज्ञान छे ते उपयोग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे. वळी कल्प छे ते निमित्तकारणमां छे अने ज्ञान छे ते उपादानकारणमा छे. कल्पनी आदि नैगम नये छे अने ज्ञाननी आदि शब्द नये छे ए बेहु भेदनो आराधक तेनेज साधु कहीए. तेमां प्रथम कल्प व्यवहारनी गवेषणा कल्पसूत्रथी दश भेदे कहे छे.

तेमां पेहेलो अचेलक-कल्प ते पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुने धवळ वस्त्र छे, नहीं रंगेलुं, नहीं धोएलु जेवुं सेवके आपेलुं होय तेवु तेमा-साढा त्रण हाथ लांबो चोळपट्टो ढींचण प्रमाणे नीचो तेना उपर कदोरो वळी

साडा चार हाथ लांबो कपडो, तेना उपर रुवे खन्ने कांवळी अने डावा हाथे दांडो तथा डावा हाथे झोळी, वळी बत्रीश आंगळनो उंघो, तेमां चोवीस आंगळनी दांडी, दश आंगळनी दशीउं अने अष्टमंगळ आळेखेलो बनातनो पाटो, ते थकी गुंथेली दशीउं ते प्रमाणे लुगडानो ककडो तेना उपर कांवळीउ तेना उपर दोरो त्रण आंटे बांधवो एवो बत्रीस आंगळनो उंघो वळी पोतानी एक वेंत अने चार आंगळनी चोखूणे सरखी मुहपत्ति इत्यादि मानोपेत लिंग साधुनुं कह्युं तेने अचेलक कहीए वळी बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी छे, ते तो मोटा मूलना पंचरंगनां मानोपेत नहीं एवा वस्त्र राखे माटे तेमने सचेलक कहीए ए अचेलक कल्प कह्यो

हवे बीजो उद्देशिक कल्प ते बावीस तीर्थंकरना वखतमां कोइ साधु साधवी निमित्ते कोइ गृहस्थे ज्ञात पाणी, औषध, भैषज्य, वस्त्रपात्रादि नीपजाव्यां होय ते जेना निमित्ते नीपजाव्या छे, ते साधु साध्वीने लेवा कल्पे नहीं पण बीजा साधु साध्वीने कल्पे, तेमने आधाकर्मी दोष न लागे, अने पेहेला छेल्ला तीर्थे एक साधु साध्वी निमित्ते जे आधाकर्मी आहारादि नीपजाव्युं छे ते साधु साध्वी समुदायने लेवो कल्पे नहीं ए उद्देशिक कल्प कह्यो

हवे त्रीजो सज्झायतर पिंडनो कल्प ते—जे उपाश्रयादि मकानमां साधु साध्वी उतरे, तेमां रहे तेनो जे मालिक होय तेने सज्झायतरी कहीए तेना घरनो वस्त्र पात्र

आहारादि चोवीसे तीर्थंकरना साधु साध्वीने लेवा कल्पे नहीं ए सज्झयातरीक कल्प कह्यो.

हवे चोथो राज्यपिंड कल्प ते राजाना घरनो आहारादि लेवो बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने कल्पे.प्रथमना अने छेल्ला तीर्थे लेवो न कल्पे ए राजपिंड कल्प कह्यो. हवे पाचमो कृतिकर्म कल्प ते वांदवु त्या श्री जैन शासनने विषे पुरुष प्रधान धर्म प्रवर्त्ते छे ते कारणे साध्वी सो वर्षनी दीक्षित होय तोपण एक दिवसना दिक्षित साधुने वांदे ए पाचमो कल्प कह्यो हवे छठ्ठो व्रत कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी दीक्षा अवसरे चार महाव्रत उचरे एटले स्त्रीने परिग्रहमां गणीए त्यारे चोथु पांचमु ए बेनु एकज थाय ते अपेक्षाए चार महाव्रतधारी कह्या अने पेहेला छेल्ला तीर्थे स्त्री जूदी अने परिग्रह जूदो एम चोथा व्रतमां स्त्रीनो त्याग अने पांचमा व्रतमां परिग्रहनो त्याग ए अपेक्षाए पाच महाव्रत उचरे वळी पेहेला छेल्ला तीर्थे छठुं रात्रीभोजनव्रत मूळगुणमां गणाय छे अने बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने उत्तरगुणमां गणाय छे ए छठ्ठो कल्प कह्यो.

हवे सातमो ज्येष्ट कल्प ते पेहेला छेल्ला तीर्थे वडी दिक्षाना दिवसथी नाना मोटापणु गणायछे अने बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने दिक्षाना दिवसथी नाना मोटा पणु गणाय छे तेमा पितापुत्र राजा प्रधान मा दीकरी मोटाभाइ नानाभाइ इत्यादि साथे दिक्षा लेवे तो लोक रीते पिता मोटा अने पुत्र नाना, राजा मोटा अने प्रधान

नाना, माता मोटा अने दीकरी नाना एम गणाय छे ए सातमो कल्प कह्यो

हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी जे अवसरे पोताने पाप लाग्यु अतिचार लाग्या जाणे तेज वखते देवसि अने राइ ए बे प्रतिक्रमण करे, नहीं तो न करे, अने पेहेला छेल्ला तीर्थे साधु साध्वी निरतर प्रभाते राइ अने सध्याए देवसी अर्द्धमासे पाक्षिक. चारमासे चउमासि अने बार मासे सवत्सरि एम पाच प्रतिक्रमण करे ए आठमो कल्प कह्यो

हवे नवमो मास कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने मास मास प्रत्ये विहार करवानो नियम नथी ज्या लाभ देखे त्या घणा काळ पर्यंत एक क्षेत्रे रहे अने पेहेला छेल्ला तीर्थना साधु साध्वी तो वर्षाकाले चार मास रहे बाकी एक मास रहे एटले आठ मासना आठ अने चोमासानो एक एम एक सवत्सरमां नव कल्पी विहार करे ए नवमो कल्प कह्यो

हवे दशमो पर्यूषण कल्प ते सवत्सरी सबधीना पाच बाना अवश्य करवां ते कहे छे सवत्सरी प्रतिक्रमण करवु ॥ १ ॥ केशनो लोच करवो ॥२॥ अट्ठमनो तप करवो ॥३॥ तथा ज्यां रह्या होय ते नगरमा चैत्य प्रवाडी करवी ॥४॥ सर्व सघमा माहो माहे खमत खामणा करवा ॥५॥ इत्यादि भाव जाणवो ए दशमो कल्प कह्यो

हवे ज्ञान व्यवहार कहे छे ज्ञान कहेता आत्मज्ञान

योगे साधुपद छे. कह्युं छे.– उत्तराध्ययन सूत्रे.

नाणेणय मुणि होदि न मुणि वन्न वासेण ॥

अर्थः–जे ज्ञानी तेज मुनि तेमने साधु कहीए पण ज्ञानना अन्नावे वनवासमां रहेतां अने क्रिया करतां पण मुनिपद नथी. एम कह्यु वळी कह्यु छे, आनंदघनजी कृत चोवीसीमां बारमा वासुपुज्य स्वामीना स्तवनमां.

आत्मज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिंगीरे॥

जेणे आत्माने जाण्यो ओळख्यो तेज ज्ञानी अने तेज साधु ते विना जे बीजा तेमने द्रव्यलिंगी कहेतां वेष धारी कहीए पण साधु न कहीए साधु तो ए छे के जेणे आत्माने कायाथी जूदो जाण्यो छे अनुन्नव्योछे जम सत्ता चेतन सत्ता जूदी जूदी जाणी छे ते छे अहीं कोइ कहेशे के तमे आत्माने जाणे तेने ज्ञानी कहो छो तो शु ? व्याकरण प्रमुख न्नणेला सूत्र सिद्धांत वांचे अर्थ करे श्रोताने समजावे ते ज्ञानी नहीं ? तेनो उत्तर श्री ठाणांग सूत्रे पेहेले ठाणे कह्यु छे,–

एगजाणे सव्वं जाणइ,एग न जाणे सव्वं न जाणइ॥

वळी आचारांग सूत्रे–

एगंजाणइसे सव्व जाणइ.जे सव्वंजाणइसेएगंजाणइ

अर्थः–एक पोताना आत्माने जेणे जाण्यो छे. ओळख्यो छे अनुन्नवे करी दृष्टि प्रत्यक्ष कर्यो छे ते पुरुषने समस्त जाण कह्यो. हवे कइ पण जाणवानु अधुरु नथी. ए

पहेला पदनो अर्थ–हवे बीजा पदनो अर्थ कहे छे जीवना पाचसें ने त्रेसठ भेद, अजीवना पाचसेंने साठ भेद इत्यादि जाणे ते गणितानुयोग, ज्ञाता सूत्र आदि धर्मकथानुयोग, व्यवहार चारित्र क्रिया ते चरणकरणानुयोग, धर्मास्तिकायादि पाच अजीव ते द्रव्यानुयोग द्वीप समुद्र नरक देवलोक क्षेत्र समास इत्यादि अनेक वातो जाणे छे पन्डित नाम धरावे छे पण सिद्धनो साधर्मी पोतीको आत्मा निरंजन निराकार छे तेने कायाथी जूदो अनुभव्यो नथी त्यां सुधी " सव्वंनजाणइ ' के० कांइ जाणतो नथी एम कह्यु एटले अज्ञानी कही बोलाव्यो

ए ठाणागजीना पाठनो अर्थ कह्यो हवे आचारांगजीना पाठनो अर्थ कहे छे जे पुरुषे एक पोताना आत्माने जाण्यो छे तेणे समस्त जाण्यु ए पेहेला पदनो अर्थ कह्यो हवे जे पुरुषे आत्मानु मूळ स्वरुप जाण्यु छे, ज्ञान दर्शन चारित्र तप वीर्य उपयोग इत्यादि अनंतागुण, अरूपी, अमूर्त्ति, अटळ अवगाहना, अव्याबाध इत्यादि अनता पर्याय अस्ति नास्ति नित्यानित्य, एक अनेक, सत्यअसत्य, व्यक्त अव्यक्त भेद अभेद भव्य अभव्य इत्यादि अनता स्वभाव तेस्याद्वादपक्षमयी अनुभव्यो छे आत्मा जेणे वळी निज द्रव्यार्थीक पर्यायार्थीकनु ज्ञान छे जेने वळी न्याये करी, निक्षेपे करी, प्रमाणे करी सप्तभगी, षट्कारक, सामान्य विशेष इत्यादि पोताना आत्मानु विस्तार ज्ञान छे जेने तेने सव्व जाणइ के० सर्व जाण कहीए वली तेनेज एक

पोताना आत्मानो जाण पण कहीए एम सूत्रमां परमात्मानुं तथा गणधर महाराजानु वचन छे तेने विचारी जुओ. एटले ज्ञानीनी ओळखाण थशे ते ज्ञानीने साधु केहेवा वळी कह्युं छे अध्यात्मसार ग्रंथे पटरमा योगाधिकारे,—

पाप करण मात्राध्हि न मौनं विचिकित्स्या ॥
अनन्य परमात्मास्यातज्ञान योगी भवेन्मुनि॥२६॥

अर्थ.–हिंसा, मृषा, चोरी, मैथुन, परिग्रह, रात्रिभोजन ए छए पापरूप छे वळी आश्रव बंधनु कारण छे एम जाणी विरति करीए एटले तजीए पण पोताना आत्माने जाण्यो नथी त्यां सुधी "न मौनं विचिकित्स्या' केहतां ए मुनि नथी मुनिपद तो एथी जुदुछे, " अनन्य परमात्मास्यात्" केहता कथंचित् एटले कर्मोपाधिनी अपेक्षा न करीए तो पोतीको आत्मा तेज परमात्मा छे ज्ञानयोगी के० तेने जे जाणे अनुभवे ते ज्ञानी ज्ञानयोगी स्वस्वरूप खेल खेले स्वस्वरूपमां उपयोगे रमे तेने भावेन्मुनि केहेतां मुनि कहीए वळी कह्यु छे समाधि शतके,–

दुहो–केवल आतम बोधहै । परमारथ शिव पंथ॥
तामें जिनकुं मगनता । सोइ भाव निगरंथ ए

अर्थ.–केवळ कहेतां एक आत्म बोध जे आत्मज्ञान छे तेज परमार्थ कहेता उत्कृष्ट अर्थ जे निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभवज्ञान ते शिव कहेतां ज्यां उपद्रव नथी, विघ्नकर्त्ता

नथी एवो मुक्तिनो मार्ग कहीए तामें कहेतां ते मुक्तिना मार्गमा जिनकु के० जे पुरुषने मग्नता कहेतां आनदता छे, सोइ के० तेमने न्नाव निर्ग्रंथ कहेतां न्नाव साधु कहीए एम घणा शास्त्रोनो न्नाव जोतां आत्मज्ञानी तेज साधु छे. इहा मति वोल्यो ज्या कल्प व्यवहार छे ते साधु नहीं तेनो उत्तर–कह्यु छे न्नगवति सूत्रे प्रथम शतके वीजे उ०

असंज्य न्नविय दव्व देवाण जहन्नेणं न्नवणवासीसु उक्कोसेण उवरिम गेविज्जेसुं ॥

अर्थ –जे पुरुषो समकित पाम्या नथी अने व्यवहार चारित्र ग्रहण कर्यु छे तेमने असयति कह्या छे, तेमनी गति जघन्यथी न्नवनपति अने उत्कृष्टी नवमा ग्रेवेयके कही छे पण सयति कह्या नथी माटे आत्मज्ञानी छे तेमनेज सयति कहीओ अहीं कोइ कहेशे के एम जोता तो कल्प व्यवहार वगर खपनो थयों तेनो उत्तर–हे न्नाइ! विण खपनो होत तो शु करवा प्ररुपत ? पण जे पुरुषोये आत्मा ने जाण्यो ओलख्यो नथी ते मिथ्यादृष्टि छे, समकित पाम्या नथी अने व्यवहार क्रिया करे छे तेमां धर्म माने छे वळी परपराए मुक्ति माने छे पण धर्मतो आत्मामा रह्यो छे, ते आत्माने ओळख्या पामीओ एम जाणता नथी ते पुरुषोने कल्प व्यवहारथी प्रायें आत्महित नथी पण जे ज्ञानी पुरुषो छे तेमने तो निमित्त कारणरुप कल्प व्यवहार खपनो छे ए ज्ञान व्यवहार कह्यो इहां कोइ कहेशे जे आत्मज्ञानतो निश्चयमा छे तेने व्यवहार

केम कहो छे ? तेनो उत्तर हे भाइ आत्मज्ञान आव्यां समकित पामीए चारित्र पामीए उपयोगे अनुभव पामीए. सवर निर्जरा पामीए, अप्रमत्तादि गुणठाणे चडीए, श्रेणी मांडीए रागद्वेष मोह रहित थइए. केवळज्ञान केवळदर्शन, आदे क्षायकलब्धि पामीओ योगातित जे सिद्ध तद्रूप थइए इत्यादि साधनदशा आत्मज्ञानमां छे त्या सुधी व्यवहार कहीए. साधननी पूर्णताए निश्चय कहीए. ए ज्ञान व्यवहार कह्यो अहींआं व्यवहारनो अधिकार सपूर्ण थयो

हवे भवाभिनंदी जीवनां लक्षण कहे छे.

कह्यो छे श्री हरिभद्रसूरी पूज्ये

॥ श्लोकः ॥

क्षुद्रो लोभरतिर्दीनो, ॥ मत्सरी भयवान शठः ॥
अज्ञो भवाभिनंदी च, ॥ निष्फलारंभ साधक ॥१॥

अर्थ.–प्रथम क्षुद्रो शब्द छे ते सामान्य वाची छे, तेना अर्थना घणा भेद थाय छे, ते कारणे इहां अमे क्षुद्रो शब्दना चार भेद करीए छीए, क्षुद्रो अगभिर (१) क्षुद्रो कृपण, (२) क्षुद्रो तुच्छ, (३) क्षुद्रोक्रूर, (४) लोभ, कहेतां लोभ, (५) रति कहेतां विषय ते रति, (६) दीनो कहेतां दीन, (७) मत्सरी कहेतां मत्सर, (८) भयवान कहेतां भय भ्रात, (९) शठ कहेतां कपट, (१०) अज्ञो कहेतां अज्ञानी मिथ्यात्वी, (११) ए अगीयार लक्षणे सहित होय तेने भवाभिनंदी कहीए, हवे ए बोलो कह्या तेनु विवेचन करे

छे, प्रथम लक्षण, अगम्भिर, एटले अंतर्गत गुणना अभावे पारका छिद्र खोळतो फरे. कदाच सामामा किंचित् दूषण होय तो तेने मोटु करीने देखाडे, वळी दूषण न होय तो द्वेष बुद्धिए अछता दूषणनो आरोप मुके, वळी पोताना अवगुणने ढाके, अने पोतामा नही गुण छता गुणीपणानो मरोड राखे, गर्व करे, वडेरानो विनय न साचवे, अविनय करे, तेने भवाभिनदी कहीए (१)

हवे बीजु लक्षण, कृपण, एटले छती वस्तुए पोते वापरे नही, भोगवे नही, दीन दुखीयाने अनुकपा बुद्धिए अने सुपात्र जे अतिथी मुनि तेमने भक्तिए करीने दान आपे नही, एक धननोज सचय मूर्छीत थको करे भूमीमा दाटे, ए जीवो अते मरीने भवातरे, एज धननी मूर्छाए, सर्पनो, वा नोळीयानो, उदरनो, कुतरानो, गीरोळीनो इत्यादिनो भव पामी पूर्व भवनी सज्ञाए ए धन जी हा दाटेलु गुप्त होय, तेना उपर फर्या करे तीहांने तीहाज रहे, एटले जे कृपण होय ते बहुधा मूर्छीत होय, तेने भवातर एम तिर्यचनी गति प्राप्त थाय, तेनु कारण कृपणता तेने भवाभिनदी कहीए (२) हवे त्रीजु लक्षण तुच्छ एटले अल्पमती बुद्धि छे जेनी एवो, साराशनो अग्राहक, देशविरति अथवा, सर्व विरति ग्रहने धर्मकरणी करे, तेनो विवरो एम छे के, आ भव आश्रीने मिष्ट भोजनना अर्थे वस्त्र पात्रादि अर्थे पुजावा मनावा बहुमान पामवा अर्थे यश कीर्ति अर्थे, वली रोग व्याधि प्रगट थयो

तेनी शांन्ति थशे, एवी वुद्धिए जे तप, जप, क्रिया करे. वली लोचादि कष्ट सहे तेनुं नाम विषयानुष्टान छे,अने परभव आश्रीने देवेंद्र, नरेंद्रादि पद अने ते पदनी ऐश्वर्यादिक, पुद्‌गलिक, ऋद्धिनी ठकुराइ तेनु इंद्रिनोऽद्भिजनित जे विषय सुख पुन्यना उदयथी पामीए, तेनी आसंसाए जे तप, व्रत कष्ट क्रिया करे छे, दु:ख सहे छे ते गरलानुष्टान छे अने प्रणिध्यानादिकने अभावे साध्य शून्य दृष्टिए सापेक्षता विना देखादेखीए शून्य मने समूर्छिमनीपरे क्रिया करे, ते अन्योन्यानुष्टान छे. ए करणी आश्रीने कह्यु हवे उपदेश आश्रीने कहे छे एटले प्ररुपणा करे के मुनीए अणसण आदे तप कर्यो, तेथी देवलोकादि ऋद्धि पाम्या, वळी अमुक श्रावके पडिमा प्रमुख वही तेथी पाम्या, माटे तमे पण करशो तो पामशो, एम लालच आपी आशा वळगामी, अध परंपराने धंधे उपर कह्या त्रण अनुष्टान ते रीते प्रवृत्ति करावे पण पहेली ते विरति के पहेलुं ते बोधिवीज? एटले तत्वना बोधनी प्राप्तिनो हेतु जे उपदेश ते वस्तुगते वस्तुपणानी प्ररुपणा ते न करे, वळी देवगुरुने धर्म ए त्रण तत्वनी यथास्थित ओलखाण करावी, व्यवहार समकितनी श्रद्धा पूर्वक प्राप्ति पण न करावे अने मिथ्यात्वी थका विरतिपणानी परंपरामां घाले वली एम पण उपदेश न करे के जे पर आशसा दूषण टालीने निराशी भावे धर्म करशे, तेज समकितादि गुण प्रगट करवानो, वळी पुन्यानुंबधी पुन्य उपार्जवानो लाभ पामशे. पूर्वे पण जेणे आ-

ंसा दूषणे वर्जीत थइने निराशी न्नावे धर्म कर्यो छे । ते पाम्या छे आशसाए करता तो पुन्य मागता पाप आवे अने देवलोक मागता नर्क तिर्यचनी गति मले, वली धर्मध्यान करता आर्त्तध्यान थाय वळी महोपाध्याय यशोविजयजी जसविलासमा कहे छे के जे क्रिया करे छे अने तेना फळनी ममता धरे छे, तेना गळामा फासी आड कहेता आवी पडी, ते वचननो विचार, " जैन कहो क्यु होवे, " ए पदथी करी लेजो अने पुद्गलीक विनाशिक सुखनी आशाने छेडी, ज्ञानघटमा लावी निजपर भिन्नता करवी, निजगुण रागी थवु, वळी उपर त्रण अनुष्टान गवेख्या तेने तजवा, अने तद्‌हेतु अने अमृत ए बे अनुष्टाननो आदर करवो, एज उचित छे एम दीर्धद्रष्टिए सारांशने न चितवे, अने तुच्छ द्रष्टिए ससारीक सुखने इच्छतो वर्ते तेने न्नवाभिनदी कहीए (३) हवे चोथु लक्षण क्रूर एटले महा दुष्ट भयकर, माठा अध्यवसायवाळो, अती सक्लिष्ट, निध्वस परिणामी आर्त्त, रौद्र, ध्याननो ध्याता, रुडा रूडा सजोगीक न्नावे सबध मिल्या तेमा रुडा मनोज्ञ (मनने गमता) एवा पदार्थनो सदा सजोगचिंतवे, वळी नुडा अमनोज्ञ (अणगमता) पदार्थनो विजोग चिंतवे, मनोज्ञ सयोग सबधमा तलालीन थइ आसक्त थको वर्ते अने ते मनोज्ञ सबधनी हाणी थवाथी, आक्रद करे, उचे स्वरे रुदन करे, घणो उद्वेग पामे, नाम देइने रुवे, छाती कुटे, माथाना केस तोडे, वळी

आवता काळनी चिंता एटले हवे हुं शुं करीश, मारो निर्वाह केम चालशे, हुं शुं खाइश, निर्धन थइ गयो, दारिद्र अवस्था आवी, अथवा हु निराश थइ गयो, मारे कोइनो आधार नथी, मारुं रखोपूं कोण करशे, मने शाता अशातानी खबर कोण पुछशे, अशातानी वखते रोगादि कारणे, मारी पासे, वेशीने पाणी कोण पाशे, खावा कोण आपशे, मारी आसनावासना कोण करशे, अथवा आ कुमाणसनो समागम मारे छे ते क्यारे टळशे, मारो ने एनो छुटकवारो क्यारे थशे, वळी आ मारी रोग व्याधि अथवा दारिद्र अवस्था क्यारे टळशे, इत्यादि विचार एकत्व परिणामरूप करवो ते आर्त्तध्यान छे, वळी सयतिपदे नियाणु करवुं ते पण आर्त्तध्यानमां छे हवे रौद्रध्यान ते जीवनी हिंसा एटले जीवना द्रव्यप्राण, प्राणनो घात करे, विटंवना करे अने खुशीपणु माने, राजी थाय, वली हिंसक जीवोनां वखाण करे, तेना वळनी प्रशंसा, अनुमोदना करे, वळी जूठुं बोले, कपट केळवे अने मनमां खुशी थाय, के मारा जूठपणानी कोइने खबर पडती नथी, हुं केवो हुशीयार छु, वळी एकनी चाडी बीजाने करे, खोटा वादविवाद, झगडा करतो करावतो फरे, पारकी निंदा करे, चोरी करे, ठगाइ करे गांठ वाळेली वस्तु छोडी ले अने मनमां खुशी थाय, वळी चितवे के हु केवो जोरावर छुं ते पारको माल खाउं छु, मुज सरखो कोण छे, वली नव प्रकारनो परिग्रह धन, क्षेत्र खळुं, घर, दुकान, पुत्र, कलत्र, जानवर, गाय, भेंस,

वळद, हाथी, घोमा आदे चौपगा इत्यादि परिग्रह वधारवानी घणी इच्छा राखे, वळी धन्यादि वस्तु जमीने विषे दाटे अने विचारे के कोइए दीठुं तो नही होय वली लेणादेणा करे अने विचारे के आपशे के नही आपे, एम परिग्रहनु रक्षण करवामा जेणे मन परोव्यु छे, ते रौद्रध्याननो ध्याता छे वळी सयति नाम धरावी जे मूळ गुणथी हीण होय एटले परिग्रह गुप्तपणे राखे, वली दोरा, धागा करे, वैदकपणु करे, अनेक भेदे वनस्पतिना मूळ कढावे, वळी भट्ठी घाली मात्राओ मारी अती हिसक थाय, वली ससारीपणाना पोतानां सगां सबधीनी चिंता करे अविरतिपणे काम भोग करेला, विषय सेवेला तेने रुचिए सभारे, इत्यादि आर्त्तध्यान, रौद्रध्याननो ध्याता जे क्रर तेने अशुभ कहीए ते क्रूरपणो पोतानो टाळी उपशम, क्षयउपशमभावे शांत थइ धर्मध्याननो ध्याता शुभ प्रवृत्तिए न थाय अने उपर कही तेम अशुभ प्रवृत्तिए, वर्त्ते तेने भवाभिनदी कहीए (४) हवे पाचमु लक्षण लोभ ते जेम जेम वस्तुनी प्राप्ति थाय, तेम तेम लोभ वधतो जाय, तृष्णा न छीपे, दृष्टात जेम अग्नि वलती होय तेमां काष्टनो पुरती करीए, तेथी अग्नि वृद्धि पामे, पण शान्ति न थाय, ए दृष्टात पूर्वक जेम जेम वस्तु मीले तेम तेम तृष्णा दिस थाय, अने अपूर्णता नजरे आवे, तेना उपर आठमा सुभूम चक्रवर्त्तिनी कथा कहे छे आ अवसर्प्पिणी काले अढारमा, ओगणीसमा तीर्थंकरने आतरे सुभूम चक्रवर्ति

थया, ते पोतानी मातानी कुखने विषे गर्भपणे हता ते अवसरे परसुरामे पोताना वळे सुभूमना कृतवीर्य राजाने संग्राममां, जाज्वल्यमान, परसु लेइने हण्या अने तेमना राज्यपर पोते बेठो, कारण के राज्य तो पराक्रमने स्वाधीन छे एवी रीते परसुरामे, हस्तिनापुरनगरने दबाववाथी कृतवीर्य राजानी गर्भिणी स्त्री वाघवाला वनमांथी जेम हरणी नाशी जाय तेम नाशीने एकाकीपणे अरण्यमां भमतां भमतां तापसोना आश्रममां गइ त्यां तपस्वीउए निधाननी पेठे तेणीने क्रूर परसुरामथी बचाववा माटे भोयरामां राखी. तेणीने चौद महास्वप्नोथी सूचितपुत्र गर्भस्थितिनी पूर्णताये थयो अने भोयरामां रहेतां मोटा पण थया माताये भोंयरामां जन्मवाथी पुत्रनु सुभूम नाम पाड्यु, पछी ज्यां ज्यां क्षत्रिय पुत्र हतो त्यां त्यां देहधारी कोपाग्नि सरखो, परसुरामनो कुठार पहोची वल्यो अर्थात् सघला क्षत्रियोने तेणे मारी नाख्यापछीएक दहाडो ते परसुराम,आ तापसोना आश्रममां गयो त्यारे त्यां तेनो परसु(कुहाडो) जाज्वल्यमान थयो थको, धुवाडो जेम अग्निने सूचवे तेम क्षत्रियने सूचववा लाग्यो, त्यारे तेणे तपस्वियोने पूछ्यु के शु अही कोइ क्षत्रिय छे त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के तापस थएला अमो क्षत्रिय छीये पछी दावानल जेम पर्वतना तटने तृण रहित करे तेम ते परसुरामे सातवार पृथ्वीने क्षत्रिय रहित करी एवी रीते मारी नाखेला क्षत्रियोनी दाढोथी परसुरामे एक आखो थाल भर्यो पछी ते परसुरामे एक दहाडो निमी-

स्त्रिआउने बोलावी पूछयु के मारु मृत्यु कोनाथी थशे कारणके घणा साथे वैर करनाराउने परथी पोतानुं मृत्यु थवानी शका होय छे त्यारे तेउए कह्यु के जे माणस सिंहासनपर बेसीने दुधपाकरुप थएली आ दाढोने पी जशे ते माणसथी तारु मृत्यु थशे, ते सांभली परसुरामे एक दानशाळा मणावी तथा त्या अगाशीमां सिंहासन राखी तेपर ते दाढोनो थाल रखाव्यो, हवे ते सुभूम पण आंगणामा रहेला वृक्षनी पेठे हमेशां ऋषियोथी लालनपालन करातो थको वृद्धि पामवा लाग्यो हवे एक दहाडो कुवाना देडकानी पेठे बीजी जगोए नहीं जनार एवा, ते सुभूमे पोतानी माताने पूछयु के शु आ आवडीज पृथ्वी छे ? के कइ अधिक छे त्यांरे तेनी माताये कह्यु के हे वत्स ! पृथ्वी तो अनती छे आ आश्रम तो तेमा एक माखीना पग जेटलो छे वली आ पृथ्वीमां हस्तिनापुर नामे एक प्रख्यात नगर छे त्या कृतवीर्य नामे महा बलवान् तारो पिता राजा हतो ते तारा पिताने परसुरामे मारीने पोते राज्यपर बेठो छे वली तेणें तमाम पृथ्वी क्षत्रिय विनानी करी छे, अने तेना भयथी आपणे अहीं रहीयें छीये ते सांभली तत्काल क्रोधातुर थइने सुभूम हस्तिनापुर गयो कारण के क्षत्रिय तेज दुर्द्धर होय छे त्यां एकदम ते दानशाळामा गयो अने त्या रहेला सिंहासनपर चडीने दूधपाकरूप थएली ते दाढोने ते खाइ गयो, त्यारे ब्राह्मणोआ रक्षको युद्ध करवा माटे उठ्या त्यां सुभूमे मेघ

सरखा नादवालो वाघ जेम हरिणने मारे तेम तेउने मार्या ते सांजली परसुराम-पण गुस्से थइने जाणे कालना पासथी खेंचायो होय नहीं तेम त्या आवी लाग्यो अने तेणे सुजूम-उपर पोतानी परसु मुकी, पण अग्निनो तणखो जेम पाणीमां नष्ट थाय-तेम ते परसु नष्ट थयो ते वखते सुजूमे पण पोता पासे हथियार न होवाथी ते दाढोवालो थाल उपाड्यो अने ते थाल तुर्तज-चक्ररुपे थयो कारण के पुण्य संपदाथी शु-नथी थतुं? एवी रीते ते आठमा चक्रीये ते चक्रथी-परसुरामनु-मस्तक, कमलनी पेठे छेदी नाख्युं जेम परसुरामे सातवार पृथ्वी क्षत्रिय रहित करी हती, तेम आ सुजूमे एकवीसवार पृथ्वी ब्राह्मण विनानी करी तथा पाछलथी तेणे छ खन्ड पृथ्वी साधी. वली वैताढ्यनी गुफाओ खोली अने जरतना उत्तर खन्डमां दाखल थइ म्लेछोने तेणे जीत्या एवी रीते चारे दिशामां जमीने घटी जेम चणाने पीसे तेम तेणे सुजटो मारीने पृथ्विने जीती छ खंडनु राज्य मेलव्यु चौद-रत्न-नव निधान पचवीस-हजार देवो सेवामां इत्यादि चक्रवर्तीपणानी ऋद्धिये पूर्ण थतां, पण लोजनी-दसा तेनी अटकी नहीं, अपूर्णताज नजरे आवी ते चिंतवे छे के मारा जेवा-तो जरत आदे चक्रवर्तिउ पूर्वे घणा थया तेमा हु पण एक वधारे. एमनाथी मारी कइ अधिकता कहेवाय नही पछी लोको मोटाइ न बोले, मारी मोटाइ तो ज्यारे थाय के बीजा धातकिना छ खन्ड साधु त्यारे जगतमां मारो यश विस्तरे, एटले मारा-जेवो कोइ पूर्वे थयो नथी-अने वळी

थशे पण नहि, अने दुनिया महा चक्री कहीने बोले, त्यारे मारी मोटप कहेवाय, वळी मारी आज्ञा कोण न माने, जीहा जाउ तीहां हु एकलोज पृथ्वीने ऊधी करी नाखु, वळी मोटा पहाड पर्वतने एक हाथे उपाडीने फेकी देउ भुजा बळे समुद्र तरी पेली पार (सामा काठे) नीकळु एटलु तो मारी भुजामां बळ छे, एम अठ्ठावीस धनुष्यनी कायावाळो पोताना बळ पराक्रमनी अधिकता जोइने मदोन्मत थयो थको लोभरूपीआ सागरमा तणातो थको ऋद्धिनी अपूर्णता भावतो थको जगतने तरणा प्राय गणतो थको बीजा छ खडमा, जइ चक्र प्रवर्त्तावी आज्ञा मनावुं एम निश्चे पोताना मन साथे ठराव कर्यो, चोरासी लाख हाथी, चोरासी लाख घोडा, चोरासी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायदळ, एक लाखने बाणु हजार अतेउरी, सेनापति, प्रधान, आदे चउद रत्न, नव निधान, इत्यादि ऋद्धिए युक्त थको पोत प्रयाण करे छे. ऋद्धि गवेखी ते सर्वे चरमरत्न वहाणमां भरीने पोते बेठो वहाण लवण समुद्रना मार्गे अनुकुळ पवनयोगे वेगे चाल्यु जाय छे, ए वहाणना रखोपामा पचीस हजार तो देवो वहाणना उपाडनार छे, पुन्य खवाइ गयुं, ए चक्रीनु साठ हजार वरसनु आयुष्य हतु, तेनो अत (छेडो) आव्यो, देवो चिंतवे छे के हु एक नहीं उपारु तो बीजा घणाए छे, एम सोनो साथे मनोरथ थयो, सर्व देवोए मेली दीधु वहाण समुद्रमा डुब्युं अने सर्व ऋद्धिनो नाश थइ गयो, शु-

जूम मरीने सातमी नरके गयो, एम लोज्ञी नरनो लोज्ञरूप खाडो सदा अपूर्ण ठे, एम जाणी लोज्ञदशाने धिकारी निर्लोज्ञी थइ जेम कपील ब्राह्मण केवळी थया, एम निर्लोज्ञताने न ग्रहे, अने लोज्ञ सागरमां रुवी सागर जळ पीतां पण तृषा न ज्ञाजे, तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए (५)

हवे ठठ लक्षण रति एटले शातावेदनीना हेतु ते पांच इंद्रीना अनुकुळ विषय, शब्द, रूप, गध, रस अने स्पर्श; शब्द ते श्रोत इंद्रि, जे कान तेनो विषय एटले रागरागणी, सुस्वरनो ज्ञोगी, वळी नरघा, शरणाइ, ताल, तंबुरा इत्यादि वाजींत्रना शब्दनो ज्ञोगी, रूप (वर्ण) ते रातो, धोळो, लीलो, पीळो अने श्याम, ए पाच वर्ण वळी सस्थानादि लिंग आकार चेष्टा ए चक्षुनो विषय जाणवो. वळी गंध ते, सुरज्ञी आदि नाकनो विषय, तेल फुलेल चपो, केवडो, मोगरो, गुलाब, इत्यादि तेनो ज्ञोगी. रस ते कडवो कषायलो, तीखो, खाटो, अने मधुरो ए पांच रस तेनो ज्ञोगी. रसना एटले जीव्हा जाणवी वळी स्पर्श ते, शीत, उष्ण, सूंवाळो, वरसट, स्निग्ध, रुक्ष, हळवो अने ज्ञारे ए आठ स्पर्श ज्ञोगी ते स्पर्श इंद्रि एटले काया वळी वेदत्रीनृह, स्त्री, पुरुष अने नपुषक, ए वेदना ज्ञोग विषयनो सकामी तेमांज आशक्त एम पांच इंद्रिना विषय ज्ञोगमां जे, रति विश्रामनो कर्त्ता वळी हु ने मारु एटले हु ते कायाएज जीव छु एम जाणे पण जीव कायानी जूदाइ न जाणे, वळी धन दोलत, राजऋद्धि सज्जन कुटुंब ए मारुं

एम मानतो थको, तेना सगे कलह करतो थको ऋद्धिनी मोटपमा गर्वीत थको, जे स्क्लेशानदी, विषयानंदी तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए (६)

हवे सातमु लक्षण दीन एटले कगाल, ते कगाल शा माटे थाय तो मोहनी प्रबळताए, विकल्प घणा उठे, परतु पापोदय जोगे पुरा न थाय, वळी किंचित् प्राप्ति होय तेनी हानि थाय ते कारणे दीनपणु ज्ञावे, वळी रोगादि कारणे, पोताने अशाता प्रगटे तेथी दीनताने ज्ञावे, पण एम न चितवे के ए वस्तुनी प्राप्ति तो पुन्य जोगे होय वळी नि-रोगतापणु ते शातावेदनीना उदयथी होय, ते पुन्य खवाइ गयु अने पापनो उदय वर्ते छे, तेमा तु दिलगीरी शा माटे करे छे, पूर्वे उपार्जेलु ते उदयिक ज्ञावे प्राप्त थयु छे तेने समता ज्ञावे सहन करवु एज ज्ञानीनु लक्षण छे, एम सा-हसीक थइने न चितवे अने दीनता करे तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए (७)

हवे आठमु लक्षण मत्सर एटले अपलक्षणनु स्था-नक, मस्ताइये करीने मस्तान थयेलो उन्मादे ज्ञरेलो, गु-णवंत उपर द्वेषनो, इर्ष्यानो कर्त्ता, निर्गुणीनो पक्षी, वली अदेखाइए निर्गुणी थको अह (हु) गुणी छु एम माने, वली परने दुःखी देखीने राजी थाय अने सुखी देखीने दाझे, अतरमा बळे, एम मत्सर ज्ञावे वर्ते तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए, (८)

हवे नवमु लक्षण ज्ञयभ्रात एटले परवस्तुने पोतानी

मानी छे जेणे तेनो सदाय काळ भयमा जाय, कारण के पर-वस्तुनो स्वभाव विनाशी छे अने ते पुन्यजोगे मळी प्राप्त थइ ते छतां पुन्ये स्थिर थइने रहे पण पापोदय जोगे तेनी हानी थाय, रखोपु करतां पण न रहे त्यारे पोतानी मान-वावाळा प्राणी उद्वेग पामे. संताप करे, दिलगीरी करे, पण एम न समजे के सजोगनी पाछळ विजोगनो भय रह्यो छे, सुखनी पाछळ दुःखनो भय रह्यो छे, आ ससार एज भयनुं कारण दुःखनुं कारण छे माटे ससारी वस्तुथी विरक्तता भावीए, ए उपाधि सजोगने पर मानीए एम न समजे अने रखोपुं करतां थकां आखो भव भयमांने भयमां कहाडे, तेहने भवाभिनदी कहीए (९)

हवे दशमु लक्षण कपट एटले मुखशुं मीठा अने हृदये दुष्ट, मुखथी बोले ते जुदुं अने मनथी चिंतवे ते जुदु, कायानी चेष्टा जुदी, एम कपट, फंद, माया एटले मच्छी लोको जळमां जाळ नाखे, तेथी पण आ कपटजाळ अती बुरी छे कारण के एतो तिर्यंच, जळचर जीवो जळमां विनोद, क्रिडा करता एवा तेम पशुने जाळमां फसावी दे छे, अने आ कपटी तो वगर जाळे, डाह्या चतुर मनुष्यने वातनी वातमां फसावे छे, माटे अति बुरो, अविश्वासनु स्थानक एवो कपटी तेने भवाभिनंदी कहीए. (१०)

हवे अगीयारमु लक्षण अज्ञानी मिथ्यात्वी एटले निजपर बुद्धि जीहां सुधी थइ नथी अने निजपरनो भेद भास्यो नथी, जडसत्ता, चेतनसत्ता, जुदी जुदी जाणी नथी

तीहां सुधी अज्ञानी कहेवो, हवे मिथ्यात्वपणु गवेखे छे. हठ कदाग्रह अजाणपणे पकड्यो तेने मेले नही. खरा-खोटानी परीक्षा नही, खोटु जाणीने खरु करवानो हठ ममत्व, जीन वचनमां शका अने अजाणपणे विपरीत श्रद्धा, तेनु नाम मिथ्यात्व छे

सवैया तेवीसा.

मिथ्यात असत्य भेद पंच दाखुं,
खर पुछ पकड्यु नवी छोडे,
सत्य असत्यनो भेद न समजे,
सोनु रुपुं एक भावमा जोडे,
खोटु जाणीने खरुं करवा चाहे,
हठ ममत्वना पंथमां दोडे;
जीन वचने शकाने अजाण ते,
आस्ता ज्ञान ए वेउ गुण तोडे ॥१॥

सवैया एकतीसा

विपरित एही श्रद्धा, दश समुदाय बधा,
एज छे मिथ्यात वेरी, रोळे भव चक्र मैं;
अनंत परावर्तनो, मालीक ए मोह पुत्र,
घात करे सर्वथी ने, घाले काया देरु मैं;
मोह मदीराने पावे, चेतन जमना ध्यावे,
नाचे संसार-गतीये, पडे पाप पंक मैं;

आशा तो अधुरी सदा तृष्णा गीरे न कदा,
आ जव परजवनी न छूटे नंत कालमे. ॥२॥

कुदेव तेही देव माने कुगुरुने गुरु माने,
कुधर्म धर्म माने लोकिक मिथ्या जाव है.
देवने आशाए माने आशाए सेवे गुरुने,
धर्मनुं फळ मागे लोकोत्तर मिथ्यात्व है;
शुजाशुज करणीनो अहंकृता निर्पेक्ष,
ईश्वरने कर्त्ता कहे ज्व्य मिथ्यात जाव है.
रागने द्वेष वेहु, परिणति अशुद्ध कहुं,
अनादि विकार एही, जावथी मिथ्यात्व है. ॥३॥

मिथ्यात्व ठाणामां बांधे, मिथ्यात्व दूजे न बांधे,
कोमा कोमी सीत्तेर, सागर स्थिती कही है,
मिथ्यात्व उदेमां आवे, ठाण सातमु कहावे,
उपर उदे न होवे, समकित सही है,
मिथ्यात्व सत्ताए रेवे, एकादश ठाणे केवे,
सत्ता खुटे वारमें अमर पद सही है;
जनम मरण टळे अरिहंत ठाणे चले,
अनंत चतुषची मळे सिद्ध दूर नाहि है. ॥४॥

इहां कहेवानु एटलुं छे के आत्म प्रदेशे मिथ्यात्व मोहनीनी त्रण कर्म प्रकृतिनो अजाव थतां क्षायक सम-

किनती प्राप्तिए सिद्ध गति दूर नथी, ससार गति भ्रमण चक्रनो मुख्य हेतु एक मिथ्यात्व छे एम उपर कह्या प्रमाणे अगीयार बोले करीने सहित होय तेने भवाभिनंदी कहीए, वळी पुद्गलानंदी पण कहीए, ते पुरुष विधिपूर्वक शुभ क्रियानो प्रारंभ करे, ते पण निष्फल जाणवो, कार्यनो साधक थाय नहि ११ इहां भवाभिनदीनो अधिकार समाप्त थयो

हवे निश्चय नयनी मुख्यताए, धर्मप्रवर्तन कहे छे एटले निश्चयनयमां दृष्टि करवा योग्य (प्रवेश करवाने योग्य) कोण छे तो जे आत्मानदी पुरुषोत्तम छे, तेज निश्चयनयमा दृष्टि करवा योग्य छे हवे तेमनां लक्षण कहे छे, तेमा प्रथम लक्षण गभिर होय, एटले हु अल्प गुणवाळो छु एम घणा गुणे युक्त छे, तोपण पोतानी, ओछासने जोवावाळा होय एटले जीहा सुधी क्षायक लब्धिनी पूर्णता निष्पन्न न थाय, तीहां सुधी पोतानी ओछास देखे एटले उपशम भाव, क्षय उपशम भावनी प्रगटताने न जुवे प्रगटताने जोता, महा पुरुषने पण मोह अग आपे एटले खलना पामे छे अने ओछासने जोता, वृद्धि पामे तेनु कारण ए छे के ओछासने जोवु ए चारित्ररायने पोतानु अग छे, ते कारणे ओछासने जोतां निर्मोह वृत्ति थाय अने निर्मोह वृत्तिये गुण सपदा वृद्धि पामे एम गुण रागी, गुणना लोभी घणा गुणवता पण मोटपनी मालके छलकाय नहीं तेमने आत्मानदी कहीए १

हवे बीजुं लक्षण अकृपण एटले छती वस्तुए कृपणता न करे पोते भोगवे. वापरे दीन दुःखीआने, अनुकंपा बुद्धिए अने सुपात्र एवा अतिथि मुनिने भक्तिए करी दान आपे, वली अधिक शक्ति होय तो स्वामी वत्सल, प्रभावना आदे करे, पूजा भणावे, आगी रचावे, जीन मंदिर करावे, जीन बिंब भरावे, उजमणुं करे, ज्ञान, पुस्तको लखावे, भणताने सहाय आपे, सघ कहाडे, जीर्णोद्धार ते जीर्ण जीनमदिर समरावे, साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका, ए चतुर्विध सघने धर्मकरणी करवा हेते उपासरा करावे, इत्यादि शुभ मार्गे मोकळा मने चित्त उत्साहे पैसानो व्यय करे, पण छते पैसे मूर्छित थको कृपणता न करे, तेम छेडी शक्तिए अभिमानी थको व्यय पण न करे, पापे पेदा करवुं अभिमाने व्यय करवो तेने प्रश्न व्याकरण दशमा अंगमां मद मतिआ कह्या छे माटे विवेक पोतानी शक्ति जोइने वापरे. ए गृहस्थीपणामां अकृपणता लक्षण कह्यु, हवे सयतिपदे जे क्षय उपशम भावनी लब्धिए धनाढय थयेला बहुश्रुत भावने पामेला तेमने पण भव्य जीव प्रत्ये उपदेश करवाना अवसरे अथवा समागम थये वस्तुगते वस्तुपणानो उपदेश, द्रव्यगुण पर्यायनी वली स्वभावनी उळखाण पूर्वक जड चेतननी विभाग व्हेंचण पूर्वक, हेय, ज्ञेय, उपादेय बुद्धिने पमाडवा हेते नय निक्षेप, पक्षप्रमाण इत्यादि विस्तार बुद्धिए हेतु दृष्टांत युक्तिए करीने, वचन भालो अने युक्ति कटार मारी अनादि मिथ्यात्वने छेदी

बोधिबीजनी प्राप्ति तद्‍रुप समकित ते अमुल्य रत्ननु दान देवु ते सयतिपदे उचित छे एम छती शक्तिए कृपणता न करे तेमने आत्मानदी कहीए (२)

हवे त्रीजु लक्षण दीर्घ दृष्टिवंत एटले घणीज मोटी विस्तार बुद्धि छे जेमनी एवा परम सारांश जैन आज्ञा ग्राहक तद् हेतु एटले जे एक पोतीको आत्मा तेहीज साचो ज्ञानादि अनता गुण अने अव्याबाधादि अनता पर्याय मय साक्षात् परमात्मा सरखो शक्ति भावे अनादि सिद्ध छे. तेने व्यक्ति भावे प्रगट करवा अर्थे मोक्ष नीपजाववा माटे जे सहज समाधिए ध्यान करवु रमण करवुं तेने तद्‍हेतु अनुष्ठान कहीए हवे अमृत ते मन वचन अने काया ए त्रिकरण योगनी ऐक्यता,हर्ष,उत्साह,प्रमोद सहित, निरामय साधन ए रीते स्थिर शकादि चपळता रहित सिद्ध भगवानना स्वजाति स्वभाविक गुणे,करी उपयोग प्रभु गुणे जोमीने एटले गुण गुणगत स्वभावे गुण गुण प्रत्ये भिन्न भिन्न उपयोग जोमी तन्मयपणे अनुभविने अभेद स्वरूपे परिणमावे त्या कार्यनी पूर्णता पामे एटले कोइ देशथी पामे अने कोइ सर्वथी पामे, देशथी पामे ते चोथे गुणठाणे समकित पामे अने सर्वथी पामे ते तेरमे गुणठाणे अरिहत पदे अनत चतुष्टयी पामे एम कार्यनी साधकता नीपजे तेने अमृत अनुष्ठान कहीए एम तद्‍हेतु अने अमृत ए बे अनुष्ठाने वर्त्तता एवा दीर्घदृष्टिवतने आत्मानदी कहीए (३)

हवे चोथुं लक्षण उपशम, क्षय उपशम भावे, शान्त एटले उपशम ते मोहनी कर्मनी प्रकृतिओनो सत्ताए आत्मप्रदेशे उपशम होवाथी उदयिकताना अभावे प्रदेशे अथवा विपाके विघ्न, पराभव नहीं होवाथी आत्माने उपशम भावे शान्त कहीए वली वीतराग कहीए, ए तेना बे भेद. एक देशथी अने बीजो सर्वथी, देशथी तो एक मिथ्यात्व एटले सिद्धांतना मते, त्रण पूज्य न करे. माटे एक अने चार अनंतानुबंधी कषायनी चोकडी, मळी पांच प्रकृतिनो उपशम चोथा गुणठाणे थाय, तीहां उपशमभावनु समकित पामे, अने सर्वथी तो चार चोकडीना सोळ कषाय अने हास्यादी षट, त्रण वेद, ए नव नोकषाय, एटले कषाय तो नहीं, पण कषायने प्रगट करवानुं कारण माटे नोकषाय कहीए, एम बेहु मळी पचीस कषाय अने एक मिथ्यात्वमोहनी, बीजी मिश्रमोहनी, त्रीजी समकितिमोहनी, ए त्रण मळी अठ्ठावीस प्रकृतिनो उपशम, अगीयारमा उपशान्तमोह गुणठाणे थाय, तीहा उपशमभावनु, यथाख्यात चारित्र पामे, ए बे भेदनी स्थिति अतर अतर मुहूर्त्तनी छे, ए उपशमभावे शान्तना बे भेद कह्या, हवे क्षयउपशमभावे शान्त गवेखे छे. ते चारे घातिकर्मनी प्रकृतियोनो क्षय उपशम होवाथी संपजे, तेना विचीत्र भेद छे, परतु समुदाये बे भेद, एक अज्ञानयोग अने अज्ञानयोगनिश्रा, बीजो ज्ञानयोग अने ज्ञानयोगनिश्रा, अज्ञानयोग ते, समकितना अभावे प्रथम गुणठाणे क्षयउ-

पशमभावनी वृद्धिए जाणपणु वृद्धि पामे, वळी निश्रा ते दीपक समकितनी द्रव्य चारित्रनी तपनी निश्रा पामे, यावत् स्वर्गसुखनो विभागी थाय, पण यथार्थ श्रद्धाना अभावे, ग्रंथिभेद करे नही अने समकित पण पामे नही एटले स्वअपेक्षाए हित न थयो, परंतु योग्य जीवने बोधि बीज पमाडवाना वळी मोक्ष पोंचाडवाना हेतु छे, माटे शान्त ए पहेलो भेद कह्यो, हवे बीजो भेद ज्ञानयोग ते, ग्रंथिभेद कीधा, चोथा गुणठाणाथी ज्ञानयोग कहीए अने निश्रा ते समकितनी, चारित्रनी, तपनी, वीर्यनी, एटले क्षयउपशमभावनी पांच लब्धिनी निश्रा कहीए, तेनो विवरो एम छे के समकित आश्रीने चोथु, पांचमुं अने छठु सातमु ए चार गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे छे, वळी चारित्र आश्रीने पांचमु, छठु, सातमु, आठमुं अने नवमु दशमु, ए छ गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे अने ज्ञान आश्री वळी दानादि पांच लब्धि आश्रीने, चोथु, पांचमु, छठु, सातमु, आठमु, नवमु, दशमु, अगीयारमु अने बारमु ए नव गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे, ए क्षयउपशमभावे शान्तना भेद गुणठाणे गवेखीने कह्या, हवे तेनी स्थिति चोथा गुणठाणानी अपेक्षाए, काळ आश्रीने, छासठ सागरोपम झाझेरी अने भव आश्रीने सात आठ भवनी जाणवी, अने पांचमा वळी छट्ठा सातमा गुणठाणानी भेगी, देशे उणी, पूर्व क्रोडनी जाणवी, ए उत्कृष्टि स्थिति कही अने जघन्यथी वळी सातमा ठाण उपरांत अंतर अंतर मूहूर्त्तनीजे

ए ज्ञानयोग चोथा गुणठाणाथी बारमा गुणठाणाना अंत सुधी क्षय उपशम भावे कह्यो तेना ग्राहको चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी धर्म ध्यान ध्यावनार छे उपरांत शुक्लध्याननो पहेलो पायो अग्यारमा दशमा सुधी ध्यानगत छे, उपरांत बीजो पायो ध्यानगत छे पहेला पायामां भेद ज्ञान अने भेदाभेद ज्ञान छे बीजा पायामा अभेद ज्ञान छे, क्षपक श्रेणीना ग्राहको पहेला पायाना ज्ञान ध्याने मोहनो वळी अशुद्ध परिणतिनो दशमा गुणठाणा अंते क्षय करी वीतराग परिणति बारमे गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामे अने बीजा पायाना ज्ञान ध्याने ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी अने अंतराय, ए त्रण कर्मनो नाश करी, तेरमे गुणठाणे अरिहंत पदे केवळज्ञान केवळ-दर्शन, अने क्षायक भावनी पांच लब्धि पामी क्षायक ल-ब्धिए पूर्ण थाय माटे क्षायक लब्धिनी, प्राप्ति कारण यथास्थित क्षयउपशम भाव चोथा गुणठाणे छे अने चोथु गुणठाणुं पामवानु कारण मतिअज्ञान श्रुत अज्ञान, ए बेहु अज्ञानना क्षय उपशमनी वृद्धिनु स्वरूपां परि-णमवु ते छे, परंतु विभंग नथी वळी श्रेणी [illegible] तेनु कारण मतिश्रुत ज्ञान छे, परंतु अवधि [illegible] नथी एम उपशम, क्षय उपशम, भावे, शांत [illegible] ज्ञानी तेमने आत्मानंदी कहीए (४)

हवे पाचमु लक्षण संतोष, एटले [illegible] ज्यारे [illegible] णीए के जीहां इच्छा वांछानो संभव [illegible]

६

थया छे तेमने संतोषी कहीए अने इच्छा वांछा छे जेने तेने असंतोषी कहीए. कह्यु छे,–

गाथा

॥ जहा लाहो तहा लोहो ॥ लाहा लोहो विवड्ढइ॥
दो मास कणय कज्जं ॥ कोडीएविननठई ॥१॥

अर्थ —जहा कहेतां जीहा, लाहो कहेता लाभ एटले धन्य, धान्यादि वस्तुनी प्राप्ति थती जाय वृधि पामती जाय, तहा कहेतां तीहा, लोहो कहेता लोभ प्रगट थाय अने ठगारा नजरे आवे वली घणी तृष्णा थाय. लाहा कहेता जेम जेम लाभ थतो जाय तेम तेम लोहो कहेता लोभ, विवड्ढइ कहेता विशेषे करीने वृद्धि पामे एटले दिस थाय, यथा दृष्टाते, जेम अग्नि बळे छे तेमां काष्टनी पुरती करीए तेथी अग्नि शान्त न थाय, परतु वृद्धि पामे ए दृष्टाते, वस्तुना मळवाथी लोभ न उपशमे दोमास कणय, कहेतां कपिल ब्राह्मण बेमासा सुवर्णनु, कज्ज, कहेता दान लेवा अर्थे राजा पासे गयो तेने राजए साचा बोलो जाणी प्रसन्न थइने कह्यु के, माग, मागे ते आपु अने तारु दारिद्रपणु आजथी दूर करु, तारे जन्म पर्यंत फरीथी याचना करवी न रहे, त्यारे कपिल ब्राह्मण विचारवा लाग्यो के, केटलु मागु तो, यावत् कोडी एवी, कहेतां एक क्रोड सोनैया मागु, एम विचार करता पण, ननिट्ठइ कहेता निष्टार्थ एटलुज, एम तृप्त न थयो, एटले इच्छा वाच्छानी

पूर्णता न थइ अने छेगाश नजरे आवी, ते अवसरे लोभ-दशाने बुरी जाणी, स्नेह लत्तावेली मूळने उपाडवाथी ए, कपिलनामा ब्राह्मण महा पुरुषोत्तमने, पोतीको सहज स्वभाव प्रगट थयो अने ज्ञानभानुं घटतर वृत्तिए उदय पाम्यो, लाभ होवाना कारणे पोते पोताथी बोध पामी स्वयंबुद्ध थइ कर्मने हणी सिद्धि वर्या, ए कथा उत्तराध्ययनजीना आठमा अध्ययने सविस्तारे छे एम धन कंचनादि वस्तुने अलच्छी माने छे, तृष्णा त्रुटी छे पोतापणानो ममत्व गयो छे, कदाच ससारमां रह्या छे अने ए लक्ष्मीनु रखोपुं करे छे, तेने निर्वाह प्रयोजन जाणे छे, बाधकता समजे छे, विरक्त चित्त छे, छोडवानी भावना भावे छे, छोडवानो अवसर इच्छे छे, वळी नीजात्म सत्ताए ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय, पोतीका असंख्यात प्रदेशे, प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनता अनता, तद्रुप क्षायक लब्धि, निर्मळ, निरजन, अचळ, अविनाशी भावनी वस्तुगते रही छे, तेने लक्ष्मी माने छे, वळी तेना अर्थी छे, खपी छे, व्यक्तिभावे प्रगट करवाना उद्यमी छे, बाह्यऋद्धिनी वृद्धि अथवा हानि होवाथी, राग द्वेष न करे, अने समभावे वर्ते कदाच उद्वेग करे तो उत्कृष्ट पंदर दिवसना अनुमाने करे, नहितो तरतज ए वस्तु अस्थिर छे, कोइने त्यां स्थिर थइने रही नथी सजोगे आवीने प्राप्त थइ अने विजोगे नाश थयो, एम हानि वृद्धि थाय तेनी साथे पोतापणो मानवो ते ज्ञानीने उपचार मात्र छे

एम जाणी उद्वेगने उपशमावी, समभावे वर्ते, तेवा संतोषीने आत्मानंदी कहीए (५)

हवे छठ्ठु लक्षण आत्मरति एटले आत्मगुणमांज प्रीतिरंग लाग्यो छे जेने, एटले रंग केवो लाग्यो छे के कंचननो पित वर्ण छे, चांदीनो धोळो वर्ण छे, परवाळानो रक्तवर्णछे, ए रंगने उतारीए, पलटावीए, तो पलटाय नहि कारण के स्वभाविक रंग छे, तेम आत्मानो जेवो स्वभाव तेवो रंग, चोथु गुणठाणु प्राप्त थता अंशे अंशे चढतो गयो अने जेटलो स्वभाविक गुण प्रगट थयो एटलो उपाधि रंग उतरतो गयो एम करता करता अनुक्रमे परिपूर्ण रंगतो राग द्वेष अने मोहना अभावे, क्षिण मोह बारमु वीतराग गुणठाणु पाम्यां कहीए, एटला सुधी न पहोंचे तेने तद्भवे मुक्ति न मले, पण क्षायक समकितनी अपेक्षाए त्रीजे भवे अने छेवटे चोथे भवे ए जीवो मोक्षगामी छे, वळी क्षय, उपशम समकित, अप्रतिपातिनी अपेक्षाए सातमा आठमा भवे ए जीवो मोक्षगामी छे वळी प्रतिपाति क्षयउपशम, अने उपशम समकितनी अपेक्षाए अर्ध पुद्गल परावर्त्तनी माहेली कोर ए जीवो मोक्षगामी छे एथी अधिक काळ तो ग्रंथिभेदी जीवो संसारमा न रहे, वळी रंग न उतरवानु कह्यु ते, जेणे ग्रंथि भेद करेलो छे, ते ग्रंथि भण काळमा सज्जड थाय नहि अने मिथ्यात्वगुणठाणे जता पण ए जीवो, द्रव्य समकिती छे, उपर मिथ्यात्वनु दळ फरी वळ्यु छे, ते विशुद्ध भावे उतरी जवाथी चोथे गुण-

ठाणे ज्ञाव समकितीपणे, जलदीथी आवशे, ए जीवने फरीथी करण करवां नथी, माटे चोथा गुणठाणानी प्राप्ति थइ तेने ए अपेक्षाए अपलटण रंग कह्यो छे, वळी आत्म-रति पुरुषोत्तम ससारमां रह्या छे कायामां वस्या छे, परंतु अळगा छे यथा दृष्टांते, जेम सरोवरना जलमां कमळ रहु छे, श्रीफळना काचलामां गोळो रह्यो छे, ए दृष्टांते अलिप्त थका न्यारा छे, मोहीत थका पांच इन्द्रीना ज्ञोग सुखमां रमे नहीं, ज्ञान दृष्टिए स्वरूप रमणिपणे वर्ते, ते आत्मरतिने आत्मानंदी कहीए. (६)

हवे सातमुं लक्षण साहसिक एटले धैर्यवान, वीर्य-वान, सत्ववान, ए लक्षणे ज्ञानी आत्मा कायामां रह्यो थको, सुखसपदा अने दुःख आपदा, संयोगिकज्ञावे पूर्व कर्मनी उदयीकताए, प्राप्त थये अदिनवृत्तिए वर्ते, दीनता न ज्ञावे, कारण के सुखसंपदा ते तनधन राजऋद्धि तेने तेमणे अनित्य, अशाश्वति जाणी छे वळी सज्जन कुटुंब वाहिर मेलावशो छे, तेनु सगपण स्वार्थ सरे त्यां लगे छे जुवो के, ब्रह्मदत्तनी माता चुलणीए पोतानो स्वार्थ नहि सरवाथी पुत्रने लाखना मेहेलमां सुवा मोकलीने सळगावी दीधो, एतो एनु आयुष्य हतु तो जीवतो रह्यो, पण माएतो मार-वानोज उपाय कर्यो वळी श्रेणिकराजाने पोतानो पुत्र कोणिक तेनो स्वार्थ नही सरवाथी राजना लोज्ञे पिताने पांजरामां घाली रोज पांचसो कोरडा मारे अने अंते ए वेहुने कमोते मरवानो वखत आव्यो, वळी परदेशी राजानी

सूरिकांता नामे स्त्री तेनो स्वार्थ नही सरवाथी झेर खव-
रावी पतिने मार्यो वली ऋषभदेवस्वामीना बे पुत्रो भरत
अने बाहुबल तेमां वडा भरतनो स्वार्थ नहि सरवाथी,
बाहुबल छोटाभाइ उपर चक्र मेल्यु, एतो गोत्रमा न ला-
गवाथी आमन्याए बाधा नहि करता पाछु आव्यु नही
तो चक्रनो धर्म मस्तक छेदवानो छे, माटे एणे तो मारवा-
नोज उपाय कर्यो, वळी सोमिल ससरे पोतानो स्वार्थ नहि
सरवाथी गजसुकुमार जमाइना मस्तक उपर माटीनी पाळ
बांधी अग्नि भरीने बाल्यो, इत्यादि ससार सगपणनां अ-
नेक दृष्टांतो छे, ते विचारता बाहिर मेलावडानो, वळी तन,
धनादि ऋद्धिनो स्नेह राग ततु बंधननो बधपास तोडी,
छोडीने पोते साहसिक थका अदीनपणे वर्ते, वळो दु ख
आपदा जे रोगादि व्याधि प्रगट थया सनतकुमार महा
मुनिश्वरनो दृष्टांत विचारी अनुभवीने, वळी तन ममता
टाळीने पूर्वकृत कर्मना फळ जाणीने भेद ज्ञान घटमां लावीने
कायाथी आत्माने अलगो करीने तन्मय परिणाम पामीने
तद्गत भावने गवेखीने, परमशमताना उपयोगे सेहेता
थका वर्ते, वळी मनुष्यना तिर्यचना, देवना करेला उपसर्ग
उपजे तीहा दृढप्रहारीनो अथवा मेतारय मुनिनो दृष्टांत
गवेखीने भावे पोतपोताना ज्ञानध्यानमा वर्ते, वळी एम
चितवे के छेदनभेदन ताडन, बधवधनादि करे छे, ते पु-
द्गल पुद्गलने करे छे तेमने लागे नही वळी पुद्गल
क्षणभगुर छे, तेनो नाश थशे ते तारु पोतानु नथी, एतो

तारे भाभानुं घर छे, तुं ए पुद्गलनु परिणमन वीर्य फोरवीने तजी दे एटले इंद्रियद्वारे आत्मानी चेतना परिणाम पामी छे, तेने पलटावीने स्वरूपे सहजभावे परिणमावे तो, कायाना सुख दुःखनो विभागी पण चेतन पोत न थाय अने ध्यानगत सिद्धना अव्याबाध सुखनो, अंशे भोगी थाय, वळी विशेषे वीर्य स्फुरणा पामे तो क्षपकश्रेणी मांभी, कर्मने हणी, अकर्मी थइने सिद्धि वरे. एवा साहसिक पुरुषोत्तमने आत्मानंदी कहीए. (७)

हवे आठमुं लक्षण गिरुउते घणा गुणवतो एटले गंभिर पर उपकारनो कर्त्ता अपूर्व दर्शन छे जेनुं परमलाभनुं कारण एटले जे उपद्रव करतो आवे तेना तननो ताप दूर करे तो जे विनय पूर्वक दर्शन पामे. तेनो तो ताप रहेज शेनो, वली वचनने श्रवण करे तेना मननी व्याधि जे कलुषता ते नाश पामे वली मनन चितवन करे, तेने संतोष सुख प्रगटे तद्गत भावे परिणाम पामे लय पामे, तेने चतुरगति ससार भ्रमणनो अत छेमो आवे अने निर्वाणपद पामे एम अनतो उपकार करता मनोवांछित पुरवाने भावकल्पवृक्ष समान याचकनी भूख भागे तेमने गिरुउ कहीए एटले इष्ट फळदाता छे ते इष्टना बे भेद एक व्यवहारइष्ट अने बीजु निश्चयइष्ट जे व्यवहार इष्ट मागे तेने वैराग्यनो उपदेश करी ससारनु अनित्यपणुं वली असारपणु देखामी ससार त्याग करावी दिक्षा आपी पच महाव्रत आदे चरणसित्तरि अने पमिलेहण आदि करण

सित्तरि मली एकसोने चालीश भेदे चरणकरणानुयोगनु जाणपणु करावी समजावी विधिपूर्वक प्रवर्त्तावी स्वर्गे मोकले तेने व्यवहारे इष्ट फलदाता कहीए अने निश्चयइष्ट मागे तेने द्रव्यानुयोगनु जाणपणु करावे एटले धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काळ पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय ए षट्द्रव्यनी वाख्या करी गुणपर्याय, स्वभाव लक्षण उंलखावी पाच अजीव अचेतन द्रव्यथी एक पोतीको चेतन द्रव्यभिन्न (नोखो) पामी, हेय, ज्ञेय, उपादेय ए त्रिभंगी समजावी, पाच अजीव, अचेतन द्रव्यनो हेय कहेता त्याग करावी एक पोतीको आत्मा, सिद्धनो साधर्मि मोक्षमयी मोक्षमा रहेवावालो एज उपादेय कहेता आदरवा योग्य छे एम दृढता करावे, श्रद्धा प्रतित करावे तीहा गुणने उंळखतो गुणनो राग प्रगटे ते रागनो प्रेर्यो थको अत करणे उभो उतरी खोज करे अतर्गत स्मरण चितवन करे रमण करे अनुभव करे पोतीका सहज भावे वीर्य फोरवे श्रेणी मांडी घनघातिकर्मनो नाश करी अनत चतुष्टयी पामी योग रोध करी अघातिकर्म हणी सिद्धि वरे तेने निश्चयथी इष्ट फलदाता कहीए ए महा उपगारी, करुणासागर, स्पृहा रहित, तत्वचितक, तत्वगवेषि, तत्वरमणी पोते तरे अने निरुउं बीजाने तारे तेमने आत्मानदी कहीए (८)

हवे नवमु लक्षण निर्भय एटले परवस्तुने विषे पोतापणो एकाते मानवानी बुद्धि, सम्यक्ज्ञान सम्यक

दर्शननी प्राप्ति थतां टळी छे. तीहांथी निर्नय, वली तत्व-दृष्टिए विचारीए तो जीहां, अप्रतिपाति क्षय उपसम-भाव थाय एटले हानि न पामे त्यारे निर्नय दशा मानीए एटले अप्रतिपाति उपशम आत्मा क्यारे पामे? तो कोइक जीवो छासठ सागरोपम उजेरी ससार काळ-स्थिति वाकी रहे त्यारे पामे अने कोइक जीवो, तेत्रीस सागरोपम उजेरी ससारस्थिति काळ वाकी रहे त्यारे पण पामे. वली कोइक जीवो छेल्ले भवे तो पामेज पण आठ भवथी अधिक संसारस्थिति छे जेने, तेतो अप्रतिपाति क्षय उपशम न पामे अने अप्रतिपाति क्षय उपशम भाव न आवे तीहां समकितनी सावीती न रहे अने मि-थ्यात्व प्राप्त थाय तीहां हानि कहीए माटे अप्रतिपाति क्षय उपशमने पामेला चोथा गुणठाणाना भावने अचळ थयेला उपरना गुणठाणे चढे अने पडे पण चोथा गुणठा-णाने न छोडे ते निर्नयवत पुरुषोत्तमने मुख्यताए आत्मा-नदी कहीए (९)

हवे दसमुं लक्षण निष्कपटी एटले कपट करवानुं कारण शु छे तो एक मान अने वीजो लोभ ए वे छे ए वे प्रकृतिनी उछास करीए, तीहां कपटनो संभव न आवे ए मानना वे भेद. एक अप्रशस्तमान, वीजुं प्रशस्तमान? लोभना वे भेद एक अप्रशस्त लोभ, वीजो प्रशस्त लोभ एम वे प्रकृतिना चार भेद थया तेमां अप्रशस्त, मान अने लोभ छे, ते संसारमां कपट करवानो हेतु छे

अने प्रशस्तमात अने लोज्ञ छे ते धर्म करणीमां कपट करवानो हेतु छे, माटे प्रशस्त अने अप्रशस्त ए मोहनी कर्मनी प्रकृतिओ छे ते सर्वे आत्माने अहितकारी छे. वली प्रशस्त छे तेज अप्रशस्त प्रकृति बांधवानो हेतु थाय माटे तजवा योग्य छे धर्म अर्थी पुरुषले वक्रतानो त्याग करी सरळ न्नावे वर्त्तवु एज श्रेय छे, कल्याणकारी छे एम सरळवृत्तिए थया तेहने आत्मानंदी कहीए (१०)

हवे अगीआरसु लक्षण अनुन्नवज्ञान एटले मतिश्रुतज्ञाननु कार्य एज अनुन्नवज्ञान छे अने केवळज्ञान नु कारण एटले हेतु एज अनुन्नव ज्ञान छे. वली मतिश्रुतज्ञाननो उत्तर न्नावी अने केवळज्ञाननो पूर्व न्नावी एज अनुन्नवज्ञान छे दृष्टांत जेम सूर्य छे तेम केवळज्ञान छे अने सूर्योदय थता पहेला सूर्यमंडळथी रक्ततारूप प्रकाशनी सदृश्य निकट वृत्तिए जेम अरुण देखाय छे ते दृष्टांते अनुन्नव छे एटले साक्षात् वस्तु स्वरुपनु जाणवु उपयोग दृष्टिए प्रत्यक्ष करतळवत करवुं प्रत्यक्ष प्रमाणे निरधार करवो ते अनुन्नव ज्ञानथी थाय पण जीनागम एटले सूत्रसिद्धांत अने सिद्धांतनी निश्राए ग्रंथो वली अन्य दर्शनीना सर्वे शास्त्र तेनो व्यापार एटले उद्यम करतां न्नणता, वांचतां, जोता धारता, निर्णय न थाय कारण के जे शास्त्र छे ते कार्यसिद्धिनी दिशाने बतावे छे वली वस्तुस्वरूपने अनुकूळ जे बोध तेनी प्रवृत्तिनो विधि तेनु निमित्तमात्र कथन करे छे. जेमके पूर्व दिशानी सामी पश्चिम दिशा छे. एम सूचवे छे

वली श्रोता जनोने, जागृत करे छे. परंतु चतुर्गतिससार भ्रमण टाळी निर्वाण पद जे निज स्वरुप शुद्ध चेतननु पामवुं ते, अनुभवगम्य छे एटले इंद्रियज्ञानथी अतिंद्री आत्मस्वरुप स्पर्शीत वोध न थाय अनुभवज्ञाने थाय. माटे १०० सो शास्त्रनी युक्तिउथी पण अतिंद्रिपरब्रमनु ज्ञान थतुं नथी एम महोपाध्याय यशोविजयजी ज्ञानसार ग्रंथे छवीसमा अनुभवाष्टके कहे छे. माटे हे भवजीव भाइउ तमारे जो मोक्षना सुखनी चाहना होय तो, अनुभव ज्ञाननो खप करो अने इंद्रीउ सगे पोताना आत्मानी चेतना एक्यतापणे खीरनीरना द्रष्टांते पुद्गळ मिश्रित अनादि संबंधेछे. तेहने अनुभवरूप चांच एटले ज्ञान योगनी स्फुरणाए करीने पलटावी घटतर वृत्तिए स्वस्रूपे सहज भावे परिणमावो अने मनयोगने अतःभुवने ज्ञान खीले अने समाधि दोरडे वांधो एटले अनुभवज्ञान ज्योति, अति प्रकाशकर्त्ता, अनुभव भुवने उदय पामशे तीहां पोतानो आत्मा शिवरूप छे. वली मग्न छे एटले ज्ञानामृते परिपूर्ण भरेलो सागर छे वली सागरने विषे थळभूमी द्रष्टिगोचर न आवे अने जळ आवे तेम अनुभव सागरने विषे, वर्णादि पुद्गळ द्रष्टिगोचर न आवे वस्तुना तत्वनी गवेषणा उद्योतमय परपाटी ज्ञान आवे एम छे एटले खुल्लो आकाश प्रथुल सपाट उद्योतमय छे, ते ज्ञानामृत सागरमां स्थिर थयेला ते मग्न कहेवाय एटले आत्माना अनता गुण छे अने गुणगुणनो स्वभाव भिन्न एटले जुदो जुदो छे

थाय, वा लोभमा ठंगाश थाय, तीहां विरोधनो सम्भव आवे, ए बे प्रकृतिने जेणे पूंठ दीधी ठे. एटले पूंठ दीधी एम क्यारे जाणीए के जे पुरुषो पोताना तदगत आत्मस्वरुपना चितक ठे सत्ताए रहेली ज्ञानादि अनता गुण अने अव्याबाधादि अनता पर्याय तद्‌रूप ऋद्धिना जाण ठे परतु क्षायक भावे ए ऋद्धिनी प्रगटताना अभावे पोताना आत्मानी लघुता भावे हानि चितवे तीहां माननो असम्भवठे वली देवेंद्र नरेंद्रादि पदनी इन्द्रि नोइन्द्रिजनित जे विषय सुखनी हेतुभूत एवी तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्गलीक विनाशिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेने जे पुरुषो अलच्छी माने तीहा लोभनो असम्भव ठे वली सर्व जीवराशीने सत्ताए सरखा सिद्धना बरोबरीआ स्वजाति जाणीने स्वामीत्व सबधे मैत्री भावना भावे ठे. तेमनु भलु चिंतवे ठे ते पुरुषोत्तम विरोधि भावथी विमुख ठे तेमने अविरोधी कहीए वली ए पुरुषोत्तम केवा ठे तो मनुद्धेग कहेता उद्धेग पामे नही एटले उद्धेग पामवानु कारण ए ठे के जेणे पोतानी कायाने पोतापणे जीव मान्यो ठे. वळी सजन कुटुंबादिने पोतानु मान्यु ठे, वळी धन, दोलत, राजमहेल, राजऋद्धिने मारी मानीठे ते जीवने ए ऋद्धिनी हानि थाय, विनाश थाय, तेथी उद्धेगता आवे, सताप करे, हु निर्धन थइ गयो दारिद्र अवस्थाने पाम्यो, भिक्षुकवत कगाल थइ गयो, आशु थइ गयु, एम आर्त्तध्याननो ध्याता थाय, तेने उद्धेग कहीए, परतु जेणे एक पोतानो आत्मा,

ज्ञान, दर्शनादि गुणे युक्त शाश्वतो, एज मारो एम जाण्युं छे, सद्दह्यु छे, वळी ए शिवाय जे वीजुं अन्य प्राप्त थयुं ते पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय सयोगे मळ्युं, ते वाह्यनाव छे, मारी ने एनी वस्तुगते जुदाइ छे, ए संयोग संवधने पोतानो मानीने मे आ संसार चतुर्गतिन्रमणचक्रमां न्रमतां थकां, अनंतां पुदुगल परावर्त्त पूर्वे कीधां, नर्कनिगोदनां अनंतां दु ख, असख्यातो, अनतो काळ पर्यंत सह्यां, वळी फरी फरी दुःखनी परंपरा पाम्यो, तेनु मुळ कारण ए छे के में परने पोतानु अज्ञानपणे, वळी अणान्नोग मिथ्यात्वे अनादि संवंधे मान्यु, वीजुं नथी, वळी शुं जाणीए के हे चेतन मिथ्यात्ववशे तु तारा ज्ञानदर्शन तद्रूप वोधने गमावीश, अने फरीथी पाछु परने पोतानुं मानीश, तो चतुर्गति न्नवचक्रमां भ्रमण करतां थकां अनतां दु.खनी परंपरा पुनरपी नर्क नीगोदआदि गतिने विषे पामीश अने नर्कना दु.खनो विपाक तो अति कटुक, ते इहा वर्णववा वेसीये तो ग्रंथ गौरव थइ जाय, माटे हे न्नवन्नीरु न्नाइयो तमे सिद्धांतथी वा, सद्गुरुना उपदेशथी जाणी लेजो अने निगोदनु दु'ख तो सातमी नरके एक पाथडो छे अने तेमां पांच नर्कावासा छे. तेमां वचलो, अपैठाण नामा नर्कावासमां सर्वोपरी अनतगुणी अधिक वेदना छे ते दु.खना वर्ग करीए, तेने वळी अनतगुणो करीए, एम अनती रासीए निगोदीयो जीव अव्यक्तव्यपणे, अनादि सवधे दु.ख न्नोगवे ते दु.खनो विरहकाल एक समय मात्र पण, निगोदमां

नथी अने नर्कमा तो, तीर्थकर भगवाननां कल्याणक अवसरे जीवअंतरमुहूर्त्त सातावेदे एटलो दु:खना विरहकाळनोसंभव नर्कमां छे, वळी नर्कमा.तो कोइक जीव समकित पण पामे माटे निगोदनी अपेक्षाए तो नर्क सारी छे, पण बेहु गतियो दु खमयी छे तेनु मूळ कारण ए छे के पोतानो तत्व न जाण्यो अने परने पोतानु मान्यु, माटे हे चेतन ! हवे समज अने तु तारा तत्व उपर दृष्टि कर, ने पर उपरथी पोतापणानी दृष्टि टाळ अने हवे पोताना तत्वने भुलीश नहि. ने परने विषे पोतापणानी बुद्धि करीश नहि, एम अनुभव युक्त परिपक्व ज्ञानयोगने घटतर वृत्तिए क्षय उपशम भावनी सहाय मळवाथी योतिरूप प्रकाश (उद्योत) कर्त्ता, सहजभावे थयो छे जेने, ते पुरुषोत्तम उद्वेग केम पामे अर्थात् नहि पामे, समभाव कहेता एक पोताना स्वभावे थया, एटले स्वभावे थया एम क्यारे जाणीए के, शुभाशुभ बन्ने वस्तुने विषे समदृष्टिए जोनारा एटले शुभाशुभमा दृष्टि नहीं करवावाळा तेनो रहस्य एम छे के जे पुरुषो मोहित छे ते मनोज्ञ रूपा पुद्गल तेनी अभिलाषा करे छे तेनु नाम विभाव छे ए विभावनो नाश थयो छे इच्छानो रोध थयो छे जेने एटले निर्मोह वृत्ति थइ छे, उपयोग दृष्टि पोताना सहज भावमा स्थापी छे तेने समभाव कहीए

चळाचळ कहेता जे मननी चपळता ते नाश पामी छे जे पुरुषोत्तमनी, एटले मन जोग ने अतरगत, मनन भुवन छे, तीहा ज्ञानरूप खीले अने समाधीरूप दोरके

वांध्यो छे तेथी निश्चल थया छे, अहं ममत्व कहेतां जे हुने मारुं, आ संसारमां लागी रह्यु छे, ए मोहनी छाक छे, एटले हुं शब्दे पोतानी काया अने कायाथी बीजो जेटलो संबंध, कचन कामनी आदे राजरिद्धि, जे प्राप्त थइ ते मारी वळी ते वस्तुने विषे, पोतापणानो ममत्व छे, परित्यक्तं कहेतां ते अहपणाना ममत्वनो त्याग कर्यो छे जेणे, एटले त्याग तो कर्यो पण केवी रीते कर्यो के, अज्ञान द्रष्टिए नहि ज्ञानद्रष्टिए कर्यो छे अज्ञानद्रष्टिए तो सिद्धांतमां कहे छे के, मेरु पर्वत जेटला, ओघा मुहपत्ति, कंचन कामिनीनो त्याग करीने ग्रहण कर्या पण समकितनी स्पर्शना थइ नही अने ससार खुटयो नही तेनुं कारण ए छे के, त्याग करी छोमी तो खरी, निर्ग्रंथ थया, पण परवस्तुथी मारापणो अनादि संवधे सज्ञाए चाल्यो आवे छे तेहने छेद्यो नथी, एटले तद्गत आत्माने उपयोगगोचर द्रष्टि प्रत्यक्ष कर्यो नथी तीहां सुधी, परवस्तु मारी नथी. परवस्तुनो हुं स्वामी नथी एम निर्णय न थयो अने छोमे ते कांतो दुःखगर्भित त्याग छे अने कांतो मोहगर्भित त्याग छे पण ज्ञान गर्भित त्याग नथी, ज्ञानगर्भित त्याग तो एम छे के, स्वपर विभाग व्हेंची परवस्तु परपणे जाणी पोताना आत्माना विषे नास्तिभावे रही छे तेनो हुं स्वामी नथी जे मारु छे ते मारी पासे छे मारा स्वरुपमां तो कोइ वस्तु त्यागवा योग्य नथी तेम मारा आत्माथी जे अन्य वस्तु छे तेमांथी मारे कोइ वस्तु ग्रहवा योग्य पण नथी. कह्यु छे समाधिशतकेः—

દુહા

ગ્રહણ અયોગ્ય ગ્રહે નહી ॥ ગ્રહ્યો ન છોડે જેહ ॥
જાને સર્વ સ્વભાવને ॥ સ્વપર પ્રકાશક તેહ ॥૧૮॥
ત્યાગ ગ્રહણ બાહિર કરે ॥ મૂઢ કુશળ અંતરંગ ॥
બાહિર અતર સિદ્ધકૂ ॥ નહીં ત્યાગ ઓરસંગ ॥૪૬॥

એમ જાણીને પોતાની વસ્તુએ સંતોષી થયા તેમને નિશ્ચયથી ત્યાગ કહીએ વલી તેમનેજ નિર્ગ્રંથ કહીએ અ-કર્મ કહેતા કર્મશબ્દનો અર્થ ક્રિયા છે. તે અકાર શબ્દે બાહ્ય ભાવે નહીં કરવી તેને અકર્મ કહીએ એટલે વિરોધ નહી કરવો ઉદ્વેગ નહી કરવો ઇચ્છા વાંછા મોહવશે થાય તે નહી કરવી મનની ચપળ વૃત્તિએ દૂર્ધ્યાનનો ધ્યાતા થાય તે નહી કરવુ અહં મમત્વ નહી કરવો એમ નહી કરવાનુ કહ્યુ તેજ કર્મ ઉચ્યતે કહેતાં તેને નિર્ગ્રંથ પદની વલી સવરભાવની અને મોક્ષ પથની અનુકુળ હેતુ શુદ્ધ પ્રવૃત્તિરૂપ ક્રિયા કહીએ એટલે નિર્ગ્રંથ પદની બાહ્ય ભાવમા અકરવાપણે કરણી છે એમ ઉચ્યતે કહેતાં આ-ત્મજ્ઞાની મહાત્મા પુરુષો કહે છે (૧) વલી કહ્યુ છે

બાહ્યવૃત્તિયે ગુણઠાણે ચઢવું, તેતો જમના ભામા ॥
સંયમ શ્રેણિ શિખર ચઢાવે, અંતરગ પરિણામારે ॥
લોગા ભોળવિયા મત ભુલો૦

વળી પરમાનદ પચ્ચીસીએ,—

श्लोक.

उत्तम आत्म चिंता च, मोह चिंता च मध्यमा ॥
अधम काम चिंताय; परचिंताऽधमाधमा ॥ १ ॥

अर्थ–उत्तम आत्म चिंताच. कहेतां जे आत्मस्वरुपनी चिंता एटले चिंतवणा करवी गवेषणा करवी, ते चिंतवणा बाह्यवृत्तिमां नथी त्यारे क्यां ठे तो अंतरवृत्तिए ठे तिहां पण मनयोगस्थिरता पामे त्यारे चिंतवणा शक्ति आवे, एम करतां करतां अभ्यासे करीने, मन स्थिर थाय अने क्षय उपशम भावनी सहाय मळे तो तद्गत स्वरुपे ज्ञानज्योति उद्योत प्रकाश अनुभव भुवने करे ए अनुभव भुवन केवुं ठे तो, सामो भित प्रमुख आडो पडदो नथी घणो मोटो सपाट वगीचो एवो खुल्लो आकाश, जेम सूर्यना तेजे करी प्रकाशित होय ए दृष्टांते अतरगत अनुभव भुवनमां ज्ञानज्योतिए प्रकाशित, अति उद्योत कर्त्ता एवुं अनुभव भूवन ठे तिहां चिंतवणा अनुभव वळे अपूर्व प्रगटे एटले ध्यानगत भेदज्ञाने, एक पठी बीजो एम विचाररूप अनुभव धारा तत्वनो निर्णय करवारुप, परिपाटि चाले तेमां पृच्छा करवानी तर्क पण करवी रहे नही. एम अशकित निरधार वस्तुने विषे वस्तुपणानो करवानुं एज एक अनुभव भुवन ठे वळी अनुभवनी धोरु केवी ठे के जेम रेलवेनी धोरु ठे तेम अनुभवनी एटले तत्वनी गवेषणानी धोरु ठे, अरुपि आत्माने दृष्टिगोचर करवानु एक एही अपूर्व स्थान ठे ए अनुभवना-भावने जाण-

वाना अर्थे ऽहा त्रण सवैया लखीए ठीए तेथी हे तत्वबो-
धना अर्थि जाञ्जो तमे अनुन्नवनो खप करजो.

सवैया एकतीसा

मनसो अचळ रहे ज्ञान ध्यान तदे तदे.
रहे स्थिर थइने अनुन्नव सो रग है
पाचु इंडीथी चले चेतना इहा न मळे
मळे अनुन्नव स्थळे सही सहज न्नाव है
अनुन्नवे अति घणु धारणा सो एक अणुं
अनुन्नव गये गणुं अतद करण है
लाग्यो पाछो आवे नही आवे मनस्थिर तही
रहे न उपाधि मही शिव खुलो खेत है (१)
अनत गुणोमा आगु ज्ञानने दर्शन जागुं
अनुन्नव थाय लागु स्वरूप रमण है
तिक्षण धारा न टूटे मोहनो खजानो खुटे
शुन्नाशुन्न बंध छूटे सो अशुद्धवान हे
शुद्धको स्थापन सही देखे परत्यक्ष अही
मन जोग स्थिर तही खुल्लो खेल तान हे
असकित वात एही गति रेलवेल तेही
शोभाव्यो सो शोन्ने सही अत सो स्थिर है(२)
सहज स्वन्नावे आवे जडतासें खसी जावे
अनेक चक्षु मिलावे एसो घटंतर है

आतम ग्यान ध्यान सो आतम धर्मवान सो
परम पद सांन सो देख्यो अनुभव है
सित गया आणे छे अमृत भक्त भाणे ठे
अनुभवी सो जाणे ठे एन आवे वचन है
वंदना हमारी सदा रीझसु आवसो जदा
ज्ञान शीतळ तदा मित्र प्रमोदित है (३)

एम आत्म चिंता एटले आत्मस्वरुपनी चितवणा करवी, वस्तुगते वस्तुपणानो निरधार करवो ते अनुभवगम्य ठे अने अनुभवनी जेने प्राप्ती थइ ते उत्तम कहेतां पुरुषोत्तम ठे, मोहचिताच, कहेतां जे पुरुषे, सप्रविभाग वहेची आत्मस्वरूप चितवी, अनुभवीने ग्रंथिभेदपूर्वक समकित प्रगट कर्यु ठे, यथार्थ श्रद्धा करी ठे, वस्तुने विषे वस्तुपणानो निरधार थयो ठे, वळी संसारने असार जाणी, ठोमीने, अणगार थया ठे ते ठतां पोतानु वीर्य तद्गत सहज भावमां वृद्धिए स्फुर्णा न पामे, अने परभवे देवलोकादि ऋद्धिनु पामवुं इत्यादि मनोज्ञ भोगनी इच्छा मोहीत थका करे, तेवा पुरुषने मध्यम कहीए, अधम काम चिताच, कहेतां उपर कह्यु ए प्रमाणे समकित मूळ सर्व विरति थया ठे, ते ठतां कर्मनी विचित्र गति ठे, अने उदय महा वळवान ठे, तेथी करीने, कंदर्पने एटल काम चिन्हने उपशम करवानी बुद्धिए, आकरी तपस्या करतां ठतां पण न शम्यो अने व्याकुळतानो पराभव क्षीण न थयो

एम करता कारण पण उदय पूर्वक तेवुज मळी आव्यु तेथी करीने लिंगथी भ्रष्ट थया अने स्त्री सगे विषयभोग करे, पण समकितनी, ज्ञाननी, यथार्थ साचिती छे, गुमाव्यु नथी ते पुरुषने अधम कहीए, कारण के जो ए वेद अग्नि, कर्म क्षीण होवाथी, शात थाय तो पाछु पुनरपि एज भवे संयम ग्रहण करीने, निरतिचार चारित्र पाळी, तद्गतभावे, वीर्यनी स्फूरणा पामे तो यावत् सिद्धि पण वरे; नहि तो जे गतिनु आयुष्य बाधे ते गतिमां जाय, पण ए अते मोक्षगामी छे, माटे अधमाधम न कह्यो परचिता कहेतां पर जे तन, धनादि तेना बे भेद, एक अशुभ अने बीजी शुभ एटले वस्तुगते आत्मा जुदो छे अने तन, धनादि जुदु छे, तेने जुदुं न जाणे अने कायाने जीव समजे, वळी सज्जन कुटुंबादि राजऋद्धिने पोतानी समजे, तेना वास्ते पापस्थान सेवे अने परिग्रहने निधान माने आर्त्त, रौद्रध्याननो ध्याता, वस्तुना स्वरूपनो अजाण, तत्वथी विमुख, रात्रीभोजननो कर्त्ता इत्यादि अशुभ चितानो कर्त्ता, ए पहेलो भेद कह्यो

हवे बीजी शुभ चिता, तेना बे भेद, आरोप शुभ, अने अणारोप शुभ, अणारोप शुभ तो, सम्यक्ज्ञानीना घेर सभवे, ते इहा न लाधे हवे आरोप शुभना बे भेद एक सामान्य, बीजो विशेष सामान्य आरोपित शुभ तो ए छे के गुरुमहाराजने वादे वळी सामान्य प्रकारे विनय साचवे, जीनबिंबना दर्शन करे, तीर्थयात्रा करे दिन दुःखी-

यांनी अनुकपा करे इत्यादि ए सामान्य आरोपीत शुभनो प्रथम भेद कह्यो हवे विशेष आरोपित शुभ तो ए छे के दुःखगर्भित मोहगर्भित वैराग्य पामीने, संसार त्याग करी, निर्ग्रंथथाय, पचमहाव्रत आदे,चरणसित्तरीअने पल्लेहण आदे करणसित्तरीनो ग्राहक थाय, शक्ति पूर्वक तप करे, पोताना क्षय उपशम पूर्वक भणे, गुरुवादिक वकेरानो विनय वैयावच्च करे, पुन्यने भलु जाणे, परतु जीहां सुधी पोताना आत्माने कायाथी जुदो जाण्यो, (अनुभव्यो) नथी तिहां सुधी ए शुभाशुभ चितानो कर्त्ता जरु जीव छे तेने परचिंता कहिए धमाधमा कहेतां एम परचिंतानो कर्त्ता ते जीवने अधममां अधम कहीए कारण के भगवतीजीना पहेला शतकना बीजा उद्देशे, नवमा ग्रैवेयकना ग्राहक सर्व विरति साधुने वीर परमात्माए, वळी गणधर महाराजे असंयति कहीने बोलाव्या छे, वळी तीहां सुधी जवानी योग्यता तो मिथ्यात्वी भवी अने अभवी बेहुमां पण कही छे, वळी परने पोतानुं मानवुं एज अज्ञान, अने एज मिथ्यात्व छे, वळी सथारा पोरसिमां पण कह्युं छेः–

संयोग मूला जीवेण, पत्ता दुःख परंपरा,
तम्हा संयोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥१३॥

अर्थ.–संयोग कहेता पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय सजोगे जे वस्तु प्राप्त थइ ते वस्तु जीवने पर छे, तेने विषे एकांते पोतापणानी बुद्धि एज दुःखनी परंपरा पामवानु मूळ कारण

कहेतां परमनाम उत्कृष्ट पद जे आत्माने कर्मथी मुकावुं तेने मुक्ति पद कहीए. ते न याति कहेतां न पामे. इहां कहेवानो सार एटलो छे जे बाह्य क्रिया जोगे संसार अने अंतर क्रिया जोग मोक्ष ए वात निःसंदेह छे, हवे जेथी मोक्ष सुख मले ते कहे छे (४)

ज्ञान योगस्तपः शुद्धमात्मरत्येक लक्षण

इंद्रियार्थोन्मनीभावात्स मोक्ष सुख साधक. ॥५॥

अर्थः—ज्ञान आत्मा ज्ञान योग धारण करे छे, ते ज्ञान योगना बे भेद एक भेदज्ञानयोग अने बीजो अभेद ज्ञानयोग तेमां पहेलो भेद ज्ञानयोग छे तेना बे भेद एक कृत्रिम अने बीजो अकृत्रिम. तेमां कृत्रिम भेद-ज्ञान छे ते चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अंतरमां अनुभव छे. ते कृत्रिम जाणवो परंतु क्षयोपशम भावनो छे. ते उछाळा खातो रहे छे एटले परसंगथी छुटी शकतो नथी. परंतु तत्वातत्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, आत्माना त्रण भेद चितवे, बहिरात्मा, अतर आत्मा अने परमात्मा अथवा नय-निक्षेपपक्ष प्रमाण विचारे. इत्यादि स्वरूपे कृत्रिम अनुभव ए पहेलो भेद, ते कह्यो हवे बीजो भेद अकृत्रिम भेदज्ञाननो ते आठमा गुणठाणाथी श्रेणिगते आवे इहा उछाळानो संभव नथी वळी प्रसंग वृत्ति नथी, ज्ञान तो क्षयउपशम भावनुं छे, परंतु अतिविशुद्धि भावने पामेलुं घणु निर्मळ

छे हा! हा! इति खेदे चेतन थइने अचेतननी बुद्धि राखे छे, माटे आ श्लोकमा परचिंताना कर्त्ताने अधममा अधम कह्या, ते यथास्थित छे

अध्यात्म सार ग्रंथे,–

श्लोक

या निश्चे कलीनाना, क्रियानाति प्रयोजना ॥
व्यवहार दशा स्थानाना, ता एवाति गुणावहा॥१९॥

अर्थ –जे मुनीश्वरनु मन निश्चय पोताना स्वरूपमां लिन थयु अने स्वरूप ओळखाण करी तेमांज रमेछे तेवा मुनीश्वरने बाह्य व्यवहार प्रमुख क्रिया करवानु कंइ प्रयोजन नथी जेने मोक्षनी अभिलाषा छे तेने क्रियानी कांइ जरुर नथी अने जे ज्ञानदशा पाम्या नथी तेने व्यवहार क्रियानो खप छे केमके ते थकी शुभ कर्म उपार्जे, पण मुक्ति हेतु न थाय (१९)

आवश्यकादि रागेण, वात्सल्याद्भगवद्गिरा ॥
प्राप्नोति स्वर्ग सौख्यानि न याति परमं पदं ॥४॥

अर्थ –आवश्यकादि रागेण कहेता प्रतिक्रमण प्रमुख क्रियाने विषे अथवा उपवासादि तपने विषे राग छे वली जिनवाणी सांभलवानो राग छे एटले परमात्मा भाषित अथवा परमात्माना मार्ग अनुसारी एटले सूत्रसिद्धांत ग्रंथ प्रकरणादि सांभळवानो राग छे ते सर्वने शुभराग कहीए ते थकी स्वर्गना सुख पामे पण तेथी परम पद

कहेतां परमनाम उत्कृष्ट पद जे आत्माने कर्मथी मुकावुं तेने मुक्ति पद कहीए ते न याति कहेतां न पामे. इहां कहेवानो सार एटलो छे जे बाह्य-क्रिया जोगे संसार अने अंतर क्रिया जोग मोक्ष ए वात निःसंदेह छे, हवे जेथी मोक्ष सुख मले ते कहे छे (४)

ज्ञान योगस्तपः शुध्दमात्मरत्येक लक्षण
इंद्रियार्थोन्मनीभावात्स मोक्ष सुख साधक. ॥५॥

अर्थः—ज्ञान आत्मा ज्ञान योग धारण करे छे, ते ज्ञान योगना बे भेद एक भेदज्ञानयोग अने बीजो अभेद ज्ञानयोग तेमां पहेलो भेद ज्ञानयोग छे तेना बे भेद एक कृत्रिम अने बीजो अकृत्रिम तेमां कृत्रिम भेदज्ञान छे ते चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अतरमां अनुभव छे ते कृत्रिम जाणवो परतु क्षयोपशम भावनो छे. ते उछाळा खातो रहे छे एटले परसगथी छुटी शकतो नथी. परतु तत्वातत्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, आत्माना त्रण भेद चिंतवे, बहिरात्मा, अतर आत्मा अने परमात्मा अथवा नय-निक्षेपपक्ष प्रमाण विचारे इत्यादि स्वरूपे कृत्रिम अनुभव ए पहेलो भेद, ते कह्यो हवे बीजो भेद अकृत्रिम भेदज्ञाननो ते आठमा गुणठाणाथी श्रेणिगते आवे इहां उछाळानो सभव नथी वळी प्रसंग वृत्ति नथी, ज्ञान तो क्षयउपशम भावनु छे, परतु अतिविशुद्धि भावने पामेलु घणुं निर्मळ

छे, उपयोग तिक्ष्ण छे, इहां एक पोताना द्रव्यनो विचार भेद अपेक्षाए छे, परपक्षनो ग्राहक नथी, पोतानु मुक्तस्वरूप प्रत्यक्ष रीते, स्याद्वादपक्षनी ऐक्यतापणे स्वभाववृत्तिए अनुभवे छे, ते अकृत्रिम भेद ज्ञान योग साधननो बीजो भेद ते कह्यो, इहां समजुनो तर्क थशे जे, केवळ ज्ञाननो अनुभव ते अकृत्रिम छे, बाकीनो अनुभव ते कृतिम कहेवाय कारण के अनुक्रमे अनुभव थाय तेनो उत्तर जे केवळज्ञान छे ते क्षायक भावनु निरावरण, आवरण रहित छे ते सर्वथी अकृत्रिम अनुभव करे, अने श्रेणिगते भेदज्ञान छे ते कृत्रिम कह्यु, परतु देशथी अकृत्रिम छे, कारण के चेतन पोताना स्वभावे थयो त्या ज्ञाननो अरूपी विषय छे, वळी सहजभावे पर्याय धर्मनी शुद्ध प्रवृत्ति छे, ते पुरूषने अशुभोदय जोगे कदाच कोइ घाणीमां घालीने पीले, अथवा खाल उतारे, अथवा माथे अग्नि सींचे, इत्यादि घणु कष्ट करे, यावत् प्राण रहित करे तोपण पोताना स्वरूपथी चूके नहि अने जे दु ख वेदे नहि तेनो अनुभव ते अकृत्रिम जाणवो ए भेदज्ञान साधनयोगनो बीजो भेद ते कह्यो हवे अभेद ज्ञानयोग ते दशमा गुणठाणाना अते एटले छेमतां बारमा गुणठाणे आवे, तेमां अभदे पक्ष चितवे, ते गुणपर्यायमय आत्मा, एटले ज्ञानादि गुण आत्मा थकी जुदा नथी, एकत्व छे, इहा भेदनो छेद थयो, असत्य कल्पना टळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र तेहीज आत्मा, एटले कचननु भारेपणु,पिळाशपणु,चिकाशपणु ते काइ कच-

नथी जुदुं नथी जुदु कहीए ते कल्पना कहेवाय, तेम आत्मा अने आत्माना गुणपर्याय ते कइ जुदा नथी, एटले भिन्न नथी, अभिन्न छे; इहां मोहनुं तथा अशुद्ध परिणति, जे रागद्वेष तेनुं उन्मूलन दशमा गुणठाणा अंते थयुं, अने वितराग-भावे बारमा गुणस्थाने यथाख्यात चारित्र, शुद्ध परिणति प्रगटयु, वली ज्ञानावर्णि, दर्शनावर्णि, अने अतराय ए त्रण कर्मनो वीतरागभावे बारमा गुणठाणा अते क्षय थयो त्यां केवळज्ञान, केवळदर्शन प्रगटयुं, ए अभेदज्ञान योग साधन ते कह्यो, ए रीते भेदज्ञान, तथा अभेदज्ञानयोगे आत्दाने स्वरूप रमण करवु, गुणवृतिए कर्त्ता भोक्ता पोतानो आत्मा छे अने परभावनु त्यागपणुछे तेने आत्मयोग कहीए एटले इहां बाह्यथी लोचवु, मुरुवु, वेष धारण करवुं इत्यादिकने योग कहेवाय नहि, ए तो बाह्ययोगछे पण मुक्तिमार्ग साधवानो तो आ एक अतर्गत ज्ञानयोग छे, ते ज्ञानयोगने शुद्ध तप कहिए, एटले सर्व कर्मनो नाशकर्त्ता एक ज्ञान छे कह्युं छे योगशास्त्रे,–

श्लोक

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालंव्य कर्मतत् ॥
यन्नहन्यान्नरस्तीव्र, तपसा जन्मकोटिभिः ॥५१॥

तथा ज्ञानार्णवे –

यजन्म कोटिभिः पापं जयत्यज्ञस्तपोवलात् ।
तद्विज्ञानी क्षणार्द्धेन दहत्यतुल विक्रम ॥ १८ ॥

वळी श्रीपाळना रासमां चोथा खंमे –

॥ देशनानी ढ.ळे. ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले, ते न टले जवनी कोमीरे॥
तपस्या करतां अति घणी, नहीं ज्ञानतणीरे जोमीरे॥
नहीं ज्ञानतणीरे जोमी संवेग गुण पालियें पुण्यवंतरे ॥ ३० ॥

अर्थः–क्षण अर्धे जे अघ टले, कहेता आत्मज्ञानयोगे अर्धा क्षणमा एटले आख मीचीने उघामीए तेने क्षण कहीए, तेना अर्धा जागमां अघ टले एटले पाप कर्म टले, तेटला पाप कोमि जवो सुधी अति घणी एटले उत्कृष्टि तपस्या करता पण न टले, ते उत्कृष्टि तपस्या कोने कहीए, के प्रथम तीर्थकरना वारे वार मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय ने बाविस जिनना वारे आठमासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय अने वीर स्वामीना छेल्ला तीर्थे छ मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय, ए प्रमाणे तपस्या करता जव पुरो करे एटले जे काळे जेटलु आयुष्य होय, तेटलु उपर कह्यु ते प्रमाणे, बाल वय टाळीने तपस्या जोगे पुरु करे एम कोम जवो सुधी जवोजव तप करे, तोपण ज्ञानी पुरुषने ज्ञानयोगे अर्धा क्षणमा पाप कर्म टले, तेटला पाप कोम जवो सुधी उत्कृष्टि तपस्या करता पण न टळे ते पापना बे जेद, एक घाती पाप अने बीजु अघाति पाप, तेमां घाती चउकर्मनी (४५) प्रकृति छे अने अघाती चउक-

मनी अशुन्न (३७) प्रकृति ठे. ए घाती कर्म अघाती वेहुनी मलीने (८२) पाप प्रकृति थइ तेमां जे घाती कर्मनी(४५)प्रकृति कही ते तो एक आत्मज्ञान अने बीजु आत्मध्यानयोगे निश्चय खपे ए कर्म प्रकृति आत्मप्रदेशथी आत्म ज्ञाने ठेदाय वळी अघाती कर्मनी(३७)प्रकृति कही ते आत्मज्ञान अने आत्मध्यानयोगे खपती नथी कारण के अघाती कर्मप्रकृति उत्कृष्ट रस जे वांधेली होय ते वहुधा न्नोगववी पमे ठे तेमा जे व्यापकपणे न्नोगवे तेने पाठी पुनरपि वंधाय अने ज्ञानध्यानगत व्यापक थइ उदय अव्यापकपणे न्नोगवे तेने निर्जरा थाय पण वंधाय नहि माटे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनां सुख लेवां ते तो एक ज्ञानयोगे मळे ते माटे कह्युं के, नहि ज्ञानतणी ठे जोमीरे, एटले ज्ञान गुणनो वरोवरीयो, तप प्रमुख कोइ गुण निर्जरा हेतु नथी, एम सर्व पमितोनी वोली ठे, माटे ज्ञानयोगने शुद्ध तप जाणवो.

वळी मात्मरत्येक लक्षण, कहेतां आत्माने रति एटले परमानंद पामवानु एक ज्ञान एहिज लक्षण ठे एटले आत्माने ज्ञानयोगे आनंद प्रवर्ते ठे इंड्रियार्थोन्मनीन्नावा, कहेतां ए ज्ञानयोगी मुनीश्वर ठे ते केवा ठे तो, आ न्नव आश्री, वळी परन्नव आश्री कोइ प्रकारे इंड्रियजनित विषय सुखना तो अर्थी नथी, वळी आ न्नवमां यशकीर्तिना वळी वहु मान पामवाना, पुजावाना, मनावाना, तो अर्थी नथी. वळी वहुश्रुतपणानो, तपनो, व्रतनो मद नथी, पांच

इंद्रिना भोग सुखमा रमे नहि, एटले पांच इंद्रिना तेवीस विषयथी अणइच्छाए प्रवर्ते छे, कपट रहित सरळ वृत्ति छे वळी परभव देवगति पामु, इंद्र थाउं, अथवा इंद्रनो सामानिक थाउं, अथवा चक्रवर्ति, वासुदेव, बलदेव थाउं, राजा थाउं, शेठ शाहुकारनी पदवी पामु, अथवा पुत्र, कलत्र धनादि पामु, एवो भाव मनमा, ज्ञानयोगी सर्वथा न राखे वळी आठमा गुणठाणेथी जीननाम कर्म बांधु, एम पण ज्ञानयोगी चितवे नहि, ए पद चोथा ठाणाथी सातमा गुणस्थानक सुधी वधाय छे अने आठमे गुणठाणे तो जीन नाम कर्मनो बंधविच्छे छे वळी स्वार्थ सिद्ध विमानना देवनु सुख पण ज्ञानयोगी इच्छे नहि अने पुन्यने भलु जाणे नहि, ते मोक्ष सुखसाधक कहेतां ते ज्ञानयोगीश्वर मोक्षना अव्याबाध सुखनो साधक थाय (५)

ज्ञानसार ग्रथे, ज्ञानाष्टके –

श्लोक

निर्वाण पदमप्येक भाव्यते यन्मुहुर्मुहु
तदेवज्ञान मुत्कृष्टं निर्बंधो नास्ति भूयसा ॥२॥

अर्थ –निर्वाण पद कहेता जे पदने विषे जन्म मरण नथी, वळी आधि व्याधि नथी, क्लेश, सताप, आपदा नथी एवु एक मोक्षपद एटले कर्मनो नाश करवाथी, सपादन करेलु निज स्वरूप अवस्थान रूप जे पदने निर्वाण पद कहीए. मप्येक कहेतां ए निज स्वरूपने विषे

उपयोग दृष्टि स्थापी छे जेणे वळी यन्मुहुर्मुहु कहेतां वारवार " न्नाव्यते कहेतां " निज स्वरूपने विषे, तन्मय एकत्वपणे, अन्नेद स्वरूपे परिणाम पामवा पूर्वक उपयोगे अनुन्नवे छे. तदेव ज्ञान कहेतां तेहीज ज्ञान, मुत्कृष्ट कहेतां उत्कृष्टामां उत्कृष्टु निज स्वरूप अवस्थान रूप निर्वाण पद पामवाने कारण जाणवुं पण वीजो निर्वधो कहेतां इहां आवश्यकादि क्रियानो वा उपवासादि तपनो, वा लोचादि कष्टनो, वा पूजा प्रन्नावनानो, वा तीर्थ यात्रानो इत्यादि कारणनो आग्रह एटले करवापणानो, निज स्वरूप प्रगट एटले व्यक्ति न्नावे करवाने अर्थे, न्नूयसा कहेतां घणुंज, नास्ति कहेतां ए कारणोनुं इहां ज्ञानयोगीश्वर महा मुनिने कंइ प्रयोजन नथी, एक ज्ञानयोगे क्षायक न्नावनी लब्धि पामीने निर्वाण पद पामे छे. इहां कोइ कहेशे के तमे पण आगळ दश प्रकारनो कल्प व्यवहार प्ररूप्यो छे तेमा आवश्यकादि क्रिया ते महा मुनीनी करणी निर्वाण पद अर्थे कही छे. अने तमे इहां केम ना पामो छो, तेनो उत्तर त्रीजा श्लोकथी करीए छीए

स्वन्नाव लान्न संस्कार कारणं ज्ञान मिष्यते ॥
ध्यांध्य मात्र मतस्त्वन्यत्तथा चोक्तं महात्मना ॥३॥

अर्थः—स्वन्नाव लान्न कहेतां आत्माना स्वन्नावमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि अनंता गुण छे अने एक एक गुणना अनता पर्याय छे, वळी गुण गुण प्रत्ये न्निन्न एटले जुदो जुदो स्वन्नाव आत्मामां रह्यो छे ते ज्ञाननो जाणवा

रूप, दर्शननो देखवा रूप, चारित्रनो स्थिरता रूप, वीर्य-
नो स्फुरणा शक्तिए एम अनंता गुण भिन्न व्यक्तिरूप पिंड-
पणे आत्माने विषे अनादि संबंधे, शक्ति भावे अव्यक्ति-
रूप निर्लेप रह्या छे एटले शक्ति भावने आवरण लागे
नहि तेम शक्ति भावथी आत्मानु कार्य पण सरे नहि,
यथा दृष्टांते, जेम काष्टमा शक्ति भावे अग्नि रही छे,
ते अग्नि केवी छे के जाज्वल्यमान, दाहक स्वभावमा
छे, परंतु ते काष्टने आपणे बाथ भीडीए तेथी ते का-
ष्टमा रहेली अग्नि आपणी टाढने टाळवा शक्तिमान
थाय ? अर्थात् न थाय, तेम आत्माने विषे शक्ति-
भावे धर्म रहेलो चतुर्गति भ्रमण टाळवा अर्थे
न थाय, परंतु काष्टमा रहेली अग्नि प्रगट व्यक्तिभावे क-
रीए तो टाढनो उपद्रव तरतज टळे, तेम शक्तिभावे आ-
त्माने विषे ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय रहेला ते
ज्ञाने जाणी वीर्य फोरवीने, प्रगट करीए तो चतुर्गतिनु
भ्रमण, जन्म, जरा मरणना दु ख ते सर्वे टळी जाय, एम
जाणवु ते आत्माना गुण पर्यायनी व्यक्तिनु थवु तेने स्व-
भाव लाभ कहीए अने संस्कार एटले निज स्वभावे धर्म
रहेलो तेने साध्यमा, एटले स्मरण चिंतवन करवामा अ-
नुभववामां, लय पामवामा जे कारण एटले हेतु तेज,
द्रव्य ते कहेता ज्ञान कहेवाय छे, यत कहेता ए ज्ञान
सिवाय बीजु भणवु, भणाववु, करवु, कराववु, ते सर्वे नि-
मित्त कारणमा छे, उपादान कारणनी प्राप्तिवाळाने एटले

जे पुरुषे यथा प्रवृत्ति आदे त्रण करण करी, कर्म स्थिति घटाडी, ग्रथि भेद करी समकित प्रगट कर्युं छे, वळी वम्युं नथी, एटले चोथा समकित गुणठाणानी सावित्ती छे, तेने उपादान कारणनी योग्यता होय ए उपादान कारणने कार्य-पणे प्रवर्त्तावतां एटले उपयोगे जाणवु, अथवा आवश्यकादि क्रिया आदे करवुं ते सर्वे व्यवहारना न्याये, देश विरति पांचमा अने सर्व विरति छट्टा ए बे गुणठाणे आवस्यकादि क्रिया, साध्य, साधन सापेक्षपणे परंपर कारणमां छे. माटे अमे तीहांज कल्पने निमित्त कारणमां गवेष्यो छे ते उपादान कारणवालाने व्यवहारना न्याये, साध्य सापेक्ष योग्यताए परंपर कारणमां समजवो अने उपादान कारणनी प्राप्तिना अभावे करवुं, करावयुं सर्वे अकारणमां मात्र बुद्धिने अंध करनारुं छे एम केवळ शब्द रणकार मात्र निष्फळ छे. अने जाणवुं, जणावनु करवु, करावबु तेनी सीमा सातमा गुणठाणेथी अटकी उपरांत नथी एटले सातमा गुणठाणा सुधी सालवन वृत्ति छे तेमां पण ग्रथि भेद अवसरे तो निरालंबन छे अने सातमा गुणठाणा उपर तो आठमा गुणठाणाथी केवळ निरालंबनपणुं छे तीहांथी दसमा गुणठाणा सुधी भेदज्ञान अने भेदाभेद ज्ञान ध्यानगत् छे. उपरांत अभेदज्ञाननु साधन छे अने तेरमे गुणठाणे अभेदज्ञान जे केवळज्ञान, केवळदर्शन आदे क्षायक लब्धिनी पूर्ण प्राप्ति छे. एम महात्मा पुरुषो कहे छे. (३)

रूप, दर्शननो देखवा रूप, चारित्रनो स्थिरता रूप, वीर्य-
नो स्फुरणा शक्तिए एम अनता गुण जिन्न व्यक्तिरूप पिंड-
पणे आत्माने विषे अनादि सवधे, शक्ति जावे अव्यक्ति-
रूप निर्लेप रह्या ते एटले शक्ति जावने आवरण लागे
नहि तेम शक्ति जावथी आत्मानु कार्य पण सरे नहि,
यथा दृष्टाते, जेम काष्टमा शक्ति जावे अग्नि रही ठे,
ते अग्नि केवी ठे के जाज्वल्यमान, दाहक स्वजावमां
ठे, परतु ते काष्टने आपणे बाथ जीडीए तेथी ते का-
ष्टमां रहेली अग्नि आपणी टाढने टाळवा शक्तिमान
थाय ? अर्थात् न थाय, तेम आत्माने विषे शक्ति-
जावे धर्म रहेलो चतुर्गति भ्रमण टालवा अर्थे
न थाय, परतु काष्टमा रहेली अग्नि प्रगट व्यक्तिजावे क-
रीए तो टाढनो उपद्रव नरतज टळे, तेम शक्तिजावे आ-
त्माने विषे ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय रहेला ते
ज्ञाने जाणी वीर्य फोरवीने, प्रगट करीए तो चतुर्गतिनु
भ्रमण, जन्म, जरा मरणना दुःख ते सर्वे टळी जाय, एम
जाणवु ते आत्माना गुण पर्यायनी व्यक्तिनु थवु तेने स्व-
जाव लाज कहीए अने सस्कार एटले निज स्वजावे धर्म
रहेलो तेने साध्यमा, एटले स्मरण चितवन करवामा अ-
नुजववामा, लय पामवामा जे कारण एटले हेतु तेज.
द्रव्य ते कहेता ज्ञान कहेवाय ठे, यत कहेता ए ज्ञान
सिवाय बीजु जोवु, जणाववु, करवु, कराववु, ते सर्वे नि-
मित्त कारणमा ठे, उपादान कारणनी प्राप्तिवाळाने एटले

बाह्यरमण मनयोगने अवलम्बन लागे अने निजस्वरूप रमण वलम्बन लागे तिहां मनयोग स्थंभी जाय त्यारे स्वरूप अनुभव ज्ञान प्रगटे हवे मनयोग ज्ञानरूप खीले वंधाणो एटले अनुभव वृद्धि पामतां, पोतीकुं मूळ स्वरूप उपयोग-गोचर प्रत्यक्ष प्रमाणे करतळवत करे त्यां सहज स्वरूप कहेतां. पोतानु सहजभावे स्वरूप छे. तेने वर्यो कहेतां पोते पाम्यो ए सहज स्वरूप कवु छे तो चिद् कहेतां ज्ञान ते आनद कहेतां आनदोपत छे तेम आत्माना अनता गुण छे ते सर्वे गुणो आनदोपेत छे एटले गुण गुण प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे अने व्यक्तिने विषे गुण गुणनो आनद जुदो जुदो छे एम जाणवु एटले पोतीका आत्माने विषे अनत-भेदे आनंदनी प्रगटतानु एटले क्षय उपशम भावनी लब्धिनुं सुख अनुभव अवसरे आत्मा अनुभवे एटले श्रेणिगते आस्वादे छे. एवु पोताना आत्मानु सहज स्वरूप तेने पोते पाम्यो गुणागरो कहेतां पाम्यो ते आत्मानु सहज स्वरूप ज्ञानादि अनता गुणनी खाण छे राग कहेतां राग अने तेनो प्रतिपक्षी जे द्वेष तेने अशुद्ध परिणति कहीए ते आत्माने विषे अनादि सवंधे छे रस कहेतां ते रागद्वेषरूप रस आत्माने विषे परिणतिए परिणमी जाय ते अशुद्ध परिणतिने तज्यो हे कहेता अनुभव वळे पोतीकु सहज स्वरूप पामतां ज्ञाननी, वीर्यनी ऐकयताये भेद छेद रूपे तज्यो. वली तेनी साथे मोहप-क्षीनुं उन्मूलन कर्यु ए संसारमां उत्पन्न थवानु एटले

सवैया एकतीसा.

ज्ञान अनुभव भयों, सहज स्वरूप वयों
चिदानद गूणागरो राग रस तज्यो हैं
निरालंबसाक नांही. मरणादि भय नांही
देहातित रूपातित यथाख्यात ग्रह्यो हे
एही शुद्ध धर्मधारी मोहादि विनाशकारी
महामुनी वीतराग तेरमामां गयो हे
अनत चतुष्टमां ज्ञायक दान लाभने
भोगोपभोग वीरीअ, अनत स्फुरि रह्यो हे (१)

अर्थ –ज्ञान कहेता साकार उपयोगे जीव अजीवादि वस्तुनु विभाग व्हेंचण करवारूप जाणपणुं तेने ज्ञान कहीए अनुभव भयों कहेता विभाग व्हेंचणतो ज्ञानथी प्रथम थइ गइ छे कहीं. एटले पोतानो आत्मा मन वचन अने काया ए त्रण योगथी जुदो छे एम सद्दहणा करवा पूर्वक ज्ञानयोगे श्रद्धा करी छे वली केवो छे सिद्धनो साधर्मि, सिद्धनो बरोबरीउ छे एम गुणने उळखी चेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि थइ छे अने अचेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि हती ते टळी छे तीहा गुणरागीपणे प्रशस्त राग कहीए ते रागनो प्रेर्यो थको, अत करणे उंडो उतरे तिहां मनन भुवने पोताना आत्माने विषे परमात्मपदनु आरोपण करीने स्मरण चितवन करे एम करता करतां अभ्यासे करीने मनयोगे चेतन गुणमां रमण करे. त्यारे

तिए, धर्मधारी कहेतां क्षायक भावे गुणने धारण करवा-वाला जाणवा. मोहादि विनाशकारी कहेतां मोहनो तो दशमा गुणठाणाना अंते पूर्वे ध्वंस कर्यो कह्यो छे अने आदि शब्दथी इहां क्षिण मोह वारमा गुणठाणाना अंते ज्ञानावरणी दर्शना-वरणी अने अतराय ए त्रण कर्मने संलग्न एके काळे विनाश एटले क्षय कर्यो. तीहां गुण घाति चारे कर्मनी सत्ता आत्मप्रदेशथी खुटी, ए चार कर्मनी अपेक्षाए आत्मप्रदेश नीरावरण थया महामुनि क-हेता उत्कृष्टामां उत्कृष्टा वीतराग कहेता रागद्वेष रहित थका तेरमामां कहेतां तेरमा सयोगी केवळी गुणठाणामा गया है कहेतां अरिहत पदमा प्रयाण कर्यु, अनंत चतुष्टयी कहेतां केवळज्ञान, केवळदर्शन अने अनतु वीर्य वली पुर्वे यथाख्यात चारित्र गवेष्यु ते मली अनत चतुष्टय व्यक्ति-भावे प्रगट थइ ते मां कहेता ते अनत चतुष्टयीमां प्राप्ति-रूप तेरमु गुणठाणुं पाम्या तेज समये अनता गुणनु दान देवारूप दान लब्धि अतराय कर्मनो क्षय होवाथी अभेद स्वरूपे प्रगट थइ एटले देता लेता पोते जाणवा तेनो खु-लासो एम छे के आत्माने विषे शक्तिभावे तीरोभावीपणे निर्लेप अनती क्षायकलब्धि अनादि संवधे रही हती ते लब्धि वीर्य फोरवीने आविर्भावे प्रगट करी एटले प्रगट-भावे न हती ते छतापणे थइ अने शक्तिभावे सामान्य स्वभावे गुणरूप लब्धि हती ते विशेष स्वभावे परिणमावी

जन्म मरण करवानु बीज बळयु, तद्भवे मुक्ति पामवी एम निर्णय थयु निराश्रय कहेतां इहां श्रेणि गते मन वचन अने काया आदे कोइ अचेतन पदानु अवलबन आत्मा गुण ठाणाथी नथी साऊ नांही कहेतां श्रेणि गते कदाच मरणांत उपसर्ग उदयिकता योगे आवे तोपण अव्यापकपणे दु.ख विपाक नही वेदतां कायायोगे सहन करवा सामर्थ्य छे वली कायाना दु ख सुखनो विभागी श्रेणि गते चेतन नथी मरणादि भय नांही कहेता मरण आदे ससारमा भव भमता सदा सर्वदा अनेक भयनी जीवने भिती एटले बीक छे ते कायामा चेतना इन्द्रिय-द्वारे परिणाम पामी छे तीहां सुधी जाणवी परतु श्रेणि गते चेतन अनत वीर्यनो धणी छे ते वीर्यनी स्फूरणायोगे पोतीकी चेतनाने कायाथी पलटावी पोतीका स्वरूपे अत करणे अनुभव भूवने परिणमावी छे तीहा भयनो असभव जाणवो देहातित रूपातित कहेता देह एटले काया अने रूप एटले वर्ण अथवा मूर्त्तिपणु इत्यादि जड जाति तेने अचेतन कहीए तेथी अतित एटले रहित एवु आत्म जनित यथाख्यात कहेता क्षायक भावनु पाचमु चारित्र अरूपी,अमूर्त्ति,अचळ, अविनाशी एवु सादि,अनत भागो लागे छे जेने ते, चारित्र वली बीजु नाम वीतराग सयम छे जेनु, ते प्रह्यो हे कहेतां दशमा गुणठाणाना अने एटले बारमे गुणठाणे ग्रह्यु छे जेणे, सोही कहेता तेही पुरुष शुद्र कहेता शुद्ध परिणतिए एटले वीतराग परिण-

जाणवी ऐ गुणठाणुं आयुपना ठेमे ठोमी योगरोघ करी सेलेसिकरणन्नावे अयोगी चउदमा गुणठाणे आवे तीहां उच्छिन्न क्रियानि वृत्ति चोथो पायो शुक्लध्याननो ध्याता थका ए गुणठाणाना अंते मनुष्य न्नव गतिने ठोमी कार्मण वर्गणा रहित थइ पोतानी काया प्रमाण अवगाहनामांथी त्रीजो न्नाग पोलारनो घटामी वे न्नाग प्रमाण आत्मप्रदेशनो निविमघन करी एक समय काळ माने सम श्रेणीए बीजा आकाशप्रदेसने अणफरसते लोकाग्रन्नागे सादि अनंतन्नागे शिद्ध थया. (१)

हवे सिद्ध न्नगवाननी स्तुति करे ठे.–

सवैया एकतीसा.

अरुपी अविनाशी निरंजन, ज्यूं आकाशी
अनंत गुणनी राशी; अकेक परदेशे है
असंख्य प्रदेसें एम उपयोगे व्यक्ति तेम
स्वन्नाव भोगीखेम सदा परमानंद है
अचळ अलख सिद्ध अगम विमळ बुद्ध
निराकार नविकार गुण गुणमा रहै
परगुणे नही कदा निज गुणे रहे सदा
पर्याय ते फीरे तदा द्रव्ये स्थिर सिद्धि है ॥२॥

अर्थ —अरुपी कहेतां जीहां वर्ण, रस, गध फरस अने संस्थान नथी. ए वस्तु पुद्गळमां लाधे तेथी सिद्ध न्नगवान रहित, आत्मस्वरूपी ठे, माटे अरुपी कहीए,

व्यक्तिभावे करी ते प्रगट होवारूप दानलब्धि कहीए, तेनो दाता आत्मा पोते छे अने ए लाभ पूर्वे न हतो ते लाभ आत्माने संपादन थयो तेने लाभलब्धि कहीए वळी ते लब्धि प्रगट थइ तेज समय अनंतागुणनो भोग,आस्वादन आत्मा करेछे तेने भोगलब्धि कहीए वली उपभोग ते बीजा समयथी पुनरपि पुनरपि भोगववु एम चीरकाललगे सादि अनंतभांगे अनंती क्षायक लब्धिने पोते भोगवे छे अने वली भोगवशे, आस्वादन करशे तेमा एक समय मात्र पण निज लब्धिनो अभोगववो एम नथी, व्याघात विघ्ननो असंभव छे तेने उपभोग लब्धि कहीए वीर्य कहेतां वीर्य शक्ति, अनंत स्फुरी रह्यो छै- कहेता अनंत भेदे गुण गुण प्रत्ये गुण गुणगत स्वभावे दान देवापणे लाभ होवापणे भोग करवापणे उपभोग ते पुनरपि पुनरपि भोगववापणे, वीर्य स्फुरणापणे, एम कही ते प्रमाणे, क्षायकभावनी पाच लब्धी प्रगट थइ वली केवळज्ञान, केवळदर्शन ए बे गुणो भेळता क्षायक भावनी सात लब्धि तेरमु गुणठाणु पामता प्रथम समये प्राप्त थइ अने बारमा गुणठाणाना प्रथम समये यथाख्यात चारित्र प्रगट कर्यु ते मेळवता आठ अने पूर्वे चोथे वा सातमे गुणठाणे क्षायक समकित पाम्या ते गणता नव भेदे क्षायकलब्धि कहीए ते इहा अरिहंत पदे तेरमा गुणठाणे पूर्ण गवेषीने कही इहा तेरमा गुणठाणानी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी छे अने उत्कृष्टि देशे उणी एटले आठ वरसे उणी पूर्व कोडनी

जाणवी ए गुणठाणु आयुपना छेडे छोडी योगरोध करी सैलेसिकरणन्नावे अयोगी चउदमा गुणठाणे आवे तीहां उच्छिन्न क्रियानि वृत्ति चोथो पायो शुक्लध्याननो ध्याता थका ए गुणठाणाना अंते मनुष्य न्नव गतिने छोडी कार्मण वर्गणा रहित थइ पोतानी काया प्रमाण अवगाहनामांथी त्रीजो न्नाग पोलारनो घटाडी वे न्नाग प्रमाण आत्मप्रदेशनो निविरुघन करी एक समय काळ माने सम श्रेणीए वीजा आकाशप्रदेसने अणफरसते लोकाग्रन्नागे सादि अनंतन्नागे शिद्ध थया (१)

हवे सिद्ध न्नगवाननी स्तुति करे छे.—

सवैया एकतीसा

अरुपी अविनाशी निरंजन, ज्युंआकाशी
अनत गुणनी राशी; अकेक परदेशे है
असंख्य प्रदेसें एम उपयोगे व्यक्ति तेम
स्वन्नाव भोगीखेम सदा परमानंद है
अचळ अलख सिद्ध अगम विमळ बुद्ध
निराकार नविकार गुण गुणमा रहै
परगुणे नही कदा निज गुणे रहे सदा
पर्याय ते फीरे तदा द्रव्ये स्थिर सिद्धि है ॥२॥

अर्थ.—अरुपी कहेता जीहां वर्ण, रस, गंध फरस अने संस्थान नथी. ए वस्तु पुद्गळमां लाधे तेथी सिद्ध न्नगवान रहित, आत्मस्वरूपी छे, माटे अरूपी कहीए,

अविनासी कहेतां जेनो विनास त्रण काळमा न थाय शास्वतपणा माटे अविनाशी छे वली सिद्ध भगवान केवा छे तो निरजन कहेतां कर्मरूप लेपे करीने रहित ज्यू आकाशी कहेतां यथा दृष्टांते जेम आकाश निर्लेप छे तद्वत, अनत गुणनी राशी कहेतां सिद्धभगवानने विषे ज्ञान दर्शणादि गुणराशी अनंती अनती रही छे अकेक प्रदेशे है कहेता. एक एक प्रदेसने विषे, असख्य प्रदेशे एम कहेतां जेम एक प्रदेशे अनती गुणरासी कही, एम पोतीका आत्माना असख्याना प्रदेशे पृथक् प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनती अनती गुणराशी रही छे उपयोगे व्यक्ति तेम कहेता सिद्धात्माना आत्म प्रदेशे गुणरासीनो अनतो समुदाय कह्यो ते समुदायमां भिन्न भिन्न पोते पोतीका गुणगत स्वभाव उपयोगे कहेता प्रगट भावे तेम कहेता तेमज छे पण कोइ गुण अप्रगटपणे एम नथी स्वभाव कहेता ए स्वभाव सिद्धात्मानो कह्यो, तेना भोगी कहेता अनंती गुणरासी गवेषी तेना भोगी सिद्धभगवान सदा सर्वदा चीरकाल लगे सादी अनत भागे छे समय समय भोग करे उपभोग करे पण एक समय मात्र अभोगववापणे एम नथी वली खेम कहेता पोतानी ऋद्धि पोते भोगवे एज कल्याणकारी छे उत्तमनुतो एज लक्षण छे सदा-परमानदहे कहेता निरतर अनती गुणराशीनी अनती व्यक्तिनो भोग करता छता सिद्ध भगवान कह्या ते अनती व्यक्ति आनदोपेत सुखदाइ छे अने व्यक्ति व्यक्ति प्रत्ये

आनंद जिन्न एटले नोखो नोखो ठे, तेथी अनंतो आनद प्राप्त थाय. तेने परमनाम उत्कृष्टो आनद कहीए एम अनती गुण राशीनो अनतो आनद गवेस्यो ते शिवाय सिद्धात्माने विषे अव्याबाध सुख प्राप्त थाय ते जुडु ठे एम आगममां व्याख्या ठे एवुं देवचंद्रजी कृत चोवीसीना वाळावोधने विषे सातमा सुपार्श्वजिनना स्तवनमां प्रथम गायाना उपरना अधिकारे कह्यु ठे एम अनंती गुण रासीथी परमानद प्रगटयो तेनु सुख वली अनंतु अव्याबाध सुख तेनी लेहेरमें कहेतां सदा मग्नतामां चेतनत्व धर्मे सिद्ध सिल्ला उपर एक जोजनना तेवीस जाग निचे मेलीने चोवीसमा जाग उपर अलोकने अमीने सिद्ध परमात्मा स्थिर रह्या ठे, अचळ कहेतां जिहां रह्या ठे तीहांथी एक आकाश प्रदेश पण आघा पाठा चळायमान थाय नही माटे अचल,अलख कहेतां सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप ठद्मस्थथी जाएयुं न जाय केवलज्ञानी पूर्ण जाणे वळी अनुजवी पुरुषो देशथी जाणे, वीजा न जाणे अगम कहेतां सिद्ध परमात्मानु स्वरूप निहाळवाने ठद्मस्थनी दृष्टि थाके ठे, गम न पहोचे विमळ कहेतां सिद्ध परमात्मा आवरणना अन्नावे सदा निर्मळ ठे, बुद्ध कहेतां ज्ञायक जावे ज्ञानी ठे निराकार कहेतां परिमंमळ प्रमुख संस्थान ठे नहि, ते सिद्ध जगवानने आकार कहीए, निराकार ठे. नविकार कहेतां विकार तो जिहां पांच इंद्रि होय तीहां विषयनो सन्नव आवे अने ठहो नोइंद्रि जे मन होय,

तीहां विकल्पनो सन्नव थाय, तेने विकार कहीए तेथी रहित सिद्ध न्नगवान ठे, माटे नविकार गुण गुणमा रहे कहेतां सिद्ध परमात्माना ज्ञानादि अनता गुण ठे, ते गुणोमाज पोते रहे, पण वीजा जीव अजीवादि द्रव्यना गुणोमा न रहे, न रमे, परगुणे नहि कदा कहेता, पोतानो गुण ठोमीने वीजा परद्रव्यना गुणे कोइ काळे न प्रवर्त्ते एवो वस्तु स्वन्नावनो धर्म ठे, ते कारणे निज गुणमाज रहे अने वली रमे सदा कहेतां आतरा रहित पोताना गुणमाज रमण करे, एटले सिद्ध न्नगवानने विषे गुण गुण गत, गुण गुण स्वन्नावे, न्निन्न न्निन्न रमणनी एक समयमा अनती प्रवृत्ति थाय, ए गुण चारित्र धर्मनो ठे एटले चारित्र धर्म ते पोताना गुणमाज पोते रमे, परमा न रमे, ए चारित्रना पर्याय ठे, वली स्वन्नाव रमण परन्नावनी वृत्तिए चारित्रनी परिणति ठे, पर्याय फीरे तदा, कहेतां सिद्ध न्नगवानना स्वन्नाव रमणने विषे, समये समये उत्पाद, व्यय, प्रवर्ते ठे, तेथी गुण गुण गत गुण गुण स्वन्नावमा पर्यायनु परावर्त्तन धर्म ठे तेथी पूर्व पर्यायनो नाश अने अन्निनव पर्यायनी उत्पत्ति, एम समय समय अन्निनवपणे गुण गुण गत प्रवर्त्ते ठे, ए द्रव्यनु मूळ लक्षण ठे, तेथी सदा उत्पाद व्यय परिपाटी प्रवर्त्ते, जो एम न होय तो जिनेंद्रनी देशना असत्य थाय माटे नहि असत्य यथार्थ सत्य ठे वळी अन्निनवपणे पर्यायनु प्रवर्तनपणु न मानीए तो पुनरपि पुनरपि न्नोग उपन्नोग परमानंदपणे, सदाय सिद्ध

ज्ञगवानने विषे उपर गवेख्यो, ए वचन असत्य थाय पण नहीं नहीं यथार्थ सत्य छे ड्रव्येस्थिर सिद्धहै कहेतां जे समये उत्पाद व्यय छे, तेज समये ध्रुवता एटले स्थिरता ड्रव्यने विषे जाणवी इहां कोइ कहेशे के तमे उत्पाद व्यय पर्यायमां बोलोछो अने गुणमां गवेखोछो, तेनु शुं कारण छे तेनो उत्तर हे न्नाइ सिद्धांतमां ड्रव्यपर्यायनी व्याख्या छे, गुण कोइ वस्तु नथी, अमेतो अनंता पर्यायनो समुदाय मळीने जे कार्य करे तेने गुण कहीने बोलावीए छीए. परतु पर्याय जे छे ते गुणथी मूळधर्मे न्निन्न नथी, वस्तुमां पर्याय परिपाटी छे, तेथी पर्यायनीज प्रवृत्ति छे अने द्रव्य ते आधार छे, तेनी साक्षी जोवी होय तो देवचन्द्रजी कृत चोवीसीमां दशमा शीतळ जीनपतिना स्तवननी त्रीजी गाथानो अर्थ न्नरेलो छे त्यांथी जोइ लेजो (२)

सवैया एकतीसा.

उतकृष्ट पद सिद्ध, महा मंगळीक बुद्ध;
ज्ञानभानु विसुद्ध, परम योतीवंत है.
परम पवित्र प्यारो, ज्ञानानंद न्नोगी न्यारो;
अव्या बाध सुख सारो, अनादि अनंत है:
व्यापे निज ड्रव्य मांही, गुणने पर्याय मांही;
असंख्य प्रदेश त्यांही, सदी निज खेन है.
एहि अवगाहनाउ, एकमां अनेकताउ,
न्नेगी मळी न्निन्न सदा, मानजो प्रणाम है. ॥३॥

अर्थ —उत्कृष्ट पद कहेतां, पदना वे ज्नेद उपाधिजनितपद, निरुपाधिजनितपद तेमां उपाधिजनितपदना वे ज्नेद प्रशस्त, अप्रशस्त. प्रशस्तना वे ज्नेद, देवेंड, नरेंड, हवे निरुपाधिजनित पदना वे ज्नेद कहेछे, एक व्यवहार, वीजु निश्चय व्यवहार निरुपाधी पदना त्रण ज्नेद समकित मूळ योग्यताए कहे छे, आचार्यपद, उपाध्यायपद अने साधुपद तेमा प्रथम आचार्यपद कह्यु छे ते पदमा गणधर पद कहीए, वा गीतार्थ कहीए, वळी वहु श्रत कहीए, ते सर्व पदनो समावेश आचार्य पदे थाय छे, एम जाणवु. हवे निश्चय निरुपाधि पदना त्रण ज्नेद कहे छे, एक जघन्य, वीजो मध्यम अने त्रीजो उत्कृष्ट, जघन्य निश्चय निरुपाधिपदतो क्षीणमोह वारमा गुणठाणे वीतराग ज्नावे, रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो वळी मोहनो उपाधि जाणी ध्वस करीने यथा ख्यात चारित्र पाम्या ते पहेलो ज्नेद कह्यो, हवे वीजो ज्नेद मध्यम निश्चय निरुपाधिपदतो तेरमा चौदमा गुणठाणे वर्त्तता, एवा परम पूज्यने अरिहत पद कहीए ज्हा चौघाति कर्मनी उपाधि आत्म प्रदेशथी टळी छे अने अघाति कर्मनी रही छे माटे मध्यम कह्या, हवे त्रीजो ज्नेद निश्चय निरुपाधि उत्कृष्टपद, तो अयोगी चौदमा गुणठाणाना अते एटले छेल्ला समये चौअघाति कर्मोनी उपाधि आत्मप्रदेशे हती ते टळी, कार्मण वर्गणा रहित आत्मप्रदेश थया, ज्हा उपाधिनो अज्नाव थयो, माटे उत्कृष्ट निश्चय निरुपाधिक पदने सिद्ध ज्नगवान कहीए

महा मंगलिक, कहेतां सर्व मंगलीकमां मंगलीक, जीहां अपमंगलीकनो संभव त्रण कालमां आवे नहि, माटे, महामंगलिक कहेतां कल्याणकारी, उत्कृष्टमंगलिक ते निजात्म शुद्ध स्वरूप, निश्चळ अवस्थानरूप सिद्धनेज कहीए, बुद्ध कहेतां सिद्धभगवान छे ते अविनाशी पंडित छे. एटले पंडित छे ते ज्ञानी छे, पण जाणीने भुले तेने विनाशी पंडित कहीए अने सिद्धभगवान तो केवळ ज्ञानरूप बोध पाम्या छे, ते बोध त्रण कालमां जाय नही, तेम न्यूनता पण पामे नहि, माटे अविनाशी पंडित कह्या ज्ञान भानुवि शुद्ध कहेतां केवळ ज्ञानरूप सूर्य छे ते विशुद्ध कहेतां घणो उद्योत प्रकाश कर्त्ता छे, कारण के जे सूर्यनी ज्योति छे, ते जड ज्योति छे एटले रूपीपदार्थने देखाडवा वाली छे अने जे केवळ ज्ञाननी ज्योति छे ते आत्मजनित अरूपी ज्ञान ज्योति छे, वळी सूर्यनी जडज्योति छे ते तेनी मर्यादा पूर्वक प्रकाश करे अधिक न करे अने केवळ ज्ञाननी ज्योति छे ते लोकमांने अलोकमां, वळी लोकमा रहेला जीव अजीवादि रूपी अरूपी सर्व द्रव्यने विषे, वळी अतित अनागतने वर्त्तमान ए त्रणे काळनी वर्त्तनाने विषे, उत्पाद व्यय अने ध्रुव संयुक्त एक समये जाणे, कोइ जग्योए ज्ञान ज्योति खळाय नहि वळी सूर्य प्रकाश करे ते पोतानां कीरण वीस्तारीने करे छे अने सिद्धात्माने तो केवळ ज्ञानरूप अरीसो चारे तरफ आवरणना अभावे, निर्मळ थयो छे तेमा उपर कही ते प्रमाणे त्रणे काळनी, पंचास्ति

कायनी वर्त्तना प्रतिबिंबीत थाय अने तेमा पोते लेपाय पण नहि, एवी केवळ ज्ञाननी अद्भूत ज्योति तेने परम ज्योतिवत हे कहेतां उत्कृष्टी ज्योतिवत कहीए, परम पवित्र कहेता सिद्धात्माना आत्म प्रदेशे अन्य पदार्थनो एक परमाणु मात्र पण उपाधि सयोग सबध रह्यो नथी, पोते पोताना शुद्ध स्वभावे तद्रूप छे, माटे उत्कृष्टा पवित्र सिद्धभगवानने कहीए वळी प्यारो कहेता समकिती, देशविरति अने सर्व विरति जीवोने गुणरागीपणे, गुणने जाणी ओलखीने गुण प्रगट करवानी बुद्धिए सिद्धभगवाननी स्तुति करता, गुण गाता भावना भावता वळी ध्यानगत समरण चितवन करता थका जे सुलभ बोधी जीवो छे ते प्रमोद पामे आनदीत थाय माटे सिद्धात्माने प्यारोज कहीए, ज्ञानानद भोगी न्यारो कहेतां उपर सुलभ बोधी जीवोने सिद्धभगवान प्यारा कह्या, पण सिद्धात्मा तो ज्ञानानद परमानद, भोगी सबसें न्यारा छे अव्याबाध सुखसारो कहेता सम्यक् ज्ञानीने अनुमोदवा योग्य, रुचि करवा योग्य, अभिलाषा करवा योग्य, एवु जे अव्याबाध सुख, सिद्धभगवानने प्रगट थयु छे, तेमा एक अशे पण ओछाश रही नथी, तेम सुखनी पाछळ बाधा पीडा अचानक आवशे तेनो भय पण रह्यो नथी, माटे निर्भय थका अबाधितपणे अनतु सुख स्वाधिनपणानु भोगवे छे, तेथी ज्ञानीए अव्याबाध सुखने सारो कह्यो छे अने सर्वार्थ सिद्ध विमानवासी देवना इन्द्रीजनित पुद्गलीक सुखनी

अन्निलाषा करवी, ज्ञानीए निवारी ठे, अव्यावाध सुख सारो, एटले आनंदोपेत अतिंडियजनित अव्यावाध सुख ठे, माटे सारो कह्यो, ज्ञानीपुरुषोने न्नोग करवाने, अनुमोदवाने योग्य ठे अनादि अनंत हे कहेतां मोक्षगतिने विषे सिद्धन्नगवान अव्यावाध सुख न्नोगवे ठे, ते सुख अनादि संवधे ठे अने अनंत हे कहेतां अत एटले कोइकाळे नाश थावानो नथी, इहां कोइ कहेशे के सिद्ध थाय तेनी तो आदि ठे अने तमे तो अनादि सवधे अव्यावाध सुख कहो ठो, तेनो उत्तर–हे न्नाइ सिद्ध थाय तेनी तो आदि ठे, पण काळनी आदि नथी, वळी सिद्धगतिनी पण आदि नथी के अमुककाळे अमुक पुरुष प्रथम सिद्ध थया ते आदि कहीए, माटे सिद्धगति आश्रीने अनादि अनत न्नांगो लागे, ते कह्यो. व्यापे निज डव्यमांही कहेतां जीहां सिद्धन्नगवान रह्या ठे तीहा धर्मास्तिकाय रह्यो ठे, अधर्मास्तिकाय रह्यो ठे. आकाशास्तिकाय रह्यो ठे, पुद्गलास्तिकाय पण अनंता डव्य रह्या ठे अने जीवास्तिकाय जे पोताथी अन्य वीजा जीवो ते पण सिद्धसंसारी अनंता रह्या ठे. एम पचास्तिकाय एक खेत्र अवगाहीने न्नेळा रह्या ठे, तो पण सिध्धन्नगवान एक पोतीका डव्यमांही व्यापकपणुं करी परिणमी रह्या ठे, अन्य डव्यमा व्यापक परिणमन कोइकाळे थाय नहि. गुणपर्याय मांही, कहेतां एक पोताना डव्यना अनंता गुण ठे, अने एक एक गुणना अनतापर्याय ठे ते गुणपर्याय पोतपोतीका गुण गुणगत,

पर्याय पर्यायगत, एम व्यापकपणुं परिणमनपणुं सिध्ध ज्ञगवानने विपे ठे, एटले एक गुण वीजा गुणमां न व्यापे, एक पर्याय वीजा पर्यायमां न व्यापे, ने परिणमे, वळी अन्य द्रव्यना गुणपर्यायमा पण न व्यापे न परिणमे त्यारे कीहा गुणपर्याय परिणमे ते कहे ठे, असख्य प्रदेश त्याही कहेतां सिध्धात्माना असरयाता प्रदेश ठे त्याही कहेतां ते प्रदेशोने विपे एक एक प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनंता गुण अने अनता पर्यायनु व्यापकपणु परिणमनपणु ठे, अन्य वीजा जीव अजीवादि द्रव्यना प्रदेशमां न व्यापे न परिणमे, सही कहेता निश्चय निज कहेतां पोताना गुणपर्यायने रहेवानु, वसवानु, प्रदेशने विपे व्यापकपणु परिणमनपणु कह्यु, तेज खेत है के० सिद्ध ज्ञगवानने स्वक्षेत्र जाणवु एही अवगाहनाउ कहेतां जे सिद्धात्माना असरयाता प्रदेशनो निविकघन अयोगी चौदमा गुणठाणाना अत समय वनेलो, एज सिद्धात्मानी अवगाहना कहीए, ए प्रमाणे एटले जेम एक सिद्धनु कह्यु तेम अनतासिद्धनु स्वक्षेत्र तेहीज अनती अवगाहनाउ कहीए एटले अवगाहना कहीए ते सिद्ध अने सिद्ध कहीए ते अवगाहना जाणवी, एकमा अनेकताउ कहेता जीहा एक सिद्धनी अवगाहना ठे तीहा अनेक सिद्धनी अवगाहनाउ रही ठे तेमा कोइनी ऊज्ञी ठे कोइनी वेठी ठे कोइनी चित्ती ठे कोइनी पासाज्जर ठे कोइनी पद्मासने ठे कोइनी विकटासने ठे वली कोइनी लघु ठे को-

ક્ની ગુરુ છે. લઘુ છે તે બત્રીસ આંગલની છે અને ગુરુ છે તે ત્રણસોનેતેત્રીસ ધનુષ્યને બત્રીસ આંગળની છે અને મધ્યસ્થ અવગાહ્નાઉ અસરયાત ભેદે. ન્યૂનાધિકપણે સિદ્ધમાં રહી છે એટલે ચૌદમા અયોગી ગુણઠાણે સેલેસીકરણ અવસરે જેવી રીતે પોતાની કાયાની સ્થિતિ હતી તેવી રીતે સિધ્ધમાં અવગાહ્નાઉ ઉપર અલોકને અમીને રહી છે. જે પાંચસો ધનુષ્યની કાયાવાલા સિધ્ધ થયા અને ઉન્ના થકા મોક્ષે ગયા તેમની ગુરુ અવગાહ્ના જાણવી અને બે હાથની કાયાવાલા ઉન્ના થકા મોક્ષે ગયા, તેમની બત્રીસ આંગળની સિધ્ધમાં છે તે લઘુ જાણવી અને પાંચસો ધનુષથી મોટી કાયા અને બે હાથથી નાની કાયાવાલાની સિધ્ધી પ્રાયે થતી નથી, ભેગી મલી કહેલાં જેમ ઉપર કહી તેમ સિદ્ધ ભગવાનની અવગાહ્નાઓ ભેગી એટલે એકમાં અનેક ભેગી મળેલી કહી ભિન્ન સદા કહેતાં, તોપણ સદા સર્વદા ભિન્ન છે યથા દ્રષ્ટાંતે જેમ ડીરાની માંહેલી કોરે અનેક દીવેટની વાટો કરીને ભેગી મુકીયે તેની જ્યોતિ સર્વ વાટની એક દેખાય, પણ વાટ વાટની જ્યોતિ ભિન્ન છે જે જ્યોતિ છે તે પોત પોતાની વાટના સબધે છે. અન્ય વાટના સબધે નથી એક વાટ ઉપાડીએ ત વખતે તે વાટની જ્યોતિ નોખી ભિન્ન પડે પરતુ ભેગી હતી તોપણ ભિન્ન હતી એ દ્દષ્ટાંતે સિધ્ધ ભગવાનની અનેક અવગાહ્નાઓ ભેગી મલી છે, તોપણ સદા નીજ દ્રવ્યના સબધી પણે ભિન્ન છે એ સિધ્ધ ભગવાનની અવગાહ્નાઓની

संख्या जिन वचने सिध्धांत साक्षीये पांचमा अनंते कही छे ते सर्व अवगाहना मय अनता सिध्ध भगवान प्रत्ये आ ग्रथनी पूर्णता अवसरे ग्रंथकर्त्ता कहे छे के मानजो प्रणाम हे, कहेता पच अग एटले बे हाथ बे पग अने मस्तक ए पच अगने नम्रता पूर्वक विनयपूर्वक बहुमान पूर्वक, भक्तिपूर्वक, प्रमोदपूर्वक, उत्साहपूर्वक, गुणरागी-पणे पर आकक्षा दूषणे वर्जित थइने अतरदृष्टि योगे, त्रि-करण जोगे प्रणाम हे कहेता मारो नमस्कार छे ते हे सिध्ध परमात्मा मानजो कहेतां स्वीकारजो, मारी विनति अवधारजो (३)

ग्रथनी पूर्णताना दुहा

भेद ज्ञानविण भविकने, नही वस्तु ओळखाण ॥
वीपरित श्रद्धा त्या लगे, समजो चतुरसुजाण ॥ १ ॥
भेदज्ञानथी भावीए जड चेतन दुफार ॥
समकित शुद्ध समाचरे, निज वस्तु निरधार. ॥ २ ॥
तेहीज सिद्ध स्वरुप छे, तेहीज जीव सुख कंद ॥
ध्यावो गावो भविजना, एथी टळे भवफद ॥ ३ ॥
निज सवळे सुख सपत्ति, अवळे दु ख अनंत ॥
रागद्वेष अवळी दशा, तजतां सिद्ध महत ॥ ४ ॥
शिवपद सोही ज्ञानमा, ध्यान ज्ञाननी माही, ॥
ध्याता ध्येयनी एकता, पूरण साधन त्यांही ॥ ५ ॥
धर्म प्रवर्तन सार ए, ग्रथ रच्यो गुणखाण, ॥
ज्ञानी वचना लघने, पूरण कीयो परमाण ॥ ६ ॥

व्यवहार विशेषे कह्यो, शुद्धाशुद्ध विचार ॥
समकित शुद्ध व्यवहार छे, मिथ्या अशुद्ध आचार ॥७॥
निश्चय नय वस्तु रूपे, सूक्ष्मज्ञान स्वभाव ॥
अनुभव जोगे वर्णव्यो, दाख्यो निज सद्भाव ॥ ८ ॥
गुरु गुणगातां ज्ञाननी भावी भावना शुद्ध ॥
टाळी अज्ञान भावना, कृत्रिम अनुभवी बुद्ध ॥ ए ॥-
ग्रंथज्ञान गगाजळे, टाळो मळ मिथ्यात ॥
लहो समकित मूल धर्मनु, शीव साधन सुखशात ॥१०॥
बाधक भाव विछेदीने, ग्रहो ए रुप अवाध ॥
ते साधन शीव पदतणु, साधे सोही साध्य ॥ ११ ॥
ग्रथ सुगुण मणि हार छे, अमुलख वस्तु अनुप ॥
सयम श्री भणगार छे, तस कत मुनिवर भूप ॥ १२ ॥
ग्रथ ज्ञान अमृत रसे, जलभर सागर जेम ॥
गभीर ऊंडो अर्थ छे, निज गत उपयोगे खेम ॥ १३ ॥
टाळो परगत चेतना, स्वगत अनुभव नाव ॥
तारे भव दु.ख सागरूं, सिध्ध निरजन राव ॥ १४ ॥
ग्रथ सुगुण सुरतरू, वंछीत दाता सार ॥
आपे शाश्वत सुखने, तजो नहि क्षण बार ॥ १५ ॥
ग्रथ सोही निमित्त छे, सापेक्ष सिध्धि लहत ॥
भावग्रंथ सो आतमा, शोधो चतुर महत ॥ १६ ॥
भावग्रथ ए ज्ञान निधि, मेरु अरूग समकित ॥
चरण रमण थीर सैलज्यु, तप रवि तमहर नीत ॥ १७ ॥
सोही ग्रंथ शीव रूप हे, ध्रू ज्यु अविचळ रूप ॥

प्यारो पकित लोकने, न पमे सो जव कूप ॥ १८ ॥
स्वपर विजागे सपजे, खेले अनुजव योग ॥
ते धर्म वर्त्तना सद्दही, पामे शीववधु जोग ॥ १९ ॥
सिध्ध वधु एम पामीए, सादि अनंतो काळ ॥
नीरविघ्न सुख शाश्वतां, सो मुज काज अचाल ॥ २० ॥
आज मनोरथ सवी फळया, जाव अध्यातम पाप ॥
ज्ञान शीतल करी सो रच्यो, ग्रंथ गुरु आज्ञाय ॥ २१ ॥

सपूर्ण.

श्री गुरुभ्यो नम॰

अथ क्षायक जावतत्व विलास ग्रथ लीख्यते

॥ दुहा. ॥

॥ ढाळ ॥ द्वेष न धरीये लालन द्वेष न धरीए ए देशी ॥

क्षायक समकित जाव वखाणु ॥ एहथी पामीयें मुक्तिनु टाणु जविका ॥ मुक्तिनु ॥ सात प्रकृति क्षय इहा थावे ॥ते फरी कदीय न सन्मुख आवे जविका ॥सन्मुख०॥ ॥ १ ॥ प्राप्ति चोथे वा सातमे गाणे ॥ वेदक क्षायक वचन प्रमाणे जविका ॥ वचन० ॥ क्षायक समकित दू जेदे जाख्यु ॥ सदगुरु वचन में घटमा राख्यु जविका ॥ घटमां० ॥ २ ॥ आवता जवनु पहेलु आयुष्य वाध्यु ॥ लहे समकित पछे श्रेणि न साध्यु जविका ॥ श्रेणीन० ॥ खपश्रेणी क्षायक जेद ए पहेलो ॥ उत्कृष्ट चार जवे सीव लहे वहेलो जविका ॥सीव०॥३॥ ससार स्थिति काळ शास्त्रे जा-

ख्यो ॥ तेत्रीस सागर फफेरो दाख्यो ज्ञविका ॥फफेरो०॥ उत्कृष्टो संसार एटलो रहेवे ॥ जघन्य त्रीजे ज्ञवे शीवसुख लेवे ज्ञविका ॥ शीव० ॥ ४ ॥ अखंम श्रेणी क्षायक ज्ञेद हवे बीजे ॥ क्षपक श्रेणी मांफी तदज्ञवे सीजे ज्ञविका ॥ तदज्ञवे० ॥ एम समकित दुज्ञेद क्षायक ॥ नरनारी जे लहे ते शीवलायक ज्ञविका ॥ ते सीव० ॥ ५ ॥ क्षय उपसमज्ञावे ध्रुवता पामे ॥ ज्ञान दर्शणने लब्धि दानादि नामे ज्ञविका ॥ दानादि० ॥ आत्म असंख्य प्रदेश समाधि ॥ सात प्रकृति टळी मोहनी उपाधि ज्ञविका ॥ मोहनी० ॥ ६ ॥ अखंम श्रेणी क्षायक चारित्र पामे ॥ ते बीजी ढाळे यथाख्यात सोनामे ज्ञविका ॥ ख्यातसो० ते ज्ञाव शुद्ध उपयोग ज्ञावु ॥ ज्ञान शीतल करी मोह खपावुं ज्ञविका ॥ मोह० ॥ ७ ॥ इति प्रथम ढाळ कही

॥ ढाळ बीजी ॥

राज पधारो मेरे मंदिर ॥ ए देशी ॥

क्षायक चारित्रपद वरवाने ॥ उपयोगी अप्रमत्तेजी ॥ अखम श्रेणी क्षायक समकिती ॥ आवे नही प्रमत्ते ॥ क्षपक श्रेणी मांफे जी ॥ अतर अपुरव गांण ॥ उपाधि मळ गाफेजी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अपूर्व ठाणे अपुर्वज्ञानी ॥ अपुरव खेल खेलेजी ॥ अपुर्व अदृजुत मूलरूपे ॥ अक्रत अनुज्ञवरेले ॥ क्षपक० ॥ २ ॥ प्रथकत्व प्रथकत्व दूज्ञेदे ॥ व्हेंची स्वपर ज्ञिन्नजी ॥ जीवने पुद्गल वेहु अलगा ॥ तिहा चेतन निज गुण लिन्न ॥ क्षपक० ॥ ३ ॥ अनतगुण

निज द्रव्ये गवेषे ॥ गवेषे पज्जव अनंताजी ॥ भेदज्ञाने प्रथक् स्वरूपे ॥ क्षय उपशम शुभमता ॥ क्षपक० ॥ ४ ॥ शुक्लध्यान तप पहेलो पायो ॥ ध्यातां अग्नि अति ज्वाळाजी ॥ मोहपल्ली इहां भस्मी थावे ॥ भेद छेद अभेदी लाला ॥ क्षपक० ॥ ५ ॥ क्षय उपशम छेद इहां मोहनीनो ॥ अशुद्ध परिणति छेदीजी ॥ रागद्वेष ए विभाव चेतना ॥ हुइ शुद्ध चेतना समवेदी ॥ क्षपक श्रेणी० ॥ ६ ॥ मिश्र भाव इहा नही लाधे ॥ लाधे शुध्ध परिणतिजि ॥ गुण पर्याय अभिन्न निज द्रव्ये ॥ ऐकयता उपयोग वृत्ति ॥ क्षपक० ॥ ७ ॥ यथाख्यात इहा चारित्र पामे ॥ दशमा गाणना अंतेजी ॥ शुक्ल ध्यान बीजो पायो ध्याता ॥ वितराग बारमे एकंते ॥ क्षपक० ॥ ८ ॥ पर अनुभव इहां नही लाधे ॥ समभीरुढ नय साधेजी ॥ घाती कर्म त्रण क्षय इहां पामे ॥ केवळ नाण दर्शण लाधे ॥ क्षपक० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणी उत्तरोत्तर वृद्धि ॥ ज्ञान अनुभवयोगजी ॥ कृत्रीम पक्ष इहां नही लाधे ॥ ज्ञान शीतल समाधि सयोग ॥ क्षपक० ॥ १० ॥ ढाल बीजी सपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥

ढाळ त्रीजी ॥ राग सारग हों धन्ना ए देशी ॥ केवळ लहो ठाण तेरमेरे मीता ॥ ज्ञान दर्शण अनंत ॥ घाती कर्म अभावथीरे मिता ॥ निर्मळ उपयोगवंतरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो सेवोने ॥ ए गुणो प्रगटे घटमारे मिता ॥ उपयोग विशेष सामान्यरे रंगीला मिता ॥ ए

गुणो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विशेष उपयोग ज्ञाननोरे मिता ॥ पहेले समय लहत ॥ बीजे समय दर्शणनोरे मिता ॥ उपयोग सामान्य कहत रे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ २ ॥ विशेष ते साकार भेदतारे मिता ॥ सामान्य सो निराकार ॥ अभेद ग्राहक भापीयोरे मिता ॥ ए सिद्धांतीक पक्ष साररे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ३ ॥ नय वादे भिन्न न मानीयोर मिता॥ एक विशेषोपयोग ॥ सामान्य विशेषमां भल्योरे मिता ॥ न समय अतर जोगरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ४ ॥ एम भिन्न—मत ए वेहुनोरे मिता ॥ जिन भद्र गणी सिद्धसेन ॥केवळी गम्य सो तत्व एरे मिता ॥ सिद्धसेन विसारद नय ज्ञानरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ५ ॥ हवे ज्ञान अनतु दाखवुंरे मिता ॥ सवे एक समय प्रत्यक्ष ॥ आच्छादन नही एहने रे मिता ॥ जाणे जिव अजिव समक्षरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ६ ॥ तेमा रूपी अरूपी जाणतारे मिता ॥ जाणे गति हेतु द्रव्य॥ स्थिति हेतु द्रव्य जाणतारे मिता॥ जाणे अवकाश हेतु द्रव्यरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ७ ॥ नवी वस्तुने जुनी करेरे मिता॥ तेहना हेतुनो जाण॥ एम खट द्रव्यने जाणतारे मिता ॥ उपजे विणसे ध्रुव जाणरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ८ ॥ नीज नीज वृत्ति सवे करेरे मिता ॥ ए अगुरु लघु पर्याय ॥ समे समे हाणी वृद्धि लहेरे मिता ॥ षट् षट् वार कहायरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ९ ॥ भूत काळ अनतो गयोरे

मिता ॥ अनागत काळ अनंत ॥ एक समय वर्त्तमाननोर मिता ॥ हुइ होसे सवि जाणतरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १० ॥ मति यादि ज्ञान तणी प्रजारे मिता ॥ एहमा सर्व समाय ॥ रवि प्रजाथी अधिक नहीरे मिता ॥ तारा नक्षत्र समुदायरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ११ ॥ केवळज्ञान गुण मोटकोर मिता ॥ केवळ दर्शण साथ ॥ जाणे देखे एम कीजियेरे मिता ॥ ए गुण लाधे तो हु न अनाथरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १२ ॥ क्षायक लब्धि जेद चउ कह्यारे मिता ॥ आ ढाळमा कह्या दोय ॥ पण लब्धि चाकी रहीरे मिता ॥ ते आगे वर्णवीशुं सोयरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो सेवो० ॥ १३ ॥ अरूपी वस्तुने जाणवीरे मिता ॥ ते न लहे द्रव्य अजाण ॥ तिणे द्रव्य षट् दाखशुरे मिता ॥ गुण पर्याय युक्त वखाणरे रंगीला मिता॥ ए गुणो० ॥ १४ ॥ धर्म अधर्म आकाशनेर मिता ॥ कालने पुद्गल जिव ॥ अनुक्रमे विस्तारशुरे मिता ॥ ज्ञान शीतल लही थाओ सीवरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १५ ॥ ढाल त्रीजी संपुर्ण ॥

॥ ढाळ चोथी ॥

॥ जवी तुमे वदोरे सुरीश्वर गच्छराया ए देशी ॥

जवी तुमे करजोरे द्रव्याणु योगज्ञान मोटु ॥ जिनागम जाणयावीण चरण आराधे ॥ ते सवी जाणो खोटु ॥ जवी० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ द्रव्यस्वरुप तेहने कहीए ॥

अखंड अविनाशी त्रण काळ ॥ वस्तुता जेहमां रहीरे ॥ ते द्रव्य नित्य निहाळ ॥ नवी तुमे० ॥ २ ॥ गुण पर्याय भाजन ते द्रव्य ॥ गुण स्वभावे धर्म ॥ भिन्न अभिन्न-त्रिविध सदाए ॥ एक पदारथ मर्म ॥ नवी० ॥ ३ ॥ उपजे विणसे थिर रहे ए ॥ एसो वस्तु वखाण ॥ उपजे विणसे पर्याय धर्मे ॥ थिर द्रव्य प्रमाण ॥ नवी० ॥ ४ ॥ अवगाहना सवे द्रव्यनी ए ॥ गुणपर्याय प्रदेश ॥ तेहीज सत्ता द्रव्यनी दाखी ॥ अविनासी रुमी वेस ॥ नवी० ॥ ५ ॥ द्रव्येद्रव्य ते न मीले कहीये ॥ अनादि असहाइ ॥ निज-सत्तामय द्रव्य रहेवे ॥ पर सत्ताये नही कदाइ ॥ नवी० ॥ ६ ॥ द्रव्यरूप ठती कार्यनी ए ॥ तिरोभाव शक्ति सदाय ॥ आविरभावे प्रगट लहीये ॥ व्यक्ति गुणपर्याय ॥ नवी० ॥ ७ ॥ कार्यकारण निज द्रव्य एही ॥ पर अकारण अकार्य ॥ परनेकारण एकान्ते माने ॥ ते जीव सो अनार्य ॥ नवी० ॥ ८ ॥ ठतीपणे स्व द्रव्य कहीये ॥ अठतीपणे पर द्रव्य ॥ एम अस्ति सो निजपर वेहुनी ॥ रही ठे सर्वे द्रव्य ॥ नवी० ॥ ९ ॥ द्रव्यत्रिकाले नित्य कहीये ॥ पर्याये अनित्य ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमां ॥ भापे ज्ञानी विनित ॥ नवी० ॥ १० ॥ स्व द्रव्य स्व खेत्र स्व काळ ॥ स्वभाव सहित चउ सत्य ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाल ॥ पर भाव चउ ए असत्य ॥ नवी० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक कहीये ॥ गुणपर्याय अनेक ॥ अनेक गुणपर्यायमां एक द्रव्य ॥ समजो ज्ञान विवेक ॥ नवी० ॥ १२ ॥ शक्तिभावने

कारण मानो ॥ व्यक्ति ते कार्य जाणो ॥ शक्तिनी व्यक्ति जेहथी लहीये ॥ ते साधन परमाणो ॥ जवी० ॥ १३ ॥ पर्यायास्तिक नयन्नेद स्वन्नावे ॥ द्रव्यास्तिक अन्नेद ॥ उन्नयधर्मी द्रव्य दाख्यो ॥ अविरोधी अच्छेद ॥ जवी० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षणमयी ए द्रव्यसत्ता गुणखाण ॥ इत्यादि न्नेद घणा विस्तारे ॥ वस्तु सत्ता उलखाण ॥ जवी० ॥ १५ ॥ द्रव्य षट्न्नेदे जाणी लहीए ॥ हेय उपादेय बुद्धि ॥ हेय जाणी पच अजीवने ठमी ॥ ग्रहीए एक निज जीव शुद्धि ॥ जवी० ॥ १६ ॥ हेय उपादेय बुद्धि घटमां ॥ तेही ज आतमज्ञानी ॥ ज्ञानशीतल उपयोगे प्रकाशे ॥ द्रव्यस्वरूप थिर ध्यानी ॥ जवी० ॥ १७ ॥ ढाल चोथी सपुर्ण ॥

॥ ढाळ पाचमी ॥

नदी जुमना के तीर उमे दोय पखीयां—ए देशी,

न्नाखु धर्मास्तिकाय जवी तुमे सान्नलो ॥ समजो द्रव्य वखाण मिथ्या टले आवळो ॥ चेतन बुद्धि कायामां राखीने व्रत धरो ॥ नं लहो सो समकित कर्म बांधो खरो ॥ १ ॥ ते कारण द्रव्य जाणी नीज जीव जाणजो ॥ पामशो सम्यक् ज्ञान शीव लही माणजो ॥ धर्मास्तिकाय ग्रथे गीतार्थे वर्णव्यां ॥ चउगुण वीस्तारमा जोड अनुन्नव्यो ॥ २ ॥ अरूपी गुण पहेलो वर्ण अन्नावथी ॥ रसगधने फरसे सस्थान को नथी ॥ सस्थानने अन्नावे अमुर्त्ती लीजीए ॥ वर्ण विना नही रूप अरूपी कीजीए ॥३॥ प्रथम

गुण थयो सिद्ध वीजो अचेतनए ॥ जाण गुण अभावे नही ते चेतनए अक्रिय गुण त्रीजो करणी करे नही ॥ इहां कोइ करे तर्क साज जीवादि तही ॥ ४ ॥ तेहने उत्तर दाखु ए स्वभाव करणी ॥ जलतारे बुडे तेले वेहेवारे नवरणी ॥ स्वभाव करणी एक चउ द्रव्ये जाणीए ॥ सिद्ध परमातममांही स्वभावे वखाणीए ॥ ५ ॥ पुद्गल संसारी जीव बे द्रव्यमां दाखवु ॥ स्वभावने विभाव बे करणी भाखवुं ॥ विभाव करणी एक मीथ्यात्वी जीवमा ॥ मन तन वचन प्रवृत्ति भव्यने अभव्यमा ॥ ६ ॥ चोथा ठाणथी उपयोगी चौदमा अत ज्युं ॥ स्वभावने विभाव बे करणी सत ज्यु ॥ स्वभावे शुद्धातम अनुभव करणी ॥ विभावे उदयिक भाव सबे नीरजरणी ॥ ७ ॥ पुद्गलमां दोय भेद करणीना दाखसु ॥ एक परमाणु मांही स्वभावे भाखसुं ॥ खंध मीले ने विखरे ए विभाव करणी ॥ योग्यतावंत ए द्रव्य ग्रंथे एम वरणी ॥ ८ ॥ स्वभावे जे करणी ते निश्चय जाणीये ॥ विभाव करणी वाह्य व्यवहारे पीछाणीये ॥ व्यवहारे नहि करणी धर्मास्तिकायमां ॥ तेथी अक्रिय कह्यु हेतु त्रीजा गुणमां ॥ ९ ॥ गुण त्रीजो थयो सिद्ध चोथाने पीछाणीए ॥ जीव तथा पुद्गल बेहुने गति हेतु जाणीए ॥ मीन चाले जळ मांही चाले नही अन्य का ॥ जीवने पुद्गल चाले धर्मास्ति थकां ॥ १० ॥ धर्मास्तिने अभावे गति नहि संभवे ॥ जीवने पुद्गल नाहि जड अलोके छवे ॥ गति करवा शक्ति छे जीव पुद्गले ॥ आकास आपे मार्ग

सादी सत न्नगे ॥ तेजस कार्मण कहु हवे रंग ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ अनादी अनंत अन्नवीनेरे ॥ न्नवीने अनादी सत ॥ शुन्नाशुन्न ते जाणीयेरे ॥ पुन्य पापसो कहत ॥ त्रु० ॥ पुन्य पापसो कहत ते आश्रव ॥ जीव गुण वाले सही ए दव ॥ ज्ञान शीतल पुद्गलने जाणो ॥ कह्यो कहुंछु आगे चित आणो ॥ सुणो० ॥ ए ॥ ढाल सातमी सपुर्ण ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ श्री अरीहंत पद ध्याइए–ए देशी ॥

समजो न्नवीजन एहने ॥ कहु वर्गणानो विचाररे ॥ जीव ग्रहे सही दाखवु ॥ करो श्रद्धा निरधाररे ॥ समजो० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ जीव अन्नवी जगतमा ॥ तेथी अनत गुणा करीयेर ॥ सिद्धना न्नाग अनतमा ॥ एटला परमाणु दळ कहीयेर ॥ समजो ॥ २ ॥ ते वर्गणा वादर न्नावमा ॥ ग्रही बांधे उदारीक कायारे ॥ तेथी उंठी ते ग्रहे नहि ॥ एम बोले गीतारथ रायारे ॥ समजो० ॥ ३ ॥ तेथी अनंत गुणा दळ न्नरी ॥ वर्गणा बीजी वैक्रीयरे ॥ जीव ग्रहे सही एहने ॥ गुरु वचने एम कहीयेरे ॥ समजो० ॥ ४ ॥ तेथी आहारक अनत गुणी ॥ जीवना ग्रासमा आवेरे ॥ एम कीजे प्रत्येके अनत गुणी ॥ अधिक सवे चमनी कहावेरे ॥ समजो० ॥५॥ तेजस न्नाषा स्वासो सासजे ॥ तेथी अनत गुणी मन थायरे ॥ मनथी कार्मण अनत गुणी ॥ नीज जाती परमाणु कहायरे ॥ समजो० ॥ ६ ॥ तेथी उंठी अ ग्रहण कही ॥ आगम सार ग्रथ साखीरे ॥ नय व्यवहार

गवेखतां ॥ देवचंद्रजीए भापीरे ॥ समजो० ॥ ७ ॥ एकथी वीजी अनंत गुणी कही ॥ तेहनु कारण कहीएरे ॥ सुक्ष्म ते पहेलीथी वीजी॥ वीजीथी सुक्ष्म त्रीजीएरे॥समजो०॥८॥ एम सुक्ष्म चमती सवे ॥ वर्गणा खंध जाती आठरे ॥ सवे सरखी कीजीए ॥ पुद्गलपणे एक ठाठरे ॥ समजो० ॥ ए ॥ जीव ग्रहण वर्गणा कही ॥ हवे कहु गुण पर्यायरे ॥ आगळ नवमी ढाळमां ॥ ज्ञान शीतल वर्णव थायरे ॥ समजो० ॥ १० ॥ ढाल आठमी संपूर्ण.

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग वंगाली ॥

पुद्गल द्रव्यना गुणपर्याय ॥ भाष्य/ अनंता जीनेंद्र-राय ॥ भवी सांभलो ॥ तेमां चौ चौ मुख्य कहाय ॥ ग्रथे वर्णव्या गीतारथराय ॥ भवी सांभलो ॥ १ ॥ पहेलो कह्यो गुणरूपी जेह ॥ दृष्टीगोचर आवे तेह ॥ भवी सांभलो ॥ बीजो अचेतन जमता जेह ॥ जाण गुणनो अभाव तेह ॥ भवी० ॥२॥ त्रीजो क्रिया गुण कहेवाय ॥ शुभाशुभ क्रिया जेह थाय ॥ भवी० ॥ चोथो मिलण वीखरण जेह ॥ स-मण पमण वीध्वसण तेह ॥ भवी० ॥३॥ ए गुण चउ कह्या कहु पर्याय ॥ वर्ण पंच ए पहेलो कहाय ॥ भवी० ॥ रातो धोळो लीलो पीळो स्याम ॥ वीजो रस पंच भेदे नाम ॥ भवी० ॥ ४ ॥ तीखो कमवो कषायलो जेह ॥ खाटो मधुरो ए पंचे तेह० ॥ भवी० ॥ त्रीजो गंध दोय भेद पर्याय ॥ सुरभी दूरभी वास लहाय ॥ भवी० ॥ ५ ॥ चोथो फर्स

आठ जेद नाम॥ सीत उष्ण जारे हलवो ताम ॥ जवी० ॥
स्निग्ध रुक्ष कोमळ वरसट ॥ फरस सर्वेए कह्या अष्ट ॥
॥ जवी० ॥ ६ ॥ ए चो पर्याय जाण्या सार ॥ वळी गुण
गावानो छे विचार ॥ जवी० ॥ इन्द्री नोइन्द्री मन वचकाय
॥ पर्याप्ति प्राण पुद्गल ताय ॥ जवी० ॥ ७ ॥ संघयणने
वळी सस्थान ॥ लेस्या सज्ञा ए पुद्गल स्थान॥ जवी० ॥
ज्योनी वेद जनमने मरण ॥ जरा जवरा दोय पुद्गलरण
॥ जवी० ॥ ८ ॥ आहार नीहार गता गती जेह ॥ अव-
गाहना ए पुद्गल तेह ॥ जवी० ॥ पुद्गल सुक्षमने बादर
॥ आधि व्याधि ए पुद्गल सर ॥ जवी० ॥ ए ॥ आठे
कर्म कह्यां पुद्गल ॥ बध उदय ए पुद्गल दल ॥ जवी०॥
सत्ता उदीरणा कर्म कहाय ॥ पून्य पाप ए पुद्गल ताय
॥ जवी० ॥ १० ॥ इत्यादि पुद्गल गुण अनत ॥ ते जोगे
ससार जापे सत ॥ जवी० ॥ ज्ञान शीतल कहे टाळो तेह
॥ नीज वृत्तिए लहो शीवगेह ॥ जवी० ११ ढाल नवमी ॥

॥ ढाळ दशमी ॥

धन्य धन्य ते जग प्राणीया मन मोहन मेरे–ए देशी ॥

आश्रव हेतु जापीए सही चेतनमेरे ॥ तेमा पहेलो
हेतु मिथ्यात ॥ सही० ॥ अव्रत बीजो कषाय त्रीजो
॥ सही० ॥ जोग चोथानी कहुं वात ॥ सही० ॥ १ ॥
मुळ हेतु चउए कह्या ॥ सही० ॥ उत्तर सत्तावन जेद
॥ सही० ॥ तेमां मिथ्यात्व पच जेदे कह्या ॥ सही० ॥
अव्रतना कह्या बार जेद ॥ सही० ॥ २ ॥ कषाय नोकषाय

पच्चवीस कह्या ॥ सही० ॥ जोग भेद पच दश सार ॥ सही० ॥ सर्वे सत्तावन थया ॥ सही० ॥ अनुक्रमे करुं विस्तार ॥ सही० ॥ ३ ॥ मीथ्यात्व पहेलु अभिग्रही ॥ सही० ॥ ग्रह्यु न छोडे खर पूछवत ॥ सही० ॥ हठ मत ग्रह्यो कुबुद्धिथी ॥ सही० ॥ तीहां लोह वाणीयानु द्रष्टांत ॥ सही० ॥ ४ ॥ अण अभिग्रही बीजु मिथ्या ॥ सही० ॥ नहि परीक्षा पीतळ के हीम ॥ सही० ॥ दूध छास भेद जाणे नहि ॥ सही० ॥ इहां सत्य असत्य एकतीम ॥ सही० ॥ ५ ॥ अभीनीवेसी मिथ्या त्रीजु ॥ सही० ॥ खोटुं जाणी खरुं करवानो हठ ॥ सही० ॥ युक्ति कुयुक्ति घणी करे ॥ सही० ॥ माया भापाथी न फरे ए शठ ॥ सही० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व संशय ते चोथु ॥ सही० ॥ जीन वचनमां संका दोष ॥ सही० ॥ अपेक्षा नय समजे नहि ॥ सही० ॥ तीहां बोले बोले सकानो जोष ॥ सही० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व अणा भोग पांचमु ॥ सही० ॥ नहि जाणे ए धर्म के कर्म ॥ सही० ॥ अजाण नवळो सर्वथी ॥ सही० ॥ रच्यो पच्यो संसारमा पर्म ॥ सही० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्व वसे संसारे कर्या ॥ सही० ॥ पुद्गल परावर्त अनत ॥ सही० ॥ हवे मिथ्यात्व न छोडशो ॥ सही० ॥ तो करसो पुनरपी अनत ॥ सही० ॥ ९ ॥ अनंत पुद्गल परावर्तनो ॥ सही० ॥ अनादि मिथ्यात्व मालीक ॥ सही० ॥ समकित पामीने पडे ॥ सही० ॥ तोपण अर्ध पुद्गल ठीक ॥ सही० ॥ १० ॥ अनादि मिथ्यात्व समको नहि ॥ सही० निर्दय शत्रुए दुष्ट

॥ सही० ॥ अनंत दुःख दातार ए ॥ सही० ॥ करे कर्मथी जीवने ए पुष्ट ॥ सही० ॥ ११ ॥ कर्म पुष्ट शुभाशुभ ए ॥ सही० ॥ शुभाशुभ आश्रव पुन्य पाप ॥ सही० ॥ मिथ्यात्व पाच भेद कह्यु ॥ सही० ॥ अव्रतनो आगे कहु ताप ॥ सही० ॥ १२ ॥ ताप कहेतां शीतळ वळे ॥ सही० ॥ ए अद्भूत अचरीज वात ॥ सही० ॥ ज्ञान शीतलज्ञान भावमां ॥ सही० ॥ उपयोगी तीहा सुख ॥ सही० ॥ १३ ॥ ढाळ दशमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ तोरण आइ क्यु चलेरे—ए देशी ॥

मिथ्यात्व दुष्ट इस्यु कह्युरे ॥ वळी कह्यु गुणठाण सलुणा ॥ प्रश्न कर्यु रुडु भलुरे ॥ उत्तर कहु परमाण सलुणा ॥ शंका पडे तो फरी पुछीनेर ॥ नि सक थाउं गुणगेह सलुणा ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात्व दुष्टनोरे ॥ अर्थ कहु थिर चित्त ॥ स० ॥ त्यार पछी गुणठाणनोरे ॥ कहेशु उपयोग रीत ॥ स० ॥ सका ॥ २ ॥ मिथ्यात्व छतां नव पूरवीरे ॥ कह्या अज्ञानी ग्रंथे साख ॥ स० ॥ व्यवहारे यथारथ संयतीरे ॥ कह्या असयती भगवंए दाख ॥ स० ॥ सका० ॥ ३ ॥ नर्क तिर्यंच गति आउखुरे मिथ्यात्व विण न बधाय ॥ स० ॥ स्त्री नपुसक दोय वेदनोरे ॥ मिथ्यात्वगणे बध थाय ॥ स० ॥ सका० ॥ ४ ॥ अनतु दुःख नरके कह्युरे ॥ खेत्रवेदना परमाधामी आपे ॥ स० ॥ वळी लढी मरवानु तीहारे ॥ पूर्वभव वेरनीए गापे ॥ स० ॥

सका० ॥५॥ नर्कथी अनतु निगोदमांरे ॥ दुःख न्नापे जीने-द्रदेव ॥ स० ॥ पुद्गल परावर्त तीहां कर्यांरे ॥ अनंतां ए मिथ्यात्व टेव ॥ स० ॥ सका० ॥ ६ ॥ धर्म करयां धर्म होवे नहिरे ॥ धर्म करयां वधाय कर्म ॥ स० ॥ संसार वृद्धि हेतु एरे ॥ मिथ्यात्व अज्ञान न्नर्म ॥ स० ॥ सका० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्वी जीव अजीव समोर ॥ न जाणे वस्तु धर्म इम ॥ स० ॥ अती पाप मीथ्यात्व एरे ॥ वळीयामां वळीयो ए सीम ॥ स० ॥ संका० ॥ ८ ॥ व्यासी प्रकृति पापनीरे ॥ तेमां एक पल्ले धरीए मिथ्यात ॥ स० ॥ बीजा पल्ले एकासी सवेरे ॥ तोल्यां मिथ्यात न्नारे नमी जात ॥ स० ॥ संका० ॥ ए ॥ अनंत पुद्गल परावर्तनोरे ॥ मालीक एक मिथ्यात्व दुष्ट स० ॥ अव्रत कषाय जोग त्रण एरे ॥ मालीक न्नव साल के अष्ट ॥ स० ॥ सका० ॥ १० ॥ वहुल संसारी मिथ्यात्व एरे ॥ सर्व धर्म घाती एह ॥ स० ॥ अप मगलीकमां मूख्य एरे ॥ शत्रु चारित्र रायनो तेह ॥ स० ॥ सका० ॥ ११ सागर सीत्तेर कोमा कोमीनीरे ॥ स्थिती मोटी ए शत्रु कठोर ॥ स० जगवासी सवे जीवनेरे ॥ राखे आंणमां सेवक ज्यु नठोर ॥ स० सका० ॥ १२ ॥ आपे सहाय सवे कर्मनेरे ॥ मोह पल्लीनो पुत्र ए मोटो ॥ स० ॥ एने जोड अघातीने वळ वधेर ॥ फेरी सवसें ए मिथ्यात्व खोटो ॥ स० ॥ सका० ॥ १३ ॥ उदय साता असाता वेदनी रे कही गुण रोधक ते देखो ॥ स० ॥ वाला वोध चोवीसीये रे ॥ वोले देवचन्द्रजी ए पेखो ॥ स० ॥ संका० ॥ १४ ॥ इ-

त्यादि घणु शु कहीयेरे ॥ थोरु कह्यो घणुं जाणो चतुर ॥ स० ॥ ज्ञान गीतलनु कहेण मानजोरे ॥ मिथ्यात्व भ्रमिक ज्यु धतुर ॥ स० ॥ सकी० १५ ॥ ढाल अगीयारमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ चतुर नर सामायक नय धारो ॥ ए देशी ॥

चतुर नर अव्रत ठीमां टाळो ॥ षट काय षट इन्द्रीनो इन्द्री ए बार अव्रत नाळो ॥ चतुर० ॥ अव्रत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ आतम घर मेलातहे घटमां ॥ असरव्य प्रदेशनी रचना ॥ अनत गुणपर्याये भरपुर ॥ सरखा बराबर सिद्धना ॥च०॥ अव्रत० ॥ २ ॥ ए बार ठीमांमा थइने आवे॥ नीरतर चोर रागद्वेष॥ आतम गुण रीद्धि ले जावे ॥ तिहां चेतन करे कर्म क्लेष ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ३ ॥ पाच इन्द्रिने मन नोइन्द्रि ॥ तेनो विपय शुभाशुभ कहीए ॥ राग द्वेषए अशुद्ध परिणति ॥ पुद्गल सगे लहीए ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ४ ॥ पृथवि पाणी अग्निने वायु ॥ वनस्पतिने त्रस ॥ ए सर्वे अव्रत सेवनथी ॥ कर्मबध रागद्वेषवस ॥च०॥ अव्रत०॥५॥ ए बार अव्रतथी अलगा थइने॥ अतर गत घटमाही ॥ चिदानंद घन नजरे नीरखो ॥ करो शुद्ध उपयोग त्याही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ६ ॥ एम भाव विरतीये स्वरूप रमणगत ॥ अतर मुहूर्तमांही ॥ रागद्वेष मोहादी हणीने ॥ लहीये केवळ अरिहत त्याही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ७ ॥ एम अव्रतने टाळो भवीजन ॥ आश्रव अलगो होवे ॥ ज्ञान शीतल गुणगत परिणामे ॥ कर्म मेल सव धोवे ॥ च० ॥

अव्रत० ॥ ८ ॥ ढाल बारमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ देशी चन्द्रावळानी ॥

कषायनी पहेली चोकडीरे ॥ अनतानुबंधी ए दुष्ट ॥ जाव जिव लगे रहेरे ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट ॥ त्रुटक० ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट अमी लावो ॥ मान पथ्थर थंभ नमे न नमाव्यो ॥ वास मूळ वांकां तेसी माया ॥ कीरमज रंग ज्यु लोभ कहाया ॥ समकित घाति ए मोह ॥ १ ॥ कषायनी बीजी चोकडीरे ॥ अप्रत्याख्यानीए टळे ॥ बार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध जमी फाट मले ॥ त्रु० ॥ क्रोध जमी फाट मले मेघ वरसे ॥ मान अस्थि थंभ कष्ट नही नमसे ॥ शीग घेटानां वांकां तेसी माया ॥ करदम रग ज्यु लोभ कहाया ॥ देश विरति घाति ए मोह ॥ २ ॥ कषाय प्रत्याख्यानी चोकडी रे ॥ त्रीजी ग्रथे कहाय ॥ चार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध वेळु लीक पूराय ॥ त्रु० ॥ क्रोध वेळु लीक पुराय वायु आवे ॥ मान काष्ट थम्भ वळे तेल तापे ॥ गौमुत्रीका वांकी तेसी माया ॥ लोभ गाडी उजण मली भाग थाया ॥ सर्व विरती घातीए मोह ॥ ३ ॥ कषायनी चोथी चोकडीरे ॥ संज्वलनी ते कहाय ॥ पच दश दीन ए रहेरे ॥ क्रोध जळ लीक ज्यु थाय ॥त्रु०॥ क्रोध जळ लीक ज्यु थाय अळप॥नेत्र थम्भ नमे ज्यु मान छोडे टप॥ वांस छोती वाकी तेसी माया॥ हलदी रंग ज्युं लोभ कहाया ॥ यथाख्यात घातिए मोह ॥ ४ ॥ कषायनी चउ चोकडीरे ॥ सोळ भेद विस्तार॥ दृष्टांत साथे वर्णवीरे ॥ स्थिती कही प्राक्कधार ॥ ५ ॥

त्रु० ॥ थीती कही प्राडकधार अंतरमे ॥ हठमत नाही अनेकात धर्म ॥ हवे नोकषाय नव दाखु ॥ अनुक्रमे उपयोगे राखु ॥ आतम गुणघातीए मोह ॥ ५ ॥ हास्य मोहनी नोकषाय पहेलोरे ॥ वीनोद कारण विषवाद ॥ रति मोहनी नोकपाय वीजोरे ॥ शाता द्वेष कारण नाद ॥त्रु०॥ शाता द्वेष कारण नाद पापस्थान ॥ अरति मोह त्रीजो अशातावान ॥ भय मोहनी नोकषायनी भीती ॥ मरणादी सप्त भय वर्ते अनीती ॥ आत्म गुण घातीए मोह ॥ ६ ॥ शोक मोह नोकषाय पाचमोरे ॥ राग कारण करे क्लेश ॥ दुगंछा ते मोह नोकषाय छट्ठोरे ॥ अशुची कारण द्वेष ॥ त्रु० ॥ अशुची कारण द्वेष अणगमतु ॥ पुरुषवेद भोग विषय मन भमतु ॥ स्त्रीवेद कह्यो अग्नि काछो ॥ नपुसकवेदे सदा रहे दाझयो ॥ आतम गुण घातीए मोह ॥ ७ ॥ नोकषाय नव भेदे दाखीयोरे ॥ दारयासवे पचवीस ॥ आश्रव हेतु एहे त्रीजोरे ॥ अनादी सबध आधीस ॥ त्रु० ॥ अनादी सबध आधीसपणे भूखीयो ॥ सिद्धसम चेतन प्रसगे दुखीयो ॥ ज्ञान शीतल प्रसग जब तूटे ॥ कर्म आठ सत्ताथी छूटे ॥ धन्य दीन धन्य घडी तेह ॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढाळ चौदमी ॥

॥ चेतन चेतोरे चेतना—ए देशी ॥

योग त्रणने सही वर्णवु ॥ मन वचनने कायरे ॥ भेद पचदश तेहना, कहेशु उपयोग लायरे ॥ योग० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ चउभेद मनना कह्या ॥ सत्य सत्या सत्य

दूजोरे ॥ असत्य असत्या सत्यए ॥ अर्थ सूणी नवी बुजोरे ॥ योग० ॥ २ ॥ शुद्ध वेहेवारे मन रमे ॥ घटमां नेद ज्ञान आवेरे ॥ नीरावर्ण गुण आत्मा ॥ केवळ ज्ञानादि ध्यावेरे ॥ योग० ॥ ३ ॥ नय ऋजु सूत्र सत्य मन्न ए ॥ हवे सत्या सत्य दाखुरे ॥ मतीज्ञानादी गुण आत्मा ॥ उपयोग व्यवहारे राखुंरे॥ योग० ॥४॥ असुद्ध वेहेवारे असत्य मन॥ समजे काया तेह जीवरे ॥ असत्या सत्य शुन्न व्यवहारे॥ कर्म जनित काया गेहरे ॥ योग० ॥ ५ ॥ ए चउन्नेद मनना कह्या ॥ तेम वचन चउजाणोरे॥ चिंतवे वोले पटंतरो ॥ ए आठ न्नेद परमाणोरे ॥ योग० ॥ ६ ॥ हवे कायाना सात कीजीए ॥ पहेलो योग उदारीकरे ॥ वीजो उदारीक मिश्र ए ॥ त्रीजो वैक्रिय ठीकरे ॥ योग० ॥ ७ ॥ चोथो वैक्रिय मिश्रए ॥ पांचमो आहारक जाणरे ॥ ठठो आहारक मिश्रए ॥ सातमो तेजस कार्मणरे ॥ योग० ॥ए॥ ए सात न्नेदे काया कही हवे कहु तस अर्थरे ॥ मनुष्य तिर्यंच दोयगती प्रत्ये॥ उदरीक काया गर्थरे॥ योग० ॥ए॥ देवनर्क दोयगती प्रत्ये ॥ काया वैक्रिय जाणोरे ॥ आहारक प्रमाद ठाणे करे॥ चौद पूरवी राणोरे ॥ योग० ॥ ॥ १० ॥ आयुप वाधी मरी देह ठोमीने ॥ जीव न्नवांतर जायरे ॥ तेजस कार्मण लेइने ॥ उपजे तीहां आहार थायरे ॥ योग० ॥ ११ ॥ मरी कायाथी जीव ठूटीयो ॥ जइने आहार न लीधोरे ॥ अंतरालवृत्ति तेटला समे ॥ तेजस कार्मण कीधोरे ॥ योग० ॥ १२ ॥ ए चउ न्नेद प्रत्येके

कह्या ॥ ह्वे कहुं मिश्र त्रण कायारे ॥ उदारीक वैक्रिय वीजी ॥ त्रीजी आहारक कहायरे ॥ योग० ॥ १३ ॥ ए त्रण नाम ते मुख्यता ॥ गुणता मिश्र ते दाखुरे ॥ तेजस कार्मण मिश्र ए ॥ ए सर्व सात न्नेद न्नाखुंरे ॥ योग० ॥१४॥ ए मुळयोग न्नेद त्रण कह्या ॥ उत्तर कह्या पंच दशरे ॥ चउद न्नेद सादि सात ठे ॥ एक न्नेद आगे कहीसरे ॥ योग० ॥ १५ ॥ तेजस कार्मण काय योगनो॥ ज्ञान शीतल कहे सवधरे ॥ अनादी अनत अन्नवीने ॥ न्नवीने अनादी सत न्नगरे ॥ योग० ॥ १६ ॥ ढाल चोदमी सपूर्ण ॥

॥ ढाळ पदरमी ॥

॥ ए ठनी कीहां राखी–ए देशी ॥

कर्म वध निरतर करीये ॥ ए विन्नाव क्रीया कहीये ॥ जीवने पुद्गल दोय मील्या होवे ॥ एक जीवपणे न लहीयेरे न्नवीका ॥ ए क्रीया अनादीतारी॥ ए आंकणी ॥१॥ ए वध चउन्नेदे दाखु ॥ प्रदेश प्रकृति वध ॥ रसवंध स्थिती मर्यादा ॥ दृष्टात लाडु सवधरे न्नवीका ॥ ए क्रीया० ॥२॥ प्रदेश तेही आटो कहीए ॥ खाड गोळ प्रकृति॥ रस ते घी न्नेली लाडु वाळो ॥ थीती मर्यादा वरतीरे ॥ न्नविका ए क्रीया० ॥ ३ ॥ ए कह्यो नय ह्वे उपनय दाखु ॥ शुन्नाशुन्न जेवी क्रीया ॥ तेवो आश्रव करम दळ खेचे ॥ खध परमाणु अनता न्नरीयारे॥ न्नवीका ॥ ए क्रीया० ॥४॥ प्रकृति चउकपाय कहीए ॥ अनतानादी न्नेद चउ ॥ नोकपाय मिथ्यात्व ए ठवीस॥ जेसी होवे तेसी बांधे वहुरे॥ न्नवीका

॥ ए क्रीया० ॥ ५ ॥ रस ते राग द्वेष अशुद्ध रस ॥ अज्ञान रस अशुद्ध ॥ जेटलो पोतामां होय ते रसथी ॥ बांधे आत्म प्रदेश अबुद्धरे ॥ भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ६ ॥ प्रदेश कर्मदळ मोह प्रकृति ॥ रस अज्ञान राग द्वेष ॥ निजातम असंख्य प्रदेशे ॥ बांधे एकत्व परिणमन वेसरे॥ भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ७ ॥ ए कर्मबंध जीहां तक रेहेवे ॥ आत्म प्रदेशथी न विखरे ॥ तेना काळनु मान ते स्थिती ॥ उत्कृष्टी कहु सिखरेरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥८॥ ज्ञानावर्णीने दर्शनावर्णी वेदनिकर्म अंतराय ॥ त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ स्थिती ग्रंथे कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥९॥ मोहनी कर्मनी स्थिती दू भेदे ॥ मिथ्यात्व बीजो कषाय ॥ सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ मिथ्यात्व मोहनी कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १० ॥ चाळीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति कषायनी दाखे ॥ समकीत घातीए मिथ्यात्व कहीए॥ घाती कषाय भाखेरे ॥भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ११ ॥ नामने गोत्र बे कर्मनी स्थिती ॥ सागरवीस कोडाकोडी ॥ तेत्रीस सागर आयुष्य केरी॥ दाखी ग्रंथे दृष्टी जोडीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १२ अज्ञान राग द्वेष अशुद्धरस॥ मतीश्रुत विभंग अज्ञान ॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध ॥ ए कर्मबंध हेतु स्थानरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥१३॥ समकित वीण ज्ञानी नही होवे ॥ वितराग विण रागी द्वेषी ॥ समकिती सद्भावे अबधक ॥ सकाम निर्जरा लेसीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १४ ॥ ए विभाव क्रीयामां भांगा कहीए ॥

ज्रवीने अन्नवीमा॥ अनादी अनत अन्नवीने लागो॥ अनादी सन ज्राप्यो ज्रवीमांरे॥ज्रवीका ॥ ए क्रीया० ॥१५॥ अनादी क्रीया जव त्याग होवे ॥ तव होवे आतम अवध ॥ ज्ञान शीनल उज्वल घटमाही॥ ते लहे शीवसुख सवंधरे॥ज्रवीका ॥ ए क्रीया अन्नीनवप्यारी ॥ १६ ॥ ढाल पदरमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ कपुर होवे अती उजळोरे–ए देशी ॥

चौकर्म अघाती पूर्व वधनीरे ॥ शुज्र प्रकृति होय जेह ॥ तेनो उदय पुन्य कीजीएरे ॥ दाखु बायाली ज्रेद तेहरे ॥ प्राणीए पुन्य तणो अधिकार ॥ ते संसारे सुखनु गेहरे ॥ प्राणीए० ए आकणी ॥ १ ॥ साता वेदनी उदय थकीरे ॥ करे सुखनो अनुज्रव ॥ मधु लेप खरुग धारज्युरे ॥ चाटया जीज्र कापे छुःख थाय तवेरे ॥ प्राणीए० ॥ २ ॥ उच गोत्र उदय थकीरे ॥ उच कुळे जन्मे जीव ॥ मान पूजा प्रतिष्टतारे ॥ लहे आदर सत्कार दीव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३ ॥ सुख आयुष कर्म उदय थकीरे ॥ पामे त्रण गति पर्याय ॥ काया देव मनुष्य तिर्यचनीरे ॥ हेरु वधन ए सर्व कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मना कह्यारे॥ पाच ज्रेद ते उदार ॥ हवे सततीस नामनारे॥ ए ज्रेद विचित्र चितारे रे ॥ प्राणीए० ॥ ५ ॥ मनुष्यद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे मनुष्य गति पर्याय ॥ मनुष्यनी आनुपुरवीरे ॥ वक्रगती उत्पत्तिये लायरे ॥ प्राणीए० ॥ ६ ॥ सुरद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे देवगति पर्याय॥

देवनी आनुपुरवीरे ॥ मनुष्यद्रिके कहीज्यु कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ७ ॥ पचेन्द्री जाति उदय थकीरे ॥ पामे सही इन्द्रीयो पांच ॥ देव मनुष्यादी गती प्रत्येरे ॥ उदय छते न लागे खाचरे ॥ प्राणीए० ॥ ८ ॥ उदारीक शरीरनोरे ॥ उदय होय जब सार ॥ उदारीक आहार लेइनेरे ॥ बांधे शरीर पीण नही वाररे ॥ प्राणीए० ॥ ए ॥ उदारीक अंगो पाग उदय थकीरे ॥ बांधे आठ अग उपांग ॥ अंगुली रे खानख केस एरे ॥ इत्यादि कह्यां अगोपांगरे ॥ प्राणीए० ॥ १० ॥ वैक्रीय शरीरनोरे ॥ अगोपांग उदय थाय ॥ ते बांधे उदारीकज्युरे, एम भावो ए सरखो न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ ११ ॥ वैक्रीयना दोय भेदछेरे ॥ औपपाति लब्धि एम ॥ औपपाती देव नर्कमारे ॥ लब्धि मनुष्य तिर्यंच तेमरे ॥ प्राणीए० ॥१२॥ वैक्रियादि लब्धि एरे ॥ करे मनुष्यादी रुप अनेक ॥ प्रत्येक रूपे नीजात्मनारे ॥ प्रदेश असख्यनी टेकरे ॥ प्राणीए० ॥ १३ ॥ ए प्रदेश लब्धिवतनारे ॥ काढे ते मुळ कायाथी सार ॥ अनेक रूपे एक आतमारे ॥ न त्रुटे प्रदेश श्रेणी फाररे ॥ प्राणीए०१४॥ए रूपथी लढतां अन्य सुरे ॥ लागे एकने शस्त्र प्रहार ॥ तेनु दुःख जे प्रगटेरे ॥ ते अनुभव सर्वने धाररे ॥ प्राणीए० ॥ १५ ॥ असंख्याता प्रदेश विनारे ॥ कायजोग न वधाय ॥ रुप विखरे आवी मिलेरे ॥ मुळ कायाये श्रेणी समायरे ॥ प्राणीए० ॥ १६ ॥ आहारक शरीर उदय थकीरे ॥ आहारक दळ ग्रहाय ॥ शरीरपणे परिणमावीनेर ॥ मुण्ड हाथनी बांधे ए कायरे ॥

॥ प्राणीए० ॥ १७ ॥ आहारक अगोपाग उदयथकिरे ॥ बांधे अग ऊपाग ॥ पूर्वे कह्यु ज्यु उदारीकेरे ॥ एम जाणो ए जोग अती चगरे ॥ प्राणीए० ॥ १८ ॥ तेजस शरीर उदय थकीरे ॥ आहारनु पाचन थाय ॥ जठरा अग्नि एहछेरे ॥ उदय आवे काळ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ १९ ॥ कार्मण शरीर उदय थकीरे ॥ कार्मण दळ बधाय ॥ असंख्य प्रदेशे ऐक्यतारे ॥ एखीर नीर द्रष्टांत न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ २० ॥ प्रथम सघयण उदय थकीरे ॥ हाड सधि द्रढ बंधाय ॥ मर्कट बध दोय पासथीरे ॥ उपर पाटाए खीली जडायरे ॥ प्राणीए० ॥ २१ ॥ पहेला सस्थान उदय थकीरे ॥ समचउरस पलाठी जणाय॥ माथो जानु जमणे खभेरे ॥ जमणो जानु डावे सम थायरे ॥ प्राणीए० ॥ २२ ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे॥ रस शुभ वर्णी काय ॥ सुवास कमल ज्यु महमहेरे ॥ शुभफर्स मनोज्ञ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २३ ॥ अगुरु लघु नाम उदय थकीरे ॥ शरीर मध्यस्थता पाय ॥ नहि पुष्टता नहि कसतारे ॥ ते अगुरु लघु नाम कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २४ ॥ पराघात नाम उदय थकीरे ॥ अनत बळ वीर्यता पाय ॥ एकपणे जीते अनेकशुरे ॥ भूजा बळे समुद्र तरी जायरे ॥ प्राणीए० ॥ २५ ॥ श्वासोश्वास उदय थकीरे॥सुखे श्वासोश्वास लेवाय ॥ विघ्न सभव होवे नहिरे॥ लब्धि छता सजीवन कहायरे ॥ प्राणीए० २६ ॥ आतप नाम कर्म उदय थकीरे ॥ तीखी तेजे लसी काय ॥ परने

परीताप उपजेरे ॥ उदय बादर पृथ्वी ए कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २७ ॥ उद्योत नाम कर्म उदय थकीरे ॥ शांत मुद्रा शीतळ ठाय ॥ परने प्रमोद हेतुएरे ॥ चद्रोदय अमी वरसायरे ॥ प्राणीए० ॥ २८ ॥ शुभ विहायो गती उदय थकीरे ॥ पामे हस सरखी ए चाल ॥ शील्यां अणशील्यां संपजेरे ॥ उदय अभावे न लहे ते ख्यालरे ॥ प्राणीए० ॥ २९ ॥ निर्माण नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अगना अवयव सर्व ॥ योग्य स्थापे सूत्रधार ज्युरे ॥ सांधा मेळ पुद्गल द्रव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३० ॥ जिननाम कर्म उदय थकीरे ॥ समोसरणादी पामे ऋद्ध ॥ सेवे असख्य कोमी देवनीरे ॥ अनत पुन्योदय तीहा कीधरे ॥ प्राणीए० ॥ ३१ ॥ आहार निहार अन्य देखे नहीरे ॥ प्रस्वेद मळ रहित शरीर ॥ श्वास सुगध महके कमळज्युरे ॥ मांस लोही उज्वल जेसी खीररे ॥ प्राणीए० ॥ ३२ ए चार अतिशय जन्मथीरे ॥ घाती कर्म खपे एकादश ॥ ओगणीस देव कृत्य सपजेर ॥ ए चौतीस अतीशयव्रत तसरे ॥ प्राणीए० ३३ ॥ पण तीस गुण जर वाणीयेरे ॥ भवी जीवने करे उपदेश ॥ बोध बीज पामे घणारे ॥ होवे विरति परिणामी रुमा वेशरे ॥ प्राणीए० ३४ ॥ कोइ होवे साधु साधवीरे ॥ कोइ श्रावक श्रावीका थाय ॥ क्षय उपशम अप्रतिहतनेरे ॥ दीये गणधर पद जिनरायरे ॥ प्राणीए० ३५ ॥ त्यां द्वादशांगी रचना करेरे ॥ ज्ञान लब्धिए गणधरराय ॥ ए तीर्थ स्थापना कहीरे ॥ देशना निष्फल नही

जायरे ॥ प्राणीए० ३६ ॥ त्रस नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे स्थावर काय पाच ॥ बाकी सर्वे गति त्रसठेरे ॥ तीहा उपजे तेमां नही खाचरे ॥ प्राणीए० ॥ ३७ ॥ बादर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे सूक्षम थावर पांच ॥ द्रष्टीगोचर काया कहीरे ते बादर नाम नही खाचरे ॥ प्राणीए० ३८ ॥ पर्याप्ति नाम उदय थकीरे ॥ करे पुरी पोतानी जे होय॥ कर्ण लब्धि दोय भेदथीरे ॥ न मरे अ-पज्जत्तो कोयरे ॥ प्राणीए० ३९॥ प्रत्येक नाम कर्म उदय थकीरे ॥ वे निगोद गति होय वध ॥ जीव जीवनी काया जुदीरे ॥ ते प्रत्येक नाम सवधरे ॥ प्राणीए० ४० ॥ स्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ दाढ दत हाड बाधां द्रढ ॥ नखसे हाड दंत एहनारे ॥ सर्व अवयव निश्चल गढरे ॥ प्राणीए० ४१ ॥ शुभ नाम कर्म उदय थकीरे शुभ कहीए उर्ध्व अग ॥ अप्रिय न होवे कोइनेरे ॥ फर्स लागया माने अती चगरे॥ प्राणीए० ४२॥ सौभाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ उपकार विण वल्लभ होय ॥ भगपण प्रिती सबध विना रे ॥ जग वल्लभ इष्ट लागे सोयरे ॥ प्राणीए० ४३ ॥ सुस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कठ शब्द मधुर ध्वनी होय ॥ सर्व लोक ग्रह एहनेरे ॥ श्रवण रस सुखदाइ सोयरे ॥ ॥ प्राणीए० ॥ ४४ ॥ आदेयनामकर्म उदयथकीरे ॥ प्रमा-णीक पुरुष गणाय ॥ खमीत वचन होवे नहीरे ॥ यथार्थ वचन पकमायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४५ ॥ यशकीर्ति नाम उद-यथकीरे ॥ गाय गुण समुदाय जगजस ॥ ऋद्धि आम्बर

अतीघणोरे ॥ फेलाय जसकीर्ति तसरे ॥ प्राणीए० ॥ ४६ ॥ ए वायालीस न्नेद पुन्यनारे ॥ अघाती कर्म जनित कहाय॥ उदयिक न्नावे ते पामीयेरे॥ पुदूगलीक न्नाव ग्रथे गवायरे॥ प्राणीए० ॥ ४७ ॥ ए न्नेद अर्थ रचना करीरे ॥ पहेला कर्म ग्रथ अनुसार ॥ ज्ञानशितल कहे गुणवतनेरे ॥ हित जाणी अशुद्ध होय तो नीवाररे ॥ प्राणीए० ॥ ४८ ॥ ढाल सोलमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवि करीए–एदेशी ॥

घाती करम पूर्व वधनी प्रकृति ॥ उदय आव्यां विघन करती ॥ आतम गुण पर्याय हणती ॥ अती मोह पाप ॥ घाती० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मतीज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ इंद्री उपयोग हीण थावे ॥ तीहां चेतन जडता पावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ सीद्धात वोध तीहां जावे॥ श्रोत इंद्री वे रासपावे ॥ मोह अज्ञान एह ॥ घाती० ॥ ३ ॥ अवधि ज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ रूपी प्रत्यक्ष ग्यान हीण थावे ॥ उदय होय तिहा नहि पावे ॥ पाम्यो होय तेनु जाय ॥ घाती० ॥ ४ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणी उदय मांही ॥ मनोगत न्नाव ग्यान क्षय त्यांही॥ उदय छतां न प्रगटे क्यांही ॥ अढीद्विपनी मांही ॥ घाती० ॥ ५ ॥ केवळ ज्ञानावरणी पापनो उदे ज्यांही ॥ तीहां अरिहत पदवी नांही ॥ छद्मस्थ ए कहेवाय त्यांही ॥ न सनातक

एह ॥ घाती० ॥ ६ ॥ ए ज्ञानावरणी उदय कह्यु बीजु कहीए ॥ दर्शना वरणी उदय लहीए ॥ ज्ञान दर्शन हाणी तहीए ॥ कही कहु विचार ॥ घाती० ॥ ७ ॥ चक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमा आवे ॥ चक्षु इन्द्री दर्शन हाणी थावे ॥ चौरन्द्रीपणु नही पावे ॥ तेरन्द्रीए थाय ॥ घाती० ॥ ८ ॥ अचक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमा आवे ॥ श्रोत गंध रसफर्स हाणी थावे ॥ मन हणता असन्नी कहावे ॥ भेद आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ ए ॥ श्रोत उपयोग हणता चौरन्द्री भाखु ॥ गंध हणता बेरन्द्री दाखुं ॥ रस हणतां एकेंद्री राखु ॥ फर्स हणता सूक्ष्म ॥ घाती० ॥ १० ॥ अवधि दर्शना वरणी पाप उदयमा आवे ॥ प्रत्यक्ष रूपी दर्शन हणावे ॥ दर्शन मर्यादा कहावे ॥ लाध्यु होय तेनु जाय ॥ घाती० ॥ ११ ॥ केवळ दर्शनावरणी पाप उदयमाही ॥ तीहा केवळ दर्शन नाही ॥ अपुर्ण कार्य कह्यु त्याही ॥ एही मोक्ष दुःख ॥ घाती० ॥ १२ ॥ निद्रा पचक पाप उदे प्रत्येके आवे॥ इन्द्रिगत उपयोग रुंधावे ॥ दर्शन गुण घात कहावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ १३ ॥ निद्रा पचक भेद प्रत्येके दाखु ॥ सुखे जागे ते निद्रा भाखु ॥ बीजा घाटानो खप न राखु ॥ पहेली निंद्रा एह ॥घाती०॥ १४ ॥ बीजो भेद निद्रा निद्रा भवी जाणो ॥ दुःखे जागे झाके घांटे साणो ॥ बेठां उभा उघे त्रीजो राणो ॥ तेनु प्रचला नाम ॥ घाती० ॥ १५ ॥ चोथो भेद प्रचला प्रचलाए दाखु ॥ चालता चालता उघ राखु ॥

खातां खातां पीतां उंघ नाखुं ॥ जागे काकरो त्यांही ॥ घाती० ॥ १६ निद्रा थीणद्धी पचमि मांही फरीए ॥ रात्रे दीन चिंतीत काम करीए ॥ वासुदेव वळ नीमे वरीये ॥ मरि नरके ए जाय ॥ घाती० ॥ १७ ॥ ए दर्शनावर्णी उदये कह्युं त्रीजु कहीए ॥ मोहनी कर्म उदय लहीए ॥ चारित्र गुण स्थिर हाणी तहींए ॥ श्रद्धा हीण थाय ॥ घाती० ॥ १८ ॥ पापवंध ब्यासीमां मिथ्यात्व एक गणीयो ॥ तेनी उदयमां त्रण वणीयो॥ सवे जीवने ए मोटी रणीयो ॥ हांणी आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ १९ ॥ प्रथम गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते मिथ्यात्व मोहनी कहावे ॥ एठे समकीत घाती स्वभावे ॥ भाव मदिरा एह ॥ घाती० ॥ २० ॥ त्रीजे गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ एतो मीश्र मोहनी कहावे ॥ समकीत गुण हणतां पावे ॥ पकृता रस्तो एह ॥ घाती० ॥ २१ चउथी सातमा लगे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते समकीत मोहनी कहावे ॥ क्षायक समकीत नही पावे ॥ ए ठतां कोइ जीव ॥ घाती० ॥२२॥ अनतानु कषाय पाप चोकडी उदे आवे ॥ तीहा समकीत गुण हाणी थावे ॥ कर्मवध अनतो पावे ॥ अनत संसारी एह ॥ घाती० ॥ २३ ॥ अप्रत्याख्यानी पाप चोकडी उदय आवे ॥ तीहां देशविरती दूर थावे ॥ तिर्यंच गतीये पोहोचावे ॥ अणुव्रत हीण एह ॥ घाती० ॥ २४ ॥ प्रत्याख्यानी पाप चोकडी उदय आवे ॥ तीहां सर्व विरती क्षय पावे ॥ नीज गुण स्थिरता सवे जावे ॥ चारीत्र हीण थाय ॥ घाती०

॥ २५ ॥ संज्वलन कषाय पाप चोकमी उदय आवे ॥ तीहा क्षायक चारित्र नावे॥ अशुद्ध परिणति न जावे ॥ वीतराग न कहाय ॥ घाती० ॥ २६ ॥ नव नोकषाय पाप उदे प्रत्येके आवे ॥ तीहा कषाय प्रगट थावे ॥ कषायनुं ए कारण कहावे ॥ सवे ससार मुळ ॥ घाती० ॥ २७ ॥ ए मोहनी कर्म उदय कह्यु चोथु कहीए ॥ अतराय कर्म उदय लहीए ॥ जीव गुण लब्धि हाणी तहीए ॥ दानादीकनी थाय ॥ घाती० ॥ २८ ॥ ज्ञान दर्शनोपयोग दान प्रवृत्ति न पावे ॥ तीहा श्रद्धा चरण लाभ नावे ॥ भोग उपभोगोपयोग अभावे ॥ वीर्य फुरणा न होय ॥ घाती० ॥ २९ ॥ घाती चो कर्मबध पापनो उदय भाख्यो ॥ गुण घात पुर्वक कही दाख्यो ॥ पहेलो कर्मग्रथपुरे साख्यो ॥ भवी समजो एह ॥ घाती० ॥ ३० ॥ पुर्वबध पाप भेद पच चालीए दाख्या ॥ उदयमा तेना सत चाली भाख्या ॥ अघाति सत तीस चाकी राख्या ॥ आगे कहीशु एह ॥ घाती० ॥ ३१ ॥ घाती कर्म वलीयो तीहा चेतन गलीयो ॥ भवोभव भमता दूःख मलीयो ॥ ज्ञान शीतल गुण एणे हणीयो ॥ ए अनादी सबध ॥ घाती० ॥ ३२ ॥ ढाल सत्तरमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ ऊंळगमी आदीनाथनीरे ॥ ए देशी ॥

अघाती पूर्वबधनीरे ॥ असुभ प्रकृति जेहलाल ॥ तेनो उदय पाप कीजीएरे ॥ भेद सत त्रीस तेह लाल ॥ पापो दय भवी सांभलोरे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ वेदनी असाता

उदयथीरे ॥ करे दुखनो अनुभव लाल ॥ नर्क निगोद गती विषेरे ॥ अनत दूःख सुख न लव लाल ॥ पापोदय० ॥ २ ॥ गोत्र नीचना उदय थकीरे ॥ नीच कूळे जन्मे जीव लाल ॥ भीक्षुक निदनीक हीनमांरे ॥ न पामे मान महत्व लाल ॥ पापोदय० ॥ ३ ॥ नर्क आयुष्य उदय थकीरे ॥ त्या जइ भोगवे आयुष्य लाल ॥ आयु छताए गति छूटे नहीरे ॥ आयु हेरु कहे जगदीश लाल ॥ पापोदय० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मनी कहीरे ॥ एक एक त्रण प्रकृती लाल ॥ हवे चोतीस कहु नामनीरे ॥ ए सवे सततीस अघातीलाल ॥ पापोदय० ॥ ५ ॥ नर्क द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे नर्क गती पर्याय लाल ॥ नर्कनी आनुपूर्विरे ॥ वक्र गति उत्पत्तिये लाय लाल ॥ पापो० ॥॥ ६ ॥ तीर्यंच द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे तीर्यंच गती पर्याय लाल ॥ तीर्यचनी आनुपुर्विरे ॥ नर्क द्वीके कही ज्यू कहाय लाल ॥ पापोदय० ॥ ७ ॥ एकेंद्री जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स इन्द्री एक लाल ॥ ए उदय छतां दूजी नहीरे ॥ एम बोले ए ज्ञान विवेकलाल ॥ पापोदय० ॥ ८ ॥ बेइन्द्री जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसना दोय लाल ॥ ए उदय छतां त्रीजी नहीरे ॥ गध न लहे प्राणी कोय लाल ॥ पापोदय० ॥ ए ॥ तेरेंद्रि जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसने गधलाल ॥ ए उदय छतां चोथी नहीरे ॥ न पामे ए चक्षु सवधलाल ॥ पापो० ॥ ॥ १० ॥ चोरेंद्री जाती उदयथकीरे ॥ पामे सही इन्द्री चार लाल ॥

पापोदय तीहा पचमी नहिरे ॥ पचमी कही पून्यमां विचार लाल ॥ पापोदय० ॥ ११ ॥ बीजु सघयण उदय-थकीरे ॥ हाड सघी द्रढ वधाय लाल ॥ मर्कट वध दोय पासथीरे ॥ हाड पाटो उपर विटाय लाल ॥ पापोदय० ॥ १२ ॥ सघयण नाराच उदय त्रीजुरे ॥ मर्कट वध दोय पासे लाल ॥ अर्ध नाराच चोथु कह्यु रे ॥ मर्कट एक एक खीली खासे लाल ॥ पापो० ॥ १३ ॥ सघयण किलीका उदयथकीरे ॥ हाड आकडे आकड वधी लाल ॥ छेवठु उदय छठु कह्युरे ॥ अणिए अणी सवधी लाल ॥ पापो-दय० ॥ १४ ॥ बीजां सस्थान उदयथकीरे ॥ नाभि उपर ल-क्षणे पेत लाल॥ नीचु हेठळ अग हीनतारे ॥ ए न्यग्रोधमण्डळ सेत लाल ॥ पापोदय० ॥ १५ ॥ सादी सस्थान उदय त्रीजुरे ॥ नाभि नीचे लक्षणेपेत लाल ॥ नाभि उपर अग हीनतारे ॥ यु पुर्व कमाणि सकेतलाल ॥ पापोदय० ॥ १६ ॥ कुब्ज सस्थान उदय चोथुरे ॥ उत्तम हाथपग मुख ग्री-वालाल ॥ अधम पेट हृदयने पुठतारे ॥ सो न लहो फरी फरी वा लाल ॥ पापोदय० ॥ १७ ॥ वामन सस्थान उदय थकीरे ॥ वे हाथने पग वे हीन लाल ॥ वाकी उत्तम सवे अगठेरे ॥ ते वामन कहे देव जीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १८ ॥ हुड सस्थान उदय छठुरे ॥ सवे अग अवयव ही न लाल ॥ उत्तम लक्षण एके नहीरे ॥ अग आकार विशेषे खीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १९ ॥ मनुष्य तीर्यच गर्भज मारे ॥ पट सस्थान अथे भाख्या लाल ॥ समचोरस एक

देवमारे ॥ बाकी हुंरु सवे गतीए दाख्यां लाल ॥ पापोदय० ॥ २० ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे ॥ अशुन्न रस वर्णी काया लाल ॥ स्वास परसेवो दूर वासनारे ॥ अमनोज्ञ फर्स कहाया लाल ॥ पापोदय० ॥ २१ ॥ असुन्न त्रिहायो गतिने उदेरे ॥ पामे उट खर जेसी चाल लाल ॥ पग घसाय दोय पाछलारे ॥ टिचाय अन्यो अन्य एसो ख्याल लाल ॥ पापो० ॥ ॥ २२ ॥ उपघात नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न्युनाधिक अगर्था विमाय लाल ॥ चोर दंत पड़ जीन्नि रसो लीयेरे ॥ पथरिए पामे खलना काया लाल ॥ पापोदय० ॥ २३ ॥ थावर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ एकेंडी बादर थाय लाल ॥ पृथ्वी, जळ, अग्निने, वायुमांरे ॥ प्रत्येक वनस्पतीकाय लाल ॥ पापोदय० ॥ २४ ॥ सूक्ष्म नाम कर्म उदय थकीरे ॥ सूक्ष्म स्थावर चौ होवे लाल ॥ दृष्टीगोचर काया नहीरे ॥ लोक व्यापी ते ज्ञानी जोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २५ ॥ अपर्याप्तो नाम उदय थकीरे ॥ पर्याप्ति पुरी न होवे लाल ॥ लब्धि अपज्जतो मरे तीहारे ॥ आरंन्यु जीवक ए खोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २६ ॥ साधारण नाम उदय थकीरे ॥ उपजे निगोदनी मांही लाल ॥ सूक्ष्म बादर दोय न्नेद एरे ॥ काय स्थिती अनत काळ त्यांही लाल ॥ पापोदय० ॥ २७ ॥ अस्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कान, पांपण, जीन्न प्रमुख लाल ॥ अंगे अवयव जे चपळतारे ॥ स्थिर न होवे भुव एसी रुख लाल ॥ पापो० ॥ २८ ॥ अशुन्न [illegible] उदय थकीरे ॥

अशुभ कहीए अधो अंग लाल ॥ पग फर्स लाग्यां अप्रीती हुवेरे ॥ थाय वाघ युद्ध जरी जग लाल ॥ पापोदय० ॥ २९ ॥ दुर्भाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अवल्लभ लागे बहु जणने लाल ॥ उपकार कर्या वल्लभ नहीरे ॥ न वल्लभ मावाप सहुने लाल ॥ पापोदय० ॥ ३० ॥ दूस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कड शब्द पामे अनीष्ट लाल ॥ खर, उंट, घुरू, काग सरीखोरे ॥ वीरूप श्रवण नहीं इष्ट लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३१ ॥ अनादेय कर्म नाम उदय थकीरे ॥ सत्य वचन न रुचे केने लाल ॥ असत्य मानी उथापक करेरे ॥ नावे बोल्यु खप वृद्ध वय ठेने लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३२ ॥ अजस नाम कर्म उदय थकीरे ॥ जस न मीले जगत्रनी माही लाल ॥ जस लेवा बळ धन वापरेरे ॥ अजस बोले जग त्याही लाल ॥ पापोदय० ॥ ३३ ॥ ए चोतीस भेद नाम कर्मनारे ॥ एकेक वेदनी आयुष्य गोत्र लाल॥ ए सत्त त्रीस चउअघातीनारे ॥ सवे वर्णव्यासो पाप स्तोत्र लाल ॥ पापोदय० ॥ ३४ ॥ ए पाप तत्व पुरण थयोरे ॥ दोय ढाळे कह्या भेद ब्यासी लाल॥ ज्ञानभीतल हेय जाणी परीहरोरे ॥ तो सुख समाधी लहो खासी लाल ॥ पापोदय० ॥ ३५ ॥ ढाल अढारमी सपुर्ण ॥



क्षायकभाव तत्वविलास ग्रंथमां छपतां दुहा रही गयेला छे ते.

ग्रंथ मंगळाचरणना दुहा.

नमु निरजन सिद्धने, पूदूगल योगातित ॥ नमु सयोगि जीनेंद्रने, अयोगी शैलेसि स्थित ॥ १ ॥ नमु क्षिणमोह ठाणमां, चरण यथाख्यातवृत ॥ ए ससार निरबीजता, सर्व सिद्ध वधुकत ॥२॥ क्षायक लब्धिवतए महामगलिक महत ॥ शुद्ध परीणतिमा वसे, सहज भाव शीव सत ॥ ३ ॥ ज्ञाने ए पद पाइये, तीणे रचु ग्रथ थीर भाव॥क्षायक तत्व विलासए, ससार तारण नाव ॥ ४ ॥ क्षायकभेद अनत छे मुखथु कह्या न जाय ॥ क्षायक नव भेदे कहु, ज्यु कर्मग्रथ चोथे कहाय ॥ ५ ॥ समकितने चारित्रए, केवळज्ञान दरशन ॥ दान लाभने भोगए, उपभोग वीर्य घन ॥ ६ ॥ ए नव लब्धि गाइए, नव तत्व सयुक्त ॥ अनुभव योगे ध्याइये, थिर उपयोगे युक्त ॥ ७ ॥

पेहेली ढाळनी पूर्णताये दुहा —समकित मोहनी छेल्लो अणु, खपतां वेदक कहाय ॥ एक समय स्थिति तेहनी, त्या क्षायक समकित पाय ॥१॥ क्षायक चारित्र आतमा, परमातम वीतराग ॥ मोह ध्वस करी हुआ, ठाण बारमे शिव माग ॥ २ ॥ रागद्वेष अवली दशा, पुद्गल सग उपयोग ॥ छेदी सवळा सनमुखे, शुद्ध परिणति सयोग ॥ ३ ॥

बीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा —क्षीणमोह ठाण अतमे, त्रण कर्म करे नाश सात गुण लब्धि त्यां लहे, गुणठाण तेरमे वास ॥ १ ॥

त्रीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—द्रव्य सक्ति ओळखावथु, सामान्यज्ञान विचार ॥ सर्व द्रव्यमा सपजे, ते सामान्य एम धार ॥ १ ॥ द्रव्यनो भेद जीहा पडे, जीवथी भिन्न सो अजीव ॥ ते विशेष एम जाणीए, ज्ञानी वचने सदीव ॥ २ ॥ सामान्य द्रव्यार्थक ए, पर्यायार्थक विशेष ॥ एक द्रव्यनी वृत्तिए, लाधे सामान्य विशेष ॥ ३ ॥

चोथी ढाळनी पूर्णताये दुहा —द्रव्य स्वरुपए दाखीयु, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥ द्रव्य पर्यायने जाणता, टळे मिथ्या मति भ्रम ॥ १ ॥

पाचमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—धर्मास्तिकाय वर्णव्यो, वर्णव्या गुण पर्याय ॥ ज्ञानी वचन आलबने, थिर मने रमणता पाय ॥ १ ॥

छट्ठी ढाळनी पूर्णताये दुहा—अजीव अरूपी चौ कह्या, गुणपर्याय सयुक्त ॥ हवे कहु पुद्गलने, तजनां ससार मुक्त ॥ १ ॥

सातमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वर्गणा आठे वर्णवी, तन वचन मन एह ॥ आठमी कार्मण वर्गणए, सत्ता उदियादि तेह ॥ १ ॥ पुद्गलने जाण्या विना, जीव जाण्यो नहीं जाय॥ अरूपी गोचर नहीं, गोचर पुद्गल काय॥२॥

आठमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वस्तुनो जे स्वभाव छे, ते कह्या गुण पर्याय त्रिकाळे गुण फीटे नहीं, ध्रुवता लक्षण सदाय ॥ १ ॥

नवमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—पुद्गल द्रव्यने दाखीयो, दाख्या पांच द्रव्य अजीव ॥ हवे कहु आश्रवने, वचन सुधारस दिव्य ॥ १ ॥ कर्म दल आवे ए सही, आश्रव नाम कहाय ॥ मूळ हेतु चौ दाखीया, कहु अधिकार बनाय ॥ २ ॥

दशमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु पेहेलो कह्यो, दुष्ट ए मिथ्यात्व नाम ॥ बीजो अव्रत दाखीये, उपयोग राखी ठाम ॥ १ ॥ इहां केइ तरक करे, तुमे कह्यो दुष्ट मिथ्यात ॥ गुणठाणु पेहलु कह्यु, ए अण मलती वात ॥ २ ॥ तेहने उत्तर दाखवु, रचु ढाळ रसाळ ॥ साभळजो श्रोता जनो, थिर मन करी धर्मलाल ॥ ३ ॥

अगीआरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—मिथ्यात्व दुष्टता वर्णवी, समजो भवि चित्त लाय ॥ ए छुटे जब धन्य घेडी, सम्यकगुण प्रगटाय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व गुणठाणु कह्यु, तस उत्तर हवे थाय ॥ थिर चित्ते भवी सांभळो, उपदेश गर्भित न्याय ॥ २ ॥ नैगम सग्रह नयथी, मिथ्यात गुणठाण माही ॥ जीव वसे ते सिद्ध कह्यो, गुणमय सत्ता त्यांहि ॥ ३ ॥ गुणनु पात्र जीव छे, तेथी कहुं गुणठाण ॥ जाणो भविजन एहने, होशे ज्ञान प्रमाण ॥ ४ ॥ जाणपणु जग दोहिलु, दुर्लभ सद्गुरु योग ॥ पुन्योदय तिहां पामीये, सदगुरु वचन सयोग ॥ ५ ॥ गुरुवचन भाले करी, भविजन हणो मिथ्यात ॥ कुगुरु भ्रमने परिहरो, तोहा होशे सुखशात ॥६॥

जीवगुण ग्रहण करो, भेदज्ञान घटमांहि ॥ समविभाग त्यां सपजे, समकित लहो उछांहि ॥ ७ ॥ हवे अव्रतने वर्णवुं, सुणजो भविजन सार ॥ तजता लाभ होशे घणो, विरतिपणु निरधार ॥ ८ ॥

बारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —आश्रव हेतु बीजो कह्यो, अव्रत बार भेद नाम ॥ हवे त्रीजो हेतु कहु, कषाय पचवीश श्याम ॥१॥ अनतानादि चौ चोकडी, ए सोळ भेद कषाय ॥ नो कषाय नव भेद सहु, अनुक्रमे वर्णव थाय ॥ २ ॥

तेरमा ढाळनी पूर्णताये दुहा—आश्रव हेतु त्रीजो कह्यो, पचवीश भेद कषाय ॥ मन तन वचन योगना, भेदनो वर्णव थाय ॥ १ ॥ मन वचन दो चउ चउ, सात भेद कही काय ॥ सर्व मळी पच दस ए, योगना भेद सही थाय ॥ २ ॥

चौदमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु चोथो कह्यो, योग भेद दश पांच ॥ कह्या सवे चउ हेतुना, भेद सत्तावन नहीं खांच ॥ १ ॥ ए हेतुये आश्रव खेंचीने, कर्म दळ मेळवे अनत ॥ आत्म प्रदेश सबध पणे, कार्मण वर्गणा तत ॥ २ ॥ कार्मण ते आठ कर्मछे, अवर सात कर्म नाहि ॥ समे समे सात बांधतो, मिथ्यात वसे जीव माहि ॥ ३ ॥ आयुष आवता भवनु, बाधे जीव एकवार॥बध कहु चउ भेदथी, आत्म प्रदेशे धार॥ ४ ॥

पदरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —बध कह्यो चउ भेदथी, रसविण नहीं बधाय ॥ रागद्वेष परिणतिये, निश्चय कर्म बध थाय ॥ १ ॥ राग द्वेष जीहा नहीं, तीहां कर्म बध न होय ॥ वीतराग भावे अबंध छे, निश्चय वचन ए सोय ॥ २ ॥ कर्म शुभाशुभ उदयथी, पुन्यने पाप कहाय ॥ पुन्य बायालिस भेदनो, कहु अधिकार बनाय ॥ ३ ॥

सोळमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —पुन्य भोग ए दाखीयो, पूरव बध अनुसार ॥ पुनरपी बांधो नहीं, खेरवी सिद्ध पद धार ॥ १ ॥ निश्चय नयनो पक्षए, उतसर्ग साधन एह ॥ उपयोगे भावक्रिया, ध्याता ध्येय ध्यान तेह ॥ २ ॥ एकता अभेद भावमां, तीहां आत्म अबध॥ उदासकता छुटे तिहां, लहे सिद्ध बधु सबध ॥ ३ ॥ ए विण मुक्ति मळे नहीं, समजो

चतुर सुजाण ॥ स्वभाव विण धर्म छे नही, उत्तराध्ययन वखाण ॥ ४ ॥ मुक्ति पथ ए भाखीयो, भाख्यो निज परहित ॥ पुन्य बध हेतु हवे, कहीशु उपयोग रीत ॥ ५ ॥ शुभ व्यवहार नये करी, बाधे प्रकृति शुभ ॥ ओगण चालीश जाणीये, गुरु वचने भली बुध ॥ ६ ॥ निश्चय नयनी दृष्टिये, सरागता परिणामि जाय ॥ तेह अणारोप शुभ छे. तिहां प्रणनो बध थाय ॥ ७ ॥ चोथाथी सातमा लगे, जीन नाम कर्म बधाय ॥ आठमे बध विच्छेदता, कर्मग्रथ बीजे कहाय ॥ ८ ॥ अप्रमत्त ठाण सातमु, तीहां आहारक शरीर आहारक अगोपाग दोय, बाधे शुद्ध सयमीवीर ॥ ॥ ९ ॥ ए पुन्य बध हेतु कह्या, कहु हवे पाप दुख ॥ घाति अघाती वर्णवु, ते छुटे लहे जीव सुख ॥ १० ॥

सत्तरमी ढाळनी पुर्णताये दुहा.—गुण घाती पाप वर्णव्यु, पूरव बध सबर ॥ अघाती हवे सांभळो, दाखु ए पाप प्रबध ॥ १ ॥

अढारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—पाप दुख भोग दाखीयो, घाती अघाती विचार ॥ पूर्व बध अनुसार ए, सहीये समताये सार ॥ १ ॥ समताविण सेहेता थका, होवे न दुखनो अत ॥ पुनरपि बाधे तिहां, इम भाखे सवि सत ॥ २ ॥ अघाती पाप एम टळे, हवे घातीनो विचार ॥ ज्ञान विना छुटे नहीं, ज्ञान छे सर्वमां सार ॥ ३ ॥ ते कारण भणो ज्ञानने, सेवो ज्ञानी गुरुनेह ॥ विनय करो प्रमोदथी, लहशो ज्ञानगुण गेह ॥ ४ ॥ ज्ञान धर घटतरे, अनुभव भुवनमाहि ॥ ज्ञान भानु उदय हुवे, घाति पाप भागे त्यांहि ॥ ५ ॥ ए विण घाती टळे नहीं, समजो भविजन सार ॥ पापस्थान सेवो नहीं, पापए दुःखदातार ॥ ६ ॥ पाप बध हेतु एह छे, अष्टादश भेद नाम ॥ पच अव्रत कषाय चौ, रागद्वेष परिणति श्याम ॥ ७ ॥ कलह कलकने चाडीयो, रति अरति परनिंदा ॥ कपट फद वचनए, मिथ्यात भारे मोटा जदा ॥ ८ ॥ ए हेतु पाप बधना, एही पापतत्व जाण ॥ पूरण पच अजीवना, कर्या कहु जीव वखाण ॥९॥

श्री गुरुभ्योनमः

॥ अथ श्रद्धा प्रकरण लीख्यते ॥

दुहा.

प्रणमुं मल्ली जीणंदने, नग्र भोयणी सार.
यात्रा कारण आविया, जीन मंदिर दरबार ॥१॥
दर्शन दुर्लभ देवनुं, समकित हेतु मर्म.
त्रण तत्वसही भाषियां, देव गुरुने धर्म ॥२॥
श्रद्धा स्थिर शंका नही, ते समकित व्यवहार;
रचना कारण ते करुं, श्रद्धा प्रकरण सार ॥३॥
सर्व धर्मनुं मूळ ए, फळदायक आचार;
श्रद्धा विण फळ नवी लहे, समजो चतुर विचार ॥४॥
देव गुरुने धर्मनुं, अनुक्रम वर्णन थाय;
ते जाणी भवि सद्दहो, जन्म सफलता पाय ॥५॥

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ अहो सर्व गुणी मुनिसुव्रत जीनराय काज
मुज सारो–ए देशी ॥

अहो सर्व गुणी वितराग अरिहंत सिद्ध विण देव नहि दूजो, घट ज्ञान लावी आत्म सत्ता गत धर्म जाणी भवि बूजो ॥ ए आकणी निज निज सत्ता घट घट भासे, त्रिकाळ वृत्तिए नहि क्षय थाशे, अखंड अविनाशी तेहि द्रव्य दाख्यो,, संग्रह नय पदे सर्वज्ञ भाख्यो ॥ अहो०॥१॥

स्थिति दाखी, उत्कृष्ट देशे उणी पूर्व कोड़ ज्ञाखी, जघन्य अतरमुहूर्त एक राखी, एम ग्रथ प्रकरणे बहुश्रुत साखी ॥ अहो० ॥ १९ ॥ आयुष्य अते योग रोध ध्यावे, तिहां शैलेशी करण करी स्थिर थावे, अयोगी अते अघाति चौ क्षय पावे, आत्म असख्य प्रदेश निर्मल ज्ञावे ॥ अहो० ॥ २० ॥ एहि सिद्ध निबऽघन होय ज्ञागे, छूटी कायाथी पोलनो एक ज्ञाग त्यागे, समश्रेणीये लोकते समे एक लागे, तिहा सादि अनत काल स्थिति ज्ञांगे ॥ अहो० ॥ २१ ॥ एम साध्य साधन ज्ञवि जे करशे, कारण ज्ञति पर्याय ऋजु सूत्र ग्रहशे, कार्य सामर्थ्य पर्याय शब्दथी वरशे, पूर्ण कार्य लोकते सिद्ध स्थिति करशे ॥ अहो० ॥ २२ ॥ इहां एव ज्ञूतनय एक कहीये, स्याद्वाद स्वरूप सिद्धगत लहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक पक्ष ग्रहीये, उपयोगे समकित निर्मल तहीये ॥ अहो० ॥ २३ ॥ एम देवतत्वनी जे श्रद्धा करशे, ते अल्पकाले सिद्ध वधू वरशे, सर्व जीव समूदाय सत्ता ए सरखा, ज्ञानशीतल करी गुरु गम लेइ परख्या ॥ अहो० ॥ २४ ॥ सपूर्ण

दुहा

देव तत्व ए वर्णव्यो, साधन साध्य अज्ञेद,
धर्म स्व सत्ता जाणिये, नय पक्ष ज्ञेदाज्ञेद ॥१॥
निजपर सत्ता ज्ञिन्नता, काळ अनादि सबंध;
पर नास्ति ज्ञावे रही, तजता आत्म अबध ॥२॥

गुरु तत्व हवे वर्णवुं, गुरुना गुण अनंत;
बहु श्रुत विण सद्गुरु नहि, समजो चतुर महंत॥३॥
जेने जे उपकारी छे, बोधी बीज दीये दान,
ते तेनो गुरु जाणिये, कीजे तस बहु मान ॥४॥
समकित दायक गुरु तणो, सदा सेवा करे एह;
भव कोडाकोडी लगे (पण) बदलो न वळे तेह ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देखो गति दैवनी रे–ए देशी ॥

गुरु तत्व बीजो गुण निलोरे, जे श्रुत केवळी अणगार, केवळीने ए बेमां अंतर नहिरे, बृहत् कल्प भाष्ये साख निरधार, जगत गुरुवंदीएरे ॥ वयां टळे सहि भवना ए फंद, निमित्त हेतु पूछएरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सद्गुरु नहि सर्व क्षेत्रे सदारे, श्रेष्टकाळे पण एम, आ दूषम पंचम काळमांरे कोइ अवसरे मीळ्यां करो अति प्रेम ॥ जगत० ॥२॥ विनय करो तनमनथी रे, गुरु रायना गुण गावो सार, आज्ञा ग्रही गुणवृत्ति करोरे, गुरु करुणा रस भंडार ॥ जगत० ॥ ३ ॥ उपदेश करे योग्य जाणीनेरे, सम जावे ए जीव अजीव, चेतना लक्षण जीव छेरे, रहित चेतना तेह अजीव ॥जगत०॥४॥ चेतना द्विविध जाणीयेरे, उपयोग सामान्य विशेष, सामान्य दर्शन जाणीयेरे, ज्ञान उपयोग तेह विशेष ॥ जगत० ५ ॥ मनुष्यनी काया गत इंद्रि पाच छेरे, शब्द, रूप, रस, गध ने स्पर्श, मन नोइंद्रि छठ्ठो छे

सहीर, तेमां उपयोगी चेतन रह्यो सरस ॥ जगत० ॥ ६ ॥ काष्टमा जेम अग्नि रहीरे, वळी घी रह्यु दुधनी माहि ॥ तिलमा तेल व्यापीने रह्युरे, तेम चेतन रह्यो काया त्याही ॥ जगत० ॥ ७ ॥ ए चेतन सत्ताए सिद्ध समछेरे, परसंगे ससारी कहाय ॥ परसग छूटये तद्गत परिणमिरे ॥ अनुभवी शिव पद पाय ॥ जगत० ॥ ८ ॥ परसंगे वृद्धि रागद्वेषनीरे, कर्म बधनु कारण एह ॥ इन्द्रि सगे विषय जडता अनुभवेरे, अनादि अशुद्ध परिणति ए तेह ॥ जगत० ॥ ९ ॥ दश द्रव्य प्राण कहीये जीवनारे, ते अशुद्ध व्यवहार नय पक्ष ॥ नहि जीवना उदिक भावे पामीएरे, पूर्व बधज नित्य ए प्रत्यक्ष ॥ जगत० ॥ १० ॥ भाव प्राण जीव गुण उपयोग एरे, ठति पर्याय भावे त्रण काळ ॥ सग्रह सत्ता शक्तिएरे, घटमा नय ज्ञान वस्तु निहाळ ॥ जगत० ॥ ११ ॥ मिश्र भावे करे कर्मबधनेरे, कर्मबधथी जन्म मरण होय ॥ भवभ्रमण करे गति चक्रमांरे, छेमो न लहे तेली वळदपरे कोय ॥ जगत० ॥ १२ ॥ भव भव प्रत्ये दु ख अति घणुरे, चउगति ससार माहि ॥ तेमां घणु दु ख नारकी भोगवेरे तेथी अनतु निगोद गति त्याहि ॥ जगत० ॥ १३ ॥ तेनु कारण अज्ञान मोहछेरे, अव्यक्तव्य अनादि सबध ॥ अशुद्ध परिणतिए परीणम्योरे, तेथी न लह्यो निज गुणगध ॥ जगत० ॥ १४ ॥ निज गुण सम्यक चो गति सन्निमांरे, अगे शुद्ध परिणति होय ॥ केइ भथी भेद लहेरे, छेदी अनादि मिथ्यात्व सोय ॥ जगत० ॥ १५ ॥ अशे उपाधि

परिणतिये टळेरे, श्रद्धामां टळे उपाधि सर्व ॥ पर वस्तु जिन्न जापे आत्मज्ञानथीरे, समकित गणुं ए जाणो दीवाळी पर्व ॥ जगत० ॥ १६ ॥ इहांथी रस्तो सीधो शिव पथनोरे, घट अंतर गुण श्रेणीमांही ॥ गुण गत मनुष्य जवे शिव लहेरे, न खळायतो एक मुहुर्त्तें पहोंचे त्यांही ॥ जगत० ॥ १७ ॥ सीधे रस्ते खाळे अधिक एक आउंखुरे, रोकाय केवळी तेरमा गणमांहि ॥ अवळे रस्ते खाळे अनेक जाणीयेरे, तूटे ते पाके जव स्थिति त्यांहि ॥ जगत० ॥ १८ ॥ अनुजव विण शका टळे नहीरे, शका टळे जव समकित होय ॥ वस्तु गत वस्तुपणुं लहेरे, ते शुद्धातम अनुजवि सोय ॥ जगत० ॥ १९ ॥ सिद्ध स्वरूपी आतमारे, जाणे देशथी जे अनुजवि होय ॥ सर्वथी जाणे केवळीरे, प्ररूपे अनतमे जागे अजिलाप्य सोय ॥ जगत० ॥ २० ॥ अधिक कहेवामां आवे नहि रे, एटलामां खुटे क्रोड पूर्व आयूष्य ॥ आठ वरसनी उम्मरे केवळ लहीरे, अखरु धाराये प्ररूपे आत्मऋद्धि जुष्य ॥ जगत० ॥ २१ ॥ अनअजिलाप्य तो वचनातित ठे रे, केवळीना वचन गोचर नवि थाय ॥ अजिलाप्यथी अनतो, अनअजिलाप एरे, एम बोले गितारथ राय ॥ जगत० ॥ २२ ॥ आत्मऋद्धि खुल्ली प्रत्यक्षठे रे, आळेखी अनुजव मंदीरमांही ॥ उपयोग जावे ते ऋद्धि ग्रहीये रे, लहीये सूख अव्याबाध अश त्यांहि ॥ ॥ जगत० ॥ २३ ॥ शिव सूख कारण अनुजव ठे रे, ए विण संसार पथ ॥ कदि चौगति ज्रमण टळे नहिरे,

करतां शुभ क्रिया बोले अनेक ग्रथ ॥ जगत० ॥२४॥ सद्‌गुरु श्रवण हेतु अति भलारे, दिये अढलक बोधनु दान ॥ सुणि मनन चितवन घटतर करिरे, निद्राशय न टाळी जागृत थै पामे ज्ञान ॥ जगत० ॥ २५ ॥ जागृत दशा जब जाणीयेरे, निज ने पर देहु भासे भिन्न ॥ आप स्वरुपी आपमारे, व्यापक परिणमन थाय तद्‌लीन ॥ जगत० ॥ २६ ॥ निज पर भिन्न भेद जीहां नहिरे, तिहां एकांते पर पोतानु मनाय ॥ विरती थैने ते धर्म करणी जो करेरे, नहि शिव हेतुए मिथ्यात्व कहाय ॥ जगत० ॥ २७ ॥ निज पर भेद भिन्न भासे जीहा रे, तिहा आत्म हेतु कहेवाय ॥ ज्यारे त्यारे पर परिहरेरे निजरूपे पूर्ण सिद्धता पाय ॥ जगत० ॥ २८ ॥ आत्मरुचि प्यारा तुमे अतर भजो रे, जदे पामशे अपरिताप ज्ञानभाण ॥ तिमिराधकार भागे तिहांरे, पामो अनुभवभूवने केवलनाण ॥ जगत० ॥ २९ ॥ एम आत्म स्वरूपने जाणीयेरे, साधक बाधक वृत्तिनो विचार ॥ बाधक भावने परिहरीरे, लहीये साधकताए सिद्ध पद सार ॥ जगत० ॥ ३० ॥ गुरु दिनकर सम ज्ञाने दिपतारे, करे स्वपरने प्रकाश ॥ परपरपणे करीने लहेरे, स्व अनुभवे सिद्ध पद खास ॥ जगत० ॥ ३१ ॥ ए गुरुना गुणगण गाइएरे, हुतो सेवक सद्‌गुरुनो दास ॥ ज्ञानशितळ करी दाखीयोरे, कीधो उपदेश जीव गुणनो समास ॥ जगत० ॥३२॥ समास ॥

दुहा.

गुरु उपकारी अति भला, जणाव्युं जीव स्वरुप;
साधक बाधक वारता, दाख्युं ज्ञान अनूप. ॥१॥
धर्म तत्व त्रीजो हवे, भाखुं वचन रसाल;
स्थिर चित्ते भवी सांभळो, श्रध्धा करो विशाळ. ॥२॥
धर्म मूळ श्रुतज्ञान ए, बीजुं चारित्र धर्म;
श्रुत दिपक घट अंतरे, मिथ्यामती टळे भर्म. ॥३॥
श्रुत ज्ञान द्रव्य भावथी, आराधो भले भाव
द्रव्य श्रुत कारण भावनुं, भाव भवो दधि नाव. ॥४॥
गुण स्थानक चोथुं इहां, ग्रंथी भेद करी पाय;
नहिं तो अज्ञानी रहे, धर्म न तेह कहाय. ॥५॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आदि जीणंद मया करो–ए देशी ॥

श्रुतज्ञान घटंतर पाइने, उपयोगे मोह खपावोरे, बाह्य वृत्तिए परिणमन मोह छे, त्यां राग द्वेष वृद्धि न भावोरे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ घटगत निज चेतन ओळखो, गुण अनंतनो कंदरे, निरुपद्रवस्थान अंतर विषे, अनुभविने करो श्रद्धाए जीणंदरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ सर्व देवनो देव निज आत्मा, सर्व गुरुनो गुरु उपयोगरे ॥ धर्म वस्तु स्वभावे छे सहि, सत्ताए सिद्ध अनादि अनंत भगरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥ शक्ति व्यक्ति लहीए श्रुतज्ञानथी, श्रुतज्ञानी थाय वितरागरे ॥ वितराग श्रुतज्ञाने केवळ लहे,

पामे सनातक पद अणगाररे ॥ श्रुत० ॥४॥ केवळ कारण सही श्रुत ज्ञानए, श्रुत ज्ञान शिवपथ त्यांहिरे, करी अनुभव गुण श्रेणीये चढो, एकत्व परिणमन शुद्धातम मांहिरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥ श्रुतनाणी होवे पचभेदे सजमी, यथाख्यात क्षिण मोहठाणे वदोरे, श्रुतज्ञाने घातीकर्म क्षय करी, थाय केवळी त्या परमानदोरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥ जाणे वस्तुगते एक निज आतमा, तेने सर्व जाए कह्या ठाणगेर, वाकी सर्व जाणे तेने अजाण कह्या, जो जो पहेला ठाणे मन चगेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥ जाणे जगत प्रत्यक्ष जेम केवळी, तेम जाणे परोक्ष श्रुतनाणीरे, केवळीनो उपयोग वर्ते समे समे, छद्मस्थनो असख्य समे वर्ते भव्य प्राणीरे ॥ श्रुत० ॥ ॥ ८ ॥ घटंतर उपयोग ते भाव श्रुत छे, करे रमण अंतर परिणमनरे, उपादान कारणपणु त्या लहे, करे कार्य थाय तद्भिन्नरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥ केइ कार्य करे इहां देशथी, केइ सर्वथी कार्य करे जाणरे ॥ देशथी कार्य ते समकित लहे, सर्वथी कार्य पामे केवळ नाणरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥ भाव श्रुत निश्राये द्रव्य श्रुत छे, नहि तो अश्रुत एम कहीये रे, जीहा भणीये सूणीये विनय करी, तिहा द्रव्य श्रुत गुण लहीये रे श्रुत०॥११॥ श्रुत चउद भेद विश भेद छे, वळी सूत्र पिस्तालीस भेदरे, सद्गुरु मूखे सूणिये विधी करी, लहीये समकित मिथ्यात्व छेदरे, ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥ भणावे अक्षर श्रुतना जेटला, तेटला सहसवरस सुख पावे रे, स्वर्गे अनंता अनुभवे, एम विजय लक्ष्मीसूरी गावे रे ॥ श्रुत० ॥

१३ ॥ जाणे जीव द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी, द्रव्य अखंड अविनाशी त्रणे काळरे, क्षेत्रथी असंख्य प्रदेशी कह्यो, काळथी अगुरुलघु परिणति रसाळरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥ भावथी केवळनाण दर्शण सही, इत्यादि क्षायक लब्धि अनंतरे, ते सत्ताए संग्रह नयथकी, करो शब्द पामी संग्रह एवंभूतरे ॥ श्रुत० ॥ १५ ॥ ध्यान धर्म शुक्ल दोय ध्याइए, तिहां श्रुतज्ञान उपयोग घटमां रे, एहि ज्ञान गज गर्जारव करे, मोहादि उपाधि भागे समाधि वरे झटमां रे ॥ श्रुत० ॥ १६ ॥ समाधि हेतु एकश्रुत दूजो नहि, ज्ञान शितळ ए वचन प्रमाणरे, एम जाणीने भविजन खप करो, लहो भावश्रुत अनुभव नाण रे ॥ श्रुत० ॥ १७ ॥ समाप्त. ॥

॥ दुहा ॥

श्रुत ज्ञान ए वर्णव्यो, धर्म कहीजे भेद,
विरति ज्ञान फळ आदरी, टाळो आवरण खेद ॥१॥
विरति देशथी सर्वथी, द्रव्य भावे विचार;
द्रव्य विरतिथी स्वर्ग छे, भाव शिव पद सार ॥२॥
देश विरति श्रावक कह्या, सर्व विरति अणगार;
पंच भेद छे तेहना, यथाख्यात शिव सार ॥३॥
अणुव्रतादिक भेदथी, श्रावकनां व्रत बार;
गुरु मुखे भवि उच्चरो, समकित मूळ नरनार ॥४॥
श्राद्ध धर्म हवे वर्णवुं, आगळ ढाळ रसाळ;
जाणिने भवि आदरो, विरति मुख्य नहि वाळ ॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥

श्री श्रावक धर्म आराधीएरे, समकित मूळ प्रख्यातरे गुण रसीया, स्थुल अणु व्रत पंच भेदथी रे, तेमां प्रथम दयाधर्म वातरे, गुण रसीया ॥ १ ॥ त्रस स्थावर दया भेदथीरे, स्थावरनी दया नहि कीधरे, गुण रसीया, दश वसा गया तेहनारे, रह्या त्रसना दश प्रसिद्धरे, गुण० २॥ तेमां कारणे हणाय जीव तेहनारे, गया पाच वसा ने रह्या पांचरे, गुण०॥ अपराध करे हणु तेहने रे, तेना अढी गया रह्या अढी न खांचरे, गुण० ३॥ कारण विना निरापराधीनी रे, ग्रहस्थिना घरे अजतना थायरे, गुण० तेनो सवा गयो ने रह्यो सवा वसोरे, सकल्पि न हणु त्रस जीव कायरे, गुण० ४ ॥ ए प्रथम अणुव्रत दाखीयुरे, बीजे अलिक भाषानो स्थूल निमरे, गुण०॥ कन्याळी भूमाळी गवाळी वळी रे, थांपण मोसो कुडी साख पच नीम रे, गुण० ५ ॥ त्रीजु अदत्त विरमण व्रतमा रे, राजा दंडे ते चोरीनो करो त्यागरे, गुण०॥ चोथु मैथुन विरमण व्रतमा रे, वेद विषय त्याग घट वैरागरे, गुण० ६ ॥ सामान्य विशेष दोय भेदथी रे, सामान्ये स्वदारा सतोष रे गुण० ॥ विशेषे सोय दोरा आकारथी रे, तजे विषय अतर नहि रोषरे, गुण० ७ ॥ परिग्रह परिमाण व्रत पचमु रे, तेमा अधिक मूर्छानो अभावरे, गुण०॥ परिमाण बाधे नव भेदथी रे, तेनो करे लेख लखावरे ॥ गुण० ८ ॥ ए पच अणुवृत कह्या व्यवहारथी रे, हवे तीन गुणवृतनो

विचाररे गुण० ॥ गुणवृते गुणवृद्धि अणुवृतमांरे, जो पाले निर तीचाररे ॥ गुण० ए ॥ पहेला गुण वृत दिशी परिमाणमां रे, दिशीविदिशी उर्ध्व अधोदिसरे ॥ गुण० ॥ परिमाण करे गमनागमन तिहां रे, अधिक विरमण व्यवहार तसरे ॥ गुण० ॥ १० ॥ निश्चय दिशी अंतर उपयोगमां रे, करे अनुभव अनंत दोर संतरे ॥ गुण० ॥ द्रष्टिगोचर नहि वर्णादि तिहां रे, वाऊ सवे दिशी विरमण कहतरे ॥ गुण० ॥११॥ बीजु गुणव्रत भोग उपभोगएरे, तेना निश्चे व्यवहार दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ व्यवहारव्रतना कायादि जोगथी रे, तेमां अशुभ आचरण भोग छेदरे ॥ गुण० ॥ १२ ॥ निश्चे निज गुण लब्धि घटंतरेरे, क्षय उपशम प्रकृति एकादशरे ॥गुण०॥ उपयोगे करो भोग समाधि लहोरे, उपभोग पूनर्वारंवार तसरे॥ गुण० ॥१३॥ त्रीजु गुणवृत अनर्थदंड विरम्यां रे, तेना निश्चे व्यवहार दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ व्यवहारे सावद्य अशुभ जोग विरमी रे, निर्वद्य शुभ जोगे शुभ लेश्या वेधरे-॥ गुण० ॥ १४ ॥ निश्चे विरमो मिथ्यात्व मोह अज्ञानने रे, उदय पामशे घटमां ज्योतरे ॥गुण०॥ अतर ऋद्धि रमण करतां तिहां रे, उपयोगे प्रगटे अनुभव ज्योतरे ॥ गुण० ॥ १५ ॥ चेतन दंडाय परसगे एक मोहथी रे, न दंडाय निज संगे सत्य वातरे ॥ गुण० ॥ निज संगे शरण चारित्र रायनुंरे, उपयोग गुणगत स्थिर साक्षातरे ॥- गुण० ॥ १६ ॥ ए अणुव्रत गुणव्रत दाखीयां रे, दाखु शिक्षावृतना चौ भेदरे ॥ गुण० ॥ प्रथम सामायकवृत समाधिमां रे,

तिहां उपाधि द्रव्य नाव थाय लेदरे॥ गुण० ॥ १७ ॥ निश्चे व्यवहार दोय नेदथी रे, करो नित्य सामायक गुरु संगरे ॥ गुण० ॥ व्यवहार गुरू निमित्त हेतु नलारे, निश्चय गुरू निज शुद्ध उपयोगरे ॥ गुण० ॥ १८ ॥ द्रव्य उपाधि टले त्रण योगनी रे, अशुन्न आचरणाना दोष वत्तिसरे ॥ गुण० ॥ नावे अशुद्ध परिणति पमे पातळी रे, नाख्यु समन्नावे सामायक जगदिशरे ॥ गुण० ॥ १९ ॥ देसावगासिक वीजा शिक्षावृतमा रे, करो विशेषे सर्व दिशीनो सक्षेपरे, ॥ गुण० ॥ पौषधशाळाये करो त्रिकरण योगथी रे, व्यवहारे दश सामायक निर्लेपरे ॥ गुण० ॥२०॥ निश्चे देशावगासि ज्ञान घटमा लहीरे, ग्रहीयें शुद्धातम स्वरुप थे लिन्नरे ॥ गुण० ॥ परपरिणमन परदिशी टले इहां रे, नाग वेची एम थेए न्निन्न न्निन्नरे, ॥ गुण० ॥ २१ ॥ पोषधोपवास त्रीजा शिक्षावृतनारे, व्यवहार निश्चय दोय नेदरे ॥ गुण० ॥ देशथीने सर्वथी पोषह करीरे, मोहादि कर्मनी करो सत्ता उच्छेदरे ॥ गुण० ॥२२॥ देशथी पोसह दिन चौपहोरनो रे, सर्वथी दिवस रात्री आठ पहोररे, ॥ गुण० ॥ ए न्नेद दोय शुन्नव्यवहारनारे, कहु निश्चेना न्नेद जेसी दृष्टतोररे ॥गुण०॥२३॥पोषधज्ञान ध्याने आत्मा पोषीयेरे तिहा लहीए देशथी समकित गणरे ॥गुण०॥ सर्वथी केवळ-नाण पामता रे, लहीये अघाति टाळी पद निरवाणरे॥गुण०॥ ॥२४॥ चोथु अतिथी सविन्नाग शिक्षावृतएरे, अतिथीना पचम अगे न्नेद दोयरे ॥गुण०॥ एक गीतार्थ श्रमण अतिथी सही

रे, वीजा गीतार्थ निश्रायें अतिथी होयरे ॥ गुण० २५ ॥ ए दोय परम पूज्य जीन शासन रे, तेमने भक्तिये दीजे असनादि दानरे ॥ गुण० ॥ सत्य भाषा बोलीए पर आकंक्षा तजीरे अटलक आपो आग्रह करी बहु मानरे ॥ गुण० २६ ॥ दश रुगलां पूंठे वळावीनेर पठी पोते जमे व्रत धारि तेहरे ॥ गुण० ॥ ए अतिथी संविभाग व्यवहार थीरे निश्चे अतिथी निज जीव गुण गेहरे ॥ गुण० २७ ॥ गुरुज्ञाने जीवाजीव जाणीयेरे, तिहां निजपर भेद समजायेरे ॥ गुण० ॥ परपरपणे करी तद्गत परिणम्योर, तिहां शुद्ध उपयोग गुण प्रगटायरे ॥ गुण० २८ ॥ ए विषय विमूख शिव अनुभवेरे, पामे क्षय उपशमादि लब्धिनु दानरे ॥ गुण० ॥ देता लेता निज पोते सहीरे, ते भाव अतिथी जाणी तेनुं करो ध्यानरे ॥ गुण० २९ ॥ अतिथी सविभाग तस कीजीयेर, आराधे भावि श्रावक जे होयरे ॥ गुण० ॥ ए अणुव्रतादि सवे द्वादश ग्रहीरे, लहीये स्वर्ग के शिवगति सोयरे॥ गुण० ३० ॥ चोराशी सहस मुनि दाननुरे, भावे ग्रहस्थ दान भक्तिफळ कीधरे ॥ गुण० ॥ क्रिया गुणठाणे मूनि वधारे, न भाव तूल्य को जगप्रसिद्धरे ॥ गुण० ३१ ॥ एम जाणी भविभाव प्रगट करोरे, भाव शुद्धात्म-स्वरूप उपयोगरे ॥ गुण० ॥ ज्ञान शितळ करी पामीयेर, घट अन्तर अनूभवयोगरे ॥ गुण० ३२ ॥ समाप्त.

दुहा

श्रावक धर्म ए वर्णव्यो, द्वादश व्रत गुणग्राम,
द्वादश अव्रत टाळिने, लहो निर्जरा सकाम ॥१॥
यति धर्म हवे वर्णवुं, दाखुं वचन रसाळ;
दश भेदे भवि सांभळो, पामो मंगळ माळ. ॥२॥
खंति, मद्दव, अज्जवा, मुत्ति तप चारित्र,
सत्य शौच अकिंचनि, ब्रह्मव्रत्त पवित्र. ॥ ३ ॥
गुण विण सयति लिंगजे, कास कुसुम उपमान,
व्यवहारे बहुला कर्या, न लह्यु सम्यक् ज्ञान.॥ ४ ॥
आतम गुण गत रमणता, तेहिज संयति धर्म.
दश भेदे आराधता, लहिये शिव सुख शर्म. ॥५॥

ढाल पाचमी

॥ सहेजानदिरे आतमा ए देशी ॥

सजमि अनुभवि आतमा, समकित मूळ माहाव्रतरे, त्याग आश्रव पचभेदथी, दिक्षा दिये गुरु सत्तरे, बोध दिये विशेष महतरे, विनय करो गुरु गुणवतरे, विनित गुण वृद्धि लहंतरे, गुणमा ज्ञान मुख्य हूतरे, ज्ञान घट तरणी कहतरे, दशभेद धर्म ग्रहतरे ॥ सजमि० १ ॥ ए आकणी ॥ पहिलो सयति धर्म ए, खति क्रोध निरासरे, समता क्षिरो दधि आगळे, सुरनर सुखबिदु भासरे, आशादासी तृष्णा थे नाशरे, नहि लोभनो अवकाशरे, गुण गत वृत्ति क्षि-माजासरे, सहे उपसर्ग वेदे नहि तासरे, वेदे अनूभवे

स्वस्वरूप खासरे, लहे परमानद भोग विलासरे ॥ सज-मि० २ ॥ बीजो धर्म ए मुनितणो, माद्दव नाम हितकाररे, मृदुतामान मराशथी, विनयादिक गूण धारर, विनयथी श्रुतवृद्धि साररे, श्रुतफळ विरती अणगाररे, मद फणिधर रूसतो निवाररे, मदथी गूणहानि अपाररे, अशुभ ए मोहनो परचाररे, छेदी अनूभवि आतमताररे, ॥ संजमि० ३ ॥ त्रीजो धर्म वखाणीये, आर्यव ऋजु सूत्र जेहरे, माया कपट विनाशथी, लहीये अतर गूण गेहरे, टळे तिहां सर्व सदेहरे, मिथ्यात्व भ्रम भागे छेहरे, निज एक शुद्धातम तेहरे, त्रूटे सर्वपरथी स्नेहरे, रागद्वेषनो होय छेहरे, अनूभवि टाळे कर्म खेहरे ॥ सजमि० ४ ॥ चोथो मुक्तिधर्म मुनितणो, लोभनो जीहां अभावरे, निर्लोभि तेने सपजे, भव जलधि तरवा ए नावरे, लोभ दु:ख दरीयो जाणो तावरे, ते अवसर छोरूवानो दावरे, छोड्या नमे सूरनर रावरे, सजम स्थिर गूणनो जमावरे, मोह ध्वस करो ज्ञानखड्ग धावरे ॥ सजमि० ५ ॥ पचमो तप धर्म जाणीये, निर्जरा हेतू कहायरे, द्वादश भेद छे तेहना, बाह्य अभ्यतर मळी थायरे, इच्छाए कर्म वधायरे, इच्छा रोध तप निर्जरा पायरे, इच्छा मोहथी प्रगटायरे, मोह मूळ त्याग मुनिपदरायरे, ज्ञानध्याने उपाधि हणायरे, निज अनुभवि शिव पूर जायरे ॥ सजमि० ६ ॥ छठ्ठो धर्म सजम कह्यो, सत्तर भेद शिव अगरे, आतमभावे आराधीये, करीये शिववधु सगरे, भेदज्ञान निर्मल गगरे, मळ टळयां मूळरूप चंगरे,

अनुभव ज्योति अभगरे, परमानंद भोग रगरे, शिवपद लहीये एकगरे, सादि अनंत लागे भगरे ॥ सजमि० ७ ॥ सातमो सत्य धर्म मुनितणो, सत्य जव सत्ता प्रगटायरे, संग्रहनयथी शिवरूप छे, तेनो एवंभूत थायरे, ते सत्य धर्म कहायरे, असत्य उपाधि हणायरे, निरुपाधि शिवपद पायरे, लोकते सिद्ध स्थिर थाय रे, निराकार निरंजन राय रे, अव्याबाध सूख सदायरे ॥ सजमि० ८ ॥ भावथी सौच धर्मे मुनि रमे, न गमे शुभाशुभ ज्यांहिरे, शुभाशुभ तेह एठ छे, अनंतजीवे वमि जगमांहिरे, ग्रही आश्रव बांधे मुनिनाहिरे, निर्जरे मुनि उपयोग ताहिरे, योग्य जीवतारे ग्रही वाहिरे, यतना उदासि भाव आहिरे, रहे भेळा भळे नहि क्याहिरे, भळे मूळरूपे सिद्ध शाहिरे ॥ सजमि० ९ ॥ नवमो अकिंचन धर्म ए, मुनिमारग शिवपथरे, कंचन दो भेदे भाखीयु, द्रव्यभाव देखो ग्रथरे, तज्या द्रव्यथी द्रव्य निग्रथरे, मूळ न वळयु त्या रह्यो अनर्थरे, द्रव्य त्यागथी सरे नही अर्थरे, भावग्रथी तज्या शिववधू कथरे, इहा कार्य थाय यथा तथ्यरे, मिले यथाख्यात सयम रथरे ॥ सजमि० १० ॥ दशमो ब्रह्मव्रत पालता, शिलरथे वेगा मुनिजायरे, सयम श्रेणीमां एकला, उपयोग स्थिर सहायरे आतम अनुभव पायरे प्रत्यक्ष प्रमाण कहायरे, ध्यान तुरंग नचायरे, ज्ञान गजगर्जारव थायरे, उपाधि अनति हणायरे, रिद्धि ले मुनि सिद्ध सधायरे ॥ सजमि० ११ ॥ इम दशभेदे मुनि धर्मने, आराधे जे अढीद्विपरे, ते सर्वने करु विधिवंदना ए मिले उदे थाय पून्य पीपरे, तिहा ल-

हीये ज्ञान जेसो दीपरे, वारवार आपे बोध नरी ठीपरे, पीतां पीतां नागे मोह टळे टीपरे, अनुक्रमे लहे अन्नेद स्वरुपरे, मोह न घटे त्यां ठरपर लीपरे, ज्ञान शितळनी गुण समीपरे ॥ सजमि० ॥ १२ ॥ समाप्त ॥

दुहा

संयति धर्म ए वर्णव्यो, दश न्नेदे गुणखाण.
तेने अंगे आणतां, लहिये पद निर्वाण ॥१॥
विण आतम जे जे कथा, तेह न धर्म कहाय.
नव भ्रमण एहथी वधे, समजो नवि चित लाय ॥२॥
आत्म अनात्म भिन्नता, तेहिज कहिये ज्ञान.
स्थिर श्रद्धा पलटे नहि, ए समकित अनुमान ॥३॥
उपाधि देशथी टाळतां, लहे पंचम गुणठाण.
एकादश प्रकृत्तिनो, क्षय उपशम त्या जाण ॥४॥
उपाधी टाळे सर्वथी, तेहिज संयति धर्म.
अप्रमतादि नावे लहे, क्षपक श्रेणी शिवशर्म ॥५॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ गायो गायोरे मेतो देव गुरु धर्मने गायो ॥

देव अरिहतने सिद्ध निरजन, क्षायक लब्धि अनंतस नोगी, समय समय नोग उपनोग करता, एक समय न कहिय अन्नोगी रे ॥ मेतो देव० ॥ १ ॥ गायो गायो रे ध्यान ध्यायो रे, जीन आज्ञाये धर्मने पायो, ॥ ए आंकणी॥

परमानद अनतो प्रगटयो, रमण गुणगत भिन्न स्वभाव, क्षिण मोह अते घाति कर्म सत्ता छेदी, क्षायक लब्धि आस्वादि अरिहत रावरे ॥ मेंतो० ॥ २ ॥ त्यांथी तुमे देव सेवक हु तमारो, जाणी पोतानो बाहि ग्रही तारो, तार कविरुद निमित्त हेतु मिलीयो, तेथी जलदी लहीए भवोदधि आरोरे ॥ मेंतो० ॥ ३ ॥ गुरु गितारथ आतमज्ञानी, सदा निस्पृह भावे वर्ते, स्याद्वादादि वळी करुणा सागर, करे उपगार अनतो भाषा खरतेरे ॥ मेंतो० ॥ ४ ॥ सद्गुरु भाषा अमृत पीपासा, रुची करी उपयोग सूणशे, ते तत्त्वा तत्त्व विचारी शका छेदी, बोधि बीज लही विरती गाण ग्रहशेरे ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥ देव गुरु दोय निमित्त पुष्ट कहीये, तेथी उपादान धर्मवृत्ति लहीये, हेय उपादेय बुद्धि पामीने, हेय छन्नी उपादेय तिहां ग्रहीयेरे ॥ मेंतो० ॥ ६ ॥ उपादेय धर्म रत्नत्रयि तेहि, उपयोग भावे लहीये, शिवहेतु सवरनिर्जरा करता, उपाधि हणी उपरनु गाण ग्रहीयेरे ॥ मेंतो ॥ ७ ॥ एम शुद्ध व्यवहारे साधन करतां, अनुक्रमे केवळ नाण लहीये, अघाति चौदणी अयोगी अंते, सिद्धि वरीये अक्षय सूख तहींयेरे ॥ मेंतो० ॥ ८ ॥ एम धर्म तत्त्व आराधो भविजन, शिव पथनो ए सीधो रस्तो, आ काळे पामवो अति दुर्लभ, मिळे तो श्रेष्ट काळे स्थिती पाके सहतोरे ॥ मेंतो० ॥ ९ ॥ सिधो रस्तो भेद ज्ञाने लहीये, भेदज्ञान ग्रथी भेदी तिहा कहीये, जड चेतन दोय भिन्न परिणामवी, अनुभव करता विषय अण-

ग्रहीये रे ॥ मेतो० ॥ १० ॥ सिधो रस्तो न मिले तनमन वचने, देवेन्द्र नरेन्द्र ऋद्धि वापरतां, एतो मिले शुद्धातम शक्ति फोरवता, गुणपर्याय एकत्व अनुभवतां रे ॥ मेतो० ॥ ११ ॥ हवे अवळे रस्ते जीवने न पिछाणे, द्रव्य प्राणने एकांते जीव जाणे, ए नहि जीव पूर्वकृत उदिक भाव छे, ए वचन सत्य आगम प्रमाणे रे ॥ मेतो० ॥ १२ ॥ द्रव्य प्राणने कहे जीव अशुद्ध व्यवहारे, हवे तेहना भेद दोय, जेह, एक शुभने वीजो अशुभ छे ए शुभाशुभ पून्य पाप तेहरे ॥ मेतो० ॥ १३ ॥ शुभ कहीये देव दर्शन गुरुवदन, स्तुति भक्ति वहु मान आदरथी, सेवा पूजा वळी विनय वैयावच्च, सद्गुरुनु करो तनमनथी रे ॥ मेतो० ॥ १४ ॥ सुपात्रदान दीजे ने शियळ पाळी जे, तप कीजे शक्ति अनुसारे, भावना भावो धर्म ध्यान ध्यावो, शुभ वध हेतु ए सरल आचारे रे ॥ मेतो० ॥ १५ ॥ अधिक शुभविरती परिणामी त्या कहीये, सर्व विरतीये चरण करण ग्रहीये, इच्छा वंछा टाळीने मूर्छा उतारी, कचन कामनीथी निर्लेप रहीये रे, ॥ मेतो० ॥ १६ ॥ इत्यादि धर्म कह्यो शुभ व्यवहारे, स्थिर श्रद्धाये ते शिव हेतु कहीये, नहि तो शुभ आश्रव ससार हेतुए, तिहां संसार वृद्धि लहीये रे, ॥मेतो० ॥ १७ ॥ स्थिर श्रद्धा कही तिहां समकित कहीये, वस्तु गरये वस्तु सदहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक वोध लहीने, नित्या नित्य स्याद्वाद धर्म ग्रहीये रे मेतो० ॥ १८ ॥ स्याद्वाद स्वरुप र्मे, कारण कार्य संयोग, कारण

ग्रही कार्यमा आवे, तव शिव सुखनो होय जोगरे ॥मेतो० ॥ १९ ॥ कारण ते द्रव्यास्तिक कहीये, कार्य होवे पर्यास्तिक जावे, ए दोनयविण स्याद्वाद न लहीये, गुण गुणी जेदाजेद ज्ञानी गावे रे ॥ मेतो० ॥ २० ॥ ते जावे जावित चिदानंद माहरो, अंतर गुणगत रमतो, आतम अनुजव अवसर पामी, ज्ञान शितळ करी उपाधी हणतो रे ॥मेतो० ॥ २१ ॥ संपूर्ण ॥

॥ कळस ॥

॥ श्रीजगजासन–ए देशी ॥

देवगुरु धर्म त्रण तत्त्वनो, अनुक्रमे वर्णव कर्यो, ते जाव जाणी श्रद्धा करीने, व्यवहार समकितने वर्यो ॥ १ ॥ निश्चे समकित अर्थी जेद कीधां, ते जावनो वर्णव करु, अंतर जावे यथा प्रवृत्ति, करण शक्ति अनुसरु ॥ २ ॥ ए करण प्रजावे खपे स्थिति, आयुवर्जीत कर्म सात ए, सागर कोमाकोमी हीण होवे, अपुर्व वीर्य उदेरे अनंत ए ॥ ३ ॥ जेदी परिणति कर्मवज्र घनकी. सहज वीर्य असरू प्रवाहए, जारिजूमि जयकर चूरी हण्यो अनादि मिथ्यात्व मोहए ॥ ४ ॥ अनंतानु कषाय चो अंत होवे, अनिवृत्तिये समकितलहे, शितळता प्रगटे घट अंतर, पाप वेली जववनकी दहे ॥ ५ ॥ ए समकित जावे अल्प संसारी, सात आठ जव उत्कृष्ट ए, परुते जावे अर्ध पुद्गल, माहेली कोरे लहे सिद्ध ए ॥ ६ ॥ व्यवहार निश्चे समकित जेद जाणी, पामजो जविजन खपकरो, ए विण

तप जप क्रिया करणी, निष्फळ वृथा जे आचरो ॥ ७ ॥ समकित विण अशुन्न करणी, आत्महेत नवि कही, ससार वृद्धि हेतू न्नाषी, गमगाम देखो सही, ॥ ८ ॥ सर्व धर्मनुं मळ समकित, सत्तार्थनय ग्रहणवखाणीये, द्रव्यगुण पर्याय जाणी, जीव पुद्गल पीछाणीये ॥ ए ॥ द्रव्य अखरु त्री-काळवृत्ति, गूण पर्याय आधारए, जीवगुण सवर निर्जराने मोक्ष, ज्ञान दर्शनादि अनतपर्यायए, ॥ १० ॥ पुद्गलरूपी निर्जीव गूण दाखु, पुन्य पाप आश्रवने बधए, शब्दरूप रस गध ने स्पर्श, सस्थानादि अनेक पर्याय ए ॥११॥ एम न्निन्न न्निन्न गूणपर्याय दाख्या, जीवने पुद्गल बेहु द्रव्यमां, पुद्गल गूणनी नास्ति जीवमां, अस्तिजीव गूणनी जीवमां ॥ १२ ॥ एम जगतमांहि तत्व बे छे, जीवने अजीव एम जाणीये, अजीवना पांच न्नेद न्नाष्या,अरूपी रूपी मन आणीये॥१३॥ धर्म अधर्म आकाशकाळ चो, अरूपीने रूपी पुद्गल ए, एम पांच द्रव्यनो समास अजीवमां जीव पुद्गल बे मि-ल्यां नवतत्व ए ॥ १४ ॥ जीव पुद्गल सयोगे मिश्र न्नावे, अनादि चउगति सवधए, हेय उपादेय बुद्धि जोगे, होवे न्नवनो अतए ॥ १५ ॥ जाणवा योग्य जीव अजीव जाणी, पून्य पाप आश्रव बध छोमवा, जीव गुण सवर निर्जराने मोक्ष, उपादेय जाणी ग्रहवा ॥ १६ ॥ हेय उपाधि त्याग त्रण न्नेदे, द्रव्य न्नावे कर्मने नोकर्म ए, द्रव्यकर्म आठ ज्ञा-नावर्णादि, न्नाव कर्म सही रागद्वेष ए ॥ १७ ॥ नोकर्म जोग मन वचन काया, द्रव्य कर्मबध न्नाव हेतू सही, ते

कारण नमी घटतर ग्रहीये, शुद्धात्म अनूनव शिव तहीं ॥ १८ ॥ एहि देव परमात्म पोते, एहि गूरु शुद्ध उपयोग ए, एहि स्याद्वादधर्मे परिणमतां, परमानद स्थानपद सिद्धए, ॥ १९ ॥ एम दवगूरु धर्मतत्व अनुनव, शुद्धनय स्थापी कीजीये, आळपंपाळने दूर टाळी, सेहेजे शिवसूख लीजीये, ॥ २० ॥ एम साध्य साधो सत्ता आराधो, आरोपित धर्म परिहरो, शक्ति प्रगटे व्यक्तिन्नावे, अजरामर सुखने वरो ॥ २१ ॥ ए सूख अनादि आत्मसत्ताए, गूणगुणता तिरोन्नावे रह्यु, आविर्न्नाव तेनो प्रगटता, लाधे क्षायकन्नाव एम सद्दहु ॥२२॥ क्षायकन्नावे अनतगूण वृत्ति, गूणगूण स्वन्नावे न्निन्नता, उत्पाद व्यय गुणगत होवे, द्रव्ये कहीये ध्रुवता ॥२३॥ पूर्व पर्याय व्यय गुण वृत्तिए, अन्निनव पर्याय उत्पादए, एम समे समे हाणी वृद्धि वृत्तिये, तिहा प्रगटे परमानद ए ॥ २४ ॥ परमानद गुणगुणनो जुदो, अनतगुण आनदोपेतए, तेनो न्नोग गुण निष्पन्नसमे कहीये, वाकी उपन्नोग चिरकाळ गतए ॥ २५ ॥ एम पूर्णानद न्नोगी सिद्धात्मा, तेमा अपूर्णता होवे नहि, एक समय मात्र विरहकाळ नावे, दुःख अशाता विघ्न कदी नहीं तहीं ॥ २६ ॥ ए सूख साधन घटत्तरमा, गुण श्रेणीये न्नेदान्नेदता, न्नेद छेद करी अन्नेद लहता, पामे यथाख्यात वितरागता ॥ २७ ॥ ज्हा ससार मूळ वीज विनाश होवे, सूटे रागद्वेषने मोह ए, त्रण कर्म वितरागन्नावे हणाता, चउघातीनो थाय उच्छेदए, ॥ २८ ॥ तिहा अनत चतुष्टय

लहे अरिहंत पदमां, आयु ठेके थाय योग रोध ए, अघाति चौअंत अयोगी अंते, एम स्थिति पाके लहे भवि सिद्ध ए ॥ २९ ॥ ए सिद्ध हेतु तत्वगुण गाया, अतरआत्म स्थिरभाव ए, निजपर हित अर्थे रचना कीधी, ते शुद्ध करो ज्ञानी गुणवंत ए, ॥ ३० ॥ ओगणीस वासठ विजापुरमा श्रावण, शुक्ल बीज सोमवार ए, श्रद्धा प्रकरण ग्रंथ पुरण, करतां प्रमोद अपार ए ॥ ३१ ॥ आ ग्रंथ भविजन रुचीये भणशे, सूणशे निश्चल चित्तए, ज्ञान शितळ तद्गत रटण करतां, पामे समकित रत्न विनित ए ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा २०० ॥ श्लोक सख्या सवात्रणसो (३२५)॥ समपूर्ण ॥

॥ श्री गुरुभ्योनम ॥

अथ श्री नवपदजीनी पूजा लिख्यते

॥ दुहा. ॥

चउवीशे जीनपति नमु, नमु अप्रमत्त निर्ग्रंथ ॥
धर्म तेनु भाख्यु सही, सो समकित शीवपथ ॥ १ ॥
ते साधे सिद्ध चक्रने, पूजे नित्य द्रव्यभाव ॥
ते नव भेदे वर्णवुं, अनुक्रमे निज सद्भाव ॥ २ ॥
अरिहत सिद्ध त्रीजे सूरि, पाठक मुनि गुण धाम ॥
दरशन नाण चरण वळी, तप द्वादशविध नाम ॥ ३ ॥
ए नवपद भक्ति करी, पुजा रचु मनोहार ॥
नव पद गुण गण गावतां, त्रुटे कर्म प्रचार ॥ ४ ॥
नवपद सोहि आतमा, योग इन्द्रियी भिन्न ॥
पुद्गलमां लाधे नहीं, नवपद गुणनु चिह्न ॥ ५ ॥

ભેદ જ્ઞાન ઘટમા વસે, તો શ્રદ્ધા સ્થિર થાય ॥
સ્વપર વિભાગ કરે તિહાં અનુભવ ઘટ પ્રગટાય ॥ ૬ ॥
સમભાવ વૃત્તિ એહ છે, ભાવ પૂજા પણ તેહ ॥
અનતકારણ સિદ્ધનુ, તેમાં નહીં સદેહ ॥ ૭ ॥

॥ ઢાળ ॥ ૧ ॥

॥ રાગ વિલાવર ॥

જગત્ પ્રભુ આગળ ભવી વર અક્ષત ધરીએ ॥ એ દેશી ॥
અરિહત પદ ગણ તેરમે, ઘાતિ કર્મહણીને ॥
અનત ચતુષ્ટયી પામીયા, પરિયાય વણીને ॥ હાંહાં રે
પર્યાય વણીને, હાહા રે ઉપયોગી થઇને ॥
હાહાં રે જ્ઞાન રમણ લહીને, હાહા રે સભીહઢ ગ્રહીને ॥
હાહા રે મૂળ રૂપે રહીને, હાહા રે વીતરાગ વનીને ॥
અરિહત પદ ગણ તેરમે, ઘાતિ કર્મ હણીને ॥આંકણી॥૧॥
ચાર નિકાયના દેવતા, અસખ્ય તીહા આવે ॥
ચોસઠ ઇદ્ર દેવાગના, મળી મગળિક ગાવે ॥
હાહા રે મળી મગળિક ગાવે, હા૦ તીહાં ત્રિગડુ વનાવે ॥
હા૦ કેઇ જળ વરસાવે, હા૦ કેઇ કુસુમ વીછાવે ॥
હા૦ વીચ કલ્પવૃક્ષ ભાવે, હા૦ પર્ષદા વાર આવે ॥અ૦॥૨॥
તીર્થપતિ અરીહતજી, સિહાસન સોહાવે ॥
ચઉદીશિ ચઉમુખ દેશના, દેઇ સઉને સુણાવે ॥
હા૦ દેઇ સઉને સુણાવે, હા૦ જ્ઞાન જીવ જાણે આવે ॥
હા૦ તીહા મિથ્યાત્વ જાવે, હા૦ સમકિત શુદ્ધ પાવે ॥
હા૦ લહે વીરતિ ભાવે હા૦ સિદ્ધ અનુક્રમે થાવે અ૦॥૩॥

इत्यादि बहु देशना, जवि जीवने आपे ॥
जीव पुद्‌गल जूदाजूदा, इम बीहु पक्ष थापे ॥
हां० इम बीहु पक्ष थापे, हां० संग्रह नयनीए ठापे ॥
हां० परपणे नही व्यापे, हां० गुणपरने ए नापे ॥
हां० जीव निज पर मापे, हां० छुटे अन्यथी आपे ॥अ०॥४॥
इत्यादि देशना देइ, अरिहंतजी तारे ॥
ज्ञान शीतल श्रद्धा करी, केइ धर्म काज सारे ॥
हां० केइ धर्म काज सारे, हां० प्रज्जुनो उपगारे ॥
हां० जवी पूजो निरधारे, हां० धन खरचो अपारे ॥
हां० योगत्रण समारे, हां० नहींतो जवहां रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

इति प्रथम पदपूजा. ॥ १ ॥

श्लोकः– ॐह्रूँश्री परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्यु निवारयाण, अज्ञानोच्छेदकाय श्रीमतेवीरजीनेंद्राय जलंचंदनं, पुष्प, धूपं, दिप, अक्षत, नैवेद्य, फल च यजामहे स्वाहा (आ काव्य दरेक पूजा दीठ कहेवुं)

पूजा ॥ २ ॥ जी ॥ दुहा ॥

सिद्ध निरजन गति नमु, अलख अगोचर रूप ॥
आदि अत नही एहने, परमानंद स्वरूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ देखो गति दैवनीरे ॥ ए देशी

श्री सिद्ध पद आराधीयेरे, जे निज सपत्तिवत
ज्ञान अनतु दर्शनेरे, चरण वीर्य अनंत नमो सिद्धरायने रे.
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

अव्याबाध सुख शाश्वतु रे, परमानंद स्वरूप
अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, अमूर्ति अनूप ॥ नमो० ॥२॥
ज्ञायक समकितवतणो रे, चिन्ह मूर्त्ति परिब्रह्म
परमज्योति व्यक्ति हुइरे, टळीया आठे कर्म ॥ नमो० ॥३॥
अज अवीनाशी निरंजनो रे, लोक शिखर करे वास ॥
त्रणे काळनी वर्त्तनारे, एक समय प्रतिभाष्य ॥ नमो० ॥४॥
एक सिद्ध तीहा अनत छे रे, निज निज रूपेरे भिन्न ॥
नहीं बाधा सिद्ध जीवनेरे, गुणपर्यायमां लीन ॥ नमो० ॥५॥
गुणपर्याय अनतनी रे, व्यक्ति अनती रे थाय ॥
कोड कोडमा पेसे नहीं रे, सौ नीज धर्मे समाय ॥नमो०॥६॥
व्यक्ति व्यक्तिये भिन्नतारे, आनद केरी रे थाय ॥
एम आनद अनतो हुवे रे, तेना भोगी सिद्धा सदाय ॥नमो०७
एक अनेक आदि अनादिरे, गुरु, लघुने मध्यस्थ॥
इत्यादिक भेद सिद्धनारे, जाणो वेदी सयमरथ ॥नमो०८॥
तेथी सिद्ध पद पामीयेरे, भविजन करजो विचार ॥
ज्ञान शीतळ कहे आपजोरे, सिद्धराय सिद्धपद सार ॥न०९॥

इति सिद्ध पद पूजा ॥ २ ॥

पूजा ॥ ३ ॥ जी ॥ दुहा ॥

छत्रीस गुण विराजता, पाळे पचाचार ॥
षट् दर्शनने जाणता, स्याद्वादी सिरदार ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

॥ महावीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥
आचारज पदने पूजी जे, गुणरागे वदन कीजे ॥

दीये देशना ते न भूलीजे, शका कंखा पूछी छेदीजेरे ॥
मन मोहन जगगुरु राया ॥ तुज दरसण पुन्य पायारे ॥
मन मोहन जगगुरुराया ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तुमे पच महाव्रत धारी, दया वीस वसा निरधारी ॥
सत्य भाषा निरवद्यसारी, आतम धर्म शक्ति प्यारी रे॥म०२॥
अणदीधे सळी नही लेवे, योग त्रिकरणे नारी न सेवे ॥
रूप निरखण नजर न देवे, परिग्रह नव त्यागी रहेवेरे म०३॥
आशा तृष्णा मूर्छा उतारी, आ भव परभवनी नीवारी ॥
निर्लोभीनपुन्यग्राहकारी,ज्ञान ध्यानतप निर्जरा भारीरे म०४॥
भाव संवर अतर योगी, भाव अध्यातम गुण भोगी ॥
धर्म साधक शब्द संयोगी, करे करणी सदा उपयोगीरे म०५॥
शुद्ध पर्याय रमणता पाइ, सदबोध सयमश्री आइ ॥
भेटे आचार्य उभा थाइ,, तिहा आनंदवृद्धि सवाइरे म०६॥
निज गुण उपयोगे स्थिर, व्रते आचारीय यइ वीर ॥
अनुभव सरोवर तीर, भर्युं ज्ञान अगाधसो नीररे म०७॥
तेमा स्नाने सनातक थावे, कर्म मेल अनादिनो जावे ॥
समश्रेणीए सिद्ध गतिपावे, ज्ञानशीतळ पद भीजु गावे रेम.८॥

इति आचार्य पद पूजा ॥ ३ ॥

पूजा ॥ ४ ॥ थी ॥ दुहा ॥

पाठक पंचवीस गुणी, ज्ञान तणा भन्डार ॥
भणे भणावे साधने, प्रभाविक सिरदार ॥१॥

॥ ઢાળ ॥ ૪ ॥ થી ॥

॥ रगरसीया रगरस वन्यो मन मोहनजी ॥ ए देशी ॥
पाठक पदने पूजीए मन मोहनजी, ए द्वादश अंगना जाण ॥
मनरु मोह्यु रे मन मोहनजी

नय गर्जित दीये देशना म० नहीं एकात पक्षनी ताण॥म० १ ॥
शब्द नये धर्म साधना म० तेमा चउ प्रथमनी समाय ॥मन०॥
अश आरोप नेगम भले ॥मन०॥ सग्रह सत्ता ग्रहवाय ॥म० २
भेदज्ञान अतर जगे म०, करे चेतन पुद्गल भिन्न ॥ मन०
उपाधि अळगी टळे म०, ए व्यवहार नय चिन्ह ॥म० ३ ॥
मन स्थिर घरमां रहे म०, थइ शुद्धि अंतरमांही ॥ मन० ॥
ऋजुसूत्रनय एह ठे म०, परिणामग्राही त्याही ॥ मन० ४ ॥
ए चउ शब्द नयें भळे म०, इहा प्रगटे समकित धर्म॥म०॥
अनुक्रमे वृद्धि लहे म०, आवे संभिरुढनो मर्म ॥ म० ५ ॥
ए नये अरिहत पद लहे म०, तीहा ठ नयनु वृत्तात॥म०॥
एम कार्य शब्दथी साधीयेम०, चउ पेहेला ए निमित्त एकात॥६
आयुष्य अते सिद्धिवरे म०, लोक शिखर करे वास॥मन०॥
एवभूत नय तीहा होवे म०, हवे कारणिक तीहां नहीं पास॥७
पुद्गल सग जीहा लगे म०, तीहा कारणिकनो रहे वास॥म०
कार्ययोगे कारण कह्यु म०, नहीं तो कारण नही तास॥म०८
शब्द नय लाधे नहीं म०, तीहा स्थीर मिथ्यात्व धर्म॥मन०॥
कारण दुभेदे कह्यु म०, एक कार्य कारण मर्म ॥ मन० ए ॥
योगता कारण बीजु कह्यु म०, ते समजो चतुर महत॥म०॥
कार्य उपादाननु हुवे म०, ते कार्य कारण कहत म०॥१०॥

निमित्त प्रवृत्ति कीजीयें म०, ते जोगे कार्य निपजत मन० ॥
ते योगता कारण सही म०,नहीं तो अकारण कहंत म० ११॥
एम सत नय ग्रहीए म०, नहीं एके उत्थापक हुत मन० ॥
शक्ति ते व्यक्ति हुवे म०, थाय सग्रह एवंभूत मन० १२ ॥
इम सिद्ध साधन साधीये म०, कहे ग्रथे ज्ञानी गुरुराज म०॥
ज्ञान शीतळ श्रद्धा करो म०लहो समकित सारो काजम०१३

इति पाठक पद पूजा ॥ ४ ॥

पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥ दुहा. ॥

ज्ञानी ते साधु नमुं, जाणे वस्तु स्वभाव ॥
उपाधि अळगी करे, त्यां शीवसाधन दाव ॥ १ ॥

॥ ढाळ ५ मी. ॥

॥ गीरिवर दरसण वीरला पावे ॥ ए देशी ॥

मुनि महत पदपूजा कीजे, मुनि गुण उळखतां दील रीझे॥
मुनि महत पदपूजा कीजे ॥
मुनि दरसणथी समकित पामे, अनुक्रमे सिद्ध गति पण लीजे
मुनि महंत पदपूजा कीजे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
पंचइंद्रि विषय अशुभ निवारी, जीतेंद्रिय यति धर्मे रीझे मु०
पेहेलुं धर्म-क्षमा अतरमां, क्रोध तजी समता रस पीजे मु०२॥
बीजु मार्दव धर्म अमानी, मद आठ तजी मोटपे न रीझे मु०
त्रीजु आर्यवधर्म सरळता, कपटरहित अवक्र थइ जे मु०३॥
चोथु मुनि धर्म ज्ञान वेरागे, तजी पर ममता लोभ हणीजेमु०॥
इम चौधर्म कषाय अभावे, गुरु मूख वचने एम सुणीजे मु० ४
पंचमु तपधर्म बावग भेदे, षट् षट् बाह्य अभ्यंतर कीजे मु०

छठु संयम आश्रव त्यागे, सत्तर भेद घणी रीजे ग्रहीजे ॥मु०५॥
सातमु सत्यधर्म सत्य भाषाए, आज्ञा सत्य वस्तु सत्य समजीजे मु०।
अष्टम शौचधर्म भेद ज्ञाने, पुद्गल अनुभव त्यागी वरीजे मु ६॥
नवमु धर्म अकिंचन दाख्युं, परिग्रह त्यागी सनेह हणीजे मु ॥
दशमु ब्रह्मचर्य धर्म भाख्यु, त्रिकरण योगे वेद विपेन सेवीजे मु.७।
एम दशयतिधर्म आराधी, मुनिगुण वृद्धि लहे रगरीजे मु०॥
संयम गुण विशुद्धी वरता, ज्ञान शीतल करी शीवपद लीजे मु०८

इति मुनि पद पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥

॥ पूजा ॥ ६ ॥ ठी ॥ दुहा ॥

वस्तुने वस्तुपणे, सद्दहे सो समकित ॥
अवस्तु वस्तु कहे, ते मिथ्यात्व भ्रम भित ॥१॥
भेद ज्ञान अतर जगे, तीहा वस्तु ओळखाय
जीव पुद्गल जुदारता, श्रद्धा स्थिर न मोलाय ॥२॥
ते समकित दरशण नमु, शिवपद आपणहार ॥
सर्व धर्मनु मूळए, गुण वृद्धि आधार ॥३॥

॥ ढाल ६ छट्ठी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवी करिये ॥ ए देशी ॥

समकित दर्शन पूजीए भवी भावे, भाव स्वभावे समकित आवे, तीहा मिथ्यात्व मूळथी जावे, पामे चोथु स्थान ॥ समकित० ॥ १ ॥ ए आकणी॥ दर्शन अनुभव ते सही प्रत्यक्ष, देखे शुद्ध स्वरूपनो पक्ष ज्ञान योगे दर्शन विचक्ष, जाणे देखे एम ॥ समकित० ॥ २ ॥ ससार छेदक ए सही, अति वळीउं, पमता अर्द्ध पुद्गल कहीउं, नहींतो

सात आठ नव रहीउं, पठी सिद्धि लहत ॥ समकित० ॥ ॥ ३ ॥ चारित्र विण सिद्धि वरे एम जाणो, नहीं समकित वीण शीवराणो, समकित गुण परथम आणो, थाशे कारज सार ॥ समकित० ॥ ४ ॥ समकित विण धर्म साधना अलेखे, करे किरिया जगत सौ देखे ॥ नणे ज्ञान कथे न जाणे रेखे, अंकविण बिंदु जेम ॥ समकित० ॥ ५ ॥ गत समकितने पूरवे आयु बांध्युं, ए वेउ विण समकित साध्युं ॥ बीजु आयुष्य बांधे नहीं लाध्यु, देव वैमानि वध॥ समकित० ॥६॥ मळ उपशम क्षय उपशम क्षय जाणो, तेथी समकित त्रिविध आणो ॥ क्षायक त्रण चार नवे टाणो, सिद्धि वरशे एम ॥ समकित० ॥ ७ ॥ सास्वादन उपशम पचवार लहीजे, क्षय उपशम असख्यवार कीजे ॥ क्षायक एकवार ग्रही लीजे, नवस्थीति मांही ॥ समकित० ॥ ८ ॥ क्षयउपशम परथम लहे सिद्धांते, उपशम कर्म ग्रंथे अकांते ॥ पामे समकित शांत दांते, निन्न शास्त्रे विचार ॥ समकित० ॥ ए ॥ समकित ठाणथी पर्मी मिथ्यात्वे जावे, तीहां रहतां अनंत काळ थावे ॥ कर्मबंध अनतो पावे, स्थिति न वधे एम ॥ समकित० ॥ १० ॥ इत्यादिक गुण मोटको सिद्धिदाता, गुरु वचने कहे गुणख्याता ॥ समकित नावना मुनि ध्याता, ज्ञान शितळ गाय ॥ समकित० ॥ ११ ॥

इति समकित दर्शन पद पूजा. ॥ ६ ॥ ठी.

पूजा ॥ ७ मी ॥ दुहा. ॥

जीव स्वन्नावे ज्ञान ते, चारित्र समकित मूळ ॥

अनुभवे शीव सुखने, सहजानंद अनुकूळ ॥ १ ॥
ज्ञानावरणी कर्म जे, क्षय उपशम तस थाय ॥
ज्ञान गुण प्रगटे सही, जाणे वस्तुने न्याय ॥ २ ॥
द्रव्यारथ दस भेदने, पर्यायारथ षट् भेद ॥
द्रव्यपर्यायने जाणतां, लहीए ज्ञान अभेद ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ ७ मी ॥

राग सारग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

आतम ज्ञानपद पूजीएरे मिता ॥ शुद्ध उपयोगे स्थिर ॥ अंतर अजवाळु करेरे मिता ॥ अकृत्य चितक धीररे ॥ रंगीला मिता ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए ज्ञान पूजो घटमांरे मिता, लहो अनुभव प्रत्यक्षरे ॥ रगीला० ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुणपर्याय अनंतनो रे मिता, अनुभव स्हेजे थाय ॥ अनत चक्षुवतो सहीरे मिता, परम ज्योति प्रगटायरे ॥ रगीला मिता ॥ ए ज्ञान० ॥ २ ॥ अरूपी विषय ज्ञाननो रे मिता, आतम ज्ञाने ग्रहत ॥ अनुभव रीते जाणतां रे मिता, स्पर्श ज्ञान कहतरे ॥ रगीला० ॥ ए० ॥ ३ ॥ निजातम विण सर्वने रे मिता, जाणे ते बाह्य ज्ञान ॥ बाळ ज्ञान बीजु नामछे रे मिता, त्रीजु व्यवहार ज्ञानरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ४ ॥ स्वपर जाण ज्ञानी कह्यारे मिता, पर अनुभवी न कहाय ॥ अरीसामां अन्य छभी पडेरे मिता, छवीए अरीसो न लेपायरे ॥ रगीला० ॥ ए० ॥५॥ परजाण उपमा वाचवेरे मिता, ज्ञानी निजातम जाण ॥ स्वभावे निज धर्मछे रे मिता, परभावे परधर्म गणरे

॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ परन्नावे धर्म नवि रहे रे मिता, पामेलु क्षणमां विनाश ॥ धर्मघाति परन्नावनेरे मिता, तजी करो स्वन्नावे वासरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ७ ॥ शुद्ध एकता अचलतारे मिता, अकृत्य चितक न्नाव ॥ परानुयायी ज्हां टल्योरे मिता, अन्नेदज्ञानी हुवा रावरे ॥रगीला० ॥ ए० ॥ ८ ॥ न्नेद ज्ञान कारण कह्यु रे मिता, टळतां कार्यता पाय ॥ केवळनाण दर्शण लहेरे मिता, ए शुद्ध सद्न्नूत थायरे ॥ रंगीला० ॥ ए ॥ ए ॥ पर्याय ऽव्य एकाग्रतारे मिता, व्यक्ति अनंती न्निन्न ॥ अन्निन्न रूपे तिहां सहीरे मिता, ए स्याद्वाद धर्म चिन्हरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ १० ॥ एम ज्ञानयोग आराधीयेरे मिता, न्नेद अन्नेद विचार ॥ ज्ञान शीतल सिद्धिवरेरे मिता, लहे अव्यावाध हितकाररे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ११ ॥

॥ इति ज्ञानपद पूजा ७ मी ॥

पूजा ॥ ८ मी ॥ दुहा ॥

जे चारित्र शरण करे, ते निर्न्नय पद पाय ॥
न्नव न्नव नाटक नवी करे, मोहादि कर्म क्षय थाय ॥१॥
चारित्र गुण अतर विषे, अनुन्नव ज्ञान संयोग ॥
स्थिर उपयोग शुद्धता, तीहां सयमश्री न्नोग ॥२॥
संयमश्री लगे रहे, चारित्र रायनी पास ॥
प्रमोदित अळगी नही, कार्य करे थइ दास ॥३॥

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ तोरण आइ क्युं चले रे ॥ ए देशी ॥

चारित्र धर्मने पूजियेरे, निग्रथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ व्यवहार निश्चय भेदथी रे, परथम कहु व्यवहार ॥ सलूणा ॥ चारित्र धर्मने पूजिएरे, निग्रंथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ पंच महाव्रत उच्चरेरे, सुझतो आहार निहाळे ॥ सलूणा ॥ लोचकरे भूमिये सूएरे, अणवाणे पगे चाले ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ २ ॥ पट आवश्यक वे टकनां रे, नव कल्पे विहार ॥ सलूणा ॥ देशना गुरु मुखे सुणे रे, पलेहण करे वे वार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ३ ॥ इत्यादि बहु साधनारे, व्यवहार चारित्र तेह ॥ सलूणा ॥ स्वर्ग सुख तेहथी लहेरे, परपर कारण एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥४॥ निश्चें चरणहवे दाखवु रे, जे शीघ्र सुखदातार ॥ सलूणा ॥ अनतर कारण सिद्धनु रे, अतर दृष्टि विचार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ ज्ञाने वस्तुने ओळखे रे, एक प्रणमन वस्तु भिन्न ॥सलूणा ॥ परसगे मिश्रित हुवे रे, चेतन पुद्गल चिन्ह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ परसगी हुइ चेतनारे,, इन्द्रिद्वारे एह ॥ सलूणा ॥ उपयोगीक सदा रहेरे, पुद्गल धर्मे तेह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ मन मेलु नहि स्थिरता रे, भटकण लाग्यो तेह ॥ सलूणा ॥ वस्ती उजमसा भमे रे, गयण पायाले एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ इन्द्रि नोइन्द्रि नहीं आतमारे, पुद्गल वस्तु तेह ॥ सलूणा ॥

तेमां जाएंग गुण आतमा रे, उपयोग लक्षण एह ॥सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ए ॥ एम भेदज्ञाने व्हेचीये रे, जीव पुद्गल दोय भिन्न ॥ सलूणा ॥ हेय जाणी पर छोमीने रे, चेतना ग्रहो थइ लीन ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १० ॥ वीर्य स्फुरणायें थइरे, पर्याय धर्म वृत्ति ॥सलूणा॥ उपयोग अनतो हुवोरे, स्थिरपणे जेम धरती ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ११ ॥ भाव अध्यात्म धर्मए रे, सवर निर्जरा साथे ॥ सलूणा ॥ ध्याता ध्येय ध्यान एकतारे, चारित्र राय जगनाथ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १२ ॥ निर्मोही मोहने हणीरे, हणीया रागने द्वेष ॥ सलूणा ॥ अशुद्ध परिणतिने छेदीने रे, शुद्ध परिणतिये प्रवेश ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १३ ॥ निश्चे चरण ए भाखियु रे, यथाख्यात तस नाम ॥ सलूणा ॥ वीत राग ठाण वारमे रे, लाध्यु पद हित काम ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १४ ॥ पा क्षणमां ए केवळ लहेरे, त्यां गुणठाण तेरमु कहाय ॥ सलूणा ॥ ज्ञान शीतळ करे वंदनारे, मानजो अरिहंतराय ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १५ ॥

इति चारित्र पद पूजा ॥ ८ मी ॥

पूजा ॥ ९ ॥ मी ॥ दुहा ॥

कर्म जले तप धर्मथी, तपथी जाय विकार ॥
अशुद्धता अळगी टळे, तप उत्तम आचार ॥१॥
ध्यान तप अतर विषे, आज्ञा अपाय विचार ॥
विपाकने संस्थानए, ध्याउ ल्यो धर्मसार ॥२॥

उत्सर्ग कायानो करे, त्याग ए ज्ञान सयोग ॥
वाधित भाव सवेटळे लहे अव्यावाध भोग ॥३॥

॥ ढाळ ९ मी ॥

॥ वगमानो वासीरे मोर शीद मारीयो ॥ ए देशी ॥

तप पद पूजीने निरजरा करीयेर, वधने विदारीरे कर्मथी छुटीये ॥ ध्यान तपे धर्मध्याने आज्ञा विचारीरे, मिथ्यात्वने मारीरे समकित लिजीये ॥ अज्ञानने निवारी रे ज्ञान रस पिजीये, अव्रतने गाळीरे विरति रसे भींजीये, प्रमादने टाळीरे अप्रमत्ते रीझीये, मोहने विदारीरे, यथाख्याते सिझीये ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ अप्पाय विचय वीजे पाये विचारीरे, आतमरामरे अनत गुणीने किजीए ॥ विपाक विचय त्रीजे पाये गुणवंतरे ॥ परसगे फळरे विपाक अशाता लिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ २ ॥ सस्थान विचार ते असख्याता लोकमाहीरे ॥ कर्म पर्यायेरे जन्म मरणे फरसीये ॥ एम चउभेदे धर्मध्यान तप ध्यायारे ॥ शुक्ल ध्यानरे परसग त्यागी किजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ३ ॥ पेहेले पाये स्वपर विचार भिन्न भिन्नरे ॥ वहेंची जूदा जूदारे जीव पुद्गल दोय कीजीये ॥ मोहमल्ल इहा आत्म प्रदेशथी टाळीरे ॥ ध्यान अग्निये लगामीरे यथाख्यात लीजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ४ ॥ वीजे पाये अभेद ज्ञान एकत्वरे ॥ परअनुभवरे गाए वारमेथी टाळीए ॥ ज्ञानावरणी दर्शनावर्णी अतरायरे ॥ तेने

हणतां रे केवळज्ञान नीहाळीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ५ ॥ त्रीजो पायो तेरमा गणना अंतेरे ॥ आयुवने ठेकेरे योग रोध किजीये ॥ चोथे पाये सही अयोगी अकर्मी रे ॥ क्रियाने कायानोरे उच्छेद करी सिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ६ ॥ धर्म शुक्ल ध्यान चउ चउ पाया दाख्यारे ॥ ते अभ्नि-तररे पाचमो तप भेद कीजीये ॥ छठो तप भेद कायोत्सर्ग कहीजेरे ॥ ते भाव आवी गयोरे, कायानो उच्छेद तीहां लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ७ ॥ बाकी रह्या दशभेद तपना ते समजीरे, अतर्दृष्टियेरे कर्म वळे एम कीजीये॥ ज्ञान शीतळ कहे ध्यान तपने आराधीरे॥ अकृत्य अनुभवरे योगे सिद्ध पद लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ८ ॥

इति तप पद पूजा ॥ ९ मी ॥

कळश.

॥ ढाळ ॥

घणुं जीव तु जीव जिनराज जीवो घणु ॥ ए देशी ॥
अथवा ॥ करखानी देशी ॥

नवपद पूजीये मुक्ति पंथ लीजीये, देवगुरु धर्म त्रण तत्व जाणी ॥ शुद्ध श्रद्धा करी मिथ्यात्व परहरी, समकित सुमति बेहु लीयो ताणी ॥ नवपद पूजीये० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ परथम अरिहत पदतणी पूजना, शत्रु द्रव्यभाव दोय हणतां थावे ॥ भावथी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिये, द्रव्यथी गुणघाति चउक्षय पावे ॥ नव० ॥ २ ॥ बीजी

सिद्ध पदतणी कहु हवे पूजना, अष्ट कर्मक्षयथी अष्ट गुण पावे॥ पुद्‌गल रहित ए आत्मरूपे सदा, अनत गुण वृत्ति अकृत्य थावे ॥ नव० ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय साधु सर्व पूजीये, कचन कामिनिथी रहित थइये सावद्य त्याग त्रि-करण त्रिकरण करी, जाव जीव लगे निस्पृही रहीये ॥ नव० ॥ ४ ॥ दर्शननाण चरण तप गुण पूजना, अतरकरणे उपयोगी रहीए ॥ तेथी तीहा पामीए स्वरूपें विशुद्धता, शक्ति सोव्यक्ति परगट लहीये ॥ नव० ॥ ५ ॥ एम नव पदतणी पूजना घट विषे, गुण प्रगटे सो भाव पूजा कहीए॥ तेह ज्ञाने करी पूजा में वर्णवी, उपयोगे पूजी शीवसुख लहीए ॥ नव० ॥ ६ ॥ ओगणीसे बावन असाढ दुवादशी, कृष्ण पक्ष वार गुरुए गाइ ॥ अनुभव पदतणा स्थिर विचारथी, रमण रचना करी पूर्णताइ ॥ नव० ॥ ७ ॥ म-नोरथ माहरो सफळ हुवो आज ए, आनद उलटभर हर्ष वाध्यो ॥ नवपद आतमा आत्म भावे पूजना, ए विण कार्य नहीं कोइए साध्यो ॥ नव० ॥ ८ ॥ एम भवि पूजीये भक्ति घणी कीजीये, वचन सत्य विवेके उचारीयेए ॥ ज्ञान शीतल करी उपयोग शुद्ध ग्रही, व्यक्ति लही शीव पथ चालीए ॥ नव० ॥ ए ॥

॥ कळश ॥

श्रुतज्ञान अनुभव ॥ ए देशी ॥

उपशम जळे मळ शान्त करीए उपयोग चदन पूजीए ॥
वळी ज्ञान पुष्पज धूप श्रद्धा, दिप अनुभव किजीए ॥

वेराग अक्षत ज्ञान गर्जित, दृष्टि सम नैवेद्य ए ॥
एम ज्ञान शीतळ भाव पूजा, फळ कह्यु सतोप ए ॥९॥

इति नवपदजीनी पूजा सपूर्ण.

अथ आरति लिख्यते.

॥ अपछरा करती आरती जीन आगे ॥ ए देशी ॥

आरति करुं जीनराजनी सहज भावे, ज्ञान दीप ज्योति प्रगटावे ॥ घट अंतर प्रकाश थावे, भागे तिमिरांधकार ॥ आरति करु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीनभाव सद्भाव ए ज्ञानयोग, टळे रागद्वेप भाव रोग ॥ वसे शुद्ध परिणति संयोग, क्षीण मोह वीतराग ॥ आरति० ॥ २ ॥ उतरवुं मुळरूपमां गुणे चढवुं, शुद्ध उपयोग रमण आदरवुं ॥ गुणपर्याय अनुभव करवु, लाधे केवळ ज्ञान ॥ आरति० ॥ ३ ॥ भाव जीन अरिहंतजी ए प्यारो, घाति कर्महणी हुवो न्यारो ॥ ठाण तेरमु तीहां विचारो, [illegible] योगनो रोध ॥ आरति० ॥ ४ ॥ धर्म अनतो व्यक्तिए [illegible] वर्त्ते, सोही भाव नाटक नाच करते ॥ हुवा सिद्ध [illegible] ते ठरते, भांगे सादि अनंत ॥ आरति० ॥ ५ ॥ [illegible] भावे जीनजी सम थावुं, एम उलट मनमां [illegible] । ज्ञान शीतळ आरति गावु, तजी पुद्गलिक भाव ॥ [illegible] ॥ [illegible]

संपूर्ण

अथ मगळ दीवो लीख्यते.

ज्ञान प्रकाशसो मगलिक दीवो, [illegible] मकिती जीवो ॥ म[illegible] रो पुद्[illegible]

ए नहीं नलेरी ॥ ज्ञान० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मगळीक जीव स्वरूपोपयोगी, नाव निक्षेप निजनाव सयोगी ॥ अरुपी शुद्ध परिणति त्यां कहीए, ध्याता ध्येय ध्यान एकता लहए ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ रागद्वेष अपमगलिक हणीआ॥ गुणघाति टळया जे चउ रणीया॥ मगळीक केवळज्ञान सो दीवो, परमानद अनत रस पीवो ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ एही मगळिक सिद्ध पद आपे, आयुष्य अंते अघाति कापे, कार्मण कर्म मनुष्यनव छोरी, सिद्ध गतिये वर्या शीववधु जोरी ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अव्याबाध अनत सुख सगी, पर्याय धर्मे वृति एकगी ॥ उत्कृष्ट मगळिक सिद्धने कहीए, ज्ञान शीतळ ए नावसो ग्रहीए ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ अध्यात्म चोवीशी लिख्यते ॥

प्रथम स्तवन.

शत्रुजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, शीवपद साधन कामी रे ॥ हित चितक परमेश्वर प्यारो, ऋषनदेव शीरनामी रे ॥ देवाधि देव पूजोरे, पूज्या पूज्यां परमानद ॥ नविक तुमे पूजो रे ॥ए शीव सुख करो कद ॥ नविक तुमे पूजो रे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ प्रथम नरेसर प्रथम मुनीसर, प्रथम केवळ ज्ञानी रे ॥ त्रिगडे वेसी उपदेश देवे, नहीं कोइ एह सम दानी रे ॥ देवाधि० ॥ २ ॥ ए दान ग्रहे मो ज्ञाता, सघ चतुर्विध कहीएरे॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, गणधर मुख्य पद लहीए रे ॥ देवाधि० ॥ ३ ॥

समकित मूळ आज्ञायुक्त तीरथ, स्थापे आदि जिणदरे ॥ तीहां सूत्र दुवादश रचता, लब्धिये गणधर मुनिंद रे ॥ ॥ देवाधि० ॥ ४ ॥ भव्य जीवने ए महा उपगारी, मिथ्यात्व टाळण हारी रे ॥ ज्ञानशीतल करी समकित पामे, सोही सिद्ध अधिकारी रे ॥ देवाधि० ॥ ५ ॥ संपूर्ण

स्तवन बीजु.

॥ देशी ललनानी ॥

अजित जिनपति देशना, सुणतां प्रगटे आनंद ॥ ॥ ललना ॥ जीव पुद्गलनी भिन्नता, दाखे दुफार जिणंद ललना ॥ अजित जिनपति देशना ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ जीवसत्ताए सिद्ध अनादिनो, ए क्षायक लब्धिवंत ॥ ललना ॥ सग्रह नयना पदार्थी, अव्यक्तव्य गुण अनंत ॥ ॥ ललना ॥ अजीत० ॥ २ ॥ एम छती पर्याये जाणीए, जिम बीजमां रह्युं वृक्ष ॥ ललना ॥ वळी काष्ट मांही अग्नि रही, तेम काया व्यापक जीव शुद्ध लक्ष ॥ ललना अजित जिन० ॥ ३ ॥ ए धर्म वस्तुगत ओळखो, करो श्रद्धा जीव पुदगल भिन्न ॥ ललना ॥ जीव गुण रागी थइ ग्रहो, तेहने अनुभवो तद्गत थइ लिन्न ॥ ललना ॥ अजित०॥ ॥ ४ ॥ तदगत भावे ग्रथी भेदीने, पामो सम्यक दर्शन ज्ञान ॥ ललना ॥ शुद्धातम अनुभव करो, मळे नीज गुण लब्धि दान ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ५ ॥ त्यां गुण गण भिन्न व्यक्तव्यता, ए लाभ लब्धि कहेवाय ॥ ललना ॥ भोग लब्धि गुणगत त्या लहो, भोग गुण निष्पन्न समे

थाय ललना ॥ अजि० ॥ ६ ॥ उपभोग वारवार भोगवे, बीजा समयथी यावत् चिरकाळ ॥ ललना ॥ वच्चे विरह-काळ आवे नहीं, उपभोग लब्धिमांहे रसाळ ॥ ललना ॥ ॥अजित०७॥ वीर्य स्फुरणा गुण स्वभावे लहे, गुणगुणगत उपयोग भिन्न ॥ ललना ॥ समे समे फुरणा अभिनव पणे, वीर्यलब्धि माही सदा लिन्न ॥ ललना ॥अजित॥०८॥ ए लब्धि पाच क्षायक भावनी, भवि प्रकट करो व्यक्ति-भाव ॥ ललना ॥ लहो सामर्थ्य पर्याय सिद्धगति, त्यां घाति अघाति कर्म अभाव ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ए ॥ हेतुक्षय उपशम चोथा गणथी, क्षिण मोह गण पर्यंत ॥ ललना ॥ घाति चउकर्म तेहथी खपे, लहे केवळनाण महा संत ॥ ललना ॥ अजित० ॥ १० ॥ जीव सत्ताये लब्धि रही थिरपणे, ज्ञान शीतळ ए शीवसुख कंद ॥ ल-लना॥ तेने रोपो ग्रथिभेद अवसरे, सींचो ज्ञान रस वृद्धिये आणंद ललना ॥ अजित० ॥ ११ ॥ संपूर्ण

स्तवन त्रीजु

॥ चंद्रप्रभु मुख चंद्र, सखी मुने देखण दे ॥ ए देशी ॥

श्री संभव स्वभाव रमण ॥ सखी देखण दे ॥ उपयोग अनु-भव ज्ञान ॥ सखी मुने देखणदे ॥ क्षायक लब्धि अनंत सदा सखी० ॥ गुण गुण भिन्न व्यक्ति विज्ञान सखी०॥१॥ जीवसत्ता निर्मळ सदा ॥सखी०॥ अनादि अनंत ए सिद्ध ॥ सखी० ॥ आवरण लाधे नहीं कदा ॥ सखी० ॥ ए निर्लेप वस्तु शुद्ध ॥ सखी० २ ॥ मिथ्यात्व भावे न देखीयो ॥ सखी० ॥ अ-

ज्ञाने नही न्रास ॥ सखी० ॥ मोह विकलताए आंधळो ॥ सखी० ॥ अहममत्व न्रर्यो घणो त्रास ॥ सखी० ॥ ३ ॥ दर्शनावरणी रुठयो घणु ॥ सखी० ॥ करे चक्षुअचक्षु अन्नाव ॥ सखी० ॥ काळ अनंत निगोदमां ॥ सखी० ॥ कारण नही सामग्री दाव ॥ सखी० ॥ ४ ॥ त्रस थावरमां न देखीयो ॥ सखी० ॥ दीठो न चउगति मांही ॥ सखी० ॥ ज्ञान सम्यक विण जरु थयो ॥ सखी० ॥ रागद्वेषनी वृद्धि त्यांही ॥ सखी० ॥ ५ ॥ क्लेशानदी आतमा ॥ सखी देखणदे ॥ बांधे कर्म अनत ॥ सखी० ॥ सतापे उदयिक अवसरे ॥ सखी० ॥ इष्ट हाणि महा डुखवत ॥ सखी० ॥ ६ ॥ अंतराय नमीर्ठ अनादिनो ॥ सखी० ॥ तेथी पाम्यो न सन्नव न्रूप ॥ सखी० ॥ काळ लब्धि आवी ढुकमी ॥ सखी० ॥ न्राव लब्धि प्रगट नीजरूप ॥ सखी० ॥७॥ द्रव्य कर्म न्राग्योतदा ॥ सखी० ॥ न्राव कर्मनो अन्नाव ॥ सखी० ॥ नो कर्म सग परहर्यो ॥ सखी० ॥ हुवा सिद्ध निरंजन राव ॥ सखी० ॥ ८ ॥ ज्ञान शीतळ करी पामीए ॥ सखी० ॥ मुक्ति सुखनु धाम ॥ सखी० ॥ सादि अनत स्थिति त्यां न्रली ॥ सखी० ॥ तेने पामु ए ठे मूज काम ॥ सखी० ॥९॥

सपूर्ण

स्तवन चोथु.

॥ सुगुण सनेहारे कबुये न वीसरे ॥ ए देशी ॥

अन्निनंदन जिन आनद पूरणो, न्राव अध्यातम पा-

मीजी ॥ द्वितिय न्नाव उन्मूलन ताहरे, अचळ अबाधित रामीजी॥ अन्निनदन जिन आनद पूरणो॥ ए आंकणी ॥ गाथा॥१॥ ज्ञानानंदी स्वन्नावे पामीया, गुणी पर्याय अनतजी॥ निज निज व्यक्तिरे आवट न्निन्नता, आवट न्हेर अननजी ॥ अन्निन० ॥ २ ॥ निर्मळ व्यक्तिरे सपत्ति ताहरे, मारे तुज सम शक्तिजी॥ समळ उपाधि न्नयो मुज आतमा, तेथी न प्रगटे व्यक्तिजी ॥ अन्निनदन० ॥ ३ ॥ तेथी तु सिद्ध सेवक हु ताहरो, तुज गुणरगी अन्नगजी ॥ तुज गुणज्ञान ध्यान मुज मन वस्यो, रुचे नहीं अन्य सगजी ॥ अन्नि० ॥ ४ ॥ चिन्ह मूर्त्ति अतरमा थापीए, सवर जळ करीए पखाळजी ॥ अनुन्नव रमण परमपद पूजता, पामे सिद्धपद लालजी ॥ अन्निनद० ॥ ५ ॥ नाचो राचो निरंजन मदिरे स्तुति स्वरूप उपयोगजी ॥ तेथी ज्ञान शीतळ थाय आपण, ए पूरण आणंद योगजी ॥ अन्निनद० ॥ ६ ॥ सपूर्ण

स्तवन पाचमु ॥

॥ राग रामग्री ॥ कऱखो ॥

सुमति शुद्ध चेतना, मूळ रूप देखना, तेहरा सगपण जोऱना ए॥ मुजमन ते वसी तेनो हु बहु रसी, स्वामी एणे नाथ तुमने कीया ए ॥ सुमति शुद्ध चेतना० ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कुमति रीसाइ गइ दुख दिन लइ गइ, नकतर न्नाग्यो अनादिनो ए ॥ सुख सपत्तिन्नयी वृद्धिसताननी, न्नोग न्नोगी हुर्ड आतमाए ॥ सुमती० ॥२॥

सदीव स्वामी सेवती चित उत्साहथी, क्षीण न अळगी थाये कदीए ॥ परोणापरे पूजती वचन न लोपती, अमृत रसोइ जमाम्ती ए ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ भूख भागी गइ, तृप्ति पूरण थइ, वीर्य अनत वाध्यो तीहां ए ॥ रगभर रीझथी सेवे शुद्ध चेतना, सादि अनत भंग सिद्धमां ए ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ एम अनुभव करी सुमति शोधी लीइ, रूप जोइने रीझयो घणु ए ॥ गुण तस अति घणा वचने आवे नहीं, ज्ञान शीतळ करी जाणीए ए ॥ सुमति० ॥५॥

सपूर्ण

स्तवन ॥ ६ ठु ॥

॥ देशी उपरनी ॥

पद्म द्रह भर्यो अमृत जळ अति घणो, चारित्र रायना देशमां ए ॥ तेह मीठो घणो शीतळ शुद्ध वासना, रसकुपीका तस नाम छे ए ॥ पद्म द्रह भर्यो० ॥ ए आंकणी ॥ ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते द्रहमां नाहीने कर्म मळ काढीउं, निरमळ चेतना त्यां थइए ॥ पद्म प्रभ तस नाम जग वीस्तर्यु, परमपूज्य तीर्थंकरु ए ॥ पद्म० ॥ २ ॥ तेह उपदेश भव्य जीवने आपता, तुज मुज एक देशी सहीए ॥ आपणो राय चारित्र नाम निर्मलु ॥ हित वंछक सर्व जीवनो ए ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तेने तुमे कीम तजो मोह रायने भजो, परघर पोतीकु मानतां ए ॥ तेणे कबजे कर्या चोर जाणी करी अनर्गळ ऋद्धि पामी लीए ए ॥ पद्म० ॥ ४ निरधन त्यां थया सर्व संसारीउं, चउगति मुलकमां फेरवे ए ॥ दुःख

आपे घणु सुख नहीं एक अणु, क्लेश करी काळ त्यां निर्गमे ए ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तेथी मुढ आधळा सत्य सूझे नहीं हेरू बधन त्रुटे नहीं ए ॥ मोह पल्लीनी आज्ञा तुमे मानता, वेरी ए चारित्र रायनो ए ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ एथी तुटया विना सुख आवे नहीं, अनतकाळे ए मूके नहीं ए ॥ नव नवा वेषे नाटक नचावतो, निरदय हृदय नीठुर छे ए ॥ पद्म० ॥ ७ ॥ हु पण ए रीत तुज सम रखमीई, विकल थइने ससार मांहे ॥ एम करता मळ्या सदगुरु देवता, तेणे चक्षुमा अजन कीयो ए ॥ पद्म० ॥ ८ ॥ तेथी मने सूझीउ वीर्य तीहा फोरव्यु, पूठ दीधी में मोह रायने ए ॥ चारित्र राय स्मरण कीयो ततक्षणे, ते मुज स्वरूपमा आवीयो ए ॥ पद्म० ॥ ए ॥ त्या छह निरमळो ज्ञान अनुभव भर्यो, स्वाने विभाव मळ त्रुटीउं ए ॥ शुद्ध स्वभाव तद्रूप परमातमा, शीव पथे सेजमा हु चरुयो ए ॥ पद्म० ॥ १० ॥ एम तुमे करो वीर्य त्या फोरवो, एह उपदेशने सद्दहो ए ॥ तेथी तुमे पामशो शाश्वत सुखने, ज्ञान शीतळ सो सिद्धातमाए ॥ पद्म० ॥ ११ ॥ सपूर्ण ॥

स्तवन ॥ ७ मु ॥

मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

सुपार्श्व जिनवर सातमा, पृथ्वी माताना जायारे ॥ कचन वरणे दीपता, वसो धनुष्यमान कायारे ॥ सुपार्श्व जिनवर सातमा० ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ वीस लाख पुर्वनु आउखु, अतरदृष्टि वेरागी रे ॥ बाह्य रग पतगनो,

आतमज्ञानी सोज्ञागीरे ॥ सुपार्श्व० ॥ २ ॥ जीव पुद्गल व्हेंचण करी, उपयोग स्वरूपमां कीधोरे ॥ चिदानंद ज्योति जगमगे, परमानंद रस पीधोर ॥ सुपार्श्व० ॥ ३ ॥ अप्रमत्त आतम हुउ, क्षपकश्रेणी तीहां मांडेरे ॥ सुक्ल प्रथम पगथालीए, मोह प्रकृति सर्व छांडेर ॥ सुपार्श्व० ॥ ४ ॥ समज्ञावे चढती कळा, शुद्ध परिणतिमां आवेरे ॥ वीतराग गुण अते वारमे, त्रण कर्म क्षय थावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ५ ॥ अनंत चतुष्टयी पामीया, त्रिगडु देव वनावेरे ॥ पर्षदा वार मळे तीहां, देशना जीनजी सुणावेर ॥ सुपार्श्व० ॥ ६ ॥ उपजे विणसे थीर रहे, एतो वस्तु विचार रे ॥ जे मरियादा वस्तुकी, सो सत्ता निरधार रे ॥ सुपार्श्व० ॥ ७ ॥ उपजवुं वीणसवुं ते सही, पर्याय धर्म सद्ज्ञावरे ॥ स्थीरपणु तीहां द्रव्यनु, एम वर्त्ते लक्षण न अज्ञावरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ८ ॥ ते वस्तु षट् ज्ञेदे जाणीये, गुण पर्याय संयुक्तरे ॥ हेय जाणी अजीव पांच परहरो, ग्रहो उपादेय चेतन निज युक्तरे॥ ॥ सुपार्श्व ॥ ए ॥ एम सुणी केड समकित पामीया, केडक देश विरति थावेरे केश्क महाव्रत उचरे, एम लाज्ञ वहु पावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ १० ॥ एम ज्ञव्य जीवने तारता, करता वहु उपकाररे ॥ आयु पूर्ण करी सिद्धि वर्या, ज्ञान शीतळ जीन अणगाररे ॥ सुपार्श्व० ॥ ११ ॥ संपूर्ण ॥

स्तवन ॥ ८ मु ॥

गिरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी. ॥

चंद्र प्रज्ञ जिन देशना, सुणतां शंका ज्ञाजे रे ॥ नि-

शकित थाय आतमा, समकित शुध्द विराजेर ॥ चद्र प्रन्न जिन देशना ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ श्रद्धा कारण सुणो देशना, स्थीर करी मन वच कायारे ॥ मनन करो चितवन करो, न नूलो वचन गुरु रायारे ॥ चद्र० ॥ २ ॥ जीवस्वरूपने उंळखो, पुद्गलमा ढकाणो रे ॥ चित्वन शक्ति वीस्तरे, ए कारण मुरय वखाणो रे ॥ चद्र० ॥ ३ ॥ यथा प्रवृत्ति प्रमूख सही, त्रण करण करी आवेरे ॥ अंतर करणे अनुनवे, जीव पुद्गल निन्न नावेरे ॥ चद्र० ॥ ४ ॥ ग्रथि नेद करे ते समे, वीर्य वृद्धि जोगरे ॥ ज्ञान ध्यान उपयोगशु, हणो मिथ्यात्व नाव रोग रे ॥ चद्र० ॥ ५ ॥ बीज चद्र सम आतमा, शुद्ध हुउं नीज रूपरे ॥ प्रकाश घट अतर करे, चढती कळाए थाशे नूपरे ॥ चद्र० ॥ ६ ॥ एही चद्र प्रन्न सेवीए, अतर मदिर स्थापी रे ॥ जीव सुख आपे ततक्षणे, ज्ञान शीतळ घट व्यापी रे ॥ चद्र० ॥ ७ ॥ सपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मु ॥

कपुर हुवे अति उजळु जी ॥ ए देशी ॥

सुबुद्धि नाथ नवमा प्रनुजी, काति फटक समान ॥ एक सत धनुष्य प्रमाण छे जी, काया बहु बळवान ॥ सोन्नागी जीन तुज गुणनो नहीं पार ॥ शीव सुखनो दातार सोन्नागीजीन, मारे अवलबन आधार सोन्नागीजीन, तुज गुणनो नहीं पार ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सुबुद्धि वर्णन करुजी, ज्ञान श्री तस नाम ॥ ते ठमे नीज देहनेजी, महे नाथ आतमराम ॥ सोन्नागीजीन० ॥ २ ॥ सुबुद्धिनाथ

तस कीजीएजी, घट अंतर रहे वास ॥ उपयोगे रमे रगशुं जी, ठोडे कर्म बंधन पास ॥ सोन्नागी० ॥ ३ ॥ ऋद्धि अनंती न्नोगवेजी, खरचे उदयिक न्नाव ॥ तिम तिम तेज वधे घणुंजी, वेग त्यां समन्नाव नाव ॥ सोन्ना० ॥ ४ ॥ ससार सागर उतर्याजी, पहोच्या शीवपुर मांही ॥ सिद्ध वधुए वधावीयाजी, दीधो बहु आदर त्यांही ॥ सोन्ना०॥ ॥ ५ ॥ आणंद क्रीमा त्यां करेजी, वेशी एक रुपधार ॥ सिद्ध वधुने ज्ञान श्रीजी, न्नोगी चेतन सार ॥ सोन्नागी०॥ ॥ ६ ॥ अबाधित सुख न्नोगवेजी, सादि अनंतो काळ, ज्ञान शीतळ चित्त तीहां वस्योजी, जावुं देइ एक फाळ ॥ सोन्ना० ॥ ७ ॥ सपूर्ण. ॥

॥ स्तवन ॥ १० मु ॥

सेवक किम अवगणीए हो मल्लिजीन ॥ ए देशी ॥

शीतल जिन शितल गुण ज्ञानी, निजपर सौने जाणे॥ निज रूपे शीतलता वाधे, त्यां परने कुण आणे ॥ शीतलजीन ए अब शोन्ना सारी ॥ मुज मनने अति प्यारी ॥ शीतलजीन ए अब शोन्ना सारी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीव अनादि सिद्ध स्वरूपी, शक्ति न्नावे लाधे ॥ अव्याबाध सुखनो न्नोगी, परसगे डुख वाधे ॥ शीतल० ॥ २ ॥ परसग तेही अग्नि जाणो, चेतन गुणने बाळे ॥ दश प्राण ते पुद्गल कहीए, तेमां चेतन न्नाळे ॥ शीतळ० ॥ ३ ॥ ए परसग तुटे सुख आवे, आवे उपयोग घरमा, अनुन्नव मित्र मळे तीहां वेगे, लावे केवळज्ञान पळमा ॥ शीतळ ॥ ४ ॥

ए मनोरथ ज्ञान शीतळनो, पूरण करजो स्वामी॥ हुं तमने उपगारी जाणी, नित्य प्रणमु शीर नामी ॥ शीतळ० ॥५॥
॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ ११ मु ॥

धन्य धन्य सप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

श्रेयास जिन सेवा कीजे, त्यां अनुभव रस पीजें रे ॥ साधन ए सम अवर न दुजो, आत्म कार्य त्यां सिजेरे ॥ श्रेयास जिन सेवा कीजे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ श्री श्रेयास जिन अश स्वरूपी, समकित सरोवर तीरे रे ॥ ज्ञान जळ मान सरोवर भरीओ, खेले खेल चित्त स्थिरेरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ आत्म गुण चारो तीहा चावे, वीर्य अनतु पावे रे ॥ तिम तिम क्रीडा अधिकी थावे, क्षायक नव लब्धि त्या आवेरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ एही सिद्ध एही परमेसर, निरंजन निराकार रे ॥ ज्ञान शीतळ अनुभव अश सेवे, ते उतरे भव पाररे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ सपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १२ मु ॥

झांझरीआ मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

वासपूज्य जीन वारमाजी, मुक्ति पुरीमां वास ॥ स्वरुप रमण उपयोगशुजी, लहे पूज्य शिवरूप तास ॥ रगीला प्रीतम तुजसु अविहड नेह ॥ ए आकणी ॥गाथा॥ ॥ १ ॥ अनादि वास मिथ्यात्वमांजी, तीहा जडरूपी जीव ॥ काळ लब्ध आवे जदाजी, पामे समकित भर्जी शीव ॥ ॥ रगीला० ॥ २ ॥ तीहा घट अतर वासीयाजी, अनुभव

मंदिर मांही ॥ पूज्य पणु तीहां पामीआजी, उपयोग प्रगटयो ज्याही ॥ रंगीला० ॥ ३ ॥ अप्रमत्त पगथाळीएजी, एम गुण चेतन पामे ॥ त्यांथी चढवु श्रेणीएजी, वीतराग भावना सामे ॥ रंगीला० ॥ ४ ॥ अरिहंत पठठाण तेरमेजी, केवळज्ञानमां वास ॥ पूज्य पणुं अति वीस्तर्युंजी, मुक्तिपुरी त्यांथी पास ॥ रंगीला० ॥ ५ ॥ योग रोध करी सिद्धमाजी वास कर्यो तुमे पूज्य ॥ ज्ञान शीतळ जावुं तीहांजी, नीज आत्माने कहे बुज्य ॥ रंगीला ॥ ६ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १३ मु ॥

लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥

विमळनाथ जीनराय, कंचन वरणी काय ॥ आजहो उंची साठ धनुष्यनीजी ॥ १ ॥ विमळ श्री सो ज्ञान, बीजु सर्व अज्ञान ॥ आज हो पुद्गलने जीव जे कहे जी ॥ २ ॥ ते जीव मोही मलीन, तप जप करे थइ लीन ॥ आजहो आशा बाधे आवता काळनीजी ॥ ३ ॥ तीहां ससार स्थिर, चेतन सदाय अस्थिर ॥ आजहो वळीओ ते गळीओ थइ पऱ्यो जी ॥ ४ ॥ बांधे कर्म अनत, ए दुर्बुद्धिनो कत ॥ आजहो ए कहे हु छु संयमीजी ॥ ५ ॥ एम दीसे छे आज, सुणजो विमळ महाराज ॥ आज हो मारे तो गुरू तुज छे जी ॥ ६ ॥ तमे परख्या स्वरूप ज्ञान, कीधुं दुर्मतिनु स्नान आज हो दुखदीन नाठा ताहरेजी ॥ ७ ॥ तीहां थया विमळनाथ, झाल्यो हमारो हाथ ॥ आजहो ज्ञान शीतळनी मानो विनती जी ॥ ८ ॥ सपूर्ण. ॥

॥ स्तवन ॥ १४ मु ॥

॥ देशी ॥ चडावळानी ॥

अनत जिनपति चौदमा रे, आतमज्ञानी ध्यानी ॥ तुरग गति रग ध्यानमां रे, गर्जीत पुष्ट गज ज्ञानी ॥त्रुटक॥ गर्जीत पुष्ट गजज्ञानी नसारे ॥ उपाधि सघळी स्वरूपथी काढे ॥ तीहा शीवरूप सन्नाव समाधि, पर अनुन्नव ठेदी न्नाव व्याधि ॥ सेवो अनत जिन एह ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ अनत जिनपति ते थया रे, नहीं कोइ परना सगी ॥ निज द्रव्यनी वृत्तिए रे, एकत्व रगी अन्नगी ॥ त्रुटक ॥ एकत्व रगी अन्नगी सन्नोगी, अमधी क्षण तु रहे न अन्नोगी, राग रग तज्यो तुही स्वामी ॥ वीतराग थइ सहेज न्नाव आरामी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ अनत चतुष्टयादि गुण वर्या रे, गुण घाति करी चउ नाश ॥ अव्यावाधादि वर्या पजवा रे, अघाति कर्म त्या विनाश ॥ त्रुटक ॥ अघाति कर्म त्यां विनाश अनता समश्रेणी सिद्ध वधु वरता, कार्य पूरण कीधु स्वामी ॥ सादि अनत स्थीति तीहा पामी ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ परमानद पद शाश्वतोरे, मूळ रूपमांही देखाय ॥ आधि व्याधि जिहा नही रे, तीहा छे निरजनराय ॥त्रुटक॥ तीहां छे निरजनराय मुज प्यारो ॥ ए वीण सर्वे लागे खारो, ते कारण अतरमा वशीये ॥ स्थिर थइ त्याथी नवि खसीये ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ एहीज कारण सिद्धनुरे, ए वीण अवर न डुजो ॥ ज्ञान शीतळ करी त्या जइरे, अलख अचळ पद पूजो ॥ त्रुटक ॥ अलख अचळ पद पूजो स्वामी ॥

देवाधि देव ए छे शीवगामी, सर्व शिद्धांत तणो ए सार ॥ श्रद्धा करीने लहो भवपार ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १५ मु. ॥

॥ देशी एकवीसानी ॥

धर्मनाथजी रे देव पनरमा सुखकरु ॥ दीये देशना रे नय गरभीत ए जीनवरु ॥ एक ज्ञानमां रे नय साते तुमे भाषिया, अज्ञानमां रे चोथी नय सुधी राखीया ॥ त्रुटक॥ शब्दनय समकित पामे, मिथ्यात्व धर्मने परहरे ॥ वस्तु स्वभावे धर्म सदहे, अंश अश परगट करे ॥ वस्तु स्वभाव ते शब्द नय छे, तेमां अश नैगम भळे ॥ जीवसत्ता शुद्ध ग्राहक, ए सग्रहनय त्यां मळे ॥ १ ॥ जीव स्वभावे रे, ज्ञान उदय प्रकाशीयो, तीहां पुद्गल रे उपाधिपुर नाशीयो ॥ तेथी चेतन रे, शुद्ध थयो समाधिमयी, ए व्यवहार नय रे, मिल्यो शब्द नयने जइ ॥ त्रुटक ॥ ज्ञानध्यान उपयोगे आवे तीहां मन हाले नही ॥ ए पक्ष ऋजु सूत्र नयनो, मल्यो शब्द नयने तही ॥ शब्दनय आरुढ वृद्धि, वस्तु धर्म प्रगट पणे ॥ ध्याता ध्येय ध्यान एक तीहां, सम भावे केवळ जणे ॥ २ ॥ ए अरिहंत रे समभिरूढ नये भाविया, उपर दाख्या रे, पांच नय ते साथे लाविया ॥ हवे इहांथी रे योग रुंधीने सिद्धिवरे, लोकते रे सिद्ध शिला उपर ठरे ॥ त्रूटक ॥ तीहां एव भूत नय थावे, एम करीए सप्त नय साधना ॥ शक्ति व्यक्ति मांही भळे त्यां कहीए आराधना ॥ सिद्ध साधन शब्द नयमां, ज्ञानयोगे

जाणीए ॥ बीजी नयोगर्भित आवे, तेमा हठ नवी ताणी-
ए ॥३॥ एम सप्तनये रे वस्तु धर्म तुमे वर्या, तेथी धर्मनाथरे
अमे तमने कहीए खरा ॥ तुमे अहनीश रे मुज घट अतर
आवजो, मुज चेतना रे तुम सगे जगावजो ॥ त्रुटक ॥
एम कीधु धर्मनाथे, आव्या अनुभव मदिरे ॥ पण मुजने
मलीन देखी, बेठा नहीं कइ चित्त थिरे ॥ तीहा मुजने
प्रमोद कीजो, आणद हरख वधामणा ॥ ज्ञान शीतळ करे
विनति, वळी दर्शन देजो तुम तणा ॥ ४ ॥ सपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १६ मु ॥

शांति जिणेसर केशर अर्चित जगधणी रे ॥
के अर्चित जगधणी रे ॥ ए देशी ॥

शाति जिणेसर साहेब मुज मनमा वस्योरे ॥ के मुज
मनमा वश्योर ॥ भाव रोगनो टालण अवरन तुज जिश्योरे
॥के अवर०॥ रोग सोग सताप क्लेश निवारीयोरे ॥क्लेश०॥
थइ शाति टल्यो रोग निरोगी तु भाळीउरे ॥
निरोगी तु० ॥ १ ॥ रूप अनतु साहिब दीसे ताहरु रे
॥ के दीसे ताहरु रे ॥ तुज मुख पुनमचद हृदय हीसे मा-
हरु रे ॥ हृदय० ॥ कचन वरणी काया कचन सम दीपती रे
॥ कंचन० ॥ सेवा करतां लाभ घणो मुज आपती रे ॥ घ-
णो० ॥ २ ॥ जळचदन वरधूप दीपशु पूजीएरे ॥ दीपशु
पूजीएरे ॥ कुसुम अक्षत नेवेद्यने फळ धरी बुझीयेरे ॥ फ-
ळ० ॥ इत्यादिक शुद्ध द्रव्य शु पूजो भवि जनोरे ॥ के
पूजो० ॥ निमित उपादान समज्यां कार्य करे भवि जनोरे
॥ कार्य करे० ॥ ३ ॥ तुज गुण गाता अतर रग वधे मुनेरे

॥ के रंग० ॥ तुं उपगारी पूज्य तार कहुवुं तुने रे ॥तार०॥ तुजवीण दुजो देव न दीसे दयालुउ रे ॥ न दीसे० ॥ करुणासिंधु मनमोहन तुही, मायालुउ रे ॥ के तुही० ॥४॥ तुज भक्ति शुद्ध युक्ति मुक्तिने खेचशेरे ॥ मुक्तिने० ॥ जीव पुद्गल दोय भिन्न जाति भेद व्हेंचशे रे ॥ जाति० ॥ भेद ज्ञाननु ए काम बीजाथी न नीपजे रे ॥ बीजाथी० ॥ आतमरुप अनंत महत तीहां भजे रे ॥ महंत० ॥ ५ ॥ अनंतर आतम सिजे त्यां वार लागे नही रे ॥ त्यां वार० ॥ अनुभव मित्र चेतन शुद्ध दोय मिळे तहीं रे ॥ के दोय० आणंद लहेर अभंग रंग तीहां वधे रे ॥ के रंग० ॥ ज्ञान शीतळनुं ए काज आज पूरण सधे रे ॥ के आ० ॥ ६ ॥ ॥ सपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १७ मु ॥

॥ मरकलरानी देशी ॥

कंथुनाथ जिन पूजोजी ए प्रभु गुण नीलो ॥ दुनिआमां देव नहीं दुजोजी ए प्रभु गुण नीलो॥ द्रव्य भाव दोय भेदेजी ॥ ए प्रभु० ॥ तेमां भावपूजा अखेदेजी॥ ए० ॥ १ ॥ द्रव्य पूजाए द्रव्य उपयोगजी ॥ ए० ॥ शुद्ध चेतन नहीं संयोगजी ॥ ए० ॥ भाव पूजाये शुद्ध उपयोगजी ॥ ए० ॥ ज्हां आतमस्वरूप थयो भोगजी ॥ ए० ॥ २ ॥ द्रव्य पूजा छे चार नय शुद्धजी ॥ ए० ॥ भाव पूजाए शब्दमां बुद्धिजी ॥ ए० ॥ द्रव्य पूजा आरोपित दाखीजी ॥ ए० ॥ भावपूजा अणारोप भाखीजी ॥ ए० ॥ ३ ॥ एम

पूजा विवेके करीएजी ॥ ए० ॥ निज पर भिन्नता बुद्धि धरियेजी ॥ ए० ॥ शब्दयोगे सर्व नय सत्यजी ॥ ए० ॥ नहीं तो चउ कहीए असत्यजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ शब्दादि तरण नय भाख्याजी ॥ ए० ॥ एतो आत्मस्वरूपमां रास्याजी ॥ ए० ॥ एना सगे नैगमादि भळताजी ॥ ए० ॥ नहीं तो पुद्गलमां वरता, ॥ ए प्रभु० ॥ ५ ॥ चोथी नय सुधी मिथ्यात्व वारयोजी ॥ ए० ॥ शब्दमा समकित रुमो खाश्योजी ॥ ए० ॥ मुक्ति मारग शब्द नयथीजी ॥ ए० ॥ साधन ए विण होय कहाथीजी ॥ ए० ॥ ६ ॥ स्थिरादृष्टि शब्द नये लाधेजी ॥ए०॥ चारे दृष्टिमां मिथ्यात्व वाधजी॥ए० भावशत्रुमा मिथ्यात्व मोटोजीए० एथी जीव ससारी ओटोजी ॥ए०॥७॥ शरधा वीपरित दुख दाताजी ॥ए०॥ एना अभावे जीवने शाताजी ॥ए०॥ एम ज्ञान शीतळनी वाणीजी ॥ए०॥ गुरु वचन श्रवण करी जाणीजी ॥ ए० ॥ ८ ॥ सपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १८ मु ॥

॥ राग बगाली ॥

अरनाथजीनजी अढारमा देव, अतरयोगे मिलवा करुं शेव ॥ साहेब सांभळो ॥ हु तुमने चाहु दीनरात, न गमे मुजने वीजाथी वात ॥ साहेब सांभळो ॥ १ ॥ तुज वचन सुणवानो प्यार, तुम सगे स्थिरता करवा हु त्यार ॥ सा० ॥ तुम पासे मारे करवो रहेवास, तु दूध वीजी सघळी छाश ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमे मळो त्या मुने परमोद, रीझ मोजथी करीए विनोद ॥ सा० ॥ तुम सगे

मुज चेतन शुद्ध, तुज कृपाए थइये बुद्ध ॥ सा० ॥ ३ ॥ तुज गुणनो मुज रग अन्नग, तुज मुज वेवनु करवु एकग ॥ सा० ॥ तुजवीण बीजुं न गमे वाज्य, संसार सागर तरवा तुं जाहाज ॥ सा० ॥ ४ ॥ सुणी विनति मील्या अरनाथ, सत्ता शक्तिये त्यां त्रिभुवन नाथ ॥ सा० ॥ वात करे तुज मुज रूप एक, शक्तिमां नही कोइ अन्यनो न्नेग ॥ सा० ॥ ५ ॥ व्यक्तिमां अंतर परखीउं सार, निर्मळ समळनो न्नेद विचार ॥ सा० ॥ ज्ञान शीतळ श्रद्धा एम धार, स्थिति पाके तुं सिद्ध वधु न्नरथार ॥ सा० ॥ ६ ॥

संपूर्ण

॥ स्तवन ॥ १९ मु ॥

॥ दीठी हो प्रन्नु ॥ ए देशी ॥

मूरती हो प्रन्नु मूरती मल्लि जिणंद, ताहरी हो प्रन्नु ताहरी अनत गुणे न्नरीजी॥ केवळ हो प्रन्नु केवळ ज्ञान-दर्शन, चरण हो प्रन्नु चरण यथाख्यात मय ठरीजी ॥ १ ॥ दान लान्न हो प्रन्नु दान लान्न आत्मा अन्नेद, न्नोग हो प्रन्नु न्नोग उपन्नोग स्वगुण महीजी ॥ वीर्य हो प्रन्नु वीर्य स्फुरणा अनत, अप्रयास हो प्रन्नु अप्रयास अन्य सदाय नहीजी ॥ २ ॥ क्षायक हो प्रन्नु क्षायक लब्धि ए पांच सादी हो प्रन्नु सादि अनत न्नांगे कहीजी ॥ अव्रतक हो प्रन्नु अव्रतक कदीए न होय ॥ गुण सव्वे हो प्रन्नु गुण सव्वे त्रिविध परिणती ग्रहीजी ॥ ३ ॥ व्यक्ति हो प्रन्नु व्यक्ति न्निन्न न्नेद अनत ॥ प्रगटे हो प्रन्नु प्रगटे तेथी

परमानदताजी ॥ सुख हो प्रभु सुख ए अनंत अव्याबाध॥ लहरी हो प्रभु लहरी विलास आस्वादताजी ॥ ४ ॥ अक्षय हो प्रभु अक्षय स्थितिये गति सिद्ध ॥ अरूपी हो प्रभु अरूपी वरणादि नही तीहांजी ॥ अगुरु हो प्रभु अगुरु लघु बार भेद ॥ हाणी हो प्रभु हाणी वृद्धि गुण वृत्ति तीहांजी ॥ ५ ॥ इत्यादि हो प्रभु इत्यादि गुण अनत, धर्म हो प्रभु धर्म गुणगत स्वभावएजी ॥ गुण ते हो प्रभु गुण ते पर्याय समुदाय ॥ भिन्न हो प्रभु भिन्न कहीए हेतु उपदेशमाजी ॥ ६ ॥ वस्तुये हो प्रभु वस्तुए द्रव्य पर्याय॥ गुणनय हो प्रभु गुणनय नही सिद्धांतमांजी ॥ प्रदेश हो प्रभु प्रदेश असंख्याता दाख्य॥ तस घन हो प्रभु तस घन निवम सिद्धमाजी ॥ ७ ॥ तेहीज हो प्रभु तेही मूरती मल्लि जिणद ॥ उगणीस हो प्रभु उगणीससमा तीरथपतिजी ॥ ज्ञान हो प्रभु ज्ञान शीतळ शुद्धभाव ॥ पूजाथी हो प्रभु पूजाथी भवि लहे सिद्धगतिजी ॥ ८ ॥

सपूर्ण

॥ स्तवन ॥ २० मु ॥

॥ सांभळजो मुनिसयम रागे ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जगत गुरुराया, शुद्ध नयचित्त ठरायारे ॥ शुद्ध पर्याय रमण उपयोगे, ध्यान तुरग नचायारे ॥ मुनिसुव्रत जगत गुरुराया० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ निज सत्ता धर्म प्रगट पाया, व्यक्ति गुण पर्यायारे ॥ सेहेज स्वभावे क्षायक लब्धि, अचळ अनती कहायारे ॥मुनि०॥

॥ २ ॥ तेमां नवन्नेदे इहां दाखु, समकित परथम न्नाखु रे॥ चरण यथाख्यात वीतराग न्नावे, शुद्ध परिणतीए राखुं रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ केवळ ज्ञानने केवळ दर्शन, विशेष सामान्य उपयोगरे ॥ समय अतंर बे सिद्धांते मान्या, नयवादे एकविशेषो पयोगरे ॥ मु० ॥४॥ दान लान्न न्नोग उपन्नोग वीर्य, दाखु तस वृत्तांतरे ॥ दान देतो निज लेतो पोते, सहाय गुण गुणने करंतरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ न्नोग स्वपर्याय न्नोगवे, उपन्नोग स्वगुण वृत्तिरे ॥ स्वपर्याय गुण वृत्ति सहायी, वीर्य स्फुरणा अनती रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ ए पांच लब्धि मुज सत्ताये, अव्यक्तव्य अनादिरे ॥ ते व्यक्तव्य पणे करी आपो, तो ज्ञान शीतळ सिद्ध आदिरे ॥ मु० ॥ ॥ ७ ॥ संपूर्ण.

स्तवन ॥ २१ मु ॥

ऋषन्ननो वश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति अरीहा नमो, एथी करो गुण राग रे॥ जीव स्वरूपने ओळखो, तजो अन्य लावी वैराग रे ॥ नमि जिनपति अरीहा नमो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अन्य वस्तु जीवने पांच छे, तेमां दुःखदायी एकरे ॥ पुद्गल बंधन द्दढ छे, कर्म वर्गणा अनेकरे ॥ नमि० ॥ २ ॥ ज्ञाना वरणादि आठनो, कर्मदळ वृत्ततरे ॥ समे समे अज्ञाने बांधतो, सात आठ कर्म महतरे ॥ नमि० ॥ ३ ॥ तेथी अशुद्ध थयो आतमा, उदयिक न्नाव सयोगेरे ॥ बंधाणो वर्गणा सातमा, राग द्वेष पर उपयोगे रे ॥ नमि० ४ ॥ सं-

सार स्थिर चउगति ज्रमे, डुःख सहे वारंवाररे ॥ क्लेश करी काळ निरगमे, अह ममत्व अपाररे ॥ न० ॥ ५ ॥ निज वस्तु धर्म रूचे नहीं, अतरदृष्टि न थायरे परवस्तु धर्मे लागीउं, तीहा मिथ्यात्व सदायरे ॥ नमि० ॥ ६ ॥ सदगुरु वचनथी वेगळो, माने पुदुगलने जीव रे ॥ ड्रव्य क्रियातप आद रे, तेथी काज नहीं नहि ए शीवरे ॥ नमि० ॥ उ एम समजी अन्य सग तजो, ज्रजो ज्ञानने ध्यानरे ॥ निर्विकल्प रस पीजीए, प्रगटे अनुज्रव ज्ञानरे ॥ नमी ० ॥ ७ ॥ एह शीवसाधन आदरो, आराधो ज्रवि सतरे ॥ अन्य तजता वीर्य वाधशे, ज्ञान शीतळ एकं तरे ॥ नमी० ॥ ए ॥ सपूर्ण

॥ स्तवन २२ मु ॥

॥ साज्रळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी

नेमि प्रज्रु नीम कर्यो सही दाखु, उदयिक ज्राव नही चाखु रे॥ परवस्तु अग्राह्य चेतनने, सर्व विरति एम राखु रे॥ नेमि प्रज्रु नीम कर्यो सही दाखु० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कारण कार्य ते निज स्वज्रावे, अकारण परज्रावे रे॥ क्षय उपशम शुद्ध कारण कहीए, कार्य ते क्षायक ज्रावे रे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए विण कारण कार्य ते नाही, अरिहतने सिद्ध पदनुरे ॥ ज्रविजन समजीने आदरजो, वचन ए नेमि जीणदनुरे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ कारण ते कार्यने ध्यावे, सोही कार्यने पावे रे ॥ कारण कार्ये नहीं प्रवर्त्ते, ते कार्य रूप नहीं थावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ कारण सो कार्ये प्रवर्त्ते,

ते कारण कहेवाय रे ॥ कार्य प्रवृत्ति अण करतां, कारण एम न बोलाय रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ कार्य योग्यतानी शक्ति जेमां, ते कारण एम कहीए रे ॥ ए सत्य वचन प्रवृत्ति जोगे, नहीं तो कारण शेनुं सहीए रे ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ कारण वस्तु स्वभावे वर्ते, सोही साधन उत्सर्ग रे ॥ ज्ञान शितळ निष्पन्न कार्य तहीं, व्यक्ति अनंत अपवर्ग रे ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ संपूर्ण

॥ स्तवन ॥ २३ मुं ॥

॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

पार्श्वनाथ त्रेवीसमा रे ॥ मिता ॥ वामा राणी तस-मात ॥ पिता अश्वसेन नरपति रे ॥ मि० ॥ नील वरण ए जीन प्रख्यात रे ॥ रंगीला मिता ए प्रभु सेवोने ॥ ए प्रभु सेवो अतरगमां रे ॥ मि० ॥ नही बाह्य पारस रूप रे ॥ रंगीला मिता ए प्रभु सेवोने ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ बाह्य ते उदयिक भावठे रे ॥ मि० ॥ पूरव बध संबध ॥ कर्म जनित पक्ष बाह्यए रे ॥ मि० ॥ ते नही चेतन शुद्ध रे ॥ र० ॥ ए० ॥ २ ॥ चेतनरूप अतरंगमां रे ॥ मिता ॥ पर तजता प्रगटाय ॥ ज्ञान दीपक अनुभव सही रे ॥ मिता ॥ तिमिरांधकार भाग्यो जाय रे ॥ र० ॥ ए० ॥३॥ परभावथी न्यारापणे रे ॥ मिता ॥ अनुभवे वस्तु धर्म ॥ स्याद्वाद धर्म इहां संपजे रे ॥ मिता ॥ लहे आनंद अति पर्म रे ॥ र० ॥ ए० ॥४॥ स्वस्वभाव तस कीजीए रे ॥ मिता ॥ वर्तना ए व्यवहार ॥ भेद ज्ञान योग वर्णव्यो रे ॥ मिता ॥

सोही कारण शीवसाररे॥ र० ॥ ए० ॥ ५ ॥ ए विण अव-
रने कारण कहेरे ॥ मिता ॥ ते कल्पना सो असत्य ॥
ज्ञान शितळ, उपदेश एरे ॥ मिता ॥ सुणो नाणी संगे सदा
सतरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ सपूर्ण

॥ स्तवन २४ मु ॥

॥ मन मोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनेश्वर साहेबा मन मोहनमेर ॥ भाव वीर्य
शीव सत जीनजी गुरु मेर ॥ तुज सम, अवर न देखीयो ॥
मन०,॥ हणी शत्रु दयालु कहत ॥ जी० ॥ १ ॥ प्रथम
हण्यो मिथ्यात्वने ॥ मन० ॥ तीहा फीटयो अचेतन भाव
॥ जी० ॥ चेतन जन्म त्या कीजीये ॥ म० ॥ ए साधन
अवसर दाव ॥ जी० ॥ २ ॥ अज्ञान नातु ते समे ॥म०॥
उग्यो अतर भाण ॥ जी० ॥ हुवो प्रकाश स्वभावमा ॥
म० ॥ थया ज्ञानी अनुभवी जाण ॥ जी० ॥ ३ ॥ परण्या
सुमिती सयम श्री ॥ म० ॥ तीहा त्यागी असयम नार ॥
जी० ॥ कुमती टळी अधर्म बुद्धि ॥ म० ॥ तेना सतान
हणीआ ते वार ॥ जी० ॥ ४ ॥ कपाय पचवीशने मारीया
॥ म० ॥ हण्या विपय विकार तेवीस ॥ जी० ॥ योग च-
पळताने परहर्या ॥ म० ॥ नाठी निद्रा चढावीने रीस ॥
जी० ॥ ५ ॥ अप्रमत थयो आतमा ॥ म० ॥ स्वरूप उप-
योगवत ॥ जी० ॥ ज्ञान वीर्य तीहा वाधीयो ॥ म० ॥
टाळी उपाधि हुआ महत ॥ जी० ॥ ६ ॥ रागद्वेप मोह
भागीया ॥ म० ॥ वळी भागी परिणति अशुद्ध ॥ जी० ॥

शुद्ध परिणति पूरण थइ ॥ म० ॥ थया वीतराग भावी ए वुद्ध ॥ जी० ॥ ७ ॥ द्वादश गुणठाणे चढया ॥ म० ॥ त्रण कर्मनो तीहां विनाश ॥ जी० ॥ अनंत चतुष्ट प्रगट थइ ॥ मन० ॥ कीधो अरिहंत पदमां वास ॥ जी० ॥ ८ ॥ चार अतिशय मूळथी ॥ मन० ॥ गुणघाति खपे अगिआर ॥ जी० ॥ उगणीस देवकृत संपजे ॥ म० ॥ ए चउतीस अतिशय सार ॥ जी० ॥ ९ ॥ पांत्रीस वाणी गुणे भर्या ॥ मन० ॥ वळी नाठा दोष अढार ॥ जी० ॥ वार गुणे विराजता ॥ मन० ॥ छाजे प्रातिहार्य आठ सार ॥ जी० ॥ १० ॥ अणहुता सुर कोमीशुं ॥ मन० ॥ सदा सेवे पूरण नाण ॥ जी० ॥ जीन नाम कर्म उदय हुओ ॥ मन० ॥ तने खेरवे ए वचन प्रमाण ॥ जी० ॥ ११ ॥ क्षत्रिय कुंड पुर जनमिया ॥ म० ॥ राय सिद्धारथ कुळ चंद ॥ जी० ॥ त्रिसलानंदन गुण नीलो ॥ म० ॥ सेवे संघ समुदाय वृंद ॥ जी० ॥ १२ ॥ कचन वरणे दीपतो ॥ म० ॥ उंचा सात हाथ प्रमाण ॥ जी० ॥ बोतेर वर्षनु आवखुं ॥ म० ॥ लंछण सिंह गुण मणिखाण ॥ जी० ॥ १३ ॥ सिंहपेरे धीर एकला ॥ म० ॥ करे शत्रु विनाश ॥ जी० ॥ तुज गुण को न गणी शके ॥ म० ॥ तु पूज्य हु तु तुज दास ॥ जी० ॥ १४ ॥ अंतरदृष्टियें प्रीतडी ॥ म० ॥ कीधी जगगुरु तुजशुं अनुराग ॥ जी० ॥ ज्ञान शीतळ रीझे तुजशुं ॥ म० ॥ वीजो न गमे अन्यनो संग ॥ जी० ॥ १५ ॥ संपूर्ण

॥ कलश ॥

गाया गायारे वर्त्तमान जीन चउवीस-गाया ॥ निज स्वन्नावे अनुन्नव करवा, उपयोग स्थिरजमाया॥ तीहा चेतन रूप जिनरूप अनोपम, तेने ध्याता परमोद पाया रे॥ वर्त्तमान जीन चउवीस गाया ॥ गाया गाया रे, ज्ञान पाया रे, तीहा जीव स्वरूप उंळखाया॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए साधन सिद्ध पदनु साचु, ए वीण सर्वे काचु ॥ मिथ्यात्व हणता समकित आवे, ते न्नावे घणुं राचु रे ॥ वर्त्त० ॥२॥ स्तुति करी गुण रागे करीने, तीहां आणंद हरख सवाया॥ चढतान्नावे स्तवन कीधां, अनुन्नवगम्य अर्थ रचाया रे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ उंगणीसे उंगणपचास साले, प्रथम अपाढ गुरुवारे ॥ पूरण चोवीसी अमावास्याये, कीधी अल्प बुद्धि अनुसाररे ॥ वर्त्त० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ पूरण मारा, जीन गुण न्नक्तियें गाया ॥ प्रमोद न्नावना रुडी न्नावी, ज्ञान शीतळ शुद्धता पाया रे ॥वर्त्त०॥५॥ संपूर्ण ॥ सर्व गाया१०१

इति चोवीशी समाप्त

अथ चैत्यवदन अधिकार

॥ चैत्यवदन ॥ १ ॥ ल ॥

॥ श्री सिद्धाचल सिद्ध क्षेत्र ॥ ए देशी ॥

प्रणमी श्री गुरु रायने, हुकम आज्ञा ग्रही जे॥ द्रव्य पर्यायने जाणवा, न्नेदज्ञान घट लीजे ॥ १ ॥ द्रव्य अविचळ रूप छे, ध्रुवता षट्विध जेह ॥ गुणपर्याय अन्नेदता,

अजव्य स्वजाव तेह ॥ २ ॥ अपलटण धर्म एहनो, पलटे नही निरधार ॥ कार्य प्रवृत्ति नही, अव्यक्तव्य विचार ॥ ॥ ३ ॥ ड्रव्य शक्ति धर्म ए कह्यो, हवे कहुं पर्याय धर्म ॥ स्याद्वाद इहां सपजे, ए जिन वचननो मर्म ॥ ४ ॥ कार्य प्रवृत्ति करे, उपयोग जाव स्वजाव ॥ व्यक्ति गुण गुणनी जिन्नता, सोही जेद स्वजाव ॥ ५ ॥ उत्पाद् व्यय गुण वृत्तिये, अनतो जाख्यो ॥ अजिनव उत्पाद छे, व्यय पूरव दाख्यो ॥ ६॥ उत्पाद व्यय करे कार्यने, ध्रुवता कारणमांही॥ एही जव्य स्वजाव कह्यो, मुळ स्वजाव छे त्यांही ॥ ७ ॥ पर्याय नय धर्म ए सही, शब्द नयनो पक्ष ॥ शीवसुखदाता एह छे, अनुजव ज्ञान प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ एह धर्मने जाणवा, हेतु छे ड्रव्य जाव ॥ ड्रव्य हेतु सद्गुरु जला, जावे क्षय उपशम नाव ॥ ए ॥ पूरण कार्य जव हुवे, त्यां लब्धि क्षायक जाव ॥ ज्ञान शितळने चित्त वस्यो, ए शीव साधन दाव ॥ १० ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ २ जु ॥

॥ सेवो पास संखेश्वरो मन्न शुद्धे ॥ ए देशी ॥

सुधानंद सिद्ध साधना साध्यरामी, वस्तु धर्म आराधना शुद्ध पामी ॥ अनुजव योगी सहज गुण जोगी, कलंक कर्म त्यागी थया ते निरोगी ॥ १ ॥ कहु तारा विचार अतः मांही खोजी, चिदानद मोजे रमे जेम तेजी ॥ अनादि मिथ्यात्वी अचेतन जेवो, अमोवास रात्री काळी अध तेवो ॥ २ ॥ समकित शुद्ध पामे जीहां जास, तीहां

चन्द्रोदय बीज कला प्रकाश, ॥ मिथ्या मोह तिमीर, अणा-
जोग नाश, अनतानु कषाय चोदय नाश, ॥ ३ ॥ देश,
विरति आवे बार व्रत जावे, अप्रत्याख्यानी चोकडी त्यां,
अभावे ॥ लीए सद्गुरु सगे महा व्रत रगे, प्रत्याख्यानी,
चउ त्या हणे उमगे ॥ ४ ॥ अप्रमत्त सदा प्रमत्तन कदाइ,
श्रेणिगत चेतन त्यां निर्मळाइ ॥ सजलना कषाय आणने
छेदी छेदी, आशाति पद कद मूळथी उछेदी ॥ ॥ ५ ॥
वेद विषय अभिलाष अग्नि, समावे छेदे नावे, गर्भवास र-
जनी ॥ रह्यो लोभाणु उदय ग्राम दहम, हणे वीर्यवत करे,
बाळी भस्म ॥६॥ हणयो मोहराय सत्ताथी छेदाय, त्यां अशुद्ध
परिणत्तीनो क्षय थाय॥ परिणति रागादि अनादिनी टाळी,
वीतराग परिणति त्या अजवाळी ॥ ७ ॥ यथाख्यात चा-
रित्र सपन्न सामि, रमे निर्विकल्प ध्याने अनामी ॥ वीत्यो
राग वेरागी क्षीण मोह त्यागी, त्या करे त्रण कर्म चकचूर
जागी ॥ ८ ॥ लहे केवळनाण दर्शन अरिहंत, उद्योत करे
व्यक्ति धर्म अनत ॥ आयु जेटलु तेटलो योगवास, छेदे
अत छेके करे जोग नाश ॥ ९ ॥ योगातित सिद्ध सम
श्रेणी सधावे, पोचे शीव धाम समय एक पावे॥ करे त्या
स्थिति जहा सादि अनत, समावे ज्योति ज्योत जापे
सिद्धत ॥ १० ॥ अनुभव करी साधना सिद्धभावी, चेतन
सद्भ कीधो स्वरुपे रमावी ॥ आतम नीरखी परखी मूळ
रूप, ज्ञान तिलक वदे सिद्धराय भूप ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ३ ॥ जु ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

समकितनुं मूळ ज्ञान आराधी, समकित शुद्ध त्यां ज्ञान समाधि ॥ ज्ञान फळ वीरती फलमुक्ति, विवेके करो साधना शुद्ध युक्ति ॥ १ ॥ अनुभव लावो अंत मां रमावो, मनस्थिर त्यां उपयोग जमावो ॥ करे ते जूदीइ वस्तु भेळ-खाइ, पुद्गल जीव भेदी डुफार देखाइ ॥ २ ॥ आतम परखो परमातम सरखो, सत्ता भिन्न चिन मूरति नीरखो ॥ तीहां चेतना वीर्य ते एकठामे ॥ करे ग्रंथि भेद त्यां समकित पामे ॥ ३ ॥ समकित मूळ वीरति जोग लेवो, चिदानंद वासी स्वरूपने सेवो ॥ स्वरूपे ज्ञान उपयोग मिलावो, तीहां गुणठाण अप्रमत्त पावो ॥ ४ ॥ ज्ञान उपयोगथी अळगो चाले, तीहा प्रमत्त गुणठाणु खाळे ॥ करे तेज मद ज्ञान गुण केरो, वधे तेज उपयोग भळता भलेरो ॥ ५ ॥ ए वीरति ठाण साधन पाया, तजी ग्रंथि अन्यत्र निर्ग्रंथराया ॥ करी साधना शुक्ल श्रेणि आरोहे, तिहण उपयोगे चरण स्थिर सोहे ॥ ६ ॥ अनुभवे आतम धर्म अनंतो, करे भेद छेद अभेद लहंतो ॥ निर्विकल्प भाव आतम पाया, शुद्ध परिणतिमां चेतन आया ॥ ७ ॥ एकत्व वीतर्क शुक्ल ध्यान ध्याया, सद्भाववृत्ति चेतन रमाया ॥ पामे नाण दर्शण केवल ताजा, सकल शिरोमणि अरिहंत राजा ॥ ८ ॥ अनंत धर्म शक्ति काळ अनादि, व्यक्ति ए लहे ते समय दिन आदि ॥ असंख्य प्रदेश निरावर्ण पाया, त्यां निर्वाण

सिद्ध निरजन राया ॥ ए ॥ सादि अनत भग सिद्ध सोहावे, कार्य रूपे तेही पोतेज थावे ॥ मूळ स्वभाव अचळ अविनाशी, परमानद भोगी थया शीव वाशी ॥ १० ॥ मुक्ति साधन करे आतमज्ञानी, समकित विरती लहे विज्ञानी ॥ बाह्य ज्ञान विरति पेहेले गुणठाणे, साधन सिद्धनु ज्ञान शितळ जाणे ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ४ थु ॥

॥ विमळ केवळ ज्ञान कमळा ॥ ए देशी ॥

सिद्ध खेत्र पचमी गति मुक्ति, परिवह्म केवळ ज्ञान॥
क्षायक चरणने वीर्य अनतु ॥ नमो सिद्ध निरजन ॥ १ ॥
चिन्ह मूर्त्ति अज अविनाशी, निकलंक केवल दर्शन ॥
शीव परमातम परम योति, नमो सिद्ध निरजन ॥ २ ॥
अव्याबाध अरूपी अमूर्त्ति, अखरु अटळ अवगाहन ॥
अनाश्रित अनत गुण मन्डित, नमो सीद्ध निरजन ॥ ३ ॥
अगुरु लघु निर्मळता व्यक्ति, पूर्ण परम पद परधान ॥
परमेश्वर निर्वाण पवित्री, नमो सिद्ध निरजन ॥ ४ ॥
गुण पर्याय स्वभाव अनता, व्यक्ति सोनी भिन भिन ॥
ते वस्तु गत धर्म अनतो, नमो सिद्ध निरजन ॥ ५ ॥
अनत धर्म अनतो आनद, अचळ अतिंद्रिय निधान ॥
ते परमानद लहरी भोगी, नमो सिद्ध निरजन ॥ ६ ॥
एक सिद्ध तिहा सिद्ध अनता, योतिमा योति समासन ॥
नीज नीज रूपे भिन्नता सोनी, नमो सिद्ध निरजन ॥ ७ ॥
अनादि अनत ए सिद्ध सेवो, पूजो ध्यावो तर ध्यान ॥
ज्ञान शितळ तीहा केवळ पामो, नमो सिद्ध निरजन ॥ ८ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ५ मु ॥

वस्तु स्वन्नावने जाणवा,अनुन्नव उपयोग रंग॥ निज पर सत्ता न्निन्नता, एही ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ पर संगे उपयोगता, एही अशुद्ध आचार ॥ साधन बाधक फळ दीए, तेथी स्थीर संसार ॥ २ ॥ चेतन जब वळीउ हुवे, वीर्य स्फूरणा पाय ॥ विन्नाव उपयोग परिणमन, पर परिणति ठेदाय ॥ ३ ॥ एहीज इच्छा माहरी, परअनुन्नव क्षयथाय ॥ शुद्ध परिणतिमां वरी, निर्विकल्प रस पाय ॥ ४ ॥ अनुन्नव स्थिर सहेज न्नावमां, सहज संवर प्रकाश ॥ आश्रव रोध शुद्ध निर्जरा, कर्मघन तिमिर विनाश ए ॥५॥ स्वन्नाव चेतनता, व्यक्ति धर्म अनंत ॥ अति निर्मळ विशुद्धता, एही सिद्ध महंत ॥ ६ ॥ निरंजन निराकारए, अगम अनोपम रूप ॥ अबाधित आनंदमां, ज्ञान शीतळ गुण न्नूप ॥ ७ ॥

॥ अथ स्तुति अधिकार. ॥

॥ सिद्धचक्रजीनो थोय जोडो १ लो ॥

॥ गोतम बोले ग्रथ सन्नारी ॥ ए देशी. ॥

सिद्धचक्र वडु मनरंगे, नवपद न्नावना न्नाव उमगे; आत्म स्वन्नावना सगे ॥ पेहेलो अरिहंत पद अवकाश, गुण घाति चउकर्म विनाश, अनंत चतुष्टयी वास ॥ ए पद सयोग अयोगमां धारु, योगातित सिद्धपदमां विचारु, सकल शिरोमणि प्यारुं ॥ आचार्य उवज्झायने साधु, प्रमत्त अप्रमत्त गुणमां लाध्यु, शीवपद साधन वाध्युं ॥ १ ॥ द-

गणनाण चरण तप तपिया, क्षायक समकित सुधु जपीया, वेदक अवसर खपीया ॥ तीहा चेतन समभावनो रगी, आतम गुण श्रेणी द्रढ जगी, निर्विकल्प एकगी॥ रागद्वेष मोह सव भागे, अशुद्ध परिणति अळगी लागे, क्षायक चरण तीहां जागे ॥ वीतराग क्षीण मोह दुवादशम, त्यां त्रण कर्म वाळी करे भस्म, सविसत परमानद रश्म ॥२॥ ज्ञान वोध अनुभव विण नाही, अनुभव विण पर ठोके नाहीं, पर ठोके समकित त्यांही ॥ धर्म अनतनु बीज ए प्यारु, सुख दु ख सरखु लागे खारु, भेद ज्ञान वीण अधारु ॥ अनुभव शुद्ध घट अतर जागे, वध सत्ता कर्म चेतन त्यागे, त्यां रागद्वेष मोह भागे॥केवळनाण दर्शण तीहां पामे, अनतु लोकालोक सव सामे, ते ज्ञान धर्म हित कामे॥३॥ बीजा पदमा ते सिद्ध कहीए, वाकी आठ सिद्ध साधन ग्रहीए, अरिहत सभीरुढे लहीए ॥ आचार्य ते पचाचारी, उपाध्याय पढे श्रुत धारी; साधु विरति वलिहारी ॥ दर्शण सामान्यने ज्ञान विशेष, उपयोग स्थिर त्या चरण लहेश, तप निर्जरा प्रवेश ॥ इम नवपद सिद्धचक्रने पूजे, सूरनर इद्र तीहां दिल रीझे, ज्ञान शीतळने सीझे ॥ ४ ॥

थोय जोडो ॥ २ ॥ जो ॥

॥ वीरजीणेसर वदिए ए प्रगटयो वीरगुण जासतो
॥ ए देशी ॥

शुद्धानद निज वदिये ए, परम देव प्रधानतो ॥ मोक्ष कारण एह छे ए, उपादान रुपी रीततो ॥ निमित्त कारण

देवगुरु कह्या ए, जीन वचने दृढ चित्ततो ॥ शक्ति जाव प्रणमन करीए, व्यक्ति सनातक सिद्धतो ॥ १ ॥ वस्तु स्वज्ञाव सिद्ध साधनाए, रमण स्थिर गुण पर्यायतो ॥ निर्विकल्प रस पीजीये ए, ज्ञान अन्नेदता पायतो ॥ ज्ञाव संवर शुद्ध निर्जराए, कर्म अनंत क्षय थायतो ॥ निर्मळ निरंजन बुद्ध थइए, सर्व संत सिद्धरायतो ॥ २ ॥ केवळनाण दर्शण लहीए, धर्म दान दातारतो ॥ हित उपदेश ज्ञव्य जीवने ए, करता वारवारतो ॥ वोधि वीज विरती लहे ए, नरनारीना वृंदतो॥ गणधर सूत्र दुवादश रचे ए, ते ज्ञान ज्ञाण पवित्रतो ॥ ३ ॥ सर्व देवनो देव ठे ए, निजातमे शुद्ध सिद्धतो ॥ सूत्रग्रंथनी साख्यथीए, गुरु वचने परतिजतो ॥ ज्ञान शीतळ जुए तेहने ए, आगम अनोपम रूपतो ॥ सेवे पूजे समकितिए, देव देवांगना ज्ञूपतो ॥४॥

थोय जोडो ॥ ३ जो ॥

॥ प्रह उठी वंदु ऋषज्ञदेव गुणवंत ॥ ए देशी ॥

सिद्ध बुद्धने वदुं, नीज रूप निहाळी ॥ उपयोगे ज्ञावु, वोधि वीज तीहां ज्ञाळी ॥ शुद्ध श्रधा साची, चिद घन ज्ञोग संयोग ॥ उपाधि हणतां, परमातम निरोग ॥१॥ रोग शोग दुःख कापे, महा मोह मल ज्ञागे ॥ ज्ञान सुज्ञट वळीउ, ध्यान अग्नि तीहां जागे ॥ कर्म काष्टने वाळे, तीहां शितळता वाधे ॥ परमानंद ज्ञोगी, सर्व सिद्धता साधे ॥ २ ॥ अरूपी अवीनाशी, अव्यावाध अनंत ॥ निरमळ निरजन ॥ अखंकित महत ॥ अचळ

अनोपम, निराकार शीवसत ॥ इत्यादि अनतु, अनुभव ज्ञान लहत ॥ ३ ॥ योग रोध अयोगी, सेलेशि करण अकप ॥ आयुष्य अंत छेदे, देव देवीना संप ॥ उच्छवनु कारण, निर्वाण मगलिक गावे ॥ ज्ञान शीतळ हरखे, ज्योतिमां ज्योति समावे ॥ ४ ॥

॥ थोय जोडो ॥ ४ ॥ थो ॥

॥ सखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥

वीतराग अरिहत पूजीए, केवळ नाण दर्शन लीजीए ॥ कर्म कलक सव परहरी, निकलक कन्या सिद्ध वधु वरी ॥ १ ॥ भेदज्ञानी अनुभवी आतमा, निजपर सत्ताभीन्न महातमा ॥ क्षपक श्रेणी आरोह ध्यानातमा, सवि जैन थया सिद्धातमा ॥ २ ॥ षट्द्रव्य वस्तुने ओळखी, गुण पर्याय स्वभाव लक्षण लखी ॥ परभाव अजीव अकारणी, आतम ज्ञानी धर्म धारणी ॥ ३ ॥ एही देव परमातम कीजीए, सेवे सुरनर इन्द्र मन रीजीये ॥ तीहा ज्ञान शितळ जश लीजीए, परमानद मय रस पीजीए ॥ ४ ॥ इति स्तुति अधिकार सपूर्ण

॥ अथ स्तवन अधिकार. ॥

स्तवन ॥ १ ॥ लु ॥ समकितनु ॥

॥ तुम तजकर राजुल नारतज्या सव घर रे ए देशी ॥

धन्य धन्य दिवसने धन्य घमी छे आजे ॥ समकित गुण पायो सिद्ध हुओ निज काजे ॥ मिथ्यात्वने हणीओ

नणीओ ज्ञान समाजे॥जरु चेतन लक्षण भिन्न भिन्नता ठाजे॥धन्य धन्य दिवसने॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ चेतन उपयोगे निज स्वभावमां देखे ॥ तव उदिक भावनो भोग रमण उवेखे ॥ इहां मुक्तिपुरनो पंथ वहे सिद्ध लेखे ॥ अविनाशी चेतनराम निरजन पेखे ॥ धन्य० ॥२ ॥ निज द्रव्य गुण पर्याय स्वभाव शुद्ध थावे ॥ तीहां मोहमल्ल ओर रागद्वेष डुर जावे॥ घटअतर भेद ज्ञान जग्यो शुद्ध भावे॥ पुनरपि कर्मनो वध इहां नहीं पावे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ अनुभव विवेक भयो अध्यातम भावे ॥ चेतन गुण समकित शुद्ध आविरभाव पावे ॥ धन्य धन्य ते समये काळ प्रमोदित गावे ॥ पटराणी समता संग चेतन साथ थावे॥ ॥ ४ ॥ इम निश्चय समकित परम निधान चित भाव्यो ॥ पामवो ठे एहीज सार उमेद मन आव्यो ॥ जे पाम्या ठे निरधार भर्मने गमाव्यो ॥ कहे ज्ञान गितळ शुद्ध चेतन तद्रूप पाव्यो ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन २ जु ज्ञाननु ॥

॥ शत्रुजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

ज्ञानने आत्म स्वरूप जे जाणे, ते निश्चय नय ज्ञानी रे ॥ ए विण सर्व पदारथ जाणे, ते व्यवहार नय ज्ञानी रे ॥ ज्ञान पद सेवो रे ॥ ज्ञान चेतन सद्भाव, आनद पद लेवो रे ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए वे पक्षनो पटतर ऊजो, वीवरीने इहां दाखुं रे ॥ विवेक ग्रही श्रोता जन सुणजो; अनुभव रस शुद्ध चाखु रे ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ ठाणांग

सूत्रे पेहेले ठाणे, वीर प्रजुनु वचनरे ॥ एक जाण्यो तेणे सर्वे जाण्यु, निश्चे शुद्धातम धन्यरे ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ आत्म स्वरूप अजाण अनाणी, मिथ्यात्व अणाजोग उदे वर्त्तेरे ॥ वाकी सर्व जाण थइ वेठो, ते नहीं ज्ञानी महंतरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ए सूत्रे इत्यादिक जो जो, परखी ज्ञानी ग्रहजोरे ॥ अज्ञानी सगत ठोमीने, चेतनराय सग ज्ञणजोरे ॥ ज्ञान० ॥५॥ व्यवहार नय नाणी दुन्नेदे, तेह स्वरूपने ज्ञावुरे ॥ रमण उदयिक जम दृष्टियें जोतो, तजवो ते चित्त लावुरे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ नय व्यवहार वीजो न्नेद जाणी, वस्तु स्वन्नावमा देखेरे ॥ उदयिक ज्ञावदृष्टि नहीं करता, त्या साधन शुद्ध लेखेरे ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ निज उपयोगे परिक्षा कीजे, ज्ञानी सग करीजेरे ॥ अतरदृष्टि अनुज्ञवी नाणी, तेहनु वचन सुणीजेर ॥ ज्ञान० ॥ ८ ॥ ए नाणी सग कृण नहीं तजवो, परमपूज्य चित्त ज्ञणवोरे ॥ आतम ऋद्धि अनती देखाके, तीहां परमानद वरवोरे ॥ज्ञान० ॥ ए ॥ परमानद पद आत्म अन्नेदी, सहजानद स्वन्नावेरे ॥ तीहा मुक्ति ठे चेतन तारी, कर्म रहित सद्न्नावेरे ॥ ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ ए साधन उपयोग नाणमा, रमतां लब्धि जागेरे ॥ ते कारण ज्ञान पूजी वदी, ज्ञान शीतळ नाण मागेरे ॥ ज्ञान० ॥ ११ ॥

॥ स्तवन ॥ ३ जु ॥ शत्रुजयनु ॥

साज्ञळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी

जागोने मारा अतर जामी, शत्रुजय गीरि चढिये रे ॥

मनुष्य जन्म नव सफळो कीजे, आदि जिणद पाये पमी-ये रे॥जागोने मारा अंतर जामी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ ॥ १ ॥ जागोने चेतन जम वेहेचीने, निज स्वरूप निहाळो रे ॥ रत्न त्रयी चेतन गुण प्रगटे, समकित मूळ सन्नाळो रे ॥ जा० ॥ २ ॥ जात्रा सफळ समकित गुण आदे, संवर निर्जरा वाधे रे ॥ श्रद्धा नासन रमण उपयोगे, परमानंद पद साधे रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ सफळ जन्म शंत्रुजय नेटये, निमित्त उपादान हेतु नेदे रे ॥त्यां विषय कषाय नव वीजक तजीए, नजीए श्री आदि जिणद रे ॥ जागो ॥४॥ आदि जीणेसर मेरुदेवानदन, नान्नीराया कुळचद रे ॥ पूर्व नवाणुं वार शत्रुंजय गीरि, समोसरीया जीनड रे ॥जागो० ॥ ५ ॥ तीर्थपति गीरिराय सेवीने, सिद्धा साधु अनत रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे तीरथ सेवो, गुण निष्पन्न महत रे ॥ ॥ जा० ॥ ६ ॥

॥ स्तवना ॥ ४ थु ॥ श्री गीरनारजीनु ॥

॥ देशी ॥ उपर प्रमाणे

वाळ वह्मचारी जिनद पदधारी, सेवे सुरनर वरइंदारे ॥ गीरनार गीरि नेमि नाथजी विराजे, नेटतां टळे नव फदारे ॥ वाळ वह्मचारी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ वाळ ब्रह्मचारी विषय निवारी, नि स्नेही गुण रायारे ॥ सचित्त पुद्गल नोग कर्म क्षीण जाणी, लेवा सयम सहेसावन आयारे ॥ वाळ० ॥ २ ॥ जिणंद पदधारी राग द्वेष निवारी, घाति कर्म क्षयकारी रे ॥ सहसावन केवळनाण

प्रगटावी, कल्याण मंगळ जयकारी रे ॥ वाळ० ॥ ३ ॥ इन्द्रादिक सुर असरय कोमी आवे, सम वसरण विरचावेरे॥ पर्षदाबार मळे तीहा वेगे, देशना जीनजी सुणावे रे ॥ वाळ० ॥ ४ ॥ तहा गणधर पद स्थापे जिनजी, रचे द्वादशागी सिद्धांतरे ॥ केइक वोधि बीज लान्न पामे, व्रत लीये शात दांत रे ॥ वाळ० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका साधु साधवी, सघ चतुर्विध साचो रे ॥ आज्ञा नेमि जिणदकी धारी, लहे परम पद जाचो रे ॥ वाळ० ॥ ६ ॥ इम तीर्थ स्थापे ते जीनजी, समुद्र विजय कुळचद रे ॥ ससार सागर पार उतारे, नरनारीना वृदरे ॥ वाळ० ॥ ७ ॥ गीरनार गीरि नेमि नाथजी विराजे, यात्रा करो नरनारी रे ॥ सुकृत ए सम अवर न दुजो, मिथ्यात्व मोहनीवारी रे ॥ वाळ० ॥ ॥ ८ ॥ नेटता टळे न्नवफदा ए साचो, आतमज्ञाने राचो रे॥ शुकल शुकल पर्याय ग्रहीने, शुद्ध परिणतिमा नाचो रे ॥वा०॥ ॥ ९ ॥ अयोगी गण अत ग्रहीने, योगातित पद लीधो रे ॥ समश्रेणी ते पाचमी टुके, आत्म प्रदेश घन कीधो रे ॥वाळ० ॥ १० ॥ गीरनार गीरिपर नेमि जीणदकी, कल्याणक त्रण न्नूमि गाइरे ॥ ज्ञान शीतळ गुणरागे फरसी, अतर आतम पाइरे ॥ वाळ० ॥ ११ ॥

॥ स्तवन ५ मु तारगाजीनु ॥

॥ राग रामग्री ॥ देशी कम्खानी ॥

पंथ जीनराजनो अजित महाराजनो, अतर दृष्टिए दूर दीठो ॥ तेह अनुन्नव करी, दाखु नीज हित जाणी,

द्राक्ष साकर थकी अतिय मीठो ॥ पथ जीनराजनो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पथ नीज द्रव्यनी वृत्तियें अनुन्नवे, द्रव्यपर अनुन्नव दूर करवो ॥ रमणता चेतन गुण पर्यायमां, साध्य साधन पणो तीहां वरवो ॥ पंथ० ॥ २ ॥ सवर निर्जरा तेहने कीजीए लीजीए रत्नमयी सार मेवो ॥ निर्विकल्प एकत्व अन्नेदमा, गुण पर्याय स्वन्नाव लेवो ॥ पथ० ॥ ३ ॥ शुद्ध परिणतीए चेतना परिणमी, इद्रि योगादि उपयोग खूटयो ॥ शत्रु मोहादि परिवार सयोगता, आत्म प्रदेश रहेवास त्रूटयो ॥ पथ० ॥ ४ ॥ मंगळ कल्याण आनद पद सग्रही, सादि अनंत न्नग सिद्धि गामी ॥ गुण पर्याय स्वन्नाव अनंतमां, आनद लहरी विलसंत पामी ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ परम पद पामवा पंथ ए अनुन्नव्यो, स्थिर श्रद्धाए निरधार कीधो ॥ तारंग तीर्थे अजित जिन न्नेटतां, रुदीयें अंत. अमृत पीधो ॥ पथ० ॥ ६ ॥ कारणे कार्य निष्पत्ति कही साधना, उपयोग न्नाव सहाय वरतां ॥ ज्ञान शीतळ समकीतादि गुण सपजे, चित्त रमे रहस्य प्रमोद करतां ॥ पथ० ॥ ७ ॥

॥ स्तवन ॥ ६ ३ ॥

॥ न्नोयणी श्री मल्लिनाथजिनुं ॥

मल्लिनाथ शीव साथ सार्थवाह कहीएरे ॥ सघ चलावे सिद्ध तीर्थ पति सहीयेरे ॥ सघ चतुर्विध समकिती न्नवि लहीयेरे ॥ अतर उपयोगवंत चेतन गुण

ग्रहीये रे ॥ मल्लि० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ चोथाथी चउद-
मा लगे सघ कहीये रे ॥ श्रावक श्राविका सार पचम
गण वहीएरे ॥ प्रमत्त अप्रमत साधु साधवी त्यागी लही-
ये रे ॥ पूरण आज्ञावत व्यवहार मुख्य रहीये रे ॥ मल्लि०
॥ २ ॥ उपरांत शुद्ध व्यवहार ठे ज्ञानी ध्यानी रे ॥
मुख्यता निश्चय साथ दशम अत गणी रे ॥ त्याथी यथा-
ख्यात सयमी मोह हानी रे ॥ साधन आत्म अन्नेद अनत
गुण ज्ञानी रे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ संघ चउन्नेद समुदायनो
प्रवाहेरे ॥ प्रयाणको मल्लिनाथ समाधि स्वन्नावे रे ॥ मार्गे
शत्रु मेहेवासी तीहां आवे रे ॥ सैन्य तणो नही पार
अतुल बळ दावे रे ॥ मलि० ॥ ४ ॥ अनादि मिथ्यात
अनंतानुबधि न्नट बळीआरे ॥ देखी जिनपति साथ
न्नाग्या थइ गळीयारे ॥ शत्रु सैन्य झांखु थयु जरा न्नरीया
रे ॥ शुक्ल ध्यान ज्ञान आवे मोह राय जळीआ रे ॥
मल्लि० ॥ ५ ॥ दष्टात एक आपु न्नलु उपयोगे रे ॥ काष्ट
उधेइ वळगे जिम सयोगे रे ॥ काष्ट सत्ता प्रगटे जदा
तव न्नागे रे ॥ अग्नि जोर तीहां वाधे उधेइ नही लागे
रे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ उपनय करशु तेहनो चित्त देइरे ॥
अज्ञान योगे कर्म ग्रहे गुण खोइरे ॥ जीवाजीव सत्ता
निन्न जाणतां जूदाइरे, क्षायक लब्धि प्रगटया कर्म जळा-
इरे ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ चरण यथाख्यात पाम्या अत गण
दशमे रे, त्रण कर्मनो घात क्षीण मोह हुवा दशमे रे ॥
शुद्ध परिणति रीझे चेतनराय वशमे रे ॥ अनत चतुष्टी

उद्योत परमानंद रङ्गमे रे ॥ म० ॥ ७ ॥ सैलेशि करण स्थिर थंज्ञ पुद्गल योग रुंधी रे ॥ योगातीत स्वज्ञाव लहे तव शुद्धि रे ॥ ज्ञाग एक पोलाण घटे घन ज्ञाग द्वी रे ॥ एक समय समश्रेणी लोकाग्रे सिद्धिरे ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ गुणपर्याय स्वज्ञाव अनंत रमंत रे ॥ निज निज व्यक्ति ज्ञिन्न परमानंदवंतरे ॥ आनंद लहरी विलसंत ज्ञंग सादि-नंत रे ॥ निमित्त कारण मल्लिनाथ ज्ञंग सादि संत रे ॥ मल्लि० ॥ १० ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ ज्ञाख्यो सिद्धांते रे ॥ गायो निज गुण हेते सुणो सवि संतरे ॥ तरण तारण जिन जहाज निमित्त वळवंतरे ॥ उपादान संयोगे सेवो गुणवंतरे ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥ प्रज्ञावतीनो नद सेवे सुर वृंदरे॥ कुंज्ञ नरपति कुळ चंद पूजे पाय नरिंदरे॥ जन्म महोच्छव सुर इंद्र करे मेरु गीरींदरे ॥ उलट अंग न माय प्रसन्न चित्त चंदरे म.१२ सहस पंचावन आयुवरण नील कायरे॥ पंचवीस धनुष्य प्रमाण, लंछन कलश पायरे ॥ मिथिला नयरीए जन्मीया जीनरायरे ॥ समेतशीखर निर्वाण कर्मथी मुकायरे ॥ मल्लि० ॥ १३ ॥ ओगणीसमो जिनेंद्र चउव्रत धारी रे ॥ छद्मस्थ काळ दीन एक घातिकर्म हारी रे ॥ केवळनाण दर्शण पामीने उपगारी रे ॥ बोधि बीज दातारी शीव सुखकारी रे ॥ मल्लि० ॥ १४ ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ यथारथ कीधो रे ॥ आतमरूप नीहाळी अनुज्ञव पीधो रे॥ ज्ञोयणी नगरमां बीराजे दर्शन लाज्ञ लीधो रे ॥ ज्ञान शीतळ ए साथ मळ्यां काज सिद्धो रे ॥ मल्लि० ॥ १५ ॥

॥ स्तवन ७ मु श्री ऋषभदेव स्वामीनु ॥

॥ प्रणमु पद अढारमुरे लाल ॥ ए देशी ॥

आदि जिणेश्वर पूजीयेर लाल, स्नान करी पेहेरीये चीररे ॥ केशरीया लाल ॥ जीन मुद्राने निहाळीएरे लाल, अगे मोर पीठी कीधरे ॥ केशरीया लाल ॥ आदि जिणेश्वर पूजीयेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ त्रिकरणयोगे स्थिरता करीरे लाल ॥ करीये न अन्य वीचाररे ॥ के० ॥ उपयोग स्वरूपें जोमीयेरे लाल ॥ रमण वदंतर धाररे ॥ के० ॥ आ० ॥ २ ॥ पचामृतें पखाळीयेरे लाल ॥ करीये जळ अभिषेकरे ॥ के० ॥ वालाकुची रुमी कीजीयेरे लाल जळधारा भक्तीनो विवेकरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ३ ॥ अग लोहणां त्रण कीजीये रे लाल॥ बरास लेप अगे थायरे॥ के० अत्तर केवमो गुलाबशुंरे लाल ॥ पूजीये त्रीभुवनरायरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ४ ॥ धूपदशांग उखेवीये रे लाल ॥ केशर भाकु घोळी भेळरे ॥ के० ॥ मृगमद कस्तुरी तेहमां रे लाल ॥ अरचो नव अगे रगरेलरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्प चपोने वळी मोगरो रे लाल ॥ जाइ जुइने गुलाबरे ॥ के० ॥ हार उत्तम ताजा पुष्पना रे लाल ॥ ठवो प्रभु कठे भरी ठावरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ६ ॥ दोय शिखानो कीजे दीवमोरे लाल ॥ पूरीये मांही ताजु घृतरे ॥ के० ॥ अखरू दीवो प्रभु आगळे रे लाल ॥ राखीये सदा भक्तिवत्तरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ७ ॥ अक्षत अणी शुद्ध उजळारे लाल॥ साथीयो कीजे नदावर्त्त रे ॥ के० ॥ उपर श्रीफळो मूकीने रे लाल ॥

मोक्ष फळ मागो महंतरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ८ नैवेद्य सुखडी बहु जातनी रे लाल ॥ थाळ भरी मुको सनमुखरे ॥ के० अणहारी पद जाचीयेरे लाल ॥ लहीये अव्याबाध सुखरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ए ॥ इत्यादि द्रव्यपूजा करी रे लाल ॥ करो नाटक गीत ज्ञानरे ॥ के० ॥ ज्ञान शीतळ भक्ति गुणे रे लाल ॥ लहीये स्वर्ग एक तानरे ॥ के० ॥ आ० ॥१०॥

॥ स्तवन ८ मु श्री शातिनाथनु ॥

मनमोहनजी जगतात वात सुणो जिनराजजी रे ए देशी

अचिरासुत शांति जिणंद, शांति स्वरूपने दाखवे रे ॥ चालो सुणीये वचन रसाळ, मनुष्य जन्म सफळो हुवे रे ॥ अचिरासुत शांति जिणंद ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शाति द्रव्यभाव दुभेद, परथम द्रव्य वखाणतारे ॥ त्याग आश्रव अग्नि विचार, हिंसादि पंच नीवारतारे ॥ अचिरा० ॥ २ ॥ हवे भाव शांति जव पाय, रागद्वेष मोह जभता टळे रे ॥ तीहां लाधे चरण यथाख्यात, वीतराग गणे चेतन चले रे ॥ अचि० ॥ ३ ॥ एम शांति रूप अनुप, जीन वयणे करी जाणिये रे ॥ ते आपे सिद्ध पद सार, त्यां सुख अनतु मन आणीये रे ॥ अचि० ॥ ४ ॥ करो भविजन वचन प्रतित, शुद्ध यथारथ एम सद्दहोरे ॥ तेथी पामशो अविचळ ऋद्ध, शांतिपणु ज्ञान शीतळ ग्रहोरे अचि० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मु ॥

॥ श्री कुथुंनाथजीनु ॥

॥ ए देशी ॥

कुथुनाथ दुःख कापो दयालु धणी, अनत चतुष्टयी आपो दयालु धणी॥ अव्याबाध सुख आवे ॥द०॥ कर्म आठ क्षय आवे ॥ द० ॥ कुथुनाथ दुःख कापो॥द०॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ तरण तारण तुमे साचा ॥द०॥ जाजमान सत्य वाचा॥द०॥ ससार सागर तारो ॥ द० ॥ जन्म मरण भय वारो॥द०॥ कुथु० ॥२॥ अजर अमर सिद्धभावे ॥द०॥ निरंजन पदपावे ॥ द० ॥ परमानद पद सोइ ॥ द० ॥ सादि अनंत भग होइ ॥ द० ॥ कुथु० ॥ ३ ॥ एह मनोरथ मारो ॥ द० ॥ निमित्त कारण छे तमारो ॥ द० ॥ कारणे कारज थावे ॥ द० ॥ एम सिद्धाती गावे ॥ द० ॥ कुथु० ॥ ४ ॥ एम श्रद्धा शुद्ध कीधी ॥ द० ॥ ज्ञान समकित ऋद्धि लीधी ॥ द० ॥ ज्ञान शीतळ नीज भावे ॥ द० ॥ शीव सुख कारज पावे ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १० ॥ मु ॥

॥ श्री मल्लिनाथजीनु ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली

॥ काज सिध्या सकळ हवे सार ॥ ए देशी ॥

मल्लिनाथजी शिवपथे चाले, तीहां मोहादि आवीने खाळे ॥ बेहु वळीआ सैन्य सज कीधु, हथियार हाथमा लीधु ॥ १ ॥ सामा सामी रोपे रणस्थम्भ, लरुवाने कीधो

आरंभ ॥ सो सजनुं वीर्य दाखे, तेमां कचाश कोइ न राखे ॥ २ ॥ अन्यो अन्य शत्रु भाव, सज सजना मनने राव ॥ वेहु वाजु सुभट अति वळिया, सामासामी नजीके मळीया ॥ ३ ॥ तीहा मल्लि तीर्थपति वोल्या, शुं करवा मरो भागो उल्या ॥ तीहां मोहराय खेदे भराणो॥ वोल्यो वेशी रहे तु ठानोमानो ॥ ४ ॥ जो में तने नाच नचाव्यो, जगरूप करीने भमाव्यो ॥ मुज आणामां अनंत काळ वसीयो, त्यांथी तुं आज दीसे छे खसीउ ॥ ५ ॥ पूरवना दिवस तु भूल्यो, तने कवजे करुंतु शुं फुल्यो ॥ तुज ऋधि पलकमां पमावु, हेगमांही हुं तने ठलावु ॥ ६ ॥ तुज जेवा में कंगाल कीधा, पकमी निगोदने दीधा ॥ लोकाधिपति मुजनाम, त्रण लोक अमारु गाम ॥ ७ ॥ मुज आज्ञा कोइ न लोपे, लोपे तो चढावुं हु तोपे ॥ इत्यादि घणा वोल वोल्या, मल्लि वळतुं कहे सुण उल्या ॥ ८ ॥ ते कह्यु ते सरवे साचुं, तु रुठयो मुके नही काचु ॥ तु निर्दय हृदये कठोर, अभिमानी तुही छे निठोर ॥ ९ ॥ भव स्थिति जेनी न पाकी, तेने दुःख दीये तुं एकाकी ॥ माहारे तो स्थीति हवे पाकी, नही चाले तारु तुं नापाकी ॥ १० ॥ कोइ कोइनु कह्यु नही माने, वळी वचन सुणे नही काने ॥ सुभटो झाझा झुझे, पराक्रम जोइ पर्वत ध्रुजे ॥ ११ ॥ रणभूमिये संग्राम थावे, सामासामी शस्त्रो वरसावे ॥ सावचेत आळसु नही कोइ, खान पान दीये पक्ष दोइ ॥ १२ ॥ ए लकाइ अंतरमां थावे, वीरुदावलि वेहु

जण गावे ॥ हवे आगळ जे कांइ थावे, ज्ञान शीतळ कहेशे ते भावे ॥ १३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ देशी कमखानी ॥

मल्लिनाथ जिनेन्द्र देव उगणीसमा, अतुली बळ झुझे जेम भडे फुदो ॥ ज्ञान गुण निर्मलो, स्वरूपे प्रकाशीयो, भासियो जीव पुद्गल जूदो ॥ मल्लिनाथ जिनेंद्र० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शुद्ध श्रद्धा करी, विकलता परहरी, प्रगट समकित जीम गयणे चदो ॥ भागीयो लागीयो, खड्ग चक्रधारनो, मिथ्यात्व वश कीधो निकदो ॥ म० ॥ ॥ २ ॥ उपशम सुभट तव समकित जोडीउं, मोहनो स्थंभ रण पामे हेठो ॥ कषाय चऊ चोकडी सोळ दबावीया, तीहां हुवो आतमा शीतळ जेठो ॥ म० ॥ ३ ॥ शियळ सुभट तिहां खेलतो मेलतो, कदर्प्प चोरने बाण तीखो ॥ ते मुवो त्या पडयो भूमिपर रडवडे, भविजनो साधना एम शीखो ॥ म० ॥ ४ ॥ वैराग सुभट तीहां झुझतो बुझतो, शत्रु सनमुख आगळ आवे ॥ ज्ञान कटार मारे बहु बळ करी, आशादि पट तीहां अंत थावे ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ भाव श्रुत ज्ञान सुभट बळ गाजतो ॥ दीपे दीनकर जेम पूर्व दीशि—॥ ए हणे ते कहु नीद्रादिक सुभटने ॥ भाखे एम जगगुरु ए वचन वीशी ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ क्षय उपशम जिहां प्रगट चेतन तीहां, विस्तारे चेतना रुप दाखे ॥ वीर्य तीहां आवीयो, बळ करी मारीयो, चपळ

मनने तीहां रहीने पाखे ॥ म० ॥ ७ ॥ इद्रि निग्रह सुभट चित्त चोखु करी, स्थीर उपयोगे तीहा झूझे बुझे ॥ तप तीहां आवियो हाथ देखावीयो, असंयम भूमि पड्यो थरथर ध्रुजे ॥ म० ॥ ८ ॥ धर्म शुकल ध्याइए, तुरंग गति पाइए, ध्यान ए सुभटोमां ज्ञान मोटो ॥ ते हणे आरत रौद्र दोय सुभटने, वचन ए सत्य छे नहीं ए खोटो ॥ म० ॥ ए ॥ भाव संवर सुभट आतम ज्ञानमां, झुझे बुझे अति वीर्य दाखे ॥ ते हणे आश्रव शुभ अशुभने, निरमळ चेतनारूप चाखे ॥ म० ॥ १० ॥ निर्जराभाव सुभट वळ गाजतो, राजतो ज्ञानमां शुद्ध भावे ॥ पूर्व बध कापतो अजीवने आपतो, मुक्ति पथ चालतो मंगल गावे ॥ म० ॥ ११ ॥ अनुभव ज्ञान सुभट निज रूपमां, झुझे बुझे निरभय छे मनमां ॥ वीर्य अधिको धरे जडरूप तीहां मरे, निर्मळता करे मूळ रूपमां ॥ म० ॥ १२ ॥ सुभटो इत्यादि अधिक वळे झूझता, सिंह नाद करता ए धोंके ॥ मोह तीहा भागीउ पुठ देखावीयो, ज्ञान शीतळ फरी युद्ध मांडे ॥ म० ॥ १३ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

करजोडी कहे कामनी ललना ॥ ए देशी ॥

मल्लिनाथने मोह आवियो, ललना, लालाहो रणभूमिये झुझवा काज ॥ ए युद्ध सांभळो ललना ॥ द्वेष गजेंद्र उपरे ललना, लालाहो बेठो छे मोह राज्य ॥ ए० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ राग केशरी पुत्र साथे लइ ललना, लालाहो

पोते चढी आव्यो त्यांही ॥ ए० ॥ तेना सामा मल्लि जिनपति ललना, लालाहो आवे हरख उछाहि ॥ ए० ॥ २ ॥ श्रद्धा अष्टापद बेसीया ललना, लालाहो साथे अप्रमत्त ज्ञान पुत्र ॥ ए० ॥ ज्ञारुरु पक्षी सो सचेत ठे ललना, लालाहो सुपे तेने घरसूत्र ॥ ए० ॥ ३ ॥ मल्या सामासामी एकठा ललना, लालाहो तीहा मार्यो मल्लीये मोहराय ॥ए०॥ महा जोरावर जे हुतो ललना, लालाहो ते एक लीलाये हणाय ॥ ए० ॥ ४ ॥ रागद्वेष मुआ ते समे ललना, लालाहो अशुद्ध परिणति त्या छेदाय ॥ ए० ॥ चरण यथाख्यात पामीया ललना, लालाहो पूरण शुद्ध परिणति थाय ॥ ए० ॥ ५ ॥ वीतराग गुणठाणे बारमे ललना, लालाहो आव्या मल्लि जिणद ॥ ए० ॥ तीहां शत्रु त्रण सामा आवता ललना, लालाहो तेने मार्या तीहां प्रगटयो आणद ॥ ए० ॥ ६ ॥ अनत चतुष्टी प्रगट थइ ललना, लालाहो गुणठाणु त्या तेरमु सार ॥ ए० ॥ देवो समवसरण रचे ललना, लालाहो पर्षदा मीले तीहा बार ॥ ए० ॥ ७ ॥ पाट पीठे मल्लीजी विराजता ललना, लालाहो चउ मुखे देशना दीये सार ॥ ए० ॥ उपजे वीणसे स्थीर रहे ललना, लालाहो सुणी करवो वस्तु विचार ॥ ए० ॥ ८ ॥ ए विचार चितक जे थया ललना, लालाहो ते पाम्या बोधने बीज ॥ ए० ॥ ज्ञान वैरागी ते जाणीये ललना, लालाहो व्रत उचरे लावी रीज ॥ ए० ॥ ए ॥ केइक ग्रहे व्रत देशथी ललना, लालाहो केइक सर्व विरती थाय ॥ ए० ॥ सर्व विरती ते साधु सा-

धवी ललना, लालाहो देशविरति श्रावक श्राविकाय ॥ ए० ॥ १० ॥ एम संघ चउविध स्थापे मल्लिजी ललना, लालाहो प्रथम स्थापे गणधरराय ॥ ए० ॥ द्वादशांगी सूत्र गणधर रचे ललना, लालाहो लब्धिये पूर्ण पद थाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ तीहां तीर्थ स्थापन थयुं ललना, लालाहो ए तीर्थपति मल्लिनाथ ॥ ए० ॥ जिननाम कर्म उदय थयो ललना, लालाहो तेने खेरवे ए जगत्रनो नाथ ॥ ए० ॥ १२ ॥ अंते करण सैलेशी करे ललना, लालाहो तीहां थाय योगनो रोध ॥ ए० ॥ आव्या अयोगी ठाण चउदमे ललना, लालाहो तीहां टाल्यो अघातिनो विरोध ॥ ए० ॥ १३ ॥ शत्रु समुदायनो क्षय थयो ललना, लालाहो त्यां जागी उदारिकादी हेम ॥ ए० ॥ परवत सम ढकण हतुं ललना, लालाहो ते त्रुटी आज कार्मण तेम ॥ ए० ॥ १४ ॥ ठोकयुं शरीर तेना मानथी ललना, लालाहो घटे एक भाग अवगाह ॥ ए० ॥ निवम घन दोय भागे रच्यो ललना, लालाहो ते कहीए अटळ अवगाह ॥ ए० ॥ १५ ॥ एक समय सम श्रेणीये ललना, लालाहो पोत्या सिद्ध लोकंत ॥ ए० ॥ सादि अनत स्थिति तीहां ललना, लालाहो सिद्ध वधुनो प्यारो ए कत ॥ ए० ॥ १६ ॥ एम युद्ध अतररूपे करशुं ललना, लालाहो तीहां करशु शत्रु विनाश ॥ ए० ॥ ए शक्ति मल्लिजी मने आपजो ललना, लालाहो पूरजो ज्ञान शीतळनी आशा ॥ ए० ॥ १७ ॥

॥ कळश ॥

ध्यायो ध्यायो रे मेंतो मल्लिजिणंदने ध्यायो, लक्षाइ दाखी त्यां साधना राखी, ए अद्भुत ज्ञान सवायो ॥ स्थिर उपयोगे तु कुझ्यो बुझ्यो, तीहा द्रव्य भाव शत्रु हणायो रे ॥ मेंतो मल्लिजिणंदने ध्यायो ॥ ए आंकणी ॥ ध्यायो ध्यायो रे ध्यान आयोरे, एक दिन छद्मस्थ कहायो ॥ गाथा ॥ १ ॥ मूळ रूप तीहा तद्वत कीधुं, अनुभव ज्ञान सयोग ॥ अप्रमत्तादि श्रेणी आरोही, टाल्या उपाधि थोक रोगरे ॥ मेंतो ॥ २ ॥ क्षायक लब्धि अनंती पाम्या, तेमा नव इहा दाखु ॥ प्रथम वेदक समकित गुणयोगे, क्षायक समकित भाखुं रे ॥ मेंतो० ॥ ३ ॥ वीजुं क्षायक चारित्र लीधु, तीहा मोह उनमूलन कीधु ॥ केवळनाण दर्शण आवरण क्षय, केवळनाण दर्शण लीधु रे ॥ मेंतो० ॥ ४ ॥ दानादि लब्धि पाच आवे, त्या अतराय कर्म क्षय थावे ॥ ए साते गुण तेरमे लाधे, एम नव लब्धि कहावे रे ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥ ए लब्धिये अरिहंत कहीये, त्याथी सिद्धपद लहीए ॥ एम साधना जे कोइ साधे, तेना दास थइ रहीये रे ॥ मेंतो० ॥ ६ ॥ मनुष्य जन्म आज सफळो मानु, मन स्थिर घरमा आणु ॥ ज्ञान शीतळ श्रद्धाए भरीयो, ए शीवपथ साधन टाणु रे ॥ मेंतो० ॥ ७ ॥

सपूर्ण सर्व गाथा ५०

॥ स्तवन ११ मु मुनिसुव्रत स्वामीनु ॥

॥ ढाळ १ ली ॥

प्रथम गोवाळतणा नवेजी ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिन वीसमाजी, पाळे महाव्रत पांच ॥ द्रव्य नाव दोय नेदशुजी, तेमां नहीं खळ खांच ॥ नविकजन वंदो ए जगगुरुराय ॥ सेव्यां सिद्ध पद थाय ॥ नविकजन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ते दाखु अनुनव करीजी, ग्रहजो नविजन सार ॥ साधन ए सम को नहींजी, आतमने हितकार ॥ नविक० ॥ २ ॥ प्रथम महाव्रत उच्चरेजी, प्राणातिपात वीरमण ॥ सर्व जीवनुं रक्षण करेजी, न हणे कोइना प्राण ॥ नविकजन० ॥ ३ ॥ वीजु महाव्रत उच्चरेजी, मृषावाद वीरमण ॥ कूडु वचन बोले नहींजी, ए वाच्य अन्निंतर जाण ॥ नविक० ॥ ४ ॥ त्रीजु महाव्रत उच्चरेजी, अदत्तादान वीरमण ॥ अण दीधे लेधे नहींजी, सळी दत सोधन जाण ॥ नविक० ॥ ५ ॥ चोथु महाव्रत उच्चरेजी, करे सर्व स्त्रीनो त्याग ॥ रूप कांति निरखे नहींजी, अचिंतक विषय अराग ॥ नविक० ॥ ६ ॥ पांचमुं महाव्रत उच्चरेजी, नवविध परिग्रह त्याग ॥ कोडी पास राखे नहींजी, ए निर्लोन्नी लीयो वैराग ॥ नविक० ॥ ७ ॥ छठुं व्रत ग्रहे नलुजी, रात्रि नोजन परिहार ॥ न करे आहार चउ जातनोजी, पचखाण करे चउविहार ॥ नविक० ॥ ८ ॥ द्रव्य वीरतिए मुनितणीजी, दाखी आतम हेत ॥ ज्ञान शीतळ करी नाखशुंजी, नाव वीरति सकेत ॥ नविक० ॥ ९ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ ऋषभजी श्रमकु तारोरे ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत भवि भावमारे, समजो चतुर सुजाण ॥ ज्ञानादिक शुद्ध चेतनारे, ए जीवना छे भाव प्राण ॥ सुव्रतमुनि ॥ भावो निज स्वरूप ॥ ए आंकणी ॥ अनुभव मंदिरमांही, सुव्रतमुनि, भावो निज स्वरूप ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए भाव प्राण रक्षण जाणीरे, हणे मिथ्यात्व अज्ञान ॥ रागद्वेष मोहादि हणेरे, तीहां प्रगटे केवळज्ञान ॥ सुव्रतमुनि० ॥ २ ॥ मृपावादने टाळवारे, जाणो वस्तु स्वभाव ॥ गुणपर्यायने जाणवारे, भेद ज्ञान घट साव ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ३ ॥ अदत्तादान तजवा भणीरे, भावे संवर भाव ॥ आश्रव शुभाशुभ ग्रहे नहींरे, ए उपयोगी मुनिराव ॥ ॥ सुव्रत० ॥ ४ ॥ मैथुन तजशु भावथीरे, करी निज परिणति शुद्ध ॥ पर परिणतिने छेदवारे ॥ तत्पर छे ए बुद्ध ॥ ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ५ ॥ परिग्रह ग्रहे नहींरे, ग्रहे मूळ स्वरूप ॥ कर्मबंध तोडे तीहारे, अनुभवे वस्तु अरूप ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ६ ॥ पुद्गल गुण भोगी नहींरे, निज गुण भोगी सदाय ॥ ज्ञानानंदी आतमारे, क्लेश न व्यापे कदाय ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ७ ॥ ए भाव विरति मुक्ति दियेरे ॥ जगगुरु भाखे एम ॥ ज्ञान शीतळ भखे नहींरे, कीधी श्रद्धा प्रतित वळी प्रेम ॥ सुव्रत० ॥ ८ ॥

इति मुनिसुव्रत स्वामीनु स्तवन

॥ स्तवन १२ मु श्री नमिनाथजीनु ॥

॥ अन्निनव ज्ञान न्नणो मुदारे लाल ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल, पाइए जीव गुण ज्ञानरे ॥ हु वारी लाल ॥ निज शुद्ध रूप निहाळीएरे लाल, कीजीये उपयोगे ध्यानरे ॥ हुं वारी लाल ॥ नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पर्यायमय द्रव्य एकतारे लाल, उपजे वीणसे अने ध्रुवरे ॥ हुं वारी० ॥ पर्याये उपजेने वीणसेरे लाल, द्रव्यें ध्रुव सदीवरे ॥ हुं वारी० ॥ नमि० ॥ २ ॥ ए त्रण लक्षण पट जाणीयेरे लाल, एक जीव पांच अजीवरे ॥ हुंवारी० ॥ स्वन्नाव पर्याये चउ शुद्धतारे लाल, बे विन्नावे पुद्गल जीवरे ॥ हुवारी० ॥ नमि० ॥ ३ ॥ पुद्गल शुद्ध परमाणुर्उरे लाल, मीले विखरे खंध अशुद्धरे ॥ हु० ॥ जीव संसारी कर्मबंधथीरे लाल, गति पर्याये अशुद्धरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥४॥ गति पर्याय ते काया सहीरे लाल, जोग इंद्रिए पर न्नावरे ॥हुं०॥ तेना संगे उपयोगी चेतनारे लाल, रागद्वेष परिणमे विन्नावरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ ५ ॥ ए ससार स्थिर कारण सहीरे लाल, परन्नाव तेह निमित्तरे ॥ हुंवारी० ॥ उपादान रागद्वेष चेतनारे लाल, तेथी कर्म वध सदीव अहितरे ॥ हु ॥ नमि० ॥ ६ ॥ ए परसगे ससार दाखीयोरे लाल, हवे निज सगे शिवपुर जायरे ॥ हुं० अनुन्नव योगे वर्णवुंरे लाल, स्थिरता मनवच कायरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ ७ ॥ जोग इंद्रि द्वारे हुइ चेतनारे लाल, ए उपयोग अशुद्ध अनादरे ॥ हु०

॥ ते पलटावी स्वरूपे जोमीये रे लाल, त्या घटतर अनुन्नव आल्हादरे ॥हु ॥नमि ॥७॥ थाय वृद्धि क्षय उपशम ज्ञाननीरे लाल, वीर्य वृद्धि अनतरे ॥ हु० ॥ अनुन्नवे शुद्ध स्वरूपनेरे लाल, लहे परम समाधि महतरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ ए ॥ उपाधि जोग सर्व तुटीयो रे लाल, हुवा निर्मळ गुण पर्यायरे ॥ हु० ॥ उपयोगे प्रवृत्ति थइरे लाल, त्यां परमानद वरसायरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ १० ॥ ए न्नेद ज्ञानयोग वर्णव्यो रे लाल, क्षयउपशम न्नाव ज्ञानरे ॥ हु० ॥ पर्यायार्थक नय साधनारे लाल, द्रव्यार्थके एक तानरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ ॥ ११ ॥ इहां अन्निन्न द्रव्य गुण पजवारे लाल, ज्ञान अन्नेद स्वरूपरे ॥ हु० ॥ क्षय उपशम मोहनो त्यां ठेदीयो रे लाल, उन्मूलन थाय मोहन्नूपरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ १२ ॥ अशुद्ध परिणति ठेदी शुद्धमां रे लाल, चरण यथाख्यात वासरे ॥ हु० ॥ वीतराग क्षीण मोह वारमेरे लाल, त्यां त्रण कर्म तुटे पासरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ १३ ॥ केवलनाण दर्शण प्रगटेरे लाल, अरिहत तेरमे वासरे ॥ हु० ॥ दान लान्न न्नोग उपन्नोगनोरे लाल, स्वरूपे वीर्य स्फुरणा तासरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ १४ ॥ ए परमानद पद मोटकोरे लाल, आयुप अते योग रोधरे ॥ हु० ॥ सैलेशि करणे अकपतारे लाल, अयोगी अकर्मी हुआ सिद्धरे ॥ हु० नमि० ॥ १५ ॥ ज्योति स्वरूपी ए अरूपतारे लाल, अनत गुण मणि खाणरे ॥ हु० ॥ अव्यावाध सुख अविनाशतारे लाल, ज्ञान शीतल ए सिद्धना वखाणरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ १६ ॥

स्तवन ॥ १३ ॥ श्रु ॥ श्री नेमिनाथ जीननु ॥

॥ साधुजी समता आदरो ॥ ए देशी ॥

नेमिनाथजीनी जान जवी सांजळो, आवे परणवा करी बहु ठाठ मेरे लाल हय गय रथ शणगारीया, पगपाळा हलमल नाठ मेरे लाल ॥ नेमिनाथजीनी जान० ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ जादववंश सरवे सज थया, दीपे वस्त्र आजुपण युक्त ॥ मे० ॥ वाळ तरुण वृद्ध आविया, लइ राजऋद्धि जली युक्त ॥ मेर० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ कृष्ण नरेंद्र गज उपरे, शोजे जेम तारामां चंद्र ॥ मेरे० ॥ तेथी अधिक शोजे नेमिजी, रथ वेठा अधिक आणंद ॥ मेरे० ॥ ॥नेमि०॥३॥मणी आदि जमित आजूपणो,राजे कोट केहेरु कारु कान ॥ मेरे० ॥ वस्त्र अमुलख अंगमां, शेलां मल्लि जामो जरियान ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ दीनकर मुख जोइ आवीयो, हुआ नेमि अधिक तेजवान ॥ मेरे० ॥ मोती अमुलख घणां ठागले, चावे वीकुं नागरवेल पान ॥ मेरे० ॥ नेमि॥ ॥ ५ ॥ स्त्री वृंद उलटजरे, गावे मंगलिक गीत विनित ॥ मेरे० ॥ मोहित शब्द तीहां वापरे, सुस्वर विकल रंगीत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ वाजित्र वाजे अति घणा, जाजा वडुकी करे अवाज ॥ मेरे० ॥ उंट घोमे नगारां गमगमे, दारुखानु उमे रीज काज ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ७॥ अश्व अनेक खेलावता, गज चढीया महा ऋद्धिवंत ॥ मेरे० ॥ केइक रथमां वेशीया, पगपाळा अनेक न गणंत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ८ ॥ पालखी मेना अति घणा, तेमां बेठा केइ

पुन्य स्थन्न ॥ मेरे० ॥ समुद्र विजयराय शिवादेवी, नेमि मात तात निरञ्जन ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ए ॥ ए जान जोइने दील रीझीया, नरभव सफळ समजत ॥ मेरेलाल ॥ इत्यादिक ठाठ अति घणो, एक जीभें न जाय कहत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ १० ॥ आव्या उग्रसेन घर आंगणे, जान स्थनी हरख अपार ॥ मेर० ॥ ज्ञान शीतळ घट नेमीने, राग रग पतग ससार ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ एक दिवस विषे नेमिकुमर निज मित्र सघाथे आवे ए देशी ॥

आज हरख वशे राजुल सखीयो वृंदे गोखे आवे ॥ नेमि मुख जुए वोले वचन सुणे सखीउं हरख न मावे ॥ ए आंकणी ॥ अतरग अमीरस वर साथे, ए परणे मुने एवी तृषा ठे ॥ एथी अधिक नहीं जगमा सरज्या ठे ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ १ ॥ सखीउं कहे ए वरणे काळो, तेने रुपाळो तुमे शु भाळो ॥ तुमने कीम ए लागे वहालो ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ तीहा राजुल सखीयोने कहेवे, काळी कस्तुरी कीकी रेहेवे ॥ एम गुणवत वस्तु ते काळी हुवे॥आज० ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ए रत्न चितामणी सरखो ठे, करे पूर्ण मनोरथ परख्यो ठे ॥ गुण उज्वळ जोइ मन हरख्यो ठे ॥ आज० नेमि० ॥ ४ ॥ एणे अवसर पशुआ पोकार करे, ते सुणी नेमिजी विचार करे ॥ तस दु ख टाळी मन व्रत धरे ॥ आज ज्ञान रसे नेम निरागी ॥ अतर

वैराग भावे ॥ मुळरूप जुए निज गुण स्थिर उपयोग अनुभव प्रगटावे ॥ ए आंकणी ॥ ५ ॥ इहां वैराग रंग वृद्धि घटमां, रथ वाल्यो तोरणथी झटपटमां ॥ धिक्कार हो संसार कारजमां, ॥ आज ज्ञान० ॥ मूळ० ॥६॥ तव राजुल दुःख ज्वाळा लागी, विलाप करे हुं निरभागी ॥ समजाव्या नही समजे रागी ॥ आज० ॥ मूळ० ॥ ७ ॥ घेर आवी वरसी दान दीये, नित्य एक क्रोड आठ लाख भव्य लीये ॥ हाथ धरतां न धरे लाज हीये ॥ आज० ॥मूळ०॥ ८ ॥ तीहां कीर्त्ति जश जग गाजीउं, करुणा सागर जीन राजीउं ॥ दान भव्यने देइ दु.ख भाजीउं ॥आज ज्ञान०॥ मूळ० ॥ ए ॥ हवे दिक्षा उच्छवने दाखशुं, ज्ञान शीतळ घटमां राखशुं ॥ जीन भक्ति करुं गुण रागशुं ॥ आजज्ञान० ॥ मूळ० ॥ १० ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥ राग बिलावर ॥

॥ जगत प्रभु आगळ भवी वर अक्षत धरीये ॥ ए देशी॥

नेमि निरागी सयम लीये, रंग अतर मांहि भेद ज्ञान चित्त वासीयो, अनुभव स्थिर ज्यांहि हांहां रे ॥ अनुभव स्थिर ज्यांही, हांहां रे समकित शुद्ध त्यांही ॥ हांहां रे तीहां मिथ्यात्व नांही, हांहां रे भोग चिदघन मांही ॥ हांहां रे ॥ उदवेग नही क्यांही, हांहां रे एतो उत्सर्ग सांही॥ नेमी नीरागी संयम लीये, रंग अतर मांही॥ए आंकणी गाथा१॥ ॥उच्छव महोच्छव अति घणो, देव नर करे भावे ॥ समुद्र विजय सर्व जादवा, इन्द्र चोसठ आवे ॥ हांहां रे इंद्र चो-

सठ आवे, हांहा रे देव असत्य बोलावे ॥ हांहां रे सूर्य पूरमा तेमावे, हांहां रे सर्व मगलिक गावे ॥ हांहां रे घणा वाजा वजावे, हांहां रे तीहां थाक न आवे ॥ नेमि निरागी सयम लीये रग अतर माही ॥ २ ॥ तीर्थोदक वर ओषधि, लावे नीज नीज रगे ॥ आठ जाति कळश आठने, एक सहस मन चगे ॥ हाहा रे एक सहस मन चगे ॥ हांहां रे जळ भरे सौ सगे ॥ हाहा रे लावी उलट अगे ॥ हांहां रे स्थिर वृत्ति एकगे ॥ हांहा रे घणी रीझ उमगे, हाहां रे ठे प्रमोद ए भगे ॥ नेमि निरागी० ॥ ३ ॥ समुद्रविजय पेहेलो करे, पठी सूर अभिषेक ॥ समकित शुद्ध होवे तीहां आवे श्रद्धा विवेक ॥ हाहा रे आवे श्री श्रद्धा विवेक, हांहा रे शुद्ध निज गुण टेक ॥ हांहा रे नहीं परगुण भेक, हांहां रे ध्यान भक्तिनु एक ॥ हांहा रे तीहा धर्म अनेक, हांहां रे भवि समजो दरेक ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ उत्तरकुरु शिबिका बेसे नेमि निरागी, एकसत आठ उपाडता देवनर वडभागी हाहा रे देवनर वडभागी, हाहा रे राजी थइ लीये मागी॥ हाहा रे भक्तिमा लय लागी, हाहा रे घणा गुण नीरागी ॥ हाहां रे चाले पथे सोभागी, हाहा रे माने पुन्याइ जागी॥ नेमि ॥ ५ ॥ देव देवी नरनारीनी, दृष्टि ठे प्रभु सामी ॥ तारतार तुही साहिबा, वश्ये अतरजामि ॥ हाहां रे वश्ये अतरजामि, हाहां रे तुही ठे शीवगामी, हाहा रे अरुपी गुणधामी ॥ हाहा रे उपयोग गुण रामी, हांहां रे उपाधि सर्व वामी ॥ हाहा रे तुही जगगुरु स्वामी ॥ नेमि निरागी

॥ ६ ॥ वरघोडेथी उतर्या, सहसावन मोझार॥ श्रावण शुदी छठने दिने, ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे साथे पुरुष हजार ॥ हांहां रे लीये व्रत मनोहार, हांहां रे करे तत्व विचार ॥ हांहां रे वहे शीव पथ सार ॥ हांहां रे लहे धर्म अपार ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ मन पर्यवज्ञान उपन्यु, अप्रमत गुणठाणे ॥ विपुलमति चढती कळा तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे उपयोग श्रुत जाणे ॥ हांहां रे अनुभव घट आणे, हांहां रे निज पर भेद जाणे ॥ हांहां रे हण्यो मोहज्ञान बाणे, हांहा रे त्रुटयो राग ते टाणे ॥ नेमि निरागी सयम लीये रग अंतर मांही ॥ ८ ॥ छद्मस्थ चोपन दिन त्रितीया सनातक तीहां थावे ॥ अनत चतुष्टय पामतां, अरिहंत कहावे ॥ हांहां रे अरिहत कहावे, हांहां रे तीहां राजुल आवे हांहां रे, वळी शीश नमावे,हांहां रे प्रभुना गुण गावे॥ हांहां रे मेली क्यां शीव जावे, हांहां रे छोड्यां नहीं मुने फावे ॥ नेमि० ॥ ए ॥ दीक्षा दीये तीहां साहेबो, लीये राजुल रगे ॥ अप्रमत्त ठाण सेवतां हण्यो मोह एकगे हांहां रे हण्यो मोह एकगे, हांहां रे तीहां वीर्य अभगे ॥ हांहां रे छेदे सर्व कर्म चगे, हांहां रे नव खायक अगे ॥ हांहां रे वसे शिवपुर संगे, हांहां रे पेहेलां सिद्ध उमंगे ॥ नेमि० १० ॥ सहस वरसनु आवखु, पाळी गढ गिरनार ॥ परण्या अपूरव महोच्छवे, शीव सुंदरी प्यार ॥ हांहां रे शीव सुंदरी प्यार, हांहां रे समश्रेणी त्यां धार ॥ हांहां रे

एक समय त्या वार, हांहा रे लोकंते रहे गार ॥ हांहां रे अव्याबाध हितकार, हांहा रे ज्ञान शीतळ सार ॥ ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ कळश. ॥

पाया पायारे नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ वेद विषय राग दुर कराया, वीतराग भावमा आया ॥ अनुभव ज्ञान स्वरूपमा लावी, चिदानद ध्यान ध्यायारे ॥ नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ पाया पायारे, मेंतो गायारे, नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ गुण पर्याय एकत्व भावे, अभेद ज्ञानमा आया ॥ उपयोग स्थिर अकृत्यरमणमा, केवळनाण दर्शण पायारे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए भावे अरिहत पद साध्यु, त्याथी सिद्ध पद साध्युं ॥ ससार बीज निकदन कीधु, तीहां सुख अनतु वाध्युरे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ नेमि पेहेला राजुल सिद्ध थावे, स्वामि आज्ञा शीश चडावे ॥ पति अभिप्राये पतिपणु पामी, सिद्ध वधुकत कहीने बोलावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ सिद्ध निरजन ज्योति स्वरूपी, अचळ अक्षय पद रामी ॥ अकळ अलख तुही रूपी अरूपी, ज्ञान शीतळ अतर जामी रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ सपूर्ण सर्व गाथा ३७ ॥

स्तवन ॥ १४ ॥ मु ॥ श्री पार्श्वनाथजीनु ॥

॥ वीर कुंवरनी वातमी कोने कहीए ॥ ए देशी ॥

पार्श्व जीणदने ध्याइयें, भवी भावे, भाव उपयोग तीहा कहावे॥ शीव साधन ए विण नावे, सत्य समजो एम॥

पार्श्व जिणदने ध्याइये न्नविन्नावे॥ए आंकणी ॥ गाथा॥१॥ पारस स्पर्शे लोह कचन थावे ॥ फरी लोह पणुं नहीं पावे॥ समज्यां दृष्टांत विवेकआवे,आवे ज्ञानने ध्यान॥पा.२॥ शुद्ध स्वन्नाव पारस मणी ते फरसे, तीहां परसंगे उपयोग टळशे ॥ निज उपयोग शुद्धता करशे, एमां नहीं सदेह ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ उपयोग शुद्ध स्वरूपनो न्नाव जाणो, गुणपर्याय मांही आणो॥ न्निन्न व्यक्ति अनंती टाणो, शीवरूप रसाल ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ आतम ज्ञाननी मुख्यता इहां लाधे, शक्ति व्यक्ति करी शीव साधे ॥ ज्ञान शीतळ सिद्ध आराधे, पामे पद निरवाण ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १५ ॥ मु ॥ श्री वीरस्वामीनु ॥

मारुं मन लोन्नाणुजी, मारु दील लोन्नाणुजी देखी क्षायक ऋद्धि वीरनी मारु मनलोन्नाणुजी ॥ क्षायक ऋद्धि सदगुरू उळखावे, तेहनो राग करावे॥ रागनो प्रेर्यो न्नावे वीर्य फोरवे, त्यां ग्रंथि न्नेदि समकित पावे ॥ मारु मन लोन्नाणुंजी॥ए आकणी ॥ १ ॥ समकितादि ठाणे शीव पथे जागे, शुद्धातम अनुन्नव घटमां ॥ क्षपक श्रेणिए लेहे वीर्य अनतु, त्यां हणे रागद्वेष मोह झटमां ॥ मारु० ॥ २ ॥ ए क्षीण मोह ठाणे आवे वीतराग न्नावमा शुक्ल बीजो पायो ध्याता ॥ ज्ञानावरणादि त्रण कर्म त्या हणीने, लहे केवळ ए लोकालोक ज्ञाता ॥ मारु० ॥ ३ ॥ क्षायक ऋद्धि अनती ए देखे, प्रत्यक्ष प्रमाणे घटतरमां॥ ते ऋद्धिनु वर्णनन थावे कह्या नव न्नेद चोथा कर्म प्रथमा ॥ मारु० ॥ ४ ॥

क्षायक समकित वेदक करीने लहे चोथे वा सतम ठाणे ॥ क्षायक चरणठाण दसमा अते, करे उनमूळ मोहनु ते टाणे ॥ मारु० ॥ ५ ॥ केवळज्ञाननं केवळ दर्शन, दानादिक वळी पांच ॥ ए सत गुणठाण द्वादश अते, सवे क्षायक नव नहीं खांच ॥ मारु० ॥ ६ ॥ ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी, अतराय सत्ता खुटे॥ तेनो अत ठाण द्वादश अते, एम घाति कर्म सवि तुटे॥मा७॥ए क्षायक ऋद्धि आत्म सत्ताये,अनादि शक्तिये जाणो॥महावीर प्रभुए व्यक्ति भावे करीने, अयोगी अते अघाति अत आण्यो ॥ मा०० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरजन समश्रेणीये लोक शिखर करे वास ॥ त्या भोगवे अव्यावाध सुख अनतु, लागे सादि अनत भग खास ॥ मारु० ॥ ९ ॥ ए सुखना रसीया मनोरथ करता, उपयोग भावे रमता ॥ ज्ञान शीतळ हणे मोहनी उपाधि, ते समाधि ये शीव पद वरता ॥ मारु० ॥ १० ॥

॥ स्तवन १५ मु श्री वीरप्रभु ॥

॥थारां मेहेलां उपर मेह झरुखे वीजळी हो लाल ए देशी॥

वीर जिनेश्वर देव शासन पति जगधणी हो लाल ॥ शासनपति जगधणी ॥ तु उपगारी महासत महत अनत गुणी हो लाल ॥ महंत० ॥ ज्ञान ध्यान उपयोग वीर्य वळ एकता हो लाल ॥ वीर्य० ॥ अनुभवे द्रव्य पर्याय स्वभावनी टेकता हो लाल ॥ स्वभाव० ॥ १ ॥ उदिक भाव नहीं व्यापे व्यापक उपयोमा हो लाल ॥ व्यापक ०॥ ज्ञान सम्ग चत्र धार अपूरव खेलमा हो लाल ॥ अपूर्व०

हणीउं महा मोहमल हण्या रागद्वेषने हो लाल ॥हण्या० ॥ टळी परिणति अशुद्ध त्यां शुद्ध प्रवेशने हो लाल ॥ त्यां शुद्ध० ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अतराय त्रिकर्म इहां टळे हो लाल ॥ त्रिकर्म० ॥ गुण घातिने अन्नावे अनंत चतुष्टी मळे हो लाल ॥ अनंत० ॥ इत्यादिक घणी रीते साधन पक्ष दाखीये हो लाल ॥ साधन० ॥ नय निक्षेपा प्रमाण सयुक्तादि न्नापियो हो लाल ॥ संयुक्तादि० ॥ ३ ॥ एम उपगार अनत सिद्धांते तुमे कर्यो हो लाल ॥सिद्धांते०॥ तुज शासन सयोगे हु मार्गे चढयो खरो हो लाल ॥ हुं मार्गे० ॥ अन्य दर्शन कुपथ कुधर्मेन संचरु हो लाल ॥ कुधर्मे० ॥ ज्ञान शितळ जैन न्नावे सिद्ध पदने वरुं हो लाल ॥ सिद्ध पदने० ॥ ४ ॥

स्तवन ॥ १६ मु ॥

॥ उंधवजी सदेशो कहेजो श्यामने ॥ ए देशी ॥

अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे, क्यारे थइशु क्षायक लब्धिवतजो॥ आत्म सत्ताये शक्तिन्नावे अनादिनी, रही छती पर्याये एम न्नाषे गुरुसतजो॥ अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक लब्धि पामवा बे कारण कहु, चौ न्नेदे मीले जव क्षयोपशमनी सहायजो ॥ परिणामिक न्नाव शुद्ध स्वन्नावे परिणमे, तिहां क्षायक लब्धि पामे चेतनरायजो ॥ अपूर्व ॥ २ ॥ क्षायक लब्धि अनत न्नेदे एम जाणीये, ते केवळीथी पण वचन अगोचर न रे . क्षायक लब्धि नव न्नेदे प्रथे

कही, ते घाति कर्मना क्षयथकी प्रगटायजो ॥ अपूर्व० ॥३॥ क्षायक समकित पामे ठाण चोथा वा सातमे, तेना बद्धायु क्षायकने अवद्धायु क्षायक दो भेदजो॥ बद्धायु क्षायक लहे शीव सुख त्रीजे चोथे भवे ॥ अवद्धायु क्षायक लहे तद भवे शीव पदजो ॥ अपूर्व० ॥ ४ ॥ क्षयोपशम समकिती वेदक करी क्षायक लहे ॥ ते वेदक समकितनी स्थिति एक समयनी होयजो ॥ सात प्रकृति होय खेव तीहां सत्ता थकी॥ ज्ञान दर्शण दोउ त्या अप्रतिपाति जोयजो ॥ अपूर्व० ॥ ५ ॥ अवद्धायु क्षायक समकीति क्षपक श्रेणी माण्डीने, ठाण दशमा अते करे सत्ताथी मोहनो विनाशजो॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध टळे तीहा ॥ लहे चरण यथाख्यात करे क्षीण मोह ठाणमा वासजो ॥ अपूर्व० ॥ ६ ॥ ए क्षीण मोह अते त्रण कर्म साथे हणे,ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी अतरायजो॥ केवळनाण दर्शण ने लब्धि पाच क्षायक भावनी, ए गुण प्रगटे त्या कहीए श्री अरिहत रायजो॥अपूर्व०॥ ॥ ७ ॥ इहा सयोगी केवळी गुणठाणु तेरमु कीजीए ॥ तीहा क्षायक नव लब्धिनी पूरण प्राप्ति थायजो ॥ ए लब्धि जोगे सेहेजे शीव सुख सपजे, अयोगी अते अघाति हणी सम श्रेणीये सधायजो ॥ अपूर्व० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरजन लोकाग्र भागे रह्या ॥ अचळ अविनाशी तीहा सादि अनत भागे भगजो ॥ क्षायक ऋद्धि अनंत भेद इहा भोगवे ॥ परमानद पामे अव्याबाध सुख सगजो ॥ अपूर्व० ॥ ९ ॥ जे समय पामु शक्तिथी व्यक्तिपणु ॥

ते समय होय अनुमोदवा योग्यजो ॥ क्षायक ऋद्धि आ-
विरज्ञावे प्रगटे ॥ त्यां ज्ञागे वीरह थाय शुद्ध चेतना
सयोगजो ॥ अपूर्व० ॥ १० ॥ क्षायक लब्धि पामवा मे
इच्छा करी ॥ तीहां पुद्गलिक ज्ञावनी इच्छा ज्ञागी जा-
यजो ॥ परवस्तुनी ममता मूर्छा परिहरी ॥ क्षायक गुण
रागे प्रशस्त राग कहायजो ॥ अपूर्व० ॥ ११ ॥ क्षायक
ऋद्धि ज्ञव स्थिति पाके संपजे ॥ ते उद्यम जोगे जलदी
पाके एमजो ॥ उद्यम करीये ज्ञाव निक्षेपे घटतरे ॥ त्यां
अनुज्ञव जोगे समाधि लहतां खेमजो ॥ अपूर्व० ॥ १२ ॥
विषय विकार वेदवामां आवे नही ॥ त्यां अंतर क्रिया
अंतर रमण कहायजो ॥ ज्ञान शीतळ निजात्म ज्ञावे
होय साधना ॥ तीहां शुद्ध उपयोगे क्षायक ऋद्धि प्रहा-
यजो ॥ अपूर्व० ॥ १३ ॥

॥ स्तवन १७ मु उपदेशीक ॥

चेतावुं चेती लेजोरे एक दिन जरुर उमी जावुं ॥ ए देशी

सुणजो ज्ञविजन ज्ञाइरे, साधन ज्ञाव निक्षेपे साचुं ॥ ज्ञाव निक्षेपे ग्रंथि ज्ञेद करतां, समकित भावे राचुं॥ सुणजो ज्ञविजन ज्ञाइरे ॥ साधन० ॥ १ ॥ ज्ञावे ध्यान तुरगे नाचुं ॥ ज्ञावे शीवसुख लहीए जाचु ॥ ए वीण साधन सव काचुं ॥ सुणजो ज्ञविजन ॥ ए आंकणी ॥ द्रव्य निक्षेप कह्यो अना उपयोगे, अनुयोग द्वार सिद्धांते॥ ज्ञाव निक्षेप उपयोगे दाख्यो, ते लहो ज्ञविशांत दांते ॥ सुणजो० ॥२॥ द्रव्य प्राणने चेतन जाणी, द्रव्य निक्षेपे किरिया करतो ॥

जीवा जीव सत्ता निन्न न जाणे, व्यवहार मार्गे ए वाळ रमतो ॥ सु० ॥ ३ ॥ किरियामा लिंगमां चरण आरोपे, नाव अपेक्षा न राखे ॥ निमित्त उपादान नेद न समजे ते शीव सुख कदीये न चाखे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ते करता, ससार वास न छुटे ॥ कर्म वध करी चौ गति नटके, नाव निक्षेपे ससार खुटे ॥ सु० ॥ ५ ॥ हेय उपादेय बुद्धि लहीने, नाव निक्षेपो नावो ॥ हेय उपाधि पर वस्तु वमी, उपादेय शुद्धात्म निज ध्यावो ॥ सु० ॥ ६ ॥ ए नाव निक्षेपो शिव हेतु दाख्यो, स्वरूप रमणमा राख्यो ॥ नाव उपशम क्षयोपशम क्षायक, लह्यो उपयोगे ज्ञानीए नाख्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षायक नावने कार्य मानो, क्षय उपशम कारण जाणो ॥ शक्ति व्यक्ति लहीये ते साधन, ज्ञान शीतळ वचन प्रमाणो ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ इति स्तवन अधिकार सपूर्ण ॥

अथ सज्झाय अधिकार.

॥ सज्झाय ॥ १ ली ॥ समकितनी ॥

॥ ऋषननो वशरणायरो ॥ ए देशी ॥

चेतन समकित आदरो, लक्षण पांच विचारो रे ॥ सम सवेग निरवेदए, अनुकपा आस्ता धारो रे ॥ चेतन समकित आदरो ॥ ए आकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपशम लक्षण, पेहेलु नावीए, कषायें क्रोधादि हणीये रे ॥ वेर विरोध समाविए, समनावे नवि नजीये रे ॥ चेतन० ॥१॥ वीजु लक्षण सवेगीयो, सुरनर सुख दुःख सरखु रे ॥ वेग

मोक्ष अभिलाषीयो, करम रहित चेतन परखु रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ त्रीजुं लक्षण निर्वेद लहे, चउगति वधीखानुं जारी रे ॥ अनुत्तर सुख झेर सरीखु, ग्रहु अतिइद्रि ठंकु इद्रिरे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ अनुकपा लक्षण चोथुं चिंतवे, निजपरमां द्रव्य जावरे ॥ परअनुकंपा दोय जेदथी, समजी करूणा लाव रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ परदुख ठेदे निज शक्तिये, परप्राण रखोपु रे ॥ त्रस थावर नही दुजवे, ते द्रव्य अनुकंपा रोपु रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ जावथी उपदेश धर्म कथा, जेद ज्ञाने देखामे रे ॥ जीव पुद्गलनी जिन्नता, वस्तु सत्ता जूदी पामे रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ गुण पर्याय समजावीए, ज्ञान चेतना दीजे रे ॥ तेथी अनुजव पोते करे, निर्धार थयां ढील रीझे रे ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ श्रद्धा शुद्ध वस्तु जिन्नता, अनुजवे निज उपयोगे रे ॥ समकित प्रगट करे प्राणीउ, ते जाव अनुकंपा पर जोगे रे ॥ चेतन० ॥ ॥ ए ॥ स्व जोगे हवे जाखशु, देश विरति सर्व विरति लेवे रे ॥ विषय कषायने परहरे, ते द्रव्य अनुकंपा सेवे रे ॥ चेतन० ॥ १० ॥ रागद्वेष वळी मोहने, ठमी स्वजावमां आवे रे ॥ शक्ति जाव व्यक्ति पणुं लहे, ते जाव अनुकपा निज थावे रे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ आस्ता लक्षण ग्रहो पांचमुं, करो जिन वचन प्रमाणो रे ॥ जैन जाव समजावमां, देख चेतन राणो रे ॥ चेतन० ॥ १२ ॥ इम पांच लक्षण लाधे आपमां, ते जाणो समकित रे ॥ ज्ञान शीतळ कीधा संपजे, ते चेतन जन्म पवित रे ॥ चेतन० ॥ १३ ॥

सज्झाय ॥ २ ॥ जी ॥ चेतनज्ञाननी ॥

॥ चेतनजी वारणे मत जावोरे ॥ ए देशी ॥

चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोरे, तुमे पर उपयोग निवारो ॥ चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोरे ॥ ए आंकणी ॥ पूर्व कर्म जनित दश प्राणरे ॥ ते परवस्तु प्रमाणरे ॥ तेना संगे उपयोग जाण ॥ चेतनजी० ॥ १ ॥ ए उपयोग चेतन वस्तुरे ॥ परसंगे जमता लहतुरे ॥ रागद्वेष अज्ञान कहंतु ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ ए जूल अनादिनी तुजमांरे, तेथी कर्त्ता जोगता पुदगळमारे ॥ बांधे कर्म वर्गणा चेतनमां ॥ चेतनजी० ॥ ३ ॥ तेथी चउगति जटकण लाग्योरे, मूळरूप कीहां नहीं जाग्योरे ॥ सुकृत साधन सव ताग्यो ॥चेतनजी०॥४॥ तेथी डुखीयो अनादि संसारीरे॥ अहं ममत्व करी जूल जारीरे ॥ हवे गइ वाजी ल्यो सुधारी ॥ चेतनजी० ॥ ५ ॥ सदगुरुनी सेवा करीयेर ॥ करी विनय श्रवण अनुसरीयेरे ॥ तेथी ज्ञान ऋद्धिने वरीये॥ चेतनजी० ॥ ६ ॥ जे अवसर चेतन ज्ञानीरे ॥ पूर्न रीत जुए स्थिर ध्यानीरे ॥ परसंगे अनती हानी ॥ चेतनजी० ॥ ७ ॥ ज्ञान वीर्य एकता कीधीरे ॥ पुदगल परिणमन तजी दीधीरे ॥ उपयोग गुणस्वरूपमा लीधी ॥ चेतनजी० ॥ ८ ॥ शुद्ध अनुजवी आतम धर्मी रे, शक्ति जाव व्यक्ति परिणमी रे ॥ पूज्य अरिहत थया शीवरमी ॥ चेतनजी० ॥ ए ॥ गुण घाति चउनो विनाशरे ॥ तीहां अनत धर्म अवकाशरे ॥ कीधो क्षायक जावमां वास ॥ चेतनजी० ॥ १० ॥ आयुष

अते योगरोध थावेरे, तीहां चेतन अयोगी ठाण पावेरे॥ अते अघाति चउ थाय अन्नावे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ एही सिद्ध सनातक वडुरे ॥ मूळरूप जोइ आनदुरे ॥ ज्ञान शीतळ करी कर्म निकंदु ॥ चेतनजी० ॥ ॥ १२ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ सज्जाय ३ जी मुनिपदनी ॥

॥ ऋषन्ननो वश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

रुरु मुनिपद मुज मन वस्यु, समकित मूळ ज्ञान पाइरे ॥ उलट घणो मुज अंगमां, ए वीण सर्व दुःख दायीरे ॥ रुरुं मुनिपद मुज मन वस्यु ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शब्दनये मुनिपद सपजे, परसंग त्याग निन्नागरे ॥ अलख निरंजन अनुन्नवे, स्थिर रमण उपयोगरे ॥ रुरु मुनिपद० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञान उपयोगवंत जे, ते जीव एम वोलीजेरे ॥ अना उपयोग तन मन्न ते, नहीं जीव ए अजीव कहीजेरे ॥ रुरुं० ॥ ३ ॥ शब्द अर्थनी पूर्णता, जे वस्तु गत धर्म रे ॥ शुद्ध सत्ता प्रगटे ते साधना, ए जीन वचननो मर्म रे ॥ रुरु० ॥ ४ ॥ ए विण कार्य सरे नही, समजो चतुर विवेकरे ॥ अतर दृष्टिये सपजे, ग्रह्यां निज स्वन्नाव टेकरे ॥ रुरु० ॥ ५ ॥ स्वन्नाव धर्मे जे मुनि थया, नित्य प्रणमु तस पायरे ॥ अनुमोदु तस धर्मने, विनय करु जो मीले रायरे ॥ रुरु० ॥ ६ ॥ धन्य धन्य तस अवतारने, धन्य धन्य तस दरशनरे ॥ ज्ञान शीतळ कहे लीजीये, मुनिपद ते दीन धन्यरे ॥ रुरु० ॥ ७ ॥

सज्झाय ॥ ४ ॥ थी ॥ विजयशेठ अने विजया राणीनी ॥

देशी उपर प्रमाणे

वीर जिनेश्वर पाय नमी, नमी अप्रमत्त राय रे ॥ वि-
जयशेठ राणी विजया, गुण गातां हरख न मायरे ॥ धन्य
धन्य ए शियळ सोहामणा ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥
भरतक्षेत्र दक्षिण दिशे,समुद्र तीरे वच्छ देशरे॥त्यां विजय
शेठ वसे समकिती, निरविषय रंग वेशरे ॥ धन्य० ॥ २ ॥
कृष्ण पक्षे विरति हुवा, स्त्री भोग त्याग करशुरे ॥ बाळपणे
निश्चे एम कीयो, वेद विषय परिहरशुरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥
तिहां नामे विजयारूपे भली, समकिती कन्या बाळरे॥ गुण
रागे गुरु सनमुखे, गहुंली करी ठवे मणीलालरे ॥ धन्य० ॥४॥
गुरुने मोतीए वधावती, कहेती व्रत उचरावोरे ॥ शुकल
पक्षे चोथु सद्गुरु, व्रत दीये जग चावो रे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
पूर्व कर्म संबंधी, ए बेहुनो विवाह करी तातरे ॥ शुभ लग्ने
परणावीया, द्रव्य खरची जमाडी नातरे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥
तव विजया शणगार सजी, अवसरे पेउ पासे आवेरे ॥
तेने देखी शेठ हरख धरी, बोले वचन मन भावेरे॥ धन्य०
॥ ७ ॥ शेठ कहे कृष्ण पक्षनो, त्याग विषय व्रत मुजरे ॥
त्रण दिवस रह्या तेहना, पछे करशु भोग तुजरे ॥ धन्य० ॥
८ ॥ तव विजया दिलगी थइ, चिंतवे चित्त मोझार रे ॥
शेठ कहे तुमे चिंता करो, दीन त्रण जतां शी वाररे॥ धन्य०
॥ ९ ॥ विजया कहे मीठे बोलडे, शुक्ल पक्षे व्रत मुज रे ॥
गुरु पासे बाळ वये लीधो, ते केम सेवु हु स्वामी तुज रे ॥

॥ धन्य० ॥ १० ॥ उन्नय पक्षे अमे पाळशु, पेहेरी शियळ सन्नाह रे ॥ काम वाण लागे नहीं, ज्ञान योगे टाळु वेद दाह रे ॥ धन्य० ॥ ११ ॥ तमे अवर नारी परणीने, सेवो शुक्ल पक्षे तेह रे ॥ कृष्ण पक्षे विरति रहो, त्याग विषय सेवा एह रे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ एम विजया मुख वचन ए, मधुर साकर जेम द्राख रे ॥ सांन्नळी शेठ आगळ कहे, ज्ञान शितळ सुणी शियळ राख रे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ जी ॥

॥ श्रुतशु रग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

शेठ शियळ दृढ रंग अनोपम, निर्विष निर्मळ काया रे ॥ शुरवीर काम कदर्प हणवा, श्रुत ज्ञानी मांहि ए सवायारे ॥ शियळशुं रग लाग्यो० ॥ रंग लाग्यो रे चोळ मजीठ ॥ शियळशुं रग लाग्यो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ ॥ १ ॥ बीजी नारी न परणु न न्नोगवु, विषय काळकुट विष सरखुं रे ॥ एम समजी उन्नय पक्ष पाळी, निर्विष शिळ गुणे हरखु रे ॥ शियळशु रंग लाग्यो० ॥ २ ॥ सदा सर्वदा विषय न सेवुं, त्रिकरण योगे व्रत वहालुं रे ॥ मात पिताने ए वात न जणावु, जाणे तव दिक्षा लइ पाळु रे ॥ शियळ० ॥ ३ ॥ एम अन्निग्रह वेहु एक वृत्तिये, लीये शुद्ध शिळ परिणामेरे ॥ त्यागी वैरागी ए जीव गुण रागी, चढी न्नाव चरण ठाण पामे रे ॥ शियळ० ॥ ४ ॥ क्षण क्षण वरते निज उपयोगे, अनुन्नवे निज पर न्निन्नरे ॥ न्नाव शियळसो पुद्गल त्यागे, परश विन्नागी सद लीन्नरे॥

॥ शियळ० ॥ ५ ॥ तद्गत लीन्न वेहु एक सज्याए, सुवे मध्य खड्ग व्रत धारारे ॥ धैर्यवंत वीर्यवंत ज्ञानी, नरनारी संगी संग न्यारारे ॥ शियळ० ॥ ६ ॥ एक आसने वेठ विषय हणीने, सुए वेसे वोले व्रत राखे रे ॥ ते कारणे केइ व्रत धर पमीया, न पम्या ते अधिक ज्ञानी जाखे रे ॥ ॥ शियळ० ॥ ७ ॥ अचळ शियळ रत्न ए अमुलख, गाम गाम नहीं नही गाजे रे ॥ विजय शेठ विजीया राणी वेहुने, अंगे शिळ रत्न विराजे रे ॥ शियळ० ॥ ॥ ८ ॥ एम शिळव्रते प्रमोद जाजो, ज्ञान शीतळ शुद्ध जावे रे ॥ विषय विकार न व्यापे अंगे, ते चेतनराम कहावे रे ॥ शियळ शु रंग लाग्यो० ॥ ९ ॥

॥ ढाळ ३ जी ॥

॥ देशी एकवीसानी ॥

विमळ केवळीरे, चंपाये आवी समोसर्या ॥ मुनि समुदायरे, सहस चोराशीयें परवर्या ॥ तीहां श्रावक रे, जीनदास वीरति सही ॥ करे वंदनारे, मुनिपति मुनिनो विनय तहीं ॥ त्रुटक ॥ दीये देशना विमळ केवळी, मुनि पद उळखावता ॥ एक ज्ञानी ते मुनि कहीए, बीजा ज्ञानी निश्रा पावता ॥ ए वे विण त्रीजो मुनि न कह्यो, जिनपतिए जिन शासने ॥ तेवा मुनिने विनयें वांदतां, छोमे कर्मबंध पासने ॥ १ ॥ ए मुनिने रे, आहार पाणी आदें श्रावक दीये ॥ खप पूरतु रे दोष वर्जीत शुद्ध ते लीये ॥ आमह करी रे, श्रावक देवानी इच्छा करे ॥ तेना फळनी रे, वछा

कहीए ते ना करे ॥ त्रुटक० ॥ ना करे वळा शुन्न फळ केरी, शुन्न कर्मे शुद्ध न कोइरे ॥ शुन्न कर्म ए पुन्य प्रकृति दीये शातामें उदये जोइरे ॥ ते पापस्थान दश पंचमुं रति, पाप दाता ए सही ॥ पुन्य न्नोगवतां पाप आवे, ते कारण पुन्य न्नलुं नहीं ॥ २ ॥ एम सांन्नळी रे, अज्ञानी ते बोले इस्युं ॥ सुपात्रनेरे, दान देइ न इच्छे फळ कस्युं ॥ एम जोतां रे, सुपात्र निरथक हुउं ॥ फळ दातारे, सुपात्र तो सुत्रे कह्या जुउं ॥ त्रुटक० ॥ सुपात्र तो सुत्रे कह्या छे, बोधि बीज दाता सही ॥ दिक्षा दाता चरण प्रख्याता, आश्रव पंच त्यागी लही ॥ निर्जरा हेतु तप गुण दाता, शीवसुख हेतु ए न्नला ॥ इच्छा रहित विनय जोगे, दान देइ शुन्ना शुन्नथी टल्या ॥ ३ ॥ एम सांन्नळी रे, जीनदास विनति करे ॥ मुज घरे मुनिरे, सहस चोरासी पारणुं करे ॥ ए विनतिरे साहेव मारी मानजो ॥ मनोरथ फळेरे, गुण रागे न्नक्ति जाणजो ॥ त्रुटक० ॥ वळतुं केवळज्ञानी बोले, एम वाततो नहीं बने ॥ सहस चोरासी सूजतुं लेवे, आहार पाणी कीहां क्यां कने ॥ एटलो आहारादिक एक ठामे, सुजतो कदी निपजे नहीं ॥ तुज मनोरथ पूरवा दाखुं, फळ एटलुं होवे सही ॥ ४ ॥ वच्छ देशेरे, शेठ विजय राणी विजया ॥ न्नावयति शुद्धरे, ग्रहस्थी वे ज्ञाने न्निजीया ॥ शियळ शुद्धरे, अद्भूत अचळ रुगे नहीं ॥ उत्कृष्टारे, ए सम अवर न जग मही ॥ त्रुटक० ॥ ए बेहुने उलट न्नर देवो, न्नोजन न्नलो रस स्वाद ए ॥ न्नक्ति करीने रंग

हणीने रे ॥ ए भावे अरिहत सिद्ध थावे, अंते योग रोध करीने रे ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ अघाति चउनो क्षय इहां थावे, रूपातित सिद्ध भावेरे ॥ एक भाग पोलारनो ठमी, वे भागे प्रदेश समावे रे ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ समश्रेणीए सिद्धि वरिया, विजयशेठ विजय राणी रे ॥ लोकते अवगाहना वीराजे, अनत धर्मनी ए खाणी रे ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ ए सिध्यां सादि अनतमे भांगे, अकृत्य अनुभव वृत्तिरे ॥ निज गुण पर्याय ऐश्वर्यता, न तजे लक्षण आकृतिरे ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ निज द्रव्यें ध्रुवता स्थिर सिद्धमा, ज्ञान शीतळ कृत ज्ञानरे ॥ सिद्ध राय ज्ञान अकृत आपो, तो रूपातित करु ध्यानरे ॥ चारित्र० ॥ ९ ॥

॥ फळश ॥

॥ त्रिजगभासन ॥ ए देशी ॥

एम शियळ सुध्धु, त्रिकरण योगे, उभय पक्षे पाळिये ॥ जाव जीव निश्चळ वृत्तिये, देवगति निहाळीये ॥ १ ॥ शियळे देव सानिध्य करे, शियळे शितळ आगरे॥ शियळे सकट भय हरे, फुलमाळ होय विषधर नागरे ॥ २ ॥ द्रव्य शियळ ए पुन्य कारण, शिव कारण शिळ भावथी ॥ पुद्गल त्याग अनुभव योगे, भावो शिळ आत्माथी ॥ ३ ॥ भाव शीयळ एक अनुभव ज्ञाने, निज पर भिन्न होवे सही ॥ शुद्ध पर्याये रमण अनुभव, जांगें सिद्धगति ग्रही ॥४॥ विजय शेठने विजया राणी, शियळ अखंग पाळता ॥ सावद्य त्याग समदृष्टि ज्ञाने, सिद्धगति

पथ चालता ॥ ५ ॥ ए दपतिना गुण गाया, अनुभव उपयोग भावथी ॥ तेह तणी पांच ढाळो कीधी, गुण रागे प्रमोदथी ॥ ६ ॥ मुज मनोरथ सफळ कीधो, अनुमोदना फळ मे लह्यो ॥ ज्ञान शीतळ एम गुण रागे, रमण करतां मन स्थिर रह्यो ॥ ७ ॥ आ सज्झाय जे भणशे गणशे, सुणशे निश्चळ चित्तथी ॥ ज्ञान शितळ आतम ज्ञान जोगे, गुण वृद्धि विनितथी ॥ ८ ॥

संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥ ५५ ॥

॥ सज्झाय ५ मी अनाथ सनाथ विचारनी ॥

॥ ऋषभनो वंश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

चतुर सनेही सांभळो, अनाथ सनाथ विचार रे ॥ द्रव्य खेत्र काळ भावथी, कहु ते करो निरधार रे ॥ चतुर सनेही सांभळो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ द्रव्य अनाथ जकता तीहां, जीव अज्ञानी मिथ्यात्वी रे ॥ अशुद्ध उद्यमी ए वहिरातमा, अनादि भविने अभवी रे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ खेत्र अनाथ वाह्य खेतमां, क्षुधा तृषादि काया गत दुःखरे ॥ मन ममताये नही तृपति, आशा अधुरि त्यां आवे नही सुखरे ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ काळ अनाथ जरा मरण ए, चवन जन्म अति दुःखरे ॥ लाग्यां चउगति ससारमां, केके आवे एनी भागी नहीं शुखरे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ भाव अनाथ विभाव ए, रागद्वेष दोय त्रीजो मोह रे ॥ विषय कषाय मिथ्यात्व छे, ए संसार मूळ वीज तेहरे ॥ चतुर० ॥५॥ ससार चउगति अनाथ छे, तेनो दाता मिथ्या

मोह अनाथरे ॥ एने ग्रहे ते जीव अनाथ छे, तेनो बेली नहीं सनाथरे ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ द्रव्य अनाथ दाता अज्ञानए, खेत्र अनाथ क्षय उपशम हानी रे ॥ काळ अनाथ दाता मिथ्यात्व छे, भाव अनाथ परिणति अशुद्ध प्राणीरे ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ तेने हणया सनाथ त्रण लोकनो, जेहणे ते सही थाय रे ॥ एम जाणी भविजन क्षय करो, गुरु ज्ञान खड्ग हाथ लाय रे ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ ए विण अवरेक्षय नही, क्षय होय जो आतम ज्ञान रे ॥ तो घटतर प्रकाश करे, ए चोरो तीहां भागे एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ए ॥ ज्ञान योगे सनाथ आतमा, धर्म कार्य वत थाय रे ॥ तेह चउभेदे दाखवुं, उतकृष्टे परमातमरायरे ॥ चतुर० ॥ १० ॥ द्रव्य सनाथ दो भेदे कहु, सम्यक दर्शन ज्ञानरे ॥ धर्म उद्यमी अंतर आतमा, लहे भवि केइ एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥ खेत्र सनाथ अंतर खेत्रमा, अनुभव भुवने वास रे ॥ दृष्टि स्वभाव पर्यायमा, तीहा नहीं आश्रव अवकाशरे ॥ चतुर० ॥ १२ ॥ काळ सनाथ अप्रमत्त वृद्धिये, क्षपकश्रेणी मझायरे ॥ ते नर अमर शीवपद वरे, अयोगी अते तुटे कायरे ॥ चतुर० ॥ १३ ॥ भाव सनाथ शुद्ध परिणतिये, चरण यथाख्यात वीतरागरे ॥ रागद्वेष मोह सवि टळे, ससार निरबीज शीवमागरे ॥ ॥ चतुर० ॥ १४ ॥ त्रण भेदो जो भावपणु लहे, तोहोय तद्भव सिद्ध गयरे ॥ नही तो ससार स्थिति रहे, उत्कृष्टी जघन्य कहायरे ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ पकता अरथ

पुद्गल वर्त्तना, नहि तो सात आठ नव थाय रे॥ जघन्य त्रीजे नवे शीव लहे, त्यां अव्यावाध सुख सदाय रे॥ ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ द्रव्य सनाथ दाता अथि नेद ए, क्षेत्र सनाथ क्षय उपशम वृद्धि रे॥ काळ सनाथ दाता उपयोग नाव छे, नाव सनाथ अनुनव शुद्धि रे॥ चतुर० ॥ १७ ॥ एम अनाथ सनाथ विचारीने, अनाथ नावने हणीया रे॥ अनाथी मुनितस नाम छे, सनाथ ए ज्ञान गुणे दरिया रे॥ ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ त्रण सनाथ कारणरूप छे, नावसनाथ कार्य अनुप रे॥ अनाथ पद दुःखनुं मूळ छे, सुख मूळ सनाथ नूप रे॥ चतुर० ॥ १९ ॥ सनाथ पद धारीने करुं वदना, प्रणमुं तेहना पायरे॥ गुण गाउ अतरंगशुं, अनुमोद वारंवार थाय रे, ॥ चतुर० ॥ २० ॥ त्रण सनाथ दोय गति पामता, देवनी एक वीजी सिद्ध रे॥ नावमां ए आवे तो संपजे, नहीं तो लहे देवनी ए ऋद्ध रे॥ चतुर० ॥ २१ ॥ नही नाव सनाथ त्यां संसार छे, त्रण सनाथ संसार अल्प रे॥ वहुल ससार अनाथमां, द्रव्य अनाथ मिथ्यात्व जल्प रे॥ चतुर० ॥ २२ ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्तनो, मालिक अनादि मिथ्यात्व रे॥ एथी तुटयां संसार अल्प छे, पामे समकित लहे गुण सत्त्व रे॥ चतुर० ॥ २३ ॥ अनाथ उपादान मोह छे, छे वळी रागने द्वेप रे॥ सनाथ उपादान जीव गुण छे, छे जीव पर्याय प्रदेश रे॥ चतुर० ॥ ॥ २४ ॥ वाह्य दृष्टिये अनाथ छे, अंतरदृष्टिये धर्म सनाथ रे॥ वाह्य [illegible] र, साथ छे, अतरदृष्टि शीव-

साथ रे ॥ चतुर० ॥ २५ ॥ व्यवहार वर्त्तना ते बाह्य छे,
शुन्नाशुन्न जोग त्रण वृत्तिरे ॥ आश्रव करणी छे ए सही,
धर्म कहे ए अनाथ आकृति रे ॥ चतुर० ॥ २६ ॥ शब्द
वर्त्तना अंतरगमा, अनुन्नवे उपयोग स्थिर रे ॥ स्वरूप
रमण शुद्ध न्नावथी, गुण वृद्धि होय लहे स्फुरणा वीर रे ॥
॥ चतुर० ॥ २७ ॥ सोही सनाथ पद न्नावीये, न्नेद ज्ञान
लावी घट मांही रे ॥ सप्रविन्नाग तीहां सपजे, हेय
जाणी छंडे पर त्याही रे ॥ चतुर० ॥ २८ ॥ आदर एक
शुद्ध स्वरूपनो, ध्याता ध्येय ध्यान एकत्व रे ॥ ध्येय शुद्ध
द्रव्यार्थक ए, ध्याता पर्याय धर्म महत्व रे ॥ चतुर० ॥२९॥
ध्यान शुक्ल एकता अन्नेदता, पर्याय धर्म द्रव्य मांहि रे ॥
न्निन्न गवेषण इहां टळे, मिळे परिणति शुद्ध अशुद्ध नांही
रे ॥ चतुर० ॥ ३० ॥ इहां मोहनु उन्मूलन थयु, टल्या
रागने द्वेष दोयरे ॥ क्षय उपशम न्नाव इहां टल्यो, लहे
मुनि यथाख्यात सोही रे ॥ चतुर० ॥ ३१ ॥ न्नाव सनाथ
तस कीजीये, ससार निरबीज वत रे ॥ वीतराग गुणठाण
बारमे, त्रण कर्म हणे महा सत रे ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥
केवळनाण दर्शण प्रगटे, प्रगटे क्षायक लब्धि पांचरे ॥ दान
लान्न न्नोग उपन्नोग ए, वीर्य स्फुरणा अनंत न खांचरे ॥
चतुर०॥३३॥ ए परमानंद पद मोटको, अरिहंत तेरमे वासरे॥
आयु अंते योग रोध करे, अयोगी ठाणे सिद्ध पास रे ॥चतुर०
॥३४॥ अघाति चउ कर्मथी टल्या, तुटी वर्गणा कारमणरे॥
तुटी वळी मनुष्यगति इहां, लुटयु चउगति भ्रमण रे ॥

चतुर० ॥ ३५ ॥ आत्म असंख्य प्रदेशनो, निबरू घन दोय न्नागे थाय रे ॥ एक न्नाग पोलाणनो घटे, बुटयुं शरीर तेहथी गणाय रे ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥ ए घन सिद्धत्ती अवगाहना, लोक शिखर करे वास रे ॥ समश्रेणीये एक समयमां, ज्योतमां ज्योतनो समास रे ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥ रुपातित सिद्ध महरायने, सादि अनंत न्नग कहिये रे ॥ सिद्ध गति अनादि अनत ठे, एसी अक्षय पदवी लहीये रे ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥ अकृत अनुन्नववत ठे, अनत केवळ नाण दर्शन्न रे ॥ चारित्र वीर्य अनत ठे, ए प्रत्यक्ष प्रमाणे मानुं धन्न रे ॥ चतुर० ॥ ३ए ॥ सोहि सनाथ व्यक्ति धर्मना, अव्याबाध सुखवंत रे ॥ अलख निरंजन अचल ए, परमानंद न्नोगी महंत रे ॥ चतुर० ॥ ४० ॥ एवंन्नूत नय पूर्णता; सनाथ विचारे गवेषी रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे पामीये, शुद्धात्म अनुन्नव पेखी रे ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥

॥ सज्जाय ॥ ६ ठी ॥ मधु विंदवानी ॥

एक दिवस विषे नेमि कुंवर निज मित्र संघातें आवे ॥

॥ ए देशी ॥

संसार वने चउगति न्नव न्रमण जीवने डुःख मोटुं॥ अनुन्नव विना, धर्म साधन करीए ते सर्वे ठोटुं ॥ ए आंकणी ॥ मधु विंदु दृष्टांत चित्त धरीये, अघोर वन चउगतिमां फरीये, तीहां वनगज मारे ते करीये, संसार वने० ॥ १ ॥ जीव आगळ गज पाठळ दोमे, वमनीचे कूप दीठो दोमे ॥ तेमां लटके वमवाइ दो जोमे, ॥ संसार० ॥ २ ॥

दृष्टि नीची करे कुप खाड़े, अहि च्यार अजगर एक मुख फाड़े ॥ भय लाग्यो उरध मुख चीस पाड़े ॥ससार०॥३॥ कापे मुषक दो वडवाइ जोवे, श्याम उज्जळ वर्ण जीवित खोवे, वड पाडण गज गर्जित होवे, ॥ संसार० ॥ ४ ॥ वड कपे उन्नो स्थिर खडे, मधपूडे वेठेली त्यां मखीयां उडे ॥ अगे वळगे ते दुःखथी रडे ॥ससार वने० ॥ ५ ॥ ए मधपूडो तीहां फाटीयो, मध झरे पडे बिंदु नाके लीयो ॥ चाटी स्वाद लहता दु खटळीयो ॥ ससार वने० ॥ ६ ॥ एणे समे गगन विमानमां, विद्याधर पत्नी आणंदमां ॥ वेसी जावे इच्छीत स्थानमां, ससारवने० ॥ ७ ॥ एणे दीठो कूपे जीव दुखीयो, कहे विद्याधरी काढी करो सुखीयो, एने लावो इहां ए न रहे भूखियो, ससारवने० ॥ ८ ॥ कहे विद्याधर तु सुण प्यारी, ए वचन न माने हितकारी ॥ दुर जाता काळक्षेप नही सारी, ससार वने० ॥ ए ॥ पुनरपि बोले तिहां कने, विद्याधर उतरे स्थिर मने ॥ कहे आवी वेसो भाइ विमाने, ॥ ससारवने० ॥ १० ॥ ए वचन न माने विकळ भारी, कहे बिंदु लइ आवुं मन ठारी, उचु जुए ए मधपुडे मुख धारी, ससार वन० ॥ ११ ॥ एम पुनरपि बिंदु आवे, लइ चाटे स्वादे मन भावे ॥ नीकळे नहीं दुख भुली जावे ॥ ससारवने० ॥ १२ ॥ एने मुकी विद्याधर जावे, कह्यो नय उपनय दाखु भावे ॥ तीहां ज्ञान शीतळ आनद पावे ॥ ससारवने० ॥ १३ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ साधुजी समता आदरो ॥ ए देशी ॥

चेतनजी शुद्ध अनुभव करो, तीहां निज पर भिन्नता थाय मेरे लाल ॥ टळे परसंगीपणु, उपयोग स्वरूपे प्रगटाय मेरे लाल ॥ चेतनजी शुद्ध अनुभव करो ॥ आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए साधन शीवपंथनुं कह्यु, एथी चउगति बुटे संसार ॥ मेरे लाल०॥ द्रव्य भाव नोकर्मने हणी, थाय सिद्धि वधु भरथार ॥ मेरे लाल ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ इत्रे उपनय अर्थ मूळ ढाळनो, कहु समजो चतुर सुजाण ॥ मेरे० ॥ वन चउगति सोइ मोटकुं, पुनर्भव भ्रमण प्रमाण ॥ मे० ॥ चे० ॥ ३ ॥ दुःख अशाता कीजीये, गज ते काळ मारण हार ॥ मेरे० ॥ वरू ते आयुष भाखीयुं, कूप काय जोग इंद्रि ससार ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ४ ॥ वरूवाइ श्वासोश्वास ठे, अहि चार कषाय कहाय ॥ मेरे० ॥ अजगर मोह ने किजीये, मूषक पक्ष शुक्ल कृष्णाय ॥ मेरे० ॥चे० ॥ ५ ॥ मखीयां कुटुंब परिवार ते, वळग्यु अनुकुळ प्रतिकूळ ॥ मेरे० ॥ खेद क्लेश करी काळ निरगमे, ए तो जाणीये पासानुं शुळ ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ६ ॥ मधु बिंदु विषय सुख जाणीये, पंचइंद्रि विषय अभंग ॥ मेरे० ॥ रागद्वेष एहथी वधे, तेने माने सुख वेठो रंग ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ७ ॥ विद्याधर सोही सद्गुरु, गगन निरालंब ध्यान तर ॥ मेरे० ॥ विमान ते धर्म जाणीये, पतनी ते सुबुद्धि हितकर ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ८ ॥ जावे इच्छित ते मुक्तिपुरी, दीठा सावद्य

कूपे दुःखी जीव ॥ मेरे० ॥ सुबुद्धि कहे काढो दया करी, लावो निर्वंध विमाने करो शीघ्र ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ए ॥ आतम ज्ञानी विद्याधर कहे, ए नहीं माने मुज केहेण ॥ मेरे० ॥ ध्यान तुरंगे जाउ वेगशुं, फोगट कुण रेवे रेण ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १० ॥ पुनर पतनी प्रेयों थको, ध्यान घोकेथी उतरे ते स्थान ॥ मेरे० ॥ कहे ससार कूप थकी नीकळो, बेसो ज्ञान वेराग ते विमान ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ११ ॥ ए माने नहीं विकल घणो, परिग्रह जोग विपयनी मांही ॥ मेरे० ॥ सद्गुरु तीहा समजावता, दुर्गति ससार राग त्याही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १२ ॥ ते कारण तजीए प्रेमथी, जेम काचळी उतारे सर्प ॥ मेरे० ॥ फरी मनमां नवी लावीए, एक ग्रहीये सयम महा तप ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १३ ॥ ए वचन सुणे इद्रि गुणे, न चितवे हृदयनी मांही ॥ मेरे० ॥ हिताहित समजे नहीं, गुरु उपदेश गुण नहीं त्याही ॥ मेरे० ॥ चे० १४ ॥ फरी स्वर्गना सुख गुरु दाखवे, कहे पामो तजीने संसार ॥ मेरे० ॥ देवागना ऋद्धि लावे आयुपे, करो जोग दिक्षा लेइ जीव तार ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १५ ॥ ए वचन सुणी मन चितवे, मीठु लाग्यु मोहित थयुं मन ॥ मेरे० ॥ ससार राग कूप नवी टळे, मोह वळग्यो न छुटे जेम जन्न ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १६ ॥ कहे आगळ ससार ठोमहु, हाल जोगवु अनुकूळ सुख ॥ मेरे० ॥ दुःख नजरे नथी आवतु, मिथ्यात्वी माने सुख ए तो दुःख ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ एम समजी ध्यान घोके चडी, गुरु गया जाव

अध्यातम त्यांही ॥ मेरे० ॥ अकृत्य अनुभव पामीया, हुइ व्यक्ति अनंत गुण मांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १८ ॥ तेमां मुख्यता केवळज्ञाननी, सद्भूत शुद्ध क्षायक तेह ॥ मेरे० ॥ परमातम पद ए मोटको, तीहां जमी गइ कर्म खेह ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १९ ॥ निरंजन सिद्ध निराकार ए, परमानंद ज्योति अनंत ॥ मेरे० ॥ अव्याबाध सुख अनुभवे, अविनाशी अचळ शीवकंत ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २ ॥ तुही अलख अगोचर माहरे, कहे ज्ञान शीतल सुणो सिद्ध ॥ मेरे० ॥ ते दुःख साले छे अति घणुं, दु:ख जाय जब देखुं तुज ऋद्ध ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २१ ॥

॥ कळश ॥

एम हरखे गायो, ज्ञान पायो, मधुबिंदु विचारए ॥ तेह तणी दो ढाळो कीधी, समजी लहो भव पार ए ॥ १॥ संसार दुखनु मूळ छे, हानि सुखनी थाय ए॥ ते कारण अंतर्दृष्टिये, तजीये संसार रागए ॥ २ ॥ आतमज्ञानी गुरु जोइने, दिक्षा लियो भवि हित ए॥ ज्ञान शितळ निजद्रव्य भावे, आणंद लहो सिद्ध खेत ए ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ सर्व ॥ ३७ ॥

॥ सज्जाय ॥ ७ ॥ मी माळा आरोपणनी ॥

॥ तपशु रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

समकित मूळ गुण माळा आरोपण, गुरु निग्रथ निश्रायें थाय रे ॥ उपधान वहीने पेहे रे, ते श्रावक श्राविका कहाय रे ॥ माळा आरोपण रे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ माळा

मूळ भेद पच परमेष्टि, उत्तर गुण एक सत आठ रे ॥ अरिहत सिद्ध सूरि पद त्रीजे, उपाध्याय साधु गुण क० पाठ रे ॥ माळा० ॥ २ ॥ अरिहत प्रथम परमेष्टि, गुण बार उज्वल वरणे रे ॥ तीहा घाति चउ कर्म हणीने, अनत चतुष्टी प्रगट निरणे रे ॥ माळा० ॥ ३ ॥ सिद्ध पद परमेष्टि बीजा, आठगुणे रक्त वरणे रे ॥ कार्मण कर्म रहित पुद्गलथी, मूळ रुप प्रगट लीयो शरणे रे ॥ माळा० ॥ ४ ॥ आचार्य परमेष्टि त्रीजा, छत्रीस गुणे पीत वरणे रे ॥ पट् दर्शन शास्त्रने जाणे, सही सयम श्री तस परणे रे माळा० ॥ उपाध्याय परमेष्टि चोथा, पचवीश गुणे नील वरणें रे ॥ द्वादशांगी सिद्धातनी पेटी, भणे भणावे खपी जो रहे शरणे रे ॥मा०६॥ साधु ते पचम परमेष्टि, सत्तवीस गुणे श्याम वरणे रे॥ निर्दोषी मूळ व्रत सदाये, दोप लागे तो उत्तर गुण हणेरे॥ माळा० ॥ ७ ॥ आचार्य उपाध्यायने साधु, अप्रमत्त ठाणे पद पावे रे ॥ प्रमाद ठाणे आवे नहीं तो, श्रेणी मांडी अरिहत सिद्ध थावे रे ॥ माळा ॥ ८ ॥ पच परमेष्टि गुण प्रमाणे, माळामां कीधा सही गुच्छारे ॥ द्वादश उज्वळ आठ रक्त ए, पीत छत्रीस खील्या रुडा अतुच्छारे॥ माळा० ॥ ए ॥ नीला पचवीश श्याम सत्तावीस, एम पचवरणी माळा रे ॥ एक सत्तने आठ गुच्छानी, शोभे अद्भूत पेहेरी धर्म लालारे॥ माळा० ॥ १० ॥ माळा गुण घट अंतर माहि, अनुभव भुवने आवे रे ॥ समभाव वृत्तिये तद्गत खेले, गुणगत उपयोग परिणामावेरे ॥ माळा० ॥११॥ उच्छव महो-

जब अधिको वदलां अनहद वाजां वाजे रे ॥ सहज सूर्योदय तेजे नयना. त्यां अनुभव ज्ञानी विरवे रे ॥ नाळा० ॥ १२ ॥ इत्यादि गुण वर्तनमां आवे. तव व्यवहार निश्चे बेहु जावे रे ॥ व्यवहारे उपाधि करतां. निश्चय सद्गुण उप प्रगटावे रे ॥ नाळा० ॥ १३ ॥ बाह्य कष्ट करती व्यवहारे. तेथी मूढ रंजन थावे रे ॥ अंतर करती रंजन चतुर नर. एम सिद्धांती सही गावे रे ॥ नाळा० ॥ १४ ॥ अंतर गुण माळा जे पेहेरे, ते तत प्रभुनुं पावारे ॥ नेथी ज्ञान शीतळता सद्दीये. गुण गातां गुण वृद्धिये सवायारे ॥नाळा०॥१५

॥ सज्झाय ८ मी लघुता विचारनी ॥

॥ चतुर नर सामायक नय धारो ॥ ए देशी ॥

चतुर नर लघुता वृत्ति पेखो. लघुताए सुखीयो गुरताए दुःखीयो, जीव जगतमां देखो चतुरनर ॥ लघुतावृत्ति पेखो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ लघुताए उपशम आवे, मोह प्रकृति दवावे ॥ तीहां समकित चारित्र लहीए, ए शीव सुख कारण थावे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ गुरुतामां माननो वासो, मद मोटपमां जराणो ॥ बाळ्यो न वळे पथ्थर थत्रो, एम मान न ठोके जाणो ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ मोटप करतां ठोटप थावे, दुर्गति दीनता पावे ॥ एसो जाणी मोटप मेलो, एम सिद्धांती सही गावे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ लघुता करतां विनय आवे, वोधि वीज तीहां पावे ॥ विनय रहितने गुण न थावे, गुरुवाइ अनम्र कहावे ॥ चतुर० ॥ ५ ॥ लघुता चारित्रनु अंग, चतुर ग्रहो तुमे

मोह अग मोटपने टालो, ए पाप प्रकृति दुःखदाइ ॥चतुर० ॥ ६ ॥ उपशम भावे परमा पेसे, परथी तुटे नाहि॥ ते कारण उपशम आदरीये, लहीए निज घर लघुता त्यांहि ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ उपाधि रोकण अति वळीयो, उपशम भाव कहावे ॥ उपाधि एक ध्वस करणकु, ज्ञान वनो आगु थावे ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ उपशम श्रेणीये उपशम आगु, गण एकादशमे अटके॥ अंतर महुरत एकज रहेवे, तीहांथि उदय आवीने पटके ॥ चतुर० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणीये ज्ञान आगु, उपशम पाछळ लागु ॥ उपशमे उदय उपाधि अव्यापक, उपाधि हणे ज्ञान जागु ॥ चतुर० ॥ १० ॥ घाति कर्म उपाधि खुटे, सत्ता उदय न लाधे ॥ अरिहत सजोगी एही, आयु छेके योग रोध साधे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥ अघाति चउ कर्म अभावे, सिद्ध सनातक थावे ॥ ज्ञान शीतळ ए निरजन निर्मळ, समश्रेणीये सिद्ध सधावे ॥चतुर०॥१२॥

सज्झाय ॥ ९ ॥ मी ॥ आयु अधिरनी ॥

॥ ऋषभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

आयुष्य तुटयाने सांधो को नहीं, चतुर चित्तमां चेतोरे॥ काळ क्षण क्षण आयु छेदतो, छेल्ली क्षणे मरण देतो रे ॥ आयुष्य त्रुटयाने साधो को नहीं ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते कारण प्रमाद परहरो, ग्रहो स्वरूप उपयोगरे ॥ ज्ञान दर्शनादि तीहा सपजे, करे सकाम निर्जरा निरोगरे ॥ आयु० ॥२॥ मिथ्यात्व कषाय जीहा टळे, टळे अज्ञान अतरायरे ॥ रागद्वेष मोह सवि टळे, तीहां क्षीण

मोह वीतराग थाय रे ॥ आयु० ॥ ३ ॥ ए निरोगी पुनरपि मरे नहीं, न जन्मे चउगति संसाररे ॥ केवळनाण दर्शण सही, अमरपद सिद्ध निरधाररे ॥ आयु० ॥४॥ एम आयुष अथिर विचारतां, अप्रमत्त ठाण न छोडेरे ॥ क्षपक श्रेणि अपूर्वे मांडीने, शुक्लध्याने कर्म सवि तोडेरे ॥ आयु० ॥ ५ ॥ जन्म जरा मरण काळथी, कह्यो छुटवानो उपायरे ॥ ज्ञान शीतळ करी जे लहे, ते जीवन मुक्त कहायरे ॥ आयु० ॥ ६ ॥

॥ इति सज्झाय अधिकार सपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री गुरु भक्तिनो रास लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥

प्रणमुं श्री गुरु रायने, बोधि बीज दातार ॥ शिव सुख हेतु ए भला, मोह विदारण हार ॥ १ ॥ गुरु भक्ति गुण गाइशु, रास रचुं मनोहार ॥ ढाळ बंध रचना करुं, त्यां प्रमोद भावना सार ॥ २ ॥ गुरुगुण रत्न चितामणी, गुरु वच हे रसकूप ॥ गुरु ज्ञान पथ शीवनो, गुरु अनुभव शीव रूप ॥ ३ ॥ गुरु दर्शन पूरव दिशी, गुरु मुख पुनमचंद ॥ गुरु विनय मूळ धर्मनु, गुरु शीव सुखकंद ॥४॥ गुरु आज्ञा पारस मणी, गुरु शिक्षा सुर कुंभ ॥ गुरु रागथी सिद्धि ऋद्धि, गुरु स्मरण चित्त शुभ ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली ॥

समुद्र विजय कुळ चदलो जीन वंदिये ॥ ए देशी ॥

वस्तु सत्ताना जाण रे ॥ गुरु वंदीये ॥ हुकम मुनि

ज्ञसनाम सद्गुरु वदीए ॥ ओळखावे वस्तु प्रते ॥ गुरु० ॥ सत्ता सहित हित काम॥ सदगुरु० ॥१॥ गुण पर्याय ज्ञाजन सही ॥ गुरु० ॥ एक रुप त्रण काळ ॥ सदगुरु० ॥ तेह द्रव्य निज जातिनो ॥गुरु० जश नहि ज्ञेद विचार ॥ सदगुरु० ॥ २ ॥ धर्म कहीए गुण स्वज्ञावे ॥गुरु०॥ कर्म ज्ञावी पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ ज्ञिन्न अज्ञिन्न त्रिविध सदा ॥गुरु०॥ एक पदारथ पाय ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ उपजे वीणसे स्थीर रहे ॥ गुरु० ॥ ए छे वस्तु वखाण ॥ सदगुरु० ॥ उपजवु विणसवु ते सही ॥ गुरुवदीये ॥ पर्याय धर्म ते जाण ॥ सदगुरु० ॥ ४ ॥ स्थिरपणो तीहां द्रव्यनो ॥ गुरु० ॥ पलटे नहीं निरधार ॥ सदगुरु० ॥ अवगाहना सर्व द्रव्यनी ॥ गुरु० ॥ गुण पर्याय प्रदेश धार ॥ सदगुरु० ॥ ५ ॥ तेहीज सत्ता द्रव्यनी॥ गुरु० ॥ वीणसे नहीं त्रण काळ ॥सद्गुरु०॥ द्रव्यें द्रव्य मिले नहीं ॥गुरु०॥ असहाय अनादि निहाळ ॥ सदगुरु० ॥ ६ ॥ निज सत्तामय द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥ परसत्ता ग्रहे न कराय ॥ सदगुरु० ॥ द्रव्यरुप छति कार्यनी ॥ गुरु० ॥ तिरोज्ञाव शक्ति सदाय ॥ सदगुरु० ॥ ७ ॥ आविरज्ञावे निपजे ॥ गुरु० ॥ व्यक्ति गुण पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ कार्य कारण निज द्रव्य छे ॥ ॥ गुरु० ॥ परद्रव्य अकारण अकार्य ॥ सद० ॥ ८ ॥ छति पणे स्व द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥ अछति पणे परद्रव्य ॥ सद० ॥ एम अस्ति वे वस्तुनी ॥ गुरु० ॥ रही छे सर्व द्रव्य ॥ सदगुरु० ॥ ए ॥ द्रव्य स्वज्ञावे नित्य,छे ॥ गुरु० ॥ पर्याय

स्वन्नावे अनित्य ॥ सदगुरु० ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमां ॥ गुरु० ॥ न्नापे ज्ञानी विनित ॥ सद० ॥ १० ॥ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाळथी ॥ गुरु० ॥ स्वन्नाव सहित चार सत्य ॥ सदगुरु० ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाळथी ॥ गुरु० ॥ परन्नाव ए चार असत्य ॥ सद० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक छे ॥ ॥ गुरु० ॥ तेमां गुण पर्याय अनेक ॥ सद० ॥ गुण पर्यायमां एक छे ॥ गुरु० ॥ द्रव्य पणुं ते छेक ॥ सदगुरु० ॥ १२ ॥ शक्ति न्नाव अव्यक्तव्य छे ॥ गुरु० ॥ वक्तव्य व्यक्ति न्नाव ॥ ॥ सदगुरु० ॥ अन्नव्य स्वन्नाव पलटे नहीं ॥ गुरु० ॥ पलटे न्नव्य स्वन्नाव ॥ सद० ॥ १३ ॥ पर्यायार्थक न्नेद वस्तु छे ॥ ॥ गुरु० ॥ द्रव्यार्थक अन्नेद ॥ सदगुरु० ॥ उन्नय धर्मी द्रव्य छे ॥ गुरु० अविरोधि अछेद ॥ सद० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षण मयी ॥ गुरु० ॥ द्रव्य सत्ता गुणनी खाण ॥ सद० ॥ इत्यादिक बहु न्नेदथी गुरु० ॥ वस्तु सत्ता उंळखाण ॥ सद० ॥ १५ ॥ ते वस्तु षट् न्नेद छे ॥ गुरु० ॥ एक जीव अजीव पांच न्नेद ॥ सद० ॥ एक रुपी चार अरुपी ॥ गुरु० ॥ तेने वरणवतां अखेद ॥ सद० ॥ १६ ॥ आ ढाळने पूरण करी ॥ गुरु० ॥ न्नेद कहेशु बीजी ढाल मांही ॥ सद० उलट अगे अति घणो ॥ गुरु० ॥ ज्ञान शीतल उछांही सद० ॥ १७ ॥

दुहा.

वस्तु सत्ता गुण दाखीयो, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥
द्रव्य पर्यायने जाणता, टळे मिथ्यामति न्नर्म ॥ १ ॥

ढाळ ॥ २ ॥ जी

॥ देशी चडावळानी ॥

हुकम मुनिसर वंदीये रे षट् द्रव्यना जाण ॥ सत्ता गुण पर्यायनेरे, जाणवा दिनकर जाण ॥ त्रुटक ॥ जाणवा दिनकर जाण स्वभावे, उपयोग जोगे न विभावे ॥ तेहीज आतमज्ञानी कहीए, ए विण अवर न ज्ञानी लहीए॥ वदो भविजन एह ॥ ए आंकणी० ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय पहेलो कह्योरे, बीजो अधर्मास्तिकाय ॥ आकाशास्ति त्रीजो कह्योरे, चोथो काळ कहाय॥ त्रुटक ॥ चोथो काळ कह्यो उपचारे, छता पणे तेमा न विचारे॥ पाचमो द्रव्य पुद्गलास्ति कहीए, छठो द्रव्यजीवास्ति लहीये ॥ वदो० ॥ २ ॥ षट् द्रव्य नाम दाखीया रे, हवे कहु तास विचार ॥ प्रथमना त्रण द्रव्यनो र, साधर्मिकपणो धार ॥ त्रुटक ॥ साधर्मीकपणो धारते दाखु, अरूपी अचेतन अक्रिय भाखु ॥ ए त्रण गुण त्रण द्रव्यमां सरखा, एक गुणे भिन्न धरमे परख्या ॥ वदो० ॥ ३ ॥ गति हेतु धरमास्ति छेरे, स्थिति अधर्मास्ति काय ॥ अवकाश धर्मी आकाश छे रे, एम भिन्न धर्मी कहाय ॥ त्रुटक० ॥ एम भिन्न धर्मी कहाय स्वभावी, एक गुणे ते चित्तमां लावी ॥ पर्याय चार हवें ते दाखु, उपयोग स्थिर ठामे राखु ॥ वदो० ॥ ४ ॥ खध देश प्रदेश छेरे, अगुरु लघु सयुक्त ॥ ए पर्याय चार दाखीयारे, ते समजवा युक्त ॥त्रुटक० ते समजवा युक्त ते सारो, धर्म अधर्म खध लोकमा धारो॥

आकाश खध लोकालोक त्यांहि, अलोक अंत कह्यो नहीं क्यांही ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ उर्ध्व अधो तिर्च्छादिके रे, कल्पित देश कहाय ॥ धर्म अधर्म बे द्रव्यमां रे, असंख्य प्रदेश समाय ॥ त्रुटक० ॥ असंख्य प्रदेश समाय लोकमां, आकाश द्रव्य रह्यो लोकालोकमा ॥ अनंत प्रदेशी ते खध कहाय, अगुरु लघु चोथो पर्याय ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ चोथो द्रव्य ते काळठेरे, अवस्तु रूप जेह ॥ ते मान्यो उपचारथीरे, दाखु तस गुण गेह ॥ त्रुटक० ॥ दाखुं तस गुण गेह ते चार, अरूपी अचेतन अक्रिय धार ॥ नवा पुराण वर्त्तना लक्षण, काळ गुण ए कहे विचक्षण ॥ वदो०॥ ७ ॥ काळ पर्याय चार दाखवु रे, पेहेलो अतित अनंत ॥ अनागत अनत ठे रे, वर्त्तमान समय लहंत ॥ त्रुटक० ॥ वर्त्तमान समय लहत अळगो, बीजो समय तेने नहीं वळग्यो ॥ अगुरु लघु चोथो पर्याय, काळ द्रव्य मांहि ते समाय ॥ वंदो० ॥ ८ ॥ अजीव अरूपी वर्णव्यारे, चार द्रव्य संयोग॥ जीव पुद्गल बाकी रह्या रे, ते दाखु उपयोग ॥ त्रुटक० ॥ ते दाखु उपयोग लगावी, त्रीजी ढाळमा ते भाव लावी ॥ ढाळनी इहां थइ पूरणता, ज्ञान शीतळ उपयोगनी लीनता ॥ वदो० ॥ ९ ॥

दुहा.

अजीव अरूपी दाखीया, चार द्रव्य सयुक्त ॥
जीव पुद्गल बाकी रह्या, ते दाखु भली जुक्त ॥ १ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी

॥ देखो गति देवनी रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वदीये रे, जाणवा पुद्गल जीव ॥ हित उपगारी अति ज्ञलारे, अधिक ज्ञानी ए जीव ॥ जगतगुरु वदियेरे ॥ परमानदनो ए कद ॥ जगत० ॥ ए आंकणी गाथा ॥ १ ॥ पुद्गलनी आठ वर्गणा रे, तेणे चेतन वधाय॥ चेतन निज गुण नवि लहेरे, दाखु उपयोग लाय ॥ जगत० ॥ २ ॥ उदारिक वर्गणा पेहेली कहीरे, बीजी वैक्रिय जाण ॥ त्रीजी आहारक वर्गणारे, चोथी तेजस वखाण ॥ जगत० ॥ ३ ॥ ज्ञाषा वर्गणा पांचमी रे, श्वासोश्वास छट्टी कहेवाय ॥ मनोवर्गणा सातमी रे, आठमी कार्मण थाय ॥ जगत० ॥ ४ ॥ प्रथमनी चार वर्गणारे, वादर कही जीन राय ॥ पाछलनी चार वर्गणारे, ते सूक्ष्म चित्त लाय ॥ जगत० ॥ ५ ॥ वादरमां गुण वीसछेरे, वरण पांच रस पांच ॥ दोय गध फरस आठछेरे, ए वीस गुण नहीं खांच ॥ जगत० ॥ ६ ॥ सूक्ष्ममा सोळ गुणछेरे, हिण फरस छे चार ॥ ते डुखदाता जीवनेरे, बधन जाळ विचार ॥ जगत० ॥ ७ ॥ अविनाशी चेतनछे रे, परमानद स्वरूप ॥ अनतज्ञान दर्शण ज्ञर्यो रे, अनत चरण वीर्य ज्ञूप ॥ जगत० ॥८॥ अव्याबाध अनतछेरे, अमूरती अरूप ॥ अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, तेहीज धर्म प्ररुप ॥ जगत० ॥ ए ॥ ए धर्म चेतननु रे, धरमी आतमाराम ॥ तेने हणे ते दाखवु रे, कार्मण तेहनु नाम ॥ जगत० ॥ १० ॥ कार्मण ते आठ कर्मछेरे, घाति

चेतन धर्म ॥ पुद्गल भोगी चेतन थयो रे, दाखु तेहनो मर्म ॥जगत०॥११॥ ज्ञान घाति ज्ञानावरणी रे, दर्शनावरणी हणे दरशन ॥ चारित्र घाति मोहछेरे, अंतराय पांच टळे प्रसन्न ॥ जगत० ॥ १२ ॥ लब्धि पांच क्षायक भावनी रे, दान लाभ भोग उपभोग ॥ वीर्य गुण प्रगटे चेतनारे, तेनो घाति अतराय रोग ॥जगत०॥१३॥ अव्याबाध वेदनी हणेरे, अमूर्त्ति हणे नाम कर्म ॥ उदारिकादिक सात वर्गणारे, रचना पुद्गल धर्म ॥ जगत० ॥ १४ ॥ तेहीज नाम करम थकी रे, चेतन पुद्गल रूप ॥ अटळ अवगाह आयु हणेरे, गोत्र हणे अगुरु लघु भूप ॥ जगत० ॥ १५ ॥ एम विनाश पुद्गल थकी रे, चेतन धर्मे विघन ॥ तेथी चेतन पुद्गल सगेरे, मिलण विखरण सलग्न ॥ जगत० ॥ १६ ॥ परसगे संसारी थयो रे, चउगति भटकण चाल ॥ आतम घातिए वर्णव्यो रे, पुद्गल रूप निहाळ ॥ जगत० ॥ १७ ॥ ॥ टाळे परसंगी पणु रे, अनुभवे चेतन धर्म ॥ ज्ञान शीतळ शीवपद वरे रे, हणि कार्मण आठ कर्म ॥ जगत० ॥ १८ ॥

दुहा

पुद्गलने जीव दाखिया, ए बेहुनो अनादि सबंध
ते जोगे ससार स्थिर छे, तजतां आत्म अबध ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ४ चोथी ॥

॥ तप शु रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

गुणी जीन वदो मुनि समकिती, हुकम मुनि जस नामरे ॥ समकित गुण निश्चळ करवाने, उपगारी गुण

संवेग रंग तरंग बतावे, शुद्धातम गुण संगी रे ॥ संवेग रंग लाग्यो ॥ रंग लाग्यो चोळ मजीठ ॥ संवेग रंग लाग्यो ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ संवेग समकित एकज कहीए, त्रण भेद मूळ दाखु रे ॥ क्षय उपशम उपशमने क्षायक, उपयोग गुण तीहां राखु रे ॥ संवेग० ॥ २ ॥ चेतन कर्म अनादि संबधे, एक पणे भिन्न सत्ता रे ॥ जीव सत्तामा जीव रह्यो छे, कर्म वर्गणा पुद्गलतारे ॥ संवेग० ॥ ३ ॥ ते कर्म मूळ आठ भेदे, चेतन गुणने हणता रे॥ तेमा मोह अति बळवंतो, लोकाधिपति विरुद्ध धरता रे ॥संवेग० ॥४॥ तेना पुत्र बसा पांच अटारा, चेतन गुणना घाति रे ॥ अंतराय ज्ञाना दर्शनावरणी, तीहा आवे लड कातीरे ॥संवेग०॥ ॥ ५ ॥ ए सर्वे भाव शत्रु तेमा, मिथ्यात्व अति अटारारे ॥ पापनो बाप दुखनो दाता, जाणीए झेरनो पटारो रे॥ संवेग० ॥ ६ ॥ अनादि मिथ्यात्वी चेतन, ते समकित केम पामे रे॥ सदगुरु संगे विनय विवेके, दृष्टि करे गुरु सामे रे ॥संवेग०॥ सद्गुरु ज्ञानी भेद बतावे,जीव अने पुद्गलनोरे जीव पुद्गल गुण न्यारा दाखे, तीहा चेतन गुणमा मळनो रे ॥ संवेग० ॥ ८ ॥ चेतन गुणमा रंग लगावी, उपयोग विस्तारे रे ॥ ज्ञान ध्यान वीर्य शक्तिये, मिथ्यात्व झेर उतारे रे॥संवेग०॥९॥ झेर रहित मिथ्यात्व हुवो जब, ते समकित क्षय उपशमरे ॥ उत्तर भेद विचित्र प्रकारे, आवे जावे वार असंख्यरे ॥ संवेग० ॥ १० ॥ छासठ सागर झाझी स्थिति, उत्कृष्टी सिद्धांतेरे ॥ जघन्य अंतर महुरत रहेवे, क्षय उपशम सात

प्रकृतिरे ॥ सवेग० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी समकित, क्षय उपशमने पामेरे ॥ सूत्र सिद्धांते वचन छे एस्यो, प्रथम चेतन रामरे ॥ संवेग० ॥ १२ ॥ ए क्षय उपशम भाव देखाड्यो, दृष्टांते समजावुंरे ॥ फेर रहित मिथ्यात्व बताव्यो, खसखसमां फेर न पावुं रे ॥ संवेग० ॥ १३ ॥ सत्ता जोतां फेर पटारो, खसखसनो एक दाणोरे ॥ ते दृष्टांते विवेके समजो, शुं करे चेतन राणोरे ॥ सवेग० ॥ १४ ॥ उपशम क्षायक छठी ढाळमां, आ ढाळनी इहां थइ पूरणतारे ॥ चेतन गुण उपयोगे भावी, त्यां ज्ञान शीतळनी शुद्धतारे ॥ सवेग० ॥ १५ ॥

दुहा.

समकित मोहनी उदयमां, ते क्षयोपशम समकित ॥
चोथा ठाणथी वृद्धिये, चढे सातमे थिर चित्त ॥ १ ॥

॥ ढाळ ६ ठी ॥

॥ साभळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर ज्ञानी ध्यानी, उपशम समकित दाखेरे ॥ ते सुणवाने चालो गुणिजन, सिद्धांत साक्षी राखेरे ॥ हुकम० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ ससार भव अटवी भमतां, चारगति विसामोरे ॥ अनत पुद्गल परावर्त्त कीधां, नाव्यां एके कामोरे ॥ हुकम० ॥२॥ कार्य अवसर संसार थाके, अर्द्ध पुद्गलना नाकेरे ॥ सद्गुरु संग मले चेतनने, तत्व रुचि तिहां जागेरे ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ आतम गुण अनुभव स्थिर आवे, रग चोल लय पावेरे ॥

राचे नाचे चेतन गुणमा, अकृत्य सहज स्वभावेरे ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ पुद्गल अनुभव त्याग करीने, अनुभव चेतन धर्मेरे ॥ शुद्ध स्वरूप अनुभव समभावे, ते समकित उपशमरे ॥ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ अतर महुरत मूळ स्वरूपे, चेतन रस अढळक पीधोरे ॥ परमानद पदनु पस्तानु, वछित कारज सिधो रे ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अनतानु चउ मिथ्यात्व साथे, ए पांचनो उपशम रे ॥ उदयागत विपाक न आपे, तीहा वळीयो एकदम रे ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ स्थिति काळ पूरणना जोगे, उपशम भाव विनाशी रे ॥ उदयागत मिथ्यात्व हुओ जब, पूर्व रीत तपासी रे ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ पडतां सास्वादन स्थिर रहेवे, क्षीर वमन स्वाद लेवे रे ॥ षट आवलि काळ प्रमाणे, मिथ्यात्वे अनत काळ सेवे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ ९ ॥ अनत काळ मिथ्यात्वे रहेवे, अनत कर्म दळ लेवे रे ॥ स्थिति सागर कोडाकोडी उपर, न वधे सिद्धात एम केहेवे रे ॥ हुकम० ॥ १० ॥ उपशम सास्वादन आवे तो, पाच वार जीव पावे रे ॥ त्यार पछी ते क्षायक भावे, एम सिद्धान्ती गावे रे ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी परथम, उपशम समकित पामे रे ॥ कर्मग्रथादिक एम बोले, मिथ्यात्व मळ तीहा वामे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ उपशम भाव मने एम सुझयो, ज्ञानी कहे ते साचु रे ॥ अशुद्ध देखो ते शुद्ध करजो, ते वाले घणु राचु रे ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ उपशम भाव ते मूळ स्वरूपे, अनुभव महुरत अत रे ॥ उदवेगता ज्हां नहीं

लाधे, ज्ञान शीतळ एकंतरे ॥ हुकम० ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥

मिथ्यात्व उदय अन्नावथी, लहे उपशम समकित ॥
स्थिति महुरत पूरण थये, पडे एम परतित ॥ १ ॥
पडतां क्षयोपशम लहे, सास्वादन कोइ ॥
क्षयोपशम चोथे टके, सास्वादन बीजे सोइ ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ ७ मी ॥

॥ कपट होवे अति उजलु रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वंदिये रे, क्षायक समकित वंत ॥ तेह भावने पामवा रे, उपगारी ए संत रे ॥ प्राणी वंदो ए जगगुरु राय ॥ ए परमानदनो कंद रे प्राणी ॥ वंदो ए जग गुरु राय ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक समकित जब लहे रे, चेतना तजे परधर्म ॥ परधर्मे वळगी रहे रे, जाणो तेहनो मर्म रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ पर ते पुदगल द्रव्यछे रे, धर्म तेना पर्याय ॥ शब्द रूप रस गंधछे रे, फरसादिक गवाय रे प्राणी ॥वंदो० ॥ ३ ॥ एह धरम पुदगल विषे रे, नही छे चेतन मांही ॥ तेने भजे छे चेतना रे, ते दाखुं हु आंही रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ श्रोत चेतना शब्दने भजे रे, चक्षु भजे वरणने घाट ॥ रस चेतना रसने भजेरे, घ्राणे गंधनी वाट रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ फरस चेतना फरसने भजे रे, ए पुदगलना पर्याय ॥ तेने भजे छे आतमा रे, ते अधर्म छे न्याय रे ॥ प्राणी ॥वंदो०॥ ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री पुदगलछे रे, जाणग गुण तेही चेतन ॥

एम व्हेंचण ज्ञाने करी रे, भजे अरूपी रतन्न रे प्राणी ॥ वदो० ॥ ७ ॥ इहां विभाग न्यारापणु रे, नहीं पुदगलनो संग॥अंतर करणे अनुभवे रे,तीहा क्षायकनो रंगरे ॥प्राणी० वं०८॥धर्मी चेतन तेहठेर,नहीं अधर्मनो प्रवेश॥क्षायक समकित इहा लहोरे, हणी मिथ्यात्व नही ढेषरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ तेना मित्र अनंतानुवधिरे, चउ मराणा साथ ॥ ए सात प्रकृति क्षय थइरे, टल्यो अनाथ थयो नाथरे प्राणी० ॥ वदो० ॥ १० ॥ मिथ्यात्व त्रण भेदथी टल्यो रे, सत्ता मूळ उच्छेद ॥ समकित पद निर्भय हुउरे, भाखुं उत्तर दोय भेदरे॥ प्राणी० ॥ वदो० ॥ ११ ॥ स्वपर भाग वेच्या पेहेलां रे, आयुष्य वाध्यु होय जेह॥ खम श्रेणी पेहेलो भेदएरे, श्रेणी न मांडे तेहरे प्राणी ॥ वदो० ॥ १२ ॥ सागरोपम तेत्रीस फाजो वसेरे, चउगति ससार भाव ॥ त्रण चार भव ते करे रे, भव स्थिति पाम्यानो दावरे प्राणी ॥ वदो० ॥ १३ ॥ असरू श्रेणी बीजो भेदछे रे, मांडे श्रेणी तरत ॥ क्षायक भाव दशा भजेरे, एकत्व भावमा ठरत रे प्राणी ॥ वदो ॥ १४ ॥ तीहा हणे मोहरायने रे, सत्ता मूळ विनाश ॥ अशुद्ध परिणति छेदीने रे, शुद्ध परिणतिमा वास रे प्राणी ॥ वदो० ॥१५॥ चरण यथाख्यात पामीया रे, पाम्या वीतराग भाव ॥ त्रण कर्म तीहां हण्या रे, ए चउघाति अभावरे, प्राणी ॥ वदो० ॥ १६ ॥ केवळ ज्ञान प्रगटे तीहा रे, केवळ दर्शन साथ ॥ लब्धि पाच क्षायक भावनी रे, ए त्रण भुवननो नाथ रे प्राणी ॥ ॥ वदो० ॥ १७ ॥

गुणठाणु तीहां तेरसु रे, वसे उणां पूरव कोम्र ॥ जघन्य अतर मह्रुरत रहे रे, आयुष्य खुटे जव गोम्र रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ वंदो० ॥ १८ ॥ आयुकर्म पूरण थयो रे, तीहां हुर्ड योगनो रोध ॥ चार कर्म अघाति टव्यां रे, टव्यो पुद्गलनो विरोधरे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ १९ ॥ रूपातित पद पामीयारे, समश्रेणिये हुवा सिद्ध॥ ते सिद्धने करुं वंदनारे, ज्ञान गितळनी ए ऋद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥

वेदक करी क्षायक लहे, चोथे वा सातमे ठाण ॥
सात प्रकृति त्यां टळे, आत्म सत्ताथी प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाळ ८ मी. ॥

॥ राग सारग ॥

हुकम मुनि महाराज, जगत गुरु हुकम मुनि महाराज ॥ सत त्रय त्रजन, निरत्रय रंजन, शक्ति निजातम आजे ॥ उपयोग स्वत्रावे करतां, अति इंद्रिय वळ गाजे ॥ जगत गुरु० ॥ वंडु गीतारथ राज ॥ जगतगुरु हुकम मुनि महाराज ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ त्रव परत्रव मरण वेदना, अनरक्षक अनगुप्त ॥ अकस्मात ए सात त्रयोने, ठेदे ज्ञानी युक्त॥ जगतगुरु० ॥ २ ॥ आ त्रव त्रय ते नवविध परिग्रह, वियोग चित्ता कहीए ॥ ते त्रय निवारण मंत्र, निर्त्रय निजगुण रहीए ॥ जगत० ॥ ३ ॥ निज गुण ज्ञाने स्वपर त्रिन्न कीजे, आतमा अनत गुण त्ररीयो ॥ ते अविनाशी वस्तु अमारी, परवस्तु परहरीउ

॥ जगत० ॥ ४ ॥ परभव भय ते मुज आतमाने, दुर्गति
भावु पकडशे ॥ ते चिंता निवारण मन्त्रे, जन्म मरण जरा
टळशे ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ज्ञान कळा निज घटमा लावी,
असंख्य प्रदेशमां वसीए ॥ ए गतिये मुक्ति लहीए, चउ
गति ससार खसीये ॥ जगत० ॥ ६ ॥ मरण प्राण रहित
भय चिंता, हणवा मन्त्रने भणीए ॥ अमर थइने कोइ
रह्या नहीं, तीर्थंकर अतुल बळ गणीए ॥ जगत० ॥ ७ ॥
ज्ञानादिक गुण भाव प्राण जीव, शाश्वत अविचळ रुपे ॥
त्रण काळमा विनाश हुवे नहीं, एम जिनेन्द्र प्ररुपे ॥
॥ जगत० ॥ ८ ॥ वेदना भय रोगादिक कारण, कष्ट
आशाता आपे ॥ ते भय निवारण मन्त्रे भापे, पूर्व कृत
मुज पापे ॥ जगत० ॥९॥ आतमज्ञाने पर भागे ल्हेचीने,
शुद्ध स्वरूपने हु वेदु ॥ त्यां परमानंद योगनो भोगी,
वेदनी कर्म तीहां छेदु ॥ जगत० ॥ १० ॥ अनरक्षक भय
चिंता जागी, मुज रक्षण कोण करशे ॥ ए भय निवारण
मंत्र आराधी, चेतन वीर्यने वरशे ॥ जगत० ॥ ११ ॥
द्रव्य स्वभावे त्रणे काले, असहायी जीव ॥ रक्षकभक्षक
कोइ न लाधे, सत्ता स्वरूपमय शीव ॥ जगत० ॥ १२ ॥
अनगुप्त भय चोरनी चिंता, सदा सरवदा मनमा ॥ ते भय
निवारण मंत्र जपीने, साहासिक धीर एक तनमा ॥जगत०
॥ १३ ॥ ज्ञानादिक गुण पर्याय लक्ष्मी, मुज घर माहि
अनादि ॥ ते धननो कोइ चोर न दीसे, टाळो अनगुप्त
भयादि ॥ जगत० ॥ १४ ॥ अकस्मात भय चिंता जागे,

श्रण चिंतव्युं शुं थाशे ॥ ए चिंता निवारण मन्त्रे, सर्व न्नय मुज जाशे ॥ जगत० ॥१५॥ श्रादि श्रंत जेहनो, नहीं होवे नहीं कोइ परनो संगी॥ तीहां न्नयने शोक न श्रावे, श्रखंम श्रानंदमय रंगी ॥ जगत० ॥ १६ ॥ एम श्रनुन्नव ज्ञाननी शक्ति, न्नय शोकादि ठेदे ॥ निर्न्नय चेतन मूळ स्वरूपे, रमण श्रानंदमय वेदे ॥ जगत० ॥ १४ ॥ उदयिक न्नाव पोतानो माने, तीहां न्नयनो वासो ॥ न्नेद ज्ञान घट श्रंतर जागे, तीहां निर्न्नय पद खाशो ॥ जगत० ॥ १७ ॥ न्नयनु स्थानक मिथ्यात्व मोहनी, संसार वास न तुटे ॥ निर्न्नय स्थानक सम्यक ज्ञानी, क्षीणमां संसार वास तुटे ॥जगत०॥ १ए॥ एम जाणी सवेग रंग करवो, श्रनुन्नवी वस्तु धर्म ॥ ज्ञान शीतळ उपयोग रमणमां, मुक्ति वरे हणी कर्म ॥ जगत० ॥ २० ॥

॥ दुहा. ॥

सप्त न्नय ज्ञाने टळे, टळे पर ममता खास ॥
पर पोतानुं मानतां, लहे डुरगति वास ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ ९ मी ॥

तीरयनी श्राशातना नवि करीये ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वांदवा न्नवी जइए, विनय गुणमां रहीए ॥ गुरु सनमुख दृष्टि वहीये, चित्त करीये स्थिर ॥ हुकम मुनीसर वांदवा न्नवी जइए ॥ ए श्रांकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपयोगी गुरु श्रवसरने जाणे, उपदेश करे ते टाणे॥ उग्यो श्रंतर दिनकर न्नाणे, ववे वचन रसाळ ॥ हुकम० ॥

॥ २ ॥ प्रश्न कर्युं गुरुरायनें अति प्यारुं, मुनिपद जाणवुं सारु ॥ उपदेश करो हु धारु, ठन्नु संसार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ मुनिपद ठे मोटको पाच न्नेदे, परथम मिथ्यात्वने ठेदे ॥ पामे समकित निर्वेदे, लीये सदगुरु पास ॥ हूकम० ॥४॥ अध्यातम पक्ष ग्रहीने इहां दाखु, प्रथम सामायक न्नाखुं॥ आतम गुण रमणता चाखु, सहज समाधि मांही॥हुकम० ॥ ५ ॥ परमाद योगे समाधि अवराणी, तेने ठेदे जे प्राणी॥ समाधि स्थापे गुणखाणी, उपयोग विशेप ॥ हुकम० ॥६॥ ठेदो स्थापन चारित्र ए वीजु, आतम शुद्ध थाय त्या रीजु॥ दाखु हवे चारित्र त्रीजु, तीहां वीर्य विशेप ॥ हुकम०॥७॥ परिहार विपय कपायनो इहां थावे, चेतन विशुद्धिमां आवे ॥ परिहार विशुद्धि कहावे, ए त्रीजो न्नेद ॥ हुकम मुनिसर० ॥ ८ ॥ गुणठाणु ठठु सातमु इहा सुधी, चोथो न्नेद कहु न्नली बुद्धि ॥ श्रेणी आरोह विशुद्धि, उपयोगीक न्नाव ॥ हुकम० ॥ ए ॥ निरालवी आतमा श्रेणी मांडे, आठमेथी चडवा घोडे ॥ परसगी पणे सब ठांडे, शीवपुर प्रयाण ॥ हुकम मुनि० ॥ १० ॥ कर्म प्रकृति थोकडा इहां टाले, उपाधि सघळी वाळे ॥ अरुपी रूप निहाळे, चिदानद न्नगवान ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विशुद्ध न्नावे चढतां ठाण पामे, सूक्ष्म सपराय ते नामे ॥ अणु लोन्न उदयगत सामे, ए चोथो न्नेद ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ यथाख्यात ते पांचमु हवे न्नणीये, मूळथी मोहरायने हणीए ॥ क्षायक चारित्र ते गणीए, हणी रागने द्वेप ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ ए पाच न्नेद

मुनिवरा अढी द्वीपे, नाण दरशण तेजे दीपे ॥ विचरे उपयोग समीपे, वंदु वार हजार ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ ए मुनिरायनी योग्यता जब लाधे, प्रमोद अतिशय वाधे ॥ वस्तु धर्म कारज साधे, करे हित उपकार ॥ हुकम०॥१५॥ उपगारी ए मोटका दुःख वारे, संसार समुद्रथी तारे ॥ चेतननु कारज सारे, आपे शीतळ ज्ञान ॥ हुकम०॥ १६ ॥

॥ दुहा ॥

मुनिपद पंच भेदथी, पूरण कार्य यथाख्यात ॥
क्षपक श्रेणीये सपजे, अव्यावाध प्रख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ १० ॥ मी ॥

॥मोह्या मोह्यारे त्रिभुवन लोक मुनि गुण देखीने॥ ए देशी॥

वंदो वंदो रे भविक जीव सर्व, हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ज्ञानी शुद्ध स्वरूप उपयोगी, अनुभवे वस्तु तेहरे ॥ जीव पुद्गल सत्ता भिन्न अळगी, गुण पर्याय भिन्न तेह ॥ हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ए आंकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ जीव सत्ता मूळ स्वरूपे, निर्मळ सिद्ध समानरे ॥ कर्म जनित पक्षथी जीव, दाखे ते अज्ञान ॥ हुकम० ॥ २ ॥ वेदयोग वळ त्रीक प्रत्येके, भेद त्रण त्रण धार रे ॥ गति संज्ञा कषाय प्रत्येके, भेद थाय चार चार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ शरीर संस्थान इंद्रि निद्रा, प्रत्येके पांच पाच भेदरे ॥ पर्याप्ति लेश्या संघयण, ए त्रणेना षट् षट् भेद ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ वर्ण रस गंध स्पर्श प्रत्येके, पांच पांच बे आठरे ॥ जन्म जरा ने मरण पुनरपि, ए ससारनो ठाठ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥

दश प्राण आयुष्य योनि, श्वास उश्वास वळी रोगरे ॥ शुन्नाशुन्न क्रिया वहु न्नेदे, सुख दुःख वळी शोग ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अंग उपाग उंच नीच कुळ जाति, सुस्वर दु स्वररे ॥ त्रस स्थावर प्रत्येक साधारण, सूक्ष्मने बादर ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ अवगाहना बहु विध जीवनी, रूप कुरूप वळी देहरे ॥ क्षुधा तृषा वळी पीमे आजी, जवरा अग्नि ठे तेह ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ आहारने निहार करवो, परिणमे सर्वे अग रे ॥ उदयिक न्नाव सघळो इहां ठे, जीवनो तेह ए-कग ॥ हुकम० ॥ ए ॥ इत्यादिक वस्तु ठे आजी, ते नहीं जीव स्वरूपरे ॥ कर्म बध योगता ए लाधी, पूर्वकृत ए रूप ॥ हुकम० ॥ १० ॥ ए सत्ता सघळी पुद्गलनी, न्नाषी ठे जीव न्नूपरे ॥ कर्म न्नावी पर्याय प्ररूप्या, ठे नहीं जीव ए रूप ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विनाशी न्नाव पुद्गलमां कहीए, अविनाशी चेतनरे॥ ने वे एकपणे कीम थावे, कीहां काच ने रतन ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ पुद्गलनी आठे वर्गणा, ते देखे पर वस्तुरे ॥ एम परन्नाग व्हेचण करीने, अनुन्नवे जीव ए सत्य ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ गुण पर्याय स्वन्नाव रमणमां, एकत्व वितर्क पावरे ॥ समन्नावे विकल्पने हणीने, तीहां सनातक न्नाव ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ आयुष्य अते लहे सम-श्रेणियें, रूपातित पद सिद्धरे ॥ असग्य प्रदेश निर्मळ नि-रंजन, ज्ञान शीतळमय ऋद्ध ॥ हुकम० ॥ १५ ॥

॥ दुहा. ॥

उदयिक न्नावे सपजे, ते नहीं जीव स्वरूप ॥

जीव स्वरूप सत्ता विपे, सिद्ध निरंजन रूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ ११ मी ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

वंदो वंदो रे नविक जीव सर्व, हुकम मुनिराया ॥ राज्य करे छे चेतनपुरनुं, गुण पर्याय निज वास रे ॥ मोह राय आज्ञा नहीं धारे, निर्नय निज गुण तास ॥ हूकम- मुनिराया ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनंत ऋद्धि चेतनपुर नरीयो, नहीं चोरनो रहे वासरे ॥ उपयोग नाव सुनट अति वळीयो, नहीं चोरनो अवकाश ॥ हूकम०२॥ मिथ्यात्व अव्रत कपाय जोग, मूळ चारना उत्तर नेद रे॥ पांच बार पचीशने पदर, ए चोर सत्तावन नेद ॥हूकम०॥ ॥ ३ ॥ तेमां अधिक अतुल अनिमानी, वळीयो मिथ्यात्व चांच रे ॥ चेतनरायनु राज्य पचावी, हेरुयो जमेछे पांच ॥ हूकम० ॥ ४ ॥ तेमा एक हेरु मजबूत छे, कार्मण नामे फाररे ॥ अनत पुदगल परावर्त्त करता, त्रुटे नही निरधार ॥ हूकम० ॥५॥ चेतन गुण वीर्य शक्तियें, पाकशे मिथ्यात्व तेरु रे ॥ त्यार पछी पुदगल अर्द्धमांही, त्रुटशे कार्मण हेरु ॥ हूकम० ॥ ६ ॥ अव्रत कपाय जोग ए त्रणे, वळीया मिथ्यात्व संग रे ॥ मिथ्यात्व नाश थयां वळहीणा, वळीयो चेतन रंग ॥ हूकम० ॥ ७ ॥ उपयोग नावे वीर्य फोरवी, हणशे सरवे चोर रे ॥ राज्य करे तीहां निर्नय दावे, सर वंधी वहू जोर ॥ हूकम० ॥ ८ ॥ वीर्य अनत ज्ञान उपयोगी, स्फुरणा गुण पर्याय रे ॥ व्यक्ति

भेदे धर्म अनतो, आनद ल्हेर ते पाय ॥ हुकम० ॥ ए ॥ ठकुराइ शुद्ध चेतन तदरुपे, तीहां चेतननु राज्य रे ॥ ए राज्यना भोगी मुनिश्वर, राज मळे सरे काज ॥ हुकम० ॥ ॥ १० ॥ मुनिश्वर मोटा चेतनरूपे, परमानंद स्वरूप रे ॥ अविनाशी पद पूरण तेहनु, ज्ञान शीतळ निजरूप ॥ हुकम० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

तदरूप लीन योगमां, अनुभव रमणि थाय ॥
उपाधि अळगी टळे, त्या चेतन राज्य कहाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ १२ मी ॥

॥ भवि तुमे वदो रे सूरिश्वर गच्छराया ॥ ए देशी ॥

भवि तुमे वंदो रे हुकम मुनि गुणराया ॥ अनत गुण भरीयो छे चेतन, तेह स्वरूपने पाया ॥ भवि तुमे० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनत गुणमां मुख्य ज्ञान छे, ए विण जमता दाखी ॥ ज्ञान दीपक उपयोग अनुभव शुद्ध, तीहां चेतन बुद्धि राखी ॥ भवि० ॥ २ ॥ ज्ञान शक्ति चेतन निश्राये, तीहा समकित गण पामे ॥ ते ज्ञान ज्ञानमा गणीए, बाकी अज्ञान नामे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सम्यक ज्ञानने सम्यक दर्शन, दोय मित्र सग प्यारो ॥ अनत गुण रत्ननी पेढी, जुवे ज्ञान मनोहारो ॥ भवि० ॥ ४ ॥ गुण पर्याय स्वभाव अनता, लक्षण अनतां दाख्या ॥ ते अनत व्यक्ति निज धर्मे अनत धर्म ज्ञाने चाख्यां ॥ भवि० ॥ ५ ॥ अनतानद ल्हेर अनुभवमा, उपयोग स्थिर.

लगावे ॥ समन्नाव वृत्ति चेतनमां, ज्योति अनत जगावे ॥ न्नवि० ॥ ६ ॥ एम ज्ञान शक्तिये चेतन, शीवपद क्षणमा पामे ॥ अनंत धर्म आत्मिक अनुन्नव शुद्ध, ते गुण रायनु कामे ॥ न्नवि० ॥ ७ ॥ एवा मुनिगुण समरण करतां, न्नजतां कोरू कल्याण ॥ दर्शन पुन्योदये थावे, दुर्लन्न उपदेश टाणे ॥ न्नवि० ॥ ८ ॥ हुकम मुनिसर मुज उपगारी, ते गुण नित्य संन्नारुं ॥ ज्ञान शीतळ कहे पूजुं वंदु, मुज आतमने प्यारुं ॥ न्नवि० ॥ ए ॥

॥ दुहा. ॥

ज्ञानादि गुण सपदा, अनुन्नवे तद्रूप ॥
परम समाधि जे लहे, ते कहीए गुण न्नूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ १२ मी ॥

हुकम मुनिश्वर न्नावे वंदिये, गीतारथ गुण खाण ॥ सुगुरुजी ॥ आश्रव अनाश्रव चेतन केम हुवे, ते दाखो चतुर सुजाण ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम मुनिसर न्नावे वंदिये ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आश्रव लक्षण दोन्नेदे कह्यु, द्रव्य न्नाव आश्रव ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी चेतन चउगति वासीयो, जमीउं पुद्गल द्रव्य ॥ सुगुरुजी० ॥ हुकम० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी प्रमुख कर्म वर्गणा, जीव प्रदेश ग्रासे ॥ सुगुरुजी ॥ द्रव्य आश्रव ते शास्त्रे दाखीयो, ते छुटे शीव पद थाशे ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ न्नावित आश्रव न्नाव शत्रुपणे, रागद्वेष मोह जागे ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी द्रवित आश्रव सपजे, जीव धर्म तीहां न्नागे ॥ सुगुरुजी ॥

हुकम० ॥ ४ ॥ इणि विध आश्रव दो नेदे ग्रहे, ते चेतन आश्रवी ॥ सुगुरुजी ॥ हवे अनाश्रव चेतन दाखवु, आश्रवनी हांणि करवी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ जीहां शुद्धि परसगीपणु, तीहा चेतन परधर्मा॥ सुगुरुजी ॥ रागद्वेष मोह जागृति तीहा अहं ममत्व अधर्मी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ ए पद्धति मिथ्यात्व मोहनी, तीहा आश्रव अवकाश ॥ सुगुरुजी ॥ तेने हणवो रे सद्गुरु ज्ञानथी, सवेग अनुनव जास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ सवेग ते परनाग टाळवो, अनुनव आतम ज्ञान ॥ सुगुरुजी ॥ चिदानद वदन तीहां सपजे, उपयोगिक प्रधान ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ ए पद्धति सम सवेगनी, अतर सवर नावि ॥ सुगुरुजी ॥ ज्ञान कळा चेतनमय अनुनवी, शुद्ध स्वरुप मय लावी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ए ॥ जीवन मुक्त एही परमात्मा, आश्रव नाव विनाशी ॥ सुगुरुजी ॥ द्रवित नावित दोय नेदने हणी, थया निराश्रव वाशी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १० ॥ आश्रव नाव रह्यो परनावमा, स्वनावे थाय विनाश ॥ सुगुरुजी ॥ निज स्वनाव ग्रहे निज चेतना, तीहा अनाश्रव खास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ आश्रव नावे स्थिर ससार छे, अनाश्रव शिवपद आपे ॥ सुगुरुजी ॥ आत्मज्ञानी उपयोगी थइ, आश्रव नावने कापे, ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ निराश्रवी नाम जेणे ग्रह्यु, पूजु तेहना पाय ॥ सुगुरुजी ॥ अनुमोदु हु शुद्ध स्वनावने, त्या ज्ञान शितळ शुद्ध थाय॥

सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥

आश्रव आवे परपणे, शुभाशुभ कर्म तेह ॥
संवर भावे टाळीये, त्यां निजगुण वृत्ति गेह ॥१॥

॥ ढाळ ॥ १४मी ॥

॥ देशी ॥ एकवीसानी ॥

हुकम मुनिश्वर रे, वंदु विनय गुणमां रही ॥ क्रियावंत रे ए सम अवर दुजो नही ॥ ते दाखुं रे, नवभेदे क्रिया करे, निजात्मा रे, शुद्ध स्वभाव तीहां वरे ॥ त्रुटक श्रवण किर्त्तन बीजी, निंदा लघुता वांदवुं ॥ सेवा समता ध्यान एकता, ए नव बोले अनुभवु ॥ विस्तारे सवग रुचि, उपयोग, स्थिर भावमां ॥ तीहां कारज नीपजे, चेतन मूळ स्वभावमां ॥ १ ॥ पेहेली किरिया रे, श्रवण गुरु मुखेथी करे ॥ गुरु ज्ञाने रे जीव पुद्गळ जूदा ठरे ॥ जीवनो गुण रे, ज्ञान चेतना दाखीयो ॥ पुद्गळनो रे, अचेतन गुण भाखीयो ॥ त्रुटक ॥ एम भिन्न धरमी, जीव न्यारो, पुद्गलमां खुती रह्यो ॥ पुद्गलने पोतानो मान्यो, त्यां मिथ्यात्व चेतन लह्यो ॥ कारण कारज पुद्गल साथे, अनादि सबंध ए ॥ तेथी दुखीयो चउगति भटके, करे कर्मनो बंध ए॥२॥ बीजी किरिया रे, किरतन जीव गुणनु करे ॥ निजात्मा रे, त्यां पर ओळंखीने परहरे ॥ चेतन गुण रे, ज्ञानदीपक प्रगटे तदा ॥ शुद्ध धर्मी रे, मिथ्यात्व ग्रहे नही कदा ॥ त्रुटक ॥ समकित शुद्ध तीहां पामे, गुण श्रेणीमां रमे ॥ अनत गुण

पर्याय धर्मे, व्यक्ति पणे होय त्यां जमे ॥ मूख भागे सुख साधे, वीर्यबळ वृद्धि करे ॥ समभावे भावे ए चेतन, अनंत कर्मतीहां निर्जरे ॥ ३ ॥ त्रीजी किरियारे, निंदा करे पुद्गलनी ॥ तेना संगे रे, वृद्धि राग द्वेषनी॥ तेथी चेतनरे, अचेतन सरखो हुवे ॥ वेपारी रे ऽडि पोपण ते जुओ ॥ त्रुटक ॥ तीहां सेवे पापस्थानक, अष्टादश दृढ चित्तए ॥ पाप बांधे व्यासी भेदे, नावे दुखनो अंत ए ॥ नरक निगोदमांही वास्यो, असंख्य अनंतो काळ ए ॥ ते फळ पाम्यो अज्ञान जोगे, निंदा करु ज्ञान संग ए ॥ ४ ॥ चोथी किरिया रे, लघुता भावे जीवनी ॥ तु गुण हीण रे, आशा करे पुद्गलनी॥ लोभी लालची रे, सेवक तु मोहरायनो ॥ अपराधी रे, अरुची वचन जीनरायनो ॥ त्रुटक ॥ कुदेवने कुधर्म कुगुरु, पक्ष ग्राहक तु थयो ॥ मिथ्यात्व रंगी, मद जंगी झेर वेर घणो कीयो ॥ ॥ क्लेश तृष्णा संतोष तेमां, अपलक्षण निधान ए॥ मानु करतां रीझ पामे, ते लघुता ठाम ए ॥ ५ ॥ किरिया पांचमी रे, वादवु उपयोग स्थिर करी ॥ सिद्ध सरखो रे, परमानंद पदने वरी ॥ मूळ रुपेरे, निरंजन निराकार ए ॥ अविनाशीरे, अनंत गुणभंडार ए ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय व्यक्ति, आविर्भाव हुए जदा ॥ धर्म अनंतु तीहां लाधे, परमातम थावे तदा ॥ ए कार्य पूरण चेतननुं, मुज मनमां इच्छा घणी ॥ ते रूपनो आरोप करीने, वांदुवु त्रीभुवन धणी ॥ ६ ॥ छट्ठी किरियारे, सेवे शुद्ध रूपे थइ

॥ निज पदमां रे, ज्ञान ध्यान रंग ते मची ॥ मूळ रूपे रे, धर्म अनंतो रह्यो जदा ॥ तेमां वसीये रे, ते सेवा पूजा तदा ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय धारे, तेनो संग ठोके नही ॥ परद्रव्य पक्ष अग्राहक, चेतन धर्म रह्यो नही ॥ आनंद वृद्धि व्यक्ति फूरणा, लहेर ठे उपयोगमां ॥ ते सेवा में जाणी प्यारी, प्रमोद ठे मुज अंगमां ॥ ७ ॥ किरिया सातमी रे, चेतन शमता नावमां ॥ पंथ शोधे रे, इर्या समिति अदोषमां ॥ पुद्गलमां रे, प्रवेश ते सावद्य कह्यो ॥ निजद्रव्यमां रे, प्रवेश ते निर्वद्य लह्यो ॥ त्रुटक ॥ नापा समिति विवेक करवो, पुद्गल पांचमी वर्गणा ॥ ते वस्तु नही आपणी, निजगुण नास मुज लक्षणा ॥ एपणा समिति त्रीजी, आहार लेवो निर्वद्य ए ॥ केवळ ज्ञानी सावद्य देखे, निर्वद्य निज गुण मांहि ए ॥ ८ ॥ चोथी समितिरे, आदान निखेपणमां कही ॥ आदानते रे, चेतन गुण लेवे सही ॥ निपेपण रे, परवस्तु पुद्गलनुं ॥ इम कीजे रे, ग्रहण निज खेपण परनु ॥ त्रुटक ॥ पारिठ वणिया पांचमी, समिति चेतन रक्षणा ॥ रागद्वेष विनाव सरवे, तजवि कार्मण वर्गणा ॥ ए समिति शीवपद आपे, मळ रहित चेतन करे ॥ ते दिवस मगलिकनी माळा, परमानंद पदने वरे ॥ ए ॥ किरिया आठमी रे, ध्यान करे सन्नावमां, चेतन गुण रे, निर्मळ शक्ति नावमां॥ मुज व्यक्तिरे, परसंगे परने नजु ॥ ते अघटित रे, परधर्मीपणो तजुं ॥ त्रुटक ॥ निजद्रव्य स्वनाव धर्मे, उपयोग स्थिर

रमणता ॥ अचपळ भावे शक्ति जोडे, तोडे विभाव पर अगता ॥ तीहा चेतन धर्मनी व्यक्ति, स्फुरणा गुण पर्यायमा ॥ परमानद पद भोग भोगी, अपूर्व भाव ए ध्यानमा ॥ १० ॥ किरिया नवमी रे, एक्यता चेतन भावमा ॥ दुविधा हणी रे, वरते शुद्ध स्वभावमां ॥ समभावे रे, ध्याता ध्येय ध्यान एकता, भेद हणीयो रे, ग्रहण कीयो अभेदता ॥ त्रुटक ॥ अनत गुण पर्याय व्यक्ति, अनंत धर्म प्रगटपणे ॥ मूळरूपे सहेज स्वभावे, परिणमन एक्यतापणे ॥ भारे पीळो चीकणो, व्यक्ति कचनमां रही ॥ परिणमन एकत्र रूपे, कदी भिन्न पडे नहीं ॥ ११ ॥ इम नव विध रे, किरिया करे जे मुनिवरा ॥ ते ज्ञानी रे, भव भ्रमणाने परहर्या ॥ ससारथी रे, छुटया कर्मपास छेदीने ॥ तेने वदु रे, गुणरागे आणदीने ॥ त्रुटक ॥ गुणराग आनद काजे, मुज आतमने तारवा ॥ एवा मुनिसर नित्य नमु, कर्म रोगने वारवा ॥ ए भाव उपयोगे लाधे, भेद ज्ञान प्रगटे जदा ॥ ज्ञान शीतळ आतम गुण एक्यता, कारज सिद्ध करे तदा ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

नव विध किरिया योगथी, चारित्र गुण कहाय ॥
उपयोग भावे जे लहे, ते सयम ठाण पाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ १५ मी ॥

॥ साभळरे तु सजनी मोरी रजनी क्या रमी आवीजी ए देशी ॥

हुकम मुनिश्वर आतम ज्ञानी, परमातम पद ध्या-

वेजी ॥ अंतर आतम उपयोग अंतर, चेतन रसमां रमावे ॥ मुनिपद वंदोजी ॥ नव नव सचित पाप ॥ मूळथी निकंदोजी ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनुभव ज्ञानी चक्षु अतर, वस्तु धर्मने निहाळेजी ॥ निराकार निरंजन निर्मळ, अलख रूप तीहां भाळे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ अरूपी ज्ञान घन ज्योति परमानदनो कदजी ॥ शांत सुधारस जलनिधि सरीखो निरखतां आनद ॥ मुनि० ॥३॥ अविनाशी अचळ अखन्डित, परम रहस्यनो धामजी ॥ अव्यावाध सुख अनंतु, पुरुसोतम जस नाम ॥ मुनि० ॥ ॥ ४ ॥ चिदानद जगदीश्वर अरिहा, तीर्थंकर भगवानजी॥ वीतराग विमळवत योति, परमदेव प्रधान ॥ मुनि० ॥५॥ शुद्ध बुद्ध अनंत अक्षय अज, अकळ अमळ अछेदीजी ॥ अकर्मा अ बधक अनुदय, अनुदरिक अभेदी ॥ मुनि॥६॥ अभोगी अरोगी अजोगी, अगम अकप अवेदीजी ॥ अशरीरी अकषायी असखायी, अलेशी अखेदी ॥मुनि०॥७॥ अणाहारी अण अवगाही, अगुरु लघुपरिणामीजी ॥ अति इंद्रिय अप्राणी अयोनि, अ ससारी अनामि॥मु०॥८॥ अमर अनाश्रित अविरुद्ध अशोकी, अनाश्रव असंगीजी॥ अनंत गुण पर्यायनु भाजन, परमातम पद जगी ॥मुनि०॥ ॥९॥ निजातम परमातम सरीखो, आतम ज्ञाने जाणेजी ॥ तेह स्वरुपने स्थिर उपयोगे, अनुभवे ध्यान टाणे ॥मुनि० ॥१०॥ निज स्वरुपमां मगन सदीवए, समभावे सुखशाताजी ॥ उदयिक भाव अव्यापक हुवे जव, ज्ञानशीतळ

शुद्ध माता ॥मनि०॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म शुकल दोय ध्यानमां, आतम रमणता पाय ॥
उपाधि उन्मूल करी, परमातम सम थाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ १६ मी ॥

॥ हो पेज पखीमा ॥ ए देशी ॥

हो गुरुजी प्यारा हुकम मुनि महाराजजो ॥ हु हुं सेवक अतर दृष्टि ताहरोरे लोल ॥ हो गुरुजी प्यारा क्षण न विसारुं तुजजो, हितवच्छकठे उपगारी तु माहरोरे लोल ॥ १ ॥ हो० धर्म अर्थ काम मोक्षजो, पुरुषारथ अग जाणवा मुज मन उलस्यो रे लोल ॥ हो० ते दाखो विस्तारजो, श्रवण करवा उमग चित्तमां विलस्योरे लोल ॥ २ ॥ हो० मूरख माने धर्मजो, पोतीका कुळ आचार करणी तेहने रे लोल ॥ हो० पन्डित माने धर्मजो, वस्तुनो स्वभाव धर्म ठे एहने रे ॥ ३ ॥ हो० अज्ञानी कहे अर्थजो, नव विध परिग्रह रक्षण तेहीज अर्थ ठे रे लोल ॥ हो० ज्ञानी कहे ठे अर्थ जो, षट द्रव्य वस्तु दर्शाव ते गर्थठे रे लोल ॥ ४ ॥ हो० दुर्बुद्धि कहे कामजो, स्त्री पुरुष सजोग भोग ते कामठेरे लोल ॥ हो० सुबुद्धि कहे कामजो, अभिलाष चित्त इच्छा तेहीज कामठे रे लोल ॥ ५ ॥ हो० ॥ मूरख अजाण कहे मोक्ष जो, स्वर्ग माहि इन्द्रनु स्थान ते मोक्ष ठेरे लोल ॥ हो० पन्डित दाखे मोक्षजो, कर्म रहित हुओ चेतन तेहीज मोक्षठे रे लोल ॥ ६ ॥ हो० ॥ चउभेदे कयुं

वखाणजो, ते वचन सत्य मुज मनमां रुच्युं सहीरे लोल॥ हो० ॥ अज्ञानी दुर बुद्धि मूर्ख जो, मतिमद हीण बुद्धिवंत कल्पना ग्रहीरे लोल ॥ हो० ॥ ज्ञानी सुबुद्धि पन्डित जो, ग्रहण करे सर्वांगी वचन सत्य तेहनुरे लोल ॥ हो० ॥ पुरुपार्थ चउ अंगजो, साधे कार्य ज्ञान शीतल होय जेहनुरे लोल ॥ ८ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म अर्थ काम मोक्षए, पुरुपारथ चउ अग ॥
धर्म वस्तु स्वभाव ए, अर्थ रत्न त्रयी सग ॥ १ ॥
अभिलाषा काम कीजीए, अजरामर मोक्ष तेह ॥
कर्म अभावे सपजे, परमानद पद एह ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ १७ मी ॥

॥ नरसी मेहेता भगतहरीना जूनागढना रहेवासी॥ ए देशी॥

गुरु गुणे मोटा ज्ञानी ध्यानी हुकम मुनिश्वरने वदो ॥ विनयादिक गुण अगे लावी, सुणो उपदेश टळे भव फदो ॥ गुरु गुणे मोटा० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपदेश करता मिथ्यात्व हणता, अनतानुं चौ अत करता ॥ अनत पुद्गल परावर्त्त खुटे, ससार अर्द्ध पुद्गल हिणता ॥ गुरु० ॥ २ ॥ धर्म दान दीए चेतन गुणनुं, अचेतन गुण मूळथी छेदे ॥ भाव सवर मय साधन दाखे, तीहा चेतन ग्रंथी भेदे ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ बोधि बीज अणारोप रोपे, रत्न त्रयी साधन वाको ॥ अतरंग अनुभव एकताळी, अप्रमत्त गुण हे ताको ॥ ॥ ४ ॥ समभावे भावित हुउ चेतन,

शीव रमणी तेकना आवे ॥ सादि अनत का
अमर पद, जन्म मरण ते क्षय पावे ॥ गुरु० ॥
उपगार निमित्त सद्गुरुनो, न वळे नवोनव दास
नव कोमाकोमि अनुकुळ सेवा, करता सर्व उपाय
॥ गुरु० ॥ ६ ॥ ए उपगारी गुण न वीसरे, समकि
सुज हाथ दियो ॥ गुरु गुण गाउ आनद पावु, ज्ञा
तळ उपयोग लीयो ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा ॥

पुष्ट निमित्त गुरु कह्या, तत्त्वबोध दीये दान ॥
पाहाणने पल्लव आणवा, उपदेश करे एक तान ॥१॥

॥ ढाळ ॥ १८ मी ॥

॥ ए गुरु वाल्हो रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वदिये रे, आतमज्ञानी ध्यानी
बाहिर अतर परमने रे, ओळखावे अमानी रे, सदगुरुज्ञा
नी रे ॥ हणीओ चपळ स्वन्नाव, स्थिरपद ध्यानी रे ॥ ए
आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आतम बुद्धि कायादिकेरे, बहि-
रातम अघरुप रे ॥ कायादिकनो साक्षी रे, अंतर आतम
स्वरूप रे ॥ सदगुरु० ॥ २ ॥ पूरण ज्ञानानदनो रे, समाधि
मय तदरूप रे ॥ पावन गुण मणि आगरु रे, ते परमातम
नूप रे ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ अह करता परन्नावनो रे, बहि-
रातम दुर्गुण गेह रे ॥ कर्त्ता शुद्ध स्वन्नावनो रे, अतर आतम
तेह रे ॥ सदगुरु० ॥४॥ बहिरातम न्नाव गेमवो रे, ग्रहवो
अतर आतम रे ॥ परमातमनु ध्यान करु रे, तिहां विक

केम रे ॥ सदगुरु० ॥ ५ ॥ वहिरातम इत्यादि
अतर आतम मित्र रे ॥ वहिरातम कर्म बांधतो रे
म टोळे विचित्र रे ॥ सदगुरु० ॥ ६ ॥ अनुसोई
आतमारे, संवर निर्जराभावे रे ॥ मोक्ष तत्वने सा-
, ज्ञान शीतळ शुद्ध स्वभावे रे ॥ सदगुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा ॥

बाहिर अतर परम ए, आत्म परिणति तित्त ॥
देहादिक आतम भ्रमी, वहिरातम वहु दित्त ॥ १ ॥
साक्षि कायादि योगनो, अंतर आतमरुप ॥
ज्ञायक भावे केवळी, ते परमातम भूप ॥ २ ॥

॥ ढाळ १९ ॥ मी ॥

॥ नाथ निरंजन देव ए प्यारो, कुंथुं नाथ वंदो प्यारे

॥ ए देशी ॥

गीतारथ गुणे दिनकर सरीखा, हुकम मुनि वदो
प्यारे ॥ दर्शण करतां समकित वरखुं, मिथ्यात भर्म तजवो
भारे ॥ गीतारथ गुणे० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥
सप्तनये धर्म उपदेश करता, अनेकांत पक्ष अनुसरता ॥
द्रव्य पर्याय वस्तुने भणता, स्याद्वाद गुणागी वरता ॥
गीतारथ० ॥ २ ॥ नेगम संग्रह व्यवहार किरिया, ऋजु-
सूत्र नयने वरता ॥ त्यां सुधी समकित नही पामे, मिथ्या
संग साधन करता ॥ गीतारथ० ॥ ३ ॥ शब्दनये समकित
गुण पामे, तिहां निरति भावे रमता ॥ संभिरुढ केवळ-
नाण दरशण, एवंभूत शीवपद धरता ॥ गीता० ॥ ४ ॥

योग प्रवृत्ति साधन मिथ्या, समकित साधन उपयोगे ॥
वस्तु अरूपी धर्म अरूपी, जोगातित पद निज भोगे ॥
गीता० ॥ ५ ॥ एसो बोध आपे गीतारथ, जड चेतन
भिन्न ओळखावे ॥ जड तज्या चेतन निजरूपे, ज्ञान शितळ
शीवपद प्यावे ॥ गीता० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥

बोध सही नय ज्ञानमा, जाणो द्रव्य पर्याय ॥
स्याद्वाद धर्म सपजे, एम भाखे जीनराय ॥ १ ॥
ए विण स्यादवाद नही, स्याद्वाद वस्तु माही ॥
स्व पर विभागे लहे, अनुभव प्रगटे त्यांही ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ २० ॥ मी ॥

॥ प्रथम गोवाळा तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वादिएजी, जीन शासन शणगार ॥
स्वपर समय ज्ञाता भलोजी, ए सम भावी अणगार ॥
भविकजन वदो ए अणगार ॥ धर्मदान दातार ॥ भविक-
जन वदो ए अणगार ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥
शुद्धातम अनुभव सदाजी, ते स्व समयविलास ॥ परवस्ती
छाया पडेजी, तेपर समय निवास ॥ भविक० ॥ २ ॥ स्व-
समय स्व वस्तु छेजी, पर समय पर वस्त ॥ स्व वस्तु
धर्म अनुभवेजी ॥ छाया जळ दर्पण गस्य ॥ भविक० ॥३॥
गुण पर्याय अनतछेजी, व्यक्ति अनतीरे भिन्न ॥ तस अनु-
भव शुद्धातमाजी, स्व समय धर्मे लिन्न ॥ भविक० ॥ ४ ॥
शुद्धातम अनुभव जीहांजी, तीहा विकल्प नही कोइ ॥

निर्विकल्प रस पीजीएजी, अनत गुण एकता सोड ॥ ज्ञविक० ॥ ५ ॥ शुद्धातम अनुज्ञवजीहांजी, तीहां मुक्ति निरधार ॥ कर्म रहित हुवो आतमाजी, तीहां लहे सिद्ध पदसार ॥ ज्ञविक० ॥ ६ ॥ शुद्धातम अनुज्ञव लहेजी, त्यां साधन पूरण साध्य॥परमानंद रस पीजीयेजी, त्याग मोहादि कीजे उपाध्य ॥ ज्ञविक० ॥ ७ ॥ शुद्धातम अनुज्ञव जीहांजी, तेहीज ध्यान प्रमाण ॥ मुक्ति दाता एहछेजी, शीवपुरनु परियाण ॥ ज्ञविक० ॥ ८ ॥ क्षपक श्रेणीये शुद्धातमाजी, अनुज्ञवे गुण पर्याय ॥ एकत्व ज्ञाव सर्व व्यक्तिनोजी, त्यां एकसमये अनुज्ञव थाय ॥ ज्ञविक० ॥९॥ तीहां केवळ ज्ञान उपजेजी, केवळ दर्शन साथ ॥ चरण यथाख्यात मूळमांजी, लब्धि पांच तीहां हाथ ॥ ज्ञविक० ॥ १० ॥ शुद्धातम अनुज्ञव जीहांजी, तेहीज छे जैन ज्ञाव ॥ जैन धर्मते कीजीयेजी, चेतन मूळ स्वज्ञाव ॥ ज्ञविक० ॥ ११ ॥ स्व समय धर्म पामीयेजी, पर समय करी त्याग ॥ पर समये अनुज्ञव गयोजी, तीहां स्व समयनो लाग ॥ ज्ञविक० ॥ १२ ॥ स्व समय धर्म साधताजी, अनुज्ञवे चेतन शुद्ध ॥ तेहने माहरी वंदनाजी, ज्ञान शीतळ जस बुद्ध ॥ ॥ ज्ञविक० ॥ १३ ॥

॥ कळश ॥

॥ ज्ञव्यो ज्ञव्यो रे मुज साहेब जगनो ज्ञव्यो ॥ ए देशी ॥

ज्ञव्यो ज्ञव्यो रे उपगारी गुरु मुज ज्ञव्यो ॥ हित बुद्धियें उपदेश कीधो, युक्तिये समजाव्यो ॥ शंका कखा

ठेद करीने, ब्रम तिमिर गमाव्यो रे ॥ उपगारी गुरू मुज ब्रुवयो ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ मधुर ध्वनीये उपदेश करता, वचन रसाळनी माळा ॥ श्रोता सुणतां तृप्त न थावे, बोध पामे तीहा बाळारे ॥ उपगारी० ॥ २ ॥ चेतन शुद्ध स्वरूप उपदेशी, तत्वनी रुचि करावे ॥ दृष्टात हेतु युक्ति लगावी, चेतन गुण चारो चरावेरे ॥ उपगारी० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व मोह ठे अति अटारो, ससार अनत रखवाळो ॥ जीव अजीव सरखा करी मूके, तेने सद्गुरु मारे ज्ञालो रे ॥ उपगारी० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व मोहनो अत हुवो जब, चेतन समकित पामे ॥ ते गुण रत्न चिंतामणी सरखो, लहे अनुभव उपाधि तिहा वामेरे ॥ उपगारी० ॥ ५ ॥ ए पसाय सद्गुरुए कीधो, रत्न अमुलख दीधो ॥ ते बदलो वळे नहीं कबहु, उपगार अनतो कीधोरे ॥ उपगारी० ॥ ६ ॥ गुरू गुण गाता तृपा न ज्ञाजे, उलट अग न मावे ॥ वचन जोग थाके नहीं कबहु, मन गुरु गुणमा रमावेरे ॥ उपगारी० ॥ ॥ ७ ॥ रत्न चिंतामणी करता अधिका, गुरु उपगारी कहीए ॥ अनत जन्म मरण दु ख टाळे, तेनो पार शो वहीएरे ॥ उपगारी० ॥ ८ ॥ सद्गुरू सर्व खेत्रे नवी होवे, कोइक अवसर लाज्ञे ॥ वचन जोगथी थाय परीक्षा, चेतन उळख्या थाय निरज्ञेरे ॥ उपगारी० ॥ ९ ॥ निर्ज्ञय स्थानक ठे नहीं बीजु, एक सद्गुरुनु साचु ॥ वचन जूठ ठमीने जडए, बोधि बीज तीहां जाचुरे ॥ उपगारी० ॥ १० ॥ सदगुरू कल्प वृक्षथी अधिका, याचना अर्थने पूरे ॥ ते

माटे मागो अकर्म पद, कर्म जाळ सवि चुरे रे॥ उपगारी० ॥ ११ ॥ एथी अधिक अरथ नहीं दुजो, परम अरथने पाम्यो ॥ सदगुरू संग अति उपगारी, परमानद पद जाम्यो रे ॥ उपगारी० ॥१२॥ गुरू उपदेश सुणी इहां दाख्यो, मंदमति मुज भारी ॥ गुरु कृपाथी रचना कीधी, बाळजीव उपगारी रे ॥ उपगारी० ॥ १३ ॥ नग्र विजापुर घरमां वसियां, गुरू भक्तिये रास रचायो॥ सुरचंद सुजनाम भलेरु ज्योत शीतळ घट आयो रे ॥ उपगारी० ॥ १४ ॥ ओगणीसत सुडताळीस वर्षे, श्रावण कृष्ण पक्षायो ॥ गुरूभक्ति रास पूरण त्रीजे,शुभ योग लक्षायो रे॥उप०॥१५॥ गुरूभक्ति ये आ रास जे कोइ गाशे, सुणशे स्थिर उपयोगे ॥ भावार्थ अंतरमां लावे, तिहा शुद्ध परिणति होय भोगेरे॥उपगारी॥१६॥ मुज मनोरथ सफळ हुओ आज, भक्तिये पूरण रास कीधो ॥ ससार कार्यने अळगां मुकी, गुरूभक्तिये चित्त लीधो रे॥ उपगारी ॥ १७ ॥ मुज अगे उलट अति जाझो, एक तान स्थिर ध्यान ॥ चित्त रमावुं प्रत्येक ढाळे, ज्ञान शीतळ करूं पान रे ॥ उपगारी० ॥ १८ ॥

॥ इति श्री गुरु भक्तिनो रास सपूर्ण ॥

॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

शुद्धि पत्रक.

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	७	भांजेर	भांजेरे
५	१९	छाजेर	छाजेरे
६	१५	शरीरमम	शरीरमम
१८	५	कपायोन	कपायेने
१८	८	अहशरीर	अहशरीरी
२०	११	कारण	कारणे
२०	१९	भर्योहे	भर्यो है
२४	३	ध्यात्र	ध्यावे
२५	२	आतमधाराने	आतमधाराते
२६	५	थयेलीने	थयेलीते
२६	१८	लोको	लोका
२७	७	रुप	रुपो
२९	१३	आवरणयोग	आवरणयोगे
३१	७	शांत	शुत
३२	९	ते सर्प	ते सर्व
३२	१५	जीनआगमए	जीनआगमेए
३४	८	सयोगळे	सयोगेळे
३६	५	कल्पन	कल्पन
३६	७	पुनादिकने	पुत्रादिकते
३६	१९	स्वजात नथी	स्वजाति नथी
३७	४	जाय	जाया
३७	९	माहेलीकोर	माहेलीकोरे
३७	१४	नय	नये
३७	१५	नय	नये
३७	१८	अनता	अनतां
३८	१६	अन	अने
४०	२०	भेद कथा	भेद कहेवा पडे
४१	८	नथ्थि	नथ्थिय
४१	१४	सुभ	शुभव्यवहारे
४१	२०	सयोग	सयोगे
४२	२२	भावने	भावते
४३	९	जोग छे	जोगे छे
४३	१८	फर्णनी	फर्मनी
४६	६	उपाधिओग	उपाधिभोग
४६	२०	उपाधिना	उपाधिनो
४७	१०	साधुना	साधुनो
४७	१४	याग	योग
४८	५	लुगडानोकफडो	लुगडानोकफ्डे
४९	१	लेवा कल्पे नहीं	लेवो कल्पे नहीं
५२	२२	विस्तार	विस्तारे
५५	१६	अगभिर	अगभीर
५६	११	सचय	सचय
५८	२३	तोड	तोडे
६१	२	सुभुमना	सुभूमनापिता
६४	८	सागरमा	सागरमा
६४	१५	पीत	पीते
६५	६	छद्मलक्षण	छद्म लक्षण
६५	१९	तेनोभोगी	तेनीभोगी
६७	१	भयमा जाय	भयमा जाय
६७	१३	दुष्ट	दुष्टा
६७	१७	तेम पशुने	पशु तेमने
७१	१४	विवेक	विवेके
७३	५	ए तेना ने भेद	तेना व भेद
७३	१४	समकिनिमोहनी	समकित मोहनी
७५	२२	सताप	सतोष

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७८	१८	कोर	कोरे
८१	४	पोत न थाय	पोते न थाय
८३	५	उपशम	क्षयउपशम
८४	१०	अवनुभ	अनुभव
८५	४	स्पर्शीतवोध	स्पर्शीबोध
८५	१२	स्वस्वरुपे	स्वरुपे
९४	१३	अनुभव	अनुभव
९५	१४	तछतां	तेछतां
९९	४	जोगमोक्ष	जोगेमोक्ष
१००	१७	बीजाभेद	बीजोभेद
१००	१९	अभदेपक्ष	अभेदपक्ष
१०१	५	परिणति	परिणतिये
१०१	१०	अल्दाने	आत्माने
१०३	१	एघातिकर्मअ-घाती	एघातिअघाति-कर्म
१०३	७	रस	रसे
१०४	३	परभव	परभवे
१०४	१०	विच्छेछे	विच्छेदछे
१०४	१२	तेमोक्षसुख	त्समोक्षसुख
१०४	१३	मोक्षनां	मोक्षना
१०४	२१	जेपदने	जेपदतेने
१०९	२२	भणवु	भणवु
१०९	२	स्वरुप	स्वरुपे
११५	११	भाग	भागे
११६	१९	एद्रव्यतु	पद्रव्यतु
११७	२	नहीनही	नहीनहीअसत्य
१२२	३	नेपरिणमे	नपरिणमे
१२३	२०	नाखीभिन्नपदे	नोखीभिन्नपदे
१२६	६	पाप	पाय
१२६	२०	नसाध्युं	नसाध्यु

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	५	दुभेद	दुभेदे
१२७	१२	उपयोग	उपयोगे
१२८	२	सुमसता	सुमसंताजी
१२९	७	मानियोर	मानियोरे
१३०	१	वर्त्तमाननोर	वर्त्तमाननोरे
१३०	६	मोटकोर	मोटकोरे
१३२	२१	फरसे	फरस
१३३	१	जाण	जाणग
१३४	२	देखे अनुभवे	न देखे अनुभवे
१३४	१८	सांभलोर	सांभळोरे
१३४	१९	मील्योर	मील्योरे
१३४	२०	पूरवपरेर	पूरवपरेरे
१३४	२२	बीजोर	बीजोरे
१३५	३	टालीगर्व	टालीमोटपगर्व
१३५	४	दीयेर	दीयेरे
१३५	६	लीयेर	लीयेरे
१३६	५	कह्योर	कह्योरे
१३६	१८	खघछेर	खघछेरे
१३७	११	जोग	जोगे
१३८	१२	करीयेर	करीयेरे
१३८	१३	कहीयेर	कहीयेरे
१४२	४	पांचभेद	पांचभेदे
१४२	७	तीहांसुख	तीहांसुखसात
१४२	११	पुछीनेर	पुछीनेरे
१४३	६	समोर	समोरे
१४३	२०	वधेर	वधेरे
१४६	१२	स्त्रीवेद	स्त्रीवेदे
१४८	१	कायारे	कायरे
१४९	१३	॥ १७ ॥	॥ १० ॥
[illegible]९	१५	घाती	[illegible]घाती

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१५०	१६	सुखआयुपकर्म	आयुपकर्म
१५१	९	सरीरनोरे	सरीरनारे
१५१	१४	नीजात्मनारे	नीजात्मानारे
१५१	२३	परिणमावीनेर	परिणमावीनेरे
१५३	१६	सपजेर	सपजेरे
१५३	१६	अतीशयव्रत	आतिशयवत
१५४	१९	सर्वलोकग्रह	सर्वलोकग्रहे
१५४	२२	पकडायरे	मनायरे
१५७	४	उदये फसु	उदय फसु
१६०	१०	वीजां -	वीजा
१६१	९	काया	काय
१६१	२१	अगे	अग
१६२	९	क्रर्मनाम	नामकर्म
१६३	९	रचनाकारणे ते क्रर	रचनाकरु ते कारणे
१६५	२	नव	नय
१६८	१२	छतिपर्याय	छतिपर्याये
१६८	१३	नयज्ञान	नयज्ञाने
१६८	२२	लहेरे	करीने लहेरे
१७०	८	जो करेरे	जे करेरे
१७१	१४	खपावोर	खपावोरे
१७२	७	ठाणगेर	ठाणगेरे
१७३	१५	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
१७३	१६	भाव	भावे
१७५	३	दिसरे	दसरे
१७६	४	द्रव्य	द्रव्ये
१७७	२	शासनरे	शासनेरे
१७७	५	बलावीनेर	बलावीनेरे
१७७	९	परिणम्योर	परिणम्योरे
१७७	१४	कीजीयेर	कीजीयेरे
१७७	२०	पामीयेर	पामीयेरे
१७९	७	माहत्र	महत्र
१८१	३	सितळनी	सीतळनीन
१८२	०	उपयोग	उपयोगे
१८४	१६	कर्मवज्न	कर्मवज्र
१८५	७	असुभ	एसुभ
१८५	१९	पुन्यपाप	पुन्यपाप
१८५	२१	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
१८६	८	गुणगुणता	गुणगुणगत
१८७	१४	चउवीशे	चउवीश
१८८	४	अनतकारणे	अनतर कारण
१८९	१०	भवहारे	भवहारे
१८०	१३	निवारयाण	निवारणाय
१९०	१२	सिद्धा	सिद्ध
१९१	२	पुन्य	पुन्ये
१९२	१५	एकाता ६	एकातम० ६॥
१९२	१७	पास ॥७	पास ॥म०॥ ७
१९३	२१	मुनिधर्म	श्रुतिधर्म
१९६	९	करेर	करेरे
१९६	१२	वाचछेर	वाचछेरे
१९७	१९	उपयोग	उपयोगे
१९८	३	पूजियेर	पूजियेरे
१९९	७	साये	साथ
२००	५	निरजराकरीयेर	सकामनिरजरा- करीयेरे
२००	११	गुणीने	गुणीते
२०२	१९	चालीए	चालीयेए
२०४	१३	प्रथथ	प्रथम
२०६	३	मांहेरसाल	माहारसाळ
२०६	८	पर्याय	पर्याये
२०७	२१	वीसरे	वीसरो
२०८	३	गुणीपर्याय	गुणपर्याय

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२१०	७	ससारमांहे	ससारमां ए
२११	३	पीधोर	पीधोरे
२११	५	छांडेर	छांडेरे
२११	९	सुणावेर	सुणावेरे
११२	१	विराजेर	विराजेरे
२१७	८	शब्दनय	शब्दनये
२१७	१२	पुरनाशीयो	दुरनाशीयो
२१८	१३	वश्योर	वश्योरे
२१९	२१	सुद्धजी	सुद्धिजी
२२०	६	ठरता	ठरताजी
२२१	१८	अन्यसदाय	अन्यसहाय
२२३	६	दानदेतो	दानदेता
२२३	६	निजलेतो	निजलेता
२२६	७	मोहनमेर	मोहनमेरे
२२६	८	गुरुमेर	गुरुमेरे
२२७	१५	दीपतो	दीपता
२२७	१८	शत्रुविनाश	सर्वशत्रुविनाश
२२९	१२	भावे	भाव
२२९	२०	निरागी	निरोगी
२२९	२०	फहुतारा	कहुतारी
२३०	९	ठाम	ठाण
२३१	४	फळमुक्ति	विश्रातिफलमुक्ति
२३१	८	सत्ताभिन्न	सत्ताभिन्नभिन्नकरी
२३२	२४	निरजन	निरजनं
२३३	१०	ए ॥ ५ ॥	॥ ५ ॥ ए
२३४	१८	शीतळने	शीतळते
२३५	१०	निजातमे	निजातम
२३५	२२	साधे	साधे

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	१८	ज्ञानने	ज्ञाने
२३८	९	जाणी	ज्ञाणी
२३८	१३	मुणीजेर	मुणीजेरे
२३९	८	भेट्ये	भेटे
२३९	११	जीनद्ररे	जीनेंद्ररे
२४०	२	विरचावेर	विरचावेरे
२४०	२३	जाणी	भगी
२४१	५	रत्नमयी	रत्नत्रयी
२४२	९	कोमाल्लिनाथ	करे माल्लिनाथ
२४४	३	पूजीयेर	पूजीयेरे
२४६	६	क्षय आवे	क्षय पावे
२४७	१०	छलावु	घलावु
२५३	१४	दीवेलेधेनहींजी	दीधेलेवेनहींजी
२५४	२	ए दशो	ए देशी
२५५	८	वीणसेरलाल	वीणसेरेलाल
२५५	९	लक्षण	लक्षणे
२५६	१४	वारमेरलाल	वारमेरेलाल
२५७	८	मेर०॥	मेरे०॥
२५७	१४	मुखजोइआवीयो	मुखजोवाआवीयो
२५८	६	मेर०॥	मेरे०॥
२५८	११	वरसाथे	वरसाछे
२५८	१४	सरज्याछे	सरस्याछे
२५८	१५	॥नेमि०॥१॥	॥राजुल०॥१॥
२५८	१७	॥नेमि०॥२॥	॥राजुल०॥२॥
२५८	१९	॥नेमि०॥३॥	॥राजुल०॥३॥
२५८	२१	॥नेमि०॥४॥	॥राजुल०॥४॥
२५८	२३	नेम	नेमि
	२१	नेमनिरागी	नेमिनिरागी

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२५९	७	हुए	हुवे
२६०	६	सनमान्या	समगान्नां
२६०	९	स्वने	अन्ने
२६०	१७	श्राँवदा	श्रदा
२६०	१३	नीराणी	नागणी
२६१	१८	दुर्गदर्शनकरी	दुर्ग दर्शी नहीं करी
२६३	४	स्पर्शे	स्पर्शे
२६१	२३	मदा	म्हदा
२६५	६	दार्नीवे	दार्नीयो
२६६	२	थोया	थोवे
२६६	२१	मेट	मेटे
२६७	१०	छेगोर	छेगोरे
२६८	१७	वनस्पानये	वनस्पतायने
२६९	२१	देन्व	देखे
२७०	२	जावोर	जावोरे
२७०	३	थागेर	थारोरे
२७०	१४	करीवेर	करीवरे
२७०	१६	जुए	जुवे
२७१	१४	पूर्वकर्मसवनी	पूरवकर्मसघरवी
२७२	१६	थावेर	थावेरे
२७२	१७	मावेर	मावेरे
२७८	१७	कीहास्यां	करहोस्यां
२७८	३	मावेर	मावेरे
२८०	४	मिथ्यातडे	मथ्यातडे
२८१	१०	मोहीर	मोयरे
२८४	१८	वन०॥१२॥	वने०॥१२॥
२८७	१८	॥३७॥	गाया ॥
२८९	२१	रुवूता	कबुता
२९२	३	काळ	कार
२९४	४	जाग	माग
२९५	१८	दाळ्नी	आ दाळ्नी
२९७	१	दरशन	दरसंन
२९७	४	ममभ	मर्मभ
२९७	११	विनन	विर्वन
२९८	६	चेवनरे	चेवंकरे
२९८	१८	ते वस्तुने	ते वस्तुवे
२९८	२१	कर्मग्रदे	कर्मग्रवे
३००	१२	अटारारे	अटारोरे
३०१	१९	विसामोर	विसामोरे
३०२	३	दयवमरे	दयवंमरे
३०२	७	दयामरे	दयवंमरे
३०२	८	एकम्मरे	एकटमरे
३०३	६	सास्वादनकोड	छहेसास्वादनकोड
३०३	८	कपड होवे	कपुर होवें
३०४	१	रतनरे	रतनरे
३०४	९	मणी०॥ ९ ॥	माणी०॥व०॥९॥
३०४	२०	इण्यारे	इ यारे
३०५	२१	मत्र	मैत्र
३०६	११	आशाता	अशाता
३०६	१२	परमाने	परमाण
३०८	१६	पणे	॥
३१०	१		
३१०			
३१०			
३१६			